श्री आचार्य देशभूषण मुनि महाराज ग्रन्थ माला का ९ वां पुष्प

श्री रत्नाकर कवि विरचित

भरतेश वैभव

द्वितीय भाग

दिग्विजय (चतुर्थ खंड)

कन्नड काव्य के

हिन्दी अनुवादक व सम्पादकः—

श्री १०८ आचार्य देशभूषण मुनि महाराज

तथा

अंग्रेजी अनुवादकः—

प्रो० श्यामसिंह जैन,

एम० ए० (इतिहास) एम० ए० (राजनीति) एल०-एल० बी०,
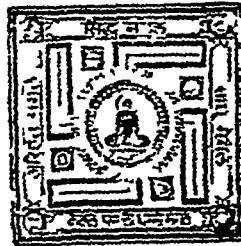
संशोधक-श्री वीर निर्वाण सं० २६१७, प्रचलित-श्री वीर निर्वाण सम्वत् २४७२

का० शु० १
वि० सं० २००६

मूल्य १०)

प्रथम आवृत्ति
६००

प्रकाशकः—
श्री दिगम्बर जैन समाज,
मुकाम टिकैतनगर,
ज़िला बाराबंकी ।

मुद्रकः—
किशोरीलाल जैन,
द्वारा
जनता प्रेस, बाराबंकी
में छपा ।

॥ शास्त्र-परिचय ॥

भरत चक्रवर्ती का मंत्री बुद्धिसागर राजा के दाहिने हाथ के रूप में था। उसके लम्बी दाढ़ी थी और राज्य के संपूर्ण कार्य को बड़ी चतुराई के साथ सम्पन्न करता था। उनके हृदय में ज्ञान का निर्मल प्रकाश था। चक्रवर्ती का आत्मीय होने के कारण उन्हें अन्तःपुर में भी जाने की रोक नहीं थी। वह इतना कुशल था कि भरतजी जो बात कहना चाहते थे वह उनके आकार से ही जानकर उनके कहने के पूर्व ही कह देता था

भरत जी की आज्ञा के अनुसार प्रति क्षण चलता था। सम्राट् अपनी राज सभा में, मागध, वरतनु तथा प्रभास इत्यादि राजाओं के साथ विराजमान हैं। राजा के आदेशानुसार मंत्री ने समस्त राजाओं का समुचित सत्कार करते हुये उन्हें अपना प्रेम प्रदर्शित किया।

मागधामर श्री भरत जी के सेना का व्यंतराधिपति था। पूर्व सागर द्वीप तक उसका राज्य था। श्री भरत जी जिस समय दिग्विजय के लिये जारहे थे उस समय सर्व प्रथम मागधामर को ही स्वाधीन किया था।

वह बहुत धीर, वीर और अहंकारी था, परन्तु अहंकारी होते हुये भी वह सज्जनों का सत्कार करता था।

भरत के द्वारा बाण के साथ भेजे हुये पत्र को पढ़कर पहले तो मागध युद्ध करने के लिये तैयार हुआ, पर मंत्री के समझाने से वह अपना गर्व त्याग कर राजा के सामने आया और उनके चरणों में बहुत सी भेंट समर्पित करके उन्हीं के आश्रित रहने लगा। तभीसे वह राजा का विश्वास पात्र होकर वरतनु प्रभास इत्यादि व्यंतरों को लाकर राजा भरत के सामने झुका दिया। इसी कारण राजा ने उसे व्यंतराधिपति की पदवी दिया।

भरत जी ने सोचा कि दिग्विजय यात्रा करके युद्ध के विषय को देखना चाहिये, परन्तु जब वे माता जी के पास आशीर्वाद लेने गये तो आशीर्वाद देते समय माता ने आज्ञा दी कि लीला मात्र से ही दिग्विजय करके लौट आओ। पुनः पूछने लगीं कि क्या आज प्रयाण दिवस है। तो भरतजी ने कहा कि माता जी! नेत्रों के विनोदार्थ टहलने के लिये जा रहा हूँ वहाँ से शीघ्र लौट आऊँगा।

भरत जी माता के आशीर्वाद से ही षट् खंड पृथ्वी को वश में किया है। इसी कारण इनके चरित्र में युद्ध की विशेषता नहीं दिया गया है।

इस काव्यमें चक्रवर्ती को पुत्र रत्नोत्पत्ति कहकर सुभद्रा इत्यादि के विवाह का उत्सव वर्णन किया गया है और बाद में भरत के भाग्योदय का अच्छी तरह से चित्रण किया गया है।

वे भरत जी नवरात्रि पक्ष में आयुध पूजा करने के बाद दिग्विजय की यात्रा के लिये चल दिये। उस यात्रा में मागध, वरतनु तथा प्रभास इत्यादि राजाओं को जीतकर इन लोगों के द्वारा भेंट में दिये हुये उत्तमोत्तम धन तथा कन्या रत्न को प्राप्त किये। और पुत्र के विवाह को भी बड़े वैभव के साथ करके षट्खंड पृथ्वी को जीतकर वापिस आये।

भूमिका

'वसुधा विलय विलीन विषय विशेषम्'

कन्नड़ भाषा के उपलब्ध साहित्य में 'कविराजमार्ग' नामक ग्रन्थ एक सर्व प्राचीन रचना है। उस ग्रन्थ की उक्तपंक्ति कर्णाटक देश के लिये कही गई है। निस्सन्देह कर्णाटक अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और जनता के शिष्ट शौष्ठव के कारण एक अनूठा प्रदेश है। कर्णाटक देश के अधिवासी शिष्ट और भव्य होने के साथ ही विचाररसिक ही नहीं, अपितु साहित्यकार भी रहे हैं। 'कविराज-मार्ग' में लिखा है कि कर्णाटकी लोग बोलचाल में पद्यमय भाषा का प्रयोग करते थे। किसी पाठशाला में पढ़े बिना ही वे जन्म सुलभ रूप में पद्यशास्त्र को समझते और उसके नियमों से परिचित हैं। साथही यह भी एक विशेषता रही कि इस देश के अधिवासी अधिकांशत भव्य जैन रहे। जैनों ने ही कन्नड़ साहित्य की नींव जमाई और उसे अमूल्य रचनाओं से अलंकृत किया यहाँ तक कि ई० १२ वीं शताब्दि तक कन्नड़ साहित्य के प्रायः सभी लेखक और साहित्यकार जैन थे जैन विचार धारा कन्नड़ साहित्य में अविरल बह रही थी। उपरान्त लिंगायत और वैष्णव लेखकों ने भी कन्नड़ साहित्य को अपनी रचनायें प्रदान की परन्तु कन्नड़ साहित्य में जो कुछ सारभूत विशिष्ट है वह "जैनकाल" से सम्बन्धित ग्रन्थ रत्न ही हैं। कन्नड़ भाषा का आदि उल्लेख भी श्रवणबेलगोल के जैन लेखों से पूर्व (संवत ५००) में ही मिलता है। सारांशतः जैनों की सेवायें कन्नड़ के लिये अपूर्व हैं।

कन्नड़-भाषा का सम्बन्ध द्राविड़ भाषाओं के समूह से माना जाता है। एक समय समस्त उत्तर भारत बिलोचिस्तान और दक्षिण में कावेरी और गोदावरी नदियों के मध्यवर्ती एवं अपर दक्षिण प्रदेश में द्राविड़ जाति के लोग रहते थे और उनकी भाषा बोली जाती थी। वह भाषा प्रारंभ से ही संस्कृत भाषा से बहुत कुछ मिलती जुलती थी। द्राविड़ भारत में जब कि भारत में वैदिक आर्य नहीं आये थे, जैन धर्म प्रमुख मत रहा। मोहन जोदड़ों और हड़प्पा के पुरातत्वसे जो मुद्रायें उपलब्ध हुई हैं, वे जैन धर्म की योग चर्या को पोषक हैं जैन तीर्थंकर ऋषभदेव की कायोत्सर्ग मुद्रा और वृषभ चिन्ह उनपर अङ्कित हैं। एक मुद्रा पर जिनेश्वर शब्द भी पढ़ा गया है अतः द्राविड़ों का आदि धर्म जैन होने के कारण ही उस समूह से सम्बन्धित कन्नड़ भाषा के आदि साहित्यकारों का धर्म जैन ही मिलता है, जो स्वभावतः होना ही चाहिये। कुछ विद्वान द्राविड़ भाषाओं को उत्तर भारत की आर्य भाषाओं से प्रथक ठहराते हैं, वह देश भेद की अपेक्षा भले ही हो, वैसे दक्षिण भाषाओं की वर्णमाला और अधिकांश शब्द एवं व्याकरण भी प्रायः संस्कृत प्राकृत से मिलते जुलते हैं। जैनों ने उसे प्राञ्जल रूप प्रदान करते समय अपनी मूल भाषा के तत्सम रूपों का समावेश उसमें कर दिया, ऐसा प्रतीत होता है।

जो हो; आज स्वाधीन भारत में राष्ट्रीय एकता की पुनीत भावना मूर्तिमान हो रही है, प्रत्येक भारतीय यह अनुभव करता है कि वह चन्द्रगुप्त के अखंड भारत का एक अङ्ग है, उसकी मातृभाषा प्रान्त भेदसे भले ही आज कुछ की कुछ रूप में मिल रही हो, परन्तु उसका उद्गम-स्रोत और मूल आधार एक ही है। मौर्य सम्राटों के अभिलेख इसके साक्षी हैं। उनमें प्रयुक्त हुई भाषाओं और लिपियों के अपभ्रष्ट रूप आज की प्रान्तीय भाषाओं में प्रायः मिल रहे हैं। अतः आज हमारे लिये यह स्वभाविक है और इसमें हमें गौरव अनुभव करना चाहिये कि हम अखंड भारतकी एकता के समर्थक हों और अपनी प्रान्तीय मातृभाषा को अपनायें रखकर अखंड भारत की राष्ट्रीय भाषा को अपनाते चलें, जो आज हमें 'हिंदी' के रूप में मिल रही है। जैन सदा से ही समष्टि के पोषक और राष्ट्र के हितैषी रहे हैं उनकी-लोक कल्याण भावना उनकी साहित्य कि कृतियों और अद्भुत शिल्प सौष्ठव से अनन्त अतीत से सुरक्षित चली आरही है। उसी से प्रेरणा पाकर आज भी जैन आचार्य और साहित्यकार भारतके भावी निर्माणमें सहयोग देने के लिए अग्रसर हुए हैं प्रस्तुत प्रयास उस दिशा से एक ठीक कदम है।

आज हमें प्राचीन कन्नड़ साहित्य का परिचय पाना और उसका मूल्य आंकना है। यह हम तभी कर सकते हैं जब प्राचीन कन्नड़ के ग्रन्थ रत्न हमारे सम्मुख नये रूप में हिन्दी अनुवाद सहित उपस्थित हों। तभी हमारे जन समूहके भाई-बहिन उस साहित्य की रसधारा का आस्वादन करके कर्णाटक के बहुत निकट पहुँच सकेंगे। तपोधन विद्या निधान चारित्र शिरोमणि निर्ग्रन्थाचार्य श्री देशभूषण जी महाराज कर्णाटक भूमि के उज्ज्वल नररत्न हैं उन्होंने राष्ट्र की गति मति को पहिचाना है। और कन्नड़ साहित्य के ग्रन्थ रत्नों को हिंदी अनुवाद सहित वे प्रकाश में ला रहे हैं। 'भरतेश-वैभव' कन्नड़ साहित्य का एक अपूर्व ग्रंथ है उसके रचयिता श्री रत्नाकर वर्णी मूड़बद्री के निवासी क्षत्रिय कुलोत्पन्न कन्नड़ साहित्य-गगन के चमकते हुये नक्षत्र हैं। उनके रचे हुये कई सुन्दर ग्रन्थ उपलब्ध हैं। उनमें 'त्रिलोकशतक' और 'अपराजितशतक' 'भरतेश्वर चरित्र' के अतिरिक्त उल्लेखनीय हैं। कवि-रत्नाकर कन्नड़ वासियों में वैसेही लोक प्रसिद्ध रहे, जैसे उत्तर भारत में सूर और तुलसी रहे हैं। उनके रचे हुये कन्नड़ गीतों और पदों को लोग बड़े चाव से गाते हैं। वे 'अध्यातमपद' अर्थात् भाइयों के पद नामसे प्रसिद्ध हैं। आचार्य देशभूषण मुनि ने 'भरतेश-वैभव चरित्र' का हिन्दी अनुवाद करके हिन्दी भाषी जनता का महती उपकार किया है। वे रत्नाकर कवि के पदों का अनुवाद और उपस्थित करने की कृपा करें तो जनता का महती कल्याण हो। हम आचार्य महाराज के चरणों में नतमस्तक हो आशा करते हैं कि उनके द्वारा कन्नड़ के आदि कवि पम्प की अपूर्व कृतियोंकाभी हिन्दी अनुवाद लोक को प्राप्त होगा।

साथ ही इस प्रकाशन में अंग्रेजी अनुवाद भी जोड़ दिया गया है, जिसे हमारे मित्र और उदीयमान साहित्यकार प्रो० श्यामसिंह जी जैन ने अपने श्रद्धालु पिता की सहायता से सुन्दर रूप में सम्पन्न किया। यह इस ग्रंथ के लिये सोने में सुगंधि का कार्य कर रहा है। हमारी बधाई हृदय से है।

अन्त में टिकैननगर वाराबङ्की दरियाबाद गनेशपुर और लखनऊ की दि० जैन समाजका हम अभिनन्दन करते हैं कि उन्होंने श्रुत के उद्धार और प्रकाश में अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग ऐसे ग्रन्थ रत्नों का प्रकाशन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो, यही कामना है।

॥ इति ॥

विनीत

कामताप्रसाद जैन

संचालक—अ० विश्व जैन मिशन

और

सम्पादक—अहिंसा वाणी, अलीगंज।

भरतेश वैभव प्रथम भाग (भोगविजय प्रथम खण्ड) रचयिता कवि रत्नाकर वर्णी, हिन्दी अनुवादक व सम्पादक श्री १०८ आचार्य देशभूषण महाराज तथा अँग्रेजी अनुवादक प्रो० श्यामसिंह जैन एम० ए०, ।

जैन कन्नड़ साहित्य कितना समृद्धिशाली है, यह कहने की बात नहीं। दिगम्बर जैनाचार्यों ने कन्नड़ भाषा में धर्म, दर्शन, साहित्य, व्याकरण आदि विषयों की अनेक रचनाएँ की हैं। श्री मुनिराज देशभूषण जी ने रत्नाकर शतक तथा धर्मामृत का पहले ही अनुवाद किया था। अब की बार भरतेश वैभव को अँग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया है। ऊपर मूल कन्नड़ श्लोकों को नागरी लिपिमें लिखा है तथा नीचे दोनों ही भाषाओं में अनुवाद दिया है। इस ग्रंथ की कन्नड़ भाषा भी बड़ी ही ललित और प्रवाहयुक्त है। प्रत्येक पद्य में रचयिता ने काव्य सिद्धांतों का पालन किया है। वस्तुतः यह धर्मशास्त्र काव्य शास्त्र है। जैन काव्यों की यह विशेषता है कि उनमें त्याग, अहिंसा और सत्य का पुट इस प्रकार दे दिया गया है, जिससे उनमें धर्मशास्त्र का भी आनन्द आता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के नायक भरत हैं, भरत किस प्रकार सांसारिक भोगों को भोगते थे तथा राज्य कार्य का संचालन कैसे करते थे, आदि बातों का अंकन किया गया है।

इसमें महाकाव्य के सभी लक्षण विद्यमान हैं। भरत की चक्रिवर्तित्व अवस्था से लेकर उनके ऐश्वर्य और वैभव मात्र कथानक द्वारा कवि ने अपने काव्य भवन का निर्माण किया है। इस ग्रन्थ के आरम्भको देखनेसे कन्नड़ काव्यशैलीका बोध होता है। वस्तुतः एक सुन्दर प्रकाशनकी अत्यधिक आवश्यकता थी यदि इसका सर्वाङ्ग शुद्ध संस्करण निकाला जाय तो हिन्दी साहित्य के लिये अमूल्य निधि हो।

प्रस्तुत संस्करण को देखने से यही प्रतीत होता है कि काव्य को धर्मशास्त्र बना दिया गया है। इसी कारण महाकाव्य के दृष्टि कोण को ओझल कर अनुवाद किया गया है। अभी इस ग्रन्थ के कई एक भाग निकलना शेष है, अत हमारा सुझाव है कि इसका अनुवाद और सम्पादन इस प्रकार का होना चाहिये, जिससे इस ग्रन्थ के काव्य गुणों पर प्रकाश पड़े। कलापक्ष और भावपक्ष की दृष्टि से आरम्भ के पद्य बहुत ही सुन्दर हैं। हमारा विश्वास है कि संसार के समस्त साहित्य में इस काव्य ग्रन्थ को बेजोड़ स्थान प्राप्त हो सकता है। यद्यपि कथानक महाकाव्य का नहीं है। फिर भी कवि ने महाकाव्य के सभी गुणों का इसमें सामवेश किया है। कल्पना की उड़ान और रागतत्त्व का जितना सुन्दर चित्रण इस काव्य में है, संस्कृत के एकाध ही काव्य ग्रन्थ में मिलेगा। अभी हिन्दी का काव्यक्षेत्र तो सूना ही है।

अतएव इस विशुद्ध काव्य की दृष्टि सुन्दर समालोचना के साथ अनुवाद करना जैन साहित्य के लिये अधिक कल्याणकारी होगा। यदि समय हो तो हिन्दी पद्यानुवाद दिया जाय।

श्री आचार्य देशभूषण जी महाराज कन्नड़ साहित्य को हिंदी माध्यम द्वारा उत्तर निवासियों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं, इसके लिये उनका जितना भी अभिनन्दन किया जाय थोड़ा है। महाराजको अब रत्न और पम्प कविके काव्य परभी आलोचनात्मक रचनायें प्रकाशित करनेकी ओर ध्यान देना चाहिये। ये दोनो कवि विश्वकाव्य जगत में अनुपम हैं।

महिला रत्न ब्रह्मचारिणी पंडिता श्री चन्दाबाई, आरा।

श्री १०८ आचार्य देश भूषण मुनि महाराज जी
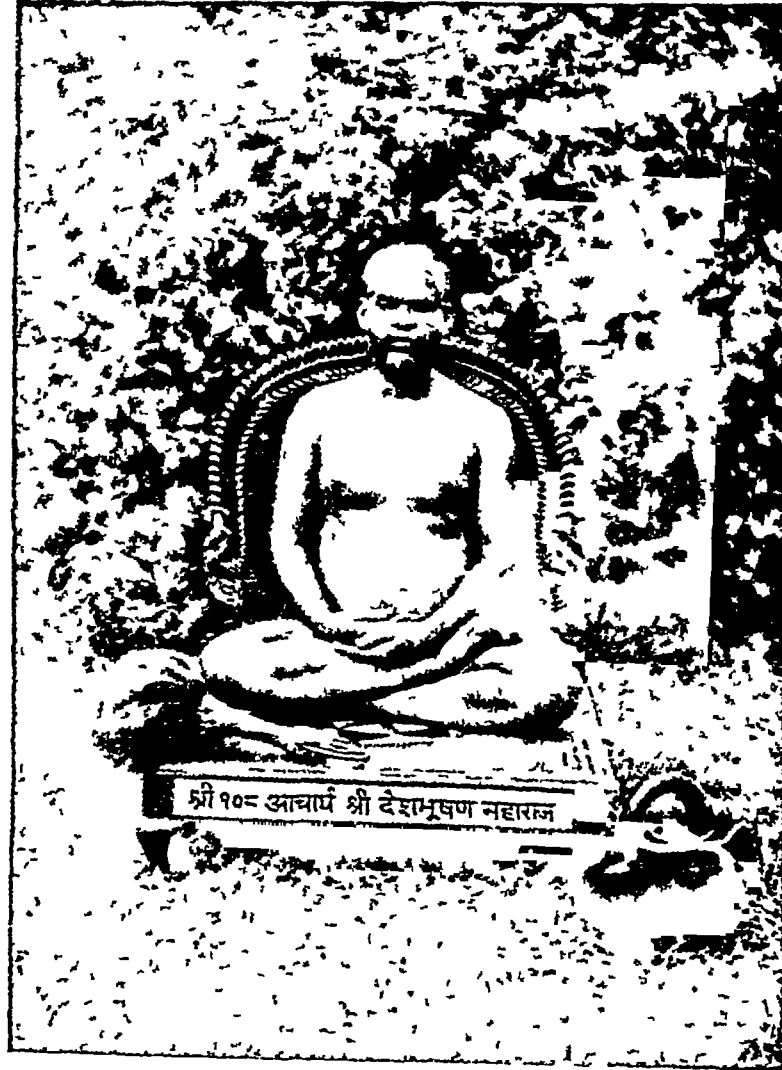
यह चित्र धर्मपत्नी लाला कपूरचन्द जी जैन सुपुत्र लाला सरजू प्रसाद जी जैन के द्वारा छपा।

जनता प्रेस, वार

॥ आशीर्वाद ॥

इस ग्रन्थ को जिन धर्मात्माओं ने अपने निजी द्रव्य से छपवाने का भार उठाया है। वे सभी बहुत सरल स्वभावी व धर्मात्मा पुरुष हैं। यह अनेक धार्मिक कार्यों में दान वितरण-करते रहते हैं।

इस प्रकार यह सभी अपने निजी द्रव्य को सदुपयोग में व्यय करते हुये पुण्य संचय करें और उनकी मनोकामना पूर्ण होकर इस संसार रूपी समुद्र से जल्द छुटकारा पाकर अमर पद प्राप्त करें यही हमारा शुभ आशीर्वाद है।

आचार्य श्री देशभूषण जी,
मुनि महाराज

॥ मंगला चरण ॥

जिनकी कृपा से विश्व ने,
सुख शांति का पथ पा लिया।
धर्मार्थ काम इह मोक्ष के,
पुरुषार्थ को अपना लिया ॥

वे आदि देव जिनेन्द्र,
अविनाशी सुखों के धाम हैं।
उनके युगल पद कंज को,
सविनय सहश्र प्रणाम हैं ॥
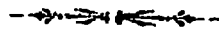
॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

रत्नाकर कवि विरचित

भरतेश वैभव

(दिग्विजय द्वितीय भाग)

कन्नड़ काव्य

का

आचार्य श्री १०८ देशभूषण मुनि महाराज कृत

सरल हिन्दी अनुवाद,

तथा

प्रोफेसर श्यामसिंह जैन, एम. ए. एल-एल. बी.

द्वारा

अङ्गरेज़ी अनुवाद

❀ नवरात्रि संधि ❀

पद्य—परम परंज्योति कोटि चंद्रादित्य। किरण सुज्ञान प्रकाशा ॥
सुरर मकुट मणि रंजित चरणाब्ज। शरणागु प्रथमजिनेश ॥ १ ॥

अर्थ—करोड़ों सूर्य और करोड़ों चन्द्रमा के किरणों के समान उज्ज्वल ज्ञान को धारण करने वाले एवं देवेन्द्र के मुकुट में लगे हुये "मणि" जिनके चरण कमलों में प्रतिबिंबित हो रहे हैं, ऐसे "श्री आदिनाथ भगवान्" हमारी रक्षा करें ॥ १ ॥

May Lord Adinath, the first Tirthankar, give me protection The glow of his all prevading knowledge is more forceful than the light of crores of suns and moons and the Devendra (King of celestial being) bows his head to his feet (1)

पद्य—सुजन मनोहर सुज्ञान भास्कर । त्रिजगदाश्चर्य सौंदर्या ॥
निजमति दोरोलविंदष्ट कर्मदि । ग्विजय निरंजन सिद्धा ॥ २ ॥

अर्थ—सज्जनों के अधिपति, सुज्ञान सूर्य तीन लोकों को आनन्द दायक एवं अष्ट कर्म रूपी अष्ट दिशाओं को जीतकर अखण्ड साम्राज्य को प्राप्त करनेवाले भगवान, सिद्ध परमात्मा हमें सुबुद्धि प्रदान करें ॥ २ ॥

The head of all wisemen, the Sun of right knowledge, the wonder of the three worlds, being the conqueror of all the eight karmas and eight directions (Digvijai), the attainer of indestructible kingdom, Bhagwan Sidh Parmatma ! May you give me wisdom (2)

पद्य—कृतयुगदादि योळादि वस्तु विनादि । सुतनादि चक्रनायकनु ॥
चितिय पालिसुतिर्द नेनेंवे जिन जिन । सतत जोगुळेवाडितवनि ॥ ३ ॥

अर्थ—कृत युग के आदि में आदि तीर्थङ्कर के प्रथम पुत्र आदि चक्रवर्ती भरत वहुत आनन्द के साथ राज्य कर रहे हैं, उनके शासन में प्रजा वर्ग को किसी प्रकार का भी दुःख नहीं है और न चिंता है, अर्थात् प्रजा हर प्रकार से अत्यन्त सुखी है तथा रात दिन चक्रवर्ती भरत के लिये शुभ-कामनायें करती है, कि हमारे सम्राट चिरकाल तक राज्य करें और उनको पूर्ण सुख मिले ॥ ३ ॥

The first son of the first Tirthankar in the first era, and the first Chakravarti, Shri Bharat ji, was carrying on the administration of his kingdom with pleasure His subjects did not suffer from any disabilities and felt quite contented Day and night they prayed that Raja Bharat might continue to rule over them for ever and should enjoy all happiness (3)

पद्य—भूमिभारव ताळ्द चिंतेयिल्लोंदर । काम विल्लालस्य विल्ल ॥
क्षेमदोळाळु तिर्दनु दीर्घ धरेय सु । त्राम स्वर्गवनाळुवंते ॥ ४ ॥

अर्थ—वड़े भारी राज्यभार को अपने शिर पर धारण किया है फिर भी उनके मन में कोई प्रमाद नहीं है और न किसी प्रकार की चिंता है तथा किसी वात की अभिलाषा भी नहीं है, प्रजा हित करने में आलस्य नहीं है । जिस प्रकार देवेन्द्र आनन्दके साथ स्वर्ग का पालन करते हैं । उसी प्रकार राजा भरत भी प्रेम व क्षेम के साथ पृथ्वी का पालन कर रहे हैं इस प्रकार वहुत आनन्द व उल्लास के साथ राज्य शासन करते हुये समय व्यतीत कर रहे हैं ॥४ ॥

There was no carelessness of any kind in the mind of Raja Bharat He
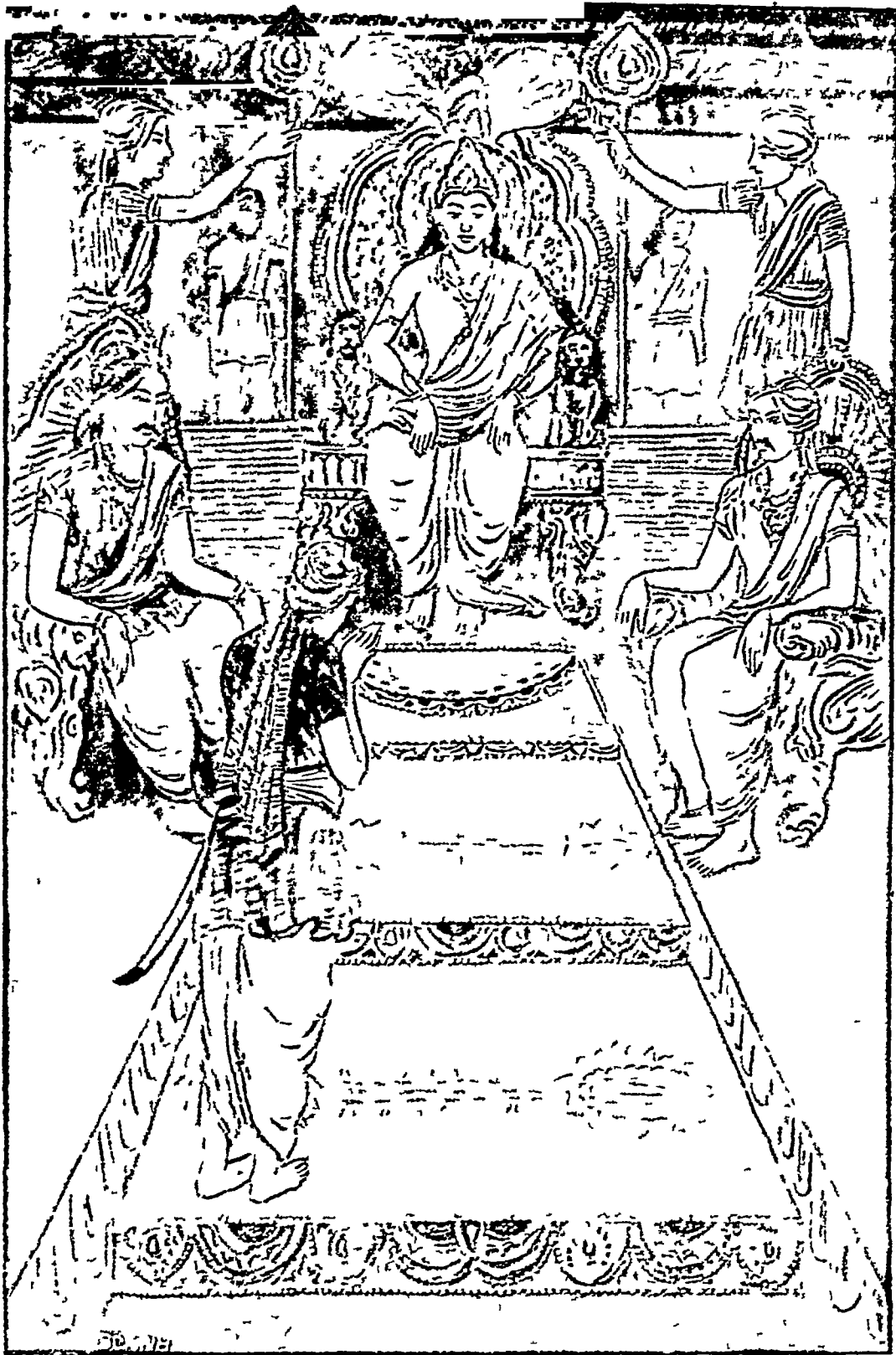
भरत महाराज अपने पुत्र व समस्त राणियों के साथ लीला विनोद करते हुये अपने समय को आनन्द के साथ विताने के वाद व अपनी दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर राज दर्बार में विराजमानथे कि इतने में बुद्धि सागर मन्त्री ने आकर दिग्विजय प्रस्थान केलिये प्रार्थना कर रहा है। यह चित्र मूलचन्द छोटेलालजी जैन तिलोकपुर की ओर से छपा।

had taken a vast responsibility of the kingdom on his shoulders, but he was still indifferent to this burden, nor had he any desire, or laziness Just as Indra carries on the administration of heavenly kingdom, similarly Raja Bharat was carrying on his administration with capability and joy, (4)

पद्य—लीलेयोळितु राज्यवनाळु तिर्द भू । पाल नोत्तिगे मंत्रि बंदु ॥
आलोचनेगेयुद् नरसन लीले वि । शाल वर्पते ननेंवे ॥ ५ ॥

अर्थ—एक दिन की बात है भरत जी आनन्द मग्न हो अपने भवनमें विराजमान थे, इतने में अकस्मात बुद्धिसागर नाम के मन्त्री उनके पास आये और निम्न लिखित निवेदन प्रार्थना स्वरूप भरत जी से किया जिससे कि सम्राट का द्विगुण आनन्द बढ़े ॥ ५ ॥

One day it so happened that Raja Bharat was sitting in his palace quite happy when all of a sudden the minister Buddhi Sagar came to him and made the following prayer to please the king (5)

पद्य—मळेगाल होदडु बेळुगाल बंदुडु । दळ नडेवुद किन्तु चेन्तु ॥
अलसिके परिहारवागे दिग्विजय कि । न्नेळ्सुवु दोळ्ळितु नृपति ॥ ६ ॥

अर्थ—मन्त्री ने कहा–हे स्वामिन् ! अब वर्षाकाल की समाप्ति होगई है अतएव सेनाके प्रयाण करने के लिये योग्य समय है इसलिये आलस्य के परिहारार्थ दिग्विजय का विचार करना अच्छा होगा ॥ ६ ॥

"O Lord", said he, " rainy season has come to an end It is proper time for the mobilization of the army. So for removing the idleness, it would be in the fitness of things to plan for the victory of the world (Digvijai). (6)

पद्य—बालार्क नंतुदयिसि चक्ररत्न श । स्त्रालयदोळ गिरुतेर्द ॥
आलस्य वेतके धरेय सधिसुविरे । न्नेळरेतिमिर मार्तंडा ॥ ७ ॥

अर्थ—हे तिमिरारि ! अर्थात् शत्रु रूपी अन्धकार को नष्ट करने वाले सूर्य राजन ? शस्त्रालय में बाल सूर्य के समान बालार्क नामक चक्र रत्न उत्पन्न हुआ है, अतएव आप प्रस्थान का विचार करें ॥ ७ ॥

Lord ! Destroyer of the foes, like the sun to the darkness ! Balark Chakra has made its appearance in the armoury, please now plan for the march (7)

पद्य—सुप्रदक्षिणवागि होगि समस्त भू । मि प्रभुगळ वशमाळ्प ॥
भूप्रदक्षिण केळ्दु दुष्टमर्दन शिष्ट । विप्रतापस धर्मरक्षा ॥ ८ ॥

हे राजन् ? आप दुष्ट राजाओं को दमन करने में समर्थ हैं, शिष्ट ब्राह्मण तपस्वी व सदाचार पोषक धर्म की रक्षा भी आपके द्वारा ही होती है।

अतः ऐसी अवस्था में इसभूमि की प्रदक्षिणा देकर सब राजाओं को अपने वश में करो ॥८॥

Rajan ! you are capable of vanquishing the wicked rulers and are the protector of good persons, ascetic, and pious people. Please now traverse the whole world and bring all the kings under your subjugation (8)

पद्य—द्वीप द्वीपदोळ्युक्कि सोक्किद् दिंडेय । भूपतिगळ हिंडनिन्न ॥
श्रीपाद् केरेगिसि कोळ्लडिथिडु जंबू । द्वीप दक्षिण लोकसूर्या ॥ ९ ॥

अर्थ—हे राजन् ! आप जम्बू द्वीप के दक्षिण भाग में सूर्य के समान हैं अतएव अनेक द्वीपों में मदोन्मत्त होकर विचरने वाले राजसमूह के गर्व को नष्ट कर और अपने चरणों में उन मदान्ध राजाओं को नत मस्तक करा कर उनके गर्व को नष्ट करो ॥ ९ ॥

Rajan ! you are like the sun for the Jambu Dvipa Please now crush the pride of the groups of haughty rulers, who are ruling fearlessly and with pride in their domains. Please make them bow their heads in humility at your feet (9)

पद्य—गिरिदुर्ग जलदुर्ग वनदुर्ग दोळगिर्द । नर पतिगळ सोक्क मुरिदु ॥
भरत षट्खंडद धरेय साधिसि तोरु । भरतेशनेंबबीरवनु ॥ १० ॥

अर्थ—हे राजन् ! गिरि दुर्ग, जल दुर्ग, और वन दुर्ग में रहने वाले अहंकारी राजाओं के अभिमान को नष्ट करके, आप षट्खण्ड पृथ्वी को वश में करें, इससे आपका भरत नाम सार्थक हो जायेगा ॥ १० ॥

O Lord ! your name Bharat will have its full significance only when you have brought under yonr subjugation the haughty rulers of the hilly, watery and forest fortresses, ond conquered the six regions of the earth. (10)

पद्य—एल्लेल्लियुत्तम वस्तु वाहनळ्ु । टल्लल्लि कप्पव कोळ्त ॥
मेल्लमेल्लने नाड नोडियेय्तहविदु । सल्लीलेयय्तेयेळरसा ॥ ११ ॥

अर्थ—जहां जहां उत्तम पदार्थ हैं व गगन चुम्बी श्रेष्ठ महल हैं, आपसे वह भेंट करने की प्रतीक्षा में हैं उन सबकी इच्छा पूर्ति करने के लिये आप देश विदेश की शोभा देखें ॥ ११ ॥

People of all those countries, where there are pleasant objects and sky high palaces, are anxiously waiting to offer welcome to you Please oblige them and also see the beauty of those places *(11)*

पद्य—दूर देशद राय रोळु पुट्टि दुत्तम । स्त्रीरत्नगळ निन्नकैगे ॥
घारेयेरेसि लीले योळेयुतर । बारदे होल्लवेनंदा ॥ १२ ॥

अर्थ—दूर दूर देशों के जो राजा हैं, उनके घर में उत्पन्न हुई कन्या रत्नों को भेंट में ग्रहणकर लीला पूर्वक उनके साथ विहार करने का विचार करें, अब आप देरी क्यों कर रहे हैं ॥ १२ ॥

You may also consider the desireability of marrying the beautiful daughters of the kings of different realms Let there be no delay Sire *(12)*

पद्य—आरु खंडद प्रजेगळिगे निन्नय रूप । तोरि कृतार्थरमाडि ॥
मूरु चोटेंदारु खडव कडु व । लुगारिके योळु बहवेळु ॥ १३ ॥

अर्थ—षट्खण्ड की प्रजा को अपना रूप बतलाकर कृतार्थ करें, यह षट्खण्ड पृथ्वी आपके लिये तीन अंगुल के समान है, अतएव अब प्रयाण करने में क्यों देरी कर रहे हैं ॥ १३ ॥

Please oblige the subjects of the six realms by your visit For you it is a small matter to traverse the six realms. So please, why delay the departure *(13)*

पद्य—वनदोळु चरिसि वसंत नावनव भों । कनेचिगुरेरिसु वते ॥
वनदिमध्यद धरणिय निन्नसुळुहिंद । ननेकोने बोगिसु नृपति ॥ १४ ॥

अर्थ—जिस प्रकार वसन्तराजके प्रवेश करने पर वन में फल-फूलों से सुशोभित होकर वसंत ऋतु खिल जाती है उसी प्रकार षट्खण्ड में रहने वाले प्रजा जनों के हृदय को वसन्तराज के समान उदय होकर प्रफुल्लित कर दो अर्थात् उनके हृदय कमलों को खिला दो ॥ १४ ॥

Just as with the approach of the king of seasons, Spring, the buds blossom forth and nature adorns beautiful garb, so with your visit, the hearts of the people of the countries will be filled with joy and gratitude *(14)*

पद्य—एंदु नुडिद बुद्धिसागर मंत्रिगा। नंद दिट्टुगोरे चित्॥
मंदिगे हेडि सुपयन कुज्जुगेतु हो। गेंडु वीळ्कोट्टना राया॥ १५॥

अर्थ—इस प्रकार बुद्धिसागर मन्त्री के समयोचित निवेदन पर राजा को बड़ा हर्ष हुआ। मन्त्री के कर्त्तव्य पालन के प्रति प्रसन्न होकर भरत जी ने उस विवेकी मन्त्री को अनेक वस्त्राभूषण भेंट में दिये, और पुनः आज्ञा दी कि दिग्विजय की तैयारी करो, और सब लोगों को सूचना कर दो॥ १५॥

On hearing this opportune request of the minister, the Raja felt much pleased and gave the minister reward of precious articles, cloth etc for the devotion he had shown and also issued directions that all arrangements should be made atonce for Digvijai, and all concerned should be informed about it *(15)*

पद्य—नवरात्रि जिनमहिमेय माडि दशमिय। दिव सदोळ् पयनवप्पुदके॥
हवणिसि जोके माडुवेनेंदु मंत्रे वि। नविसि वीळ् कोंडु नडेदनु॥ १६॥

अर्थ—तब बुद्धिसागर ने प्रार्थना की, कि स्वामिन् नौ दिन तक जिनेन्द्र भगवान का पूजनोत्सव आनन्द के साथ कराकर दशमी के दिन यहां से प्रस्थान करने का प्रबन्ध करूँगा, इसप्रकार निवेदन करता हुआ वहां से मन्त्री अपने कार्य में चला गया॥ १६॥

The minister, Buddhi Sagar, prayed, "O Lord ! please have the worship of the Jinendra Bhagwan performed for 9 days with all pleasure I shall arrange for the march on the 10th day The minister after submission of this left for his duties *(16)*

पद्य—कट्टिदुवागळे गुडितोरणगळु। पट्टणदोळ दोळगल्लल्लि॥
वेट्टदंदद नेरु सिंगरिसिदुव हो। हुट्टितु दंडिन सुद्दि॥ १७॥

अर्थ—मन्त्री की आज्ञा से अयोध्या नगर के जिन मन्दिरों की सजावट होने लगी, यत्र-तत्र बाजार तोरण आदि से सजाये जारहे हैं। अब सर्वत्र दिग्विजय प्रयाण की चर्चा चलरही है॥ १७॥

The temples of Ayodhya city began to be decorated under the orders of the minister Arrangements were set afoot to celebrate the big event in a befitting manner Everywhere Digvijai was the topic of the hour *(17)*

पद्य—आकाशकेद् पताके गळिरे नोडि । साकेतपुर वेंवद्तु ॥
श्री कौशलायोध्यापुरवेंब जिनराग । रा कीर्तिपुर शोभेयायुतु ॥ १८ ॥

अर्थ—आकाश को चुम्बन करती हुई मन्दिरों की ध्वजा पताका फहरा रही थी, ऐसा मालूम पड़ता था कि अयोध्या नगरी कहीं साकेतपुर तो ही नहीं है। अतएव नगरका नाम कीर्तिपुर सार्थक बन गया ॥ १८ ॥

Ayodhya's *other name was Kirtpur the city of glory. It appeared quite* justified by the manner in which the flags, and banners on the high tops of the temple appeared to be kissing the sky. (18)

पद्य—गुडिसि मिंचिक्कळु वीदियिद्बु पोप । रडिगळ्ळु जुम्मुदद्दिसुत ॥
त्रिडे केद्रिद् पुष्पदिंद कंपिनदोंडु । कडलंते मेरेदुदा नगरा ॥ १९ ॥
सादिन सारणे प्नीर चल्ल्य ज । वादिकुँकुम मिश्रदिंद ॥
वीदि वीदिगळ्ळि वम्मेंव तुंबिय । नाद् हेच्चितु होसतनिसि ॥ २० ॥

अर्थ—अयोध्या नगर के बड़े बड़े राज मार्ग अत्यन्त स्वच्छ किये गये थे, एवं सुगन्धित, गुलाब जल आदि का छिड़काव किया गया था. जिससे सर्वत्र सुगन्धित वायु चल रही थी, उस सुगन्ध के कारण भ्रमर गुंजारव (गुञ्जन) कर रहे थे ॥ १९-२० ॥

The main roads of the city had been cleaned and there was no trace of dirt anywhere Rose water was sprinkled on them filling the atmosphere with fragrance which *attracted swarm of humble bees. (19-20)*

पद्य—मुगिल मुट्टु व ध्वज वेचितयोध्या । नगर मध्यद् वसदियोळु ॥
अगणेत जिनगृह्विद्दु वल्लळि के । रिगळोडु सिंगर वागि ॥ २१ ॥

अर्थ—अयोध्या नगरी के मध्य भाग में एक बड़े उत्तम आदिनाथ भगवान के मन्दिर की ध्वजा इस प्रकार लहरा रही थी कि मानो आकाश को चुम्बन कर रही हो, उसके आस पास भी कई छोटे छोटे मन्दिर खूब सजाये गये थे ॥ २१ ॥

There was a prominently high temple of Lord Adinath in the centre of the city and a very high banner was flying on the top of it as if touching the sky. It was surrounded by numerous small beautiful temples which were well decorated (21)

पद्य—होमगळल्लि पुजेगळल्लल्लि । स्तोमाभिषेक वल्लल्लि ॥
श्री मुनि भुक्तियल्लल्लि मेरेये पुण्य । धामवागिदुदा नगरा ॥ २२ ॥

अर्थ—उस विशाल नगरी में अत्याधिक जिन मन्दिर थे, उनमें कहीं होम हो रहा है, कहीं महाभिषेक चल रहा है, कहीं मुनिदान चल रहा है, इस तरह उस समय वह पुण्य धाम ही बन गया था।

किसी मन्दिर में वज्र पंजाराधना कर रहे हैं। कहीं कलिकुं यन्त्राराधना हो रही है। कहीं गणधर वलय यज्ञ और मृत्युञ्जय यज्ञ चल रहा है ॥ २२ ॥

Worship etc were being performed in the temples and the whole city appeared to be a holy city (22)

पद्य—कलिकुंड वज्र पजर यज्ञगणधर । वलय मृत्युजंय यज्ञा ॥
बलसिद्धि भयसिद्धि सर्वरक्षुगळेंब । हलवु यज्ञगळनडेदुवु ॥ २३ ॥

अर्थ—इतना ही क्यों ! बल्कि कितने ही मन्दिरों में बल सिद्धि, जय सिद्धि, व सर्व रक्षा नामक अनेक यज्ञ बहुत विधि पूर्वक हो रहे हैं ॥ २३

In some temples different kinds of worship (Kalikand, Vajra, Panjraya, Maitranjan Yagya, Gandhar Valy Yagya) were being performed Not only this, but in several temples Bal Siddhi, Jai Siddhi, and different yagyas were being performed in a proper manner (23)

पद्य—नित्य प्रभाव ने नित्य रथोत्सव । नित्याभिषेक पूजेगळु ॥
नित्य चतुस्संग तृप्तिगळे सेदुव । मात्यन प्रेरणेयिंद ॥ २४ ॥

अर्थ—नित्य ही अनेक धर्म प्रभावना के काय व नित्य ही रथ यात्रा महोत्सव महाभिषेक पूजा, चतुस्सङ्घ संतर्पण आदि सभी कार्य बुद्धिसागर मन्त्री की प्रेरणा से हो रहे हैं ॥ २४ ॥

Every day under the instructions of Buddhi Sagar minister all kinds of rituals such as Rath Yatra Puja etc Mahotsava Chatursangh, Sandarpan etc were performed (24)

पद्य—जिन पूजा पूर्वक नागि क्रूडांभरु । दिन नडेददु चक्र पूजे ॥
अनुचरेल्लरु तंतम्म खड्यव । ननुराग मिगे पुजिसिदरु ॥ २५ ॥

अर्थ—जिन पूजा पूर्वक बराबर नव दिन तक चक्र रत्न की पूजा हुई। साथ में सेना के अन्य योद्धाओं ने भी अपने २ अस्त्र शस्त्रों की अनुराग से पूजा की ॥ २५ ॥

For all the nine days, with the worship of Lord Jina the worship of Chakra Ratna was also performed The other warriors also carried out the worship of their arms with proper rituals and devotion (25)

पद्य—यक्ष गोमुखगे चक्रेश्वरि यक्षिणि । गक्षुरण पूजेय माडि ॥
रचे गट्टितु तेजिगाश्वी जदोळु शुक्ल । पक्षद पाड्य दिनदोळु ॥ २६ ॥
यक्षदेवते यॆंबरॆके तेजियनवु । यक्षरक्षित वदरिंद ॥
यक्षयक्षिणियर पूजा पूर्वक ताणि । रक्षेगट्टिसिदना मंत्रि ॥ २७ ॥

अर्थ—गोमुख यक्ष व चक्रेश्वरी यक्षिणी की पूजाकर अश्व पर रक्षक यन्त्र का बंधन किया । अश्व (घोड़े) को यक्ष देवता के नाम से पुकारने की पद्धति है । क्योंकि उस समय बुद्धिसागर मन्त्री ने यक्ष-यक्षिणी की पूजा कर उसको दीक्षान्त किया था ॥ २६-२७ ॥

After worshipping the gods of Gometshwar and goddess Chakrashwari Luxmi, they tied the Rakshak Yantra to the horse It is the convention to call the horse after the name of Yaksha Devta, because Buddhi Sagar worshipped Yaksha and Yakshari, for the protection of the horse of victory (26-27)

पद्य—आनेगळनु रथगळनु सिंगरगैसि । पीन वैभव गाणिसिदनु ॥
ई नरलोक कच्चरियेने मंत्रि म । हानवमिय नडेसिदनु ॥ २८ ॥

अर्थ—इस प्रकार हाथी, रथ आदि का भी बहुत वैभव के साथ शृङ्गार किया । नव रात्रि उत्सव अर्थात् प्रतिपदा से लेकर महानवमी तक के उत्सव को मन्त्री ने जिस प्रकार मनाया उसको देखकर नरलोक में बहुत आश्चर्य हुआ ॥ २८ ॥

In the same manner elephants and chariots were decorated in different glorious manner.

In short with this manner in which the minister celebroted the festival of Naumi for nine days, the whole world felt surprised (28)

पद्य—नगर मध्यद जिनवास का राजेंद्र । हगले बंदि पूजेय नोडे ॥
मुगुळ्दरमनेगेयदि मने रात्रियोळो । लगवाद नेन वर्णिपेनु ॥ २९ ॥

अर्थ—नौमी के दिन नगर के बीच में से होकर महाराज भरत मन्दिर से जिन पूजा देखकर के आये, रात्रि के समय दरबार में आकर इस प्रकार विराजमान हुये कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ २९ ॥

It was on the Naumi that Bharatji came to see the festivities in the temple. In the night he attended the court Who can describe his glory? (29)

पद्य—कारिरुळ्ळु तन्न रत्न किरीट क ।ग्णारे हगलु माड्वेते ॥
वारण वैरि पीठवनेरि कडेय ह । जारदोळ्ळोलग वादा ॥ ३० ॥

अर्थ—भरत जी मस्तक पर सुन्दर किरीट धारण किये हुये हैं, उसके प्रकाशसे रात्रि भी दिन के समान मालूम पड़ती है, इस प्रकार शत्रुओं को नष्ट करने वाले राजा भरत, राजाओं के बीच में उच्च सिंहासन पर वीर रस के साथ बैठे हैं ॥ ३० ॥

Bharat wore the bejewelled crown on his head With its glow even the night looked like the day In this manner the destroyer of the foe, Raja Bharat was sitting in glory in the court in the pose of bravery on a high throne (30)

पद्य—इर्दरु राजाधिराजरु सचिवरु । निर्दोष कविगमकिगळु ॥
वर्दिन केळ्यरु वारनारिय राग । सादुदुरे परिवारा ॥ ३१ ॥

अर्थ—राजा भरत मध्य के सिंहासन पर विराजमान है, उनके दायें और बायें मन्त्री, सेनापति, सामन्त वगैरह बैठे हुये हैं, सामने अगणित प्रजाजन बैठी हुई है उसके बीचमें अनेक विद्वान, गायक व कवि भी बैठे हुये हैं ॥ ३१ ॥

Bharat was occupying the central throne The ministers and commanders were sitting on either sides, in the front were innumerable subjects. There were also a number of learned persons, poets, musician etc (31)

पद्य—तेट्टे तेट्टेयोळु निंदिदुदु बहुप्रजे । निट्टिसुता चक्रधरना ॥
दिट्टि सल्वष्टके मुंदे भराभरि । गोट्टिदुदुरे परिवारा ॥ ३२ ॥

अर्थ—राजा भरत के दर्शनार्थ लोगों का तांता बंधा हुआ है और भी बहुत से प्रजाजन झुण्ड के झुण्ड देखने के लिये आ रहे हैं ॥ ३२ ॥

People were getting restive to have a look at the Raja All were swarming to get a limpse of their king (32)

पद्य—काकिणिरत्नव दीपमालेय कंभ । दाकेयोळोत्ति निल्लिसलु ॥
काकायुतु कत्तले सुत्तु गावुदके दि । वाकर प्रभे तोरिताग ॥ ३३ ॥

नगरि पन्नेरडु गावुदवदु साळ्दी । विगे पंजिनिंद ढाळिसितु ॥
नगरि गोडेयन गृहद मुंदे गावुद । हगलायतु काकिणियिंद ॥ ३४ ॥

अर्थ—एक खम्मे पर काकिनी रत्न को लगा देने से वहां का सभी अन्धकार नष्ट होगया, इतना ही नहीं वल्कि १२ कोस विस्तार वाली अयोध्या नगरी में पूर्ण रूप से प्रकाश ही प्रकाश हो गया, पन्तु राजा भरत के सामने १ कोस के विस्तार में उस रत्न से इतना अधिक प्रकाश हुआ कि साक्षात् दिन ही मालूम पड़ता था ॥ ३३-३४ ॥

The Kakini jewel was tied to a post and it dispelled the darkness of the whole city of Ayodhya whose strech was of 24 miles (12 kosh) Upto a couple of miles, it appeared like day light (33-34)

पद्य—वोंवेगळाट गळ्ळल्लि पात्र नि । तंवि निजनगल्लि ॥
डोंवर गळेय संगतिगरु कोडिग । रिंतु गोंडिर्दरल्लि ॥ ३५ ॥
इंद्र जालिगरु गोविंद गतिगळु म । हेंद्र जालिगरु विस्मयरु ॥
खेंद्र नाटक रिद्दरुवागि भरतरा । जेंद्रगाट व तोर्पवेंदु ॥ ३६ ॥

अर्थ—उस विशाल राज दरबार में कई नट लोग, कई इन्द्रजाली, कई गायक, व कई महेन्द्र-जाली लोग तथा और भी अनेक तरह के खेल दिखाने वाले लोग अपनी अपनी कला प्रदर्शन करने की इच्छा से वहां पर एकत्रित हुये थे, इसी प्रकार कहीं मदारी व नाट्यकार विस्मय कारक क्रीडा दिखाने वाले लोग भी उपस्थित थे ॥ ३५-३६ ॥

In that vast court, there were acrobats and different artists, singers and magicians sitting for the display of their art Similarly there were also monkey, trainers, dramatists, which craft people etc (35-36)

पद्य—भाविसि भास्कर नडेदत्त झुगिदिर्द । तावरे मिडिदलवेंते ॥
आव कडेगे राय मोग विच्च नत्त ना । नाविग्रगळ तोरुतिहनु ॥ ३७ ॥
सूत्र व मिडिदरे वोंवेगळेल्ल त । न्मात्रदि कुणिवंते नृपन ॥
नेत्र गळोलेदत्त तव तवगागळे । पात्रद पेंगळाडुवरु ॥ ३८ ॥
अंबर तुडुके गळेयनेरि नृपन मु । खां बुज बने नोडुतिदृ ॥
कंवेळ गोलेय लोडने तट पुट तुब्वि । डोंवरु लागु दोरुवरु ॥ ३९ ॥

अर्थ—जैसे; जिधर ही सूर्य का प्रकाश पड़ता है, उधर सर्वत्र कमलवन विकसित हो उठने

हैं, वैसे ही महाराज भरत जी का मुख जिधर दिखाई देता है, उधर ही जनता का मुख-कमल और हृदय कमल विकसित हो उठता है ॥ ३७ ॥

अर्थ—एक ही स्थान पर वैठकर श्री भरतेश जी जिस किसी कलाकार पर अपनी दृष्टि का निक्षेप करते थे अर्थात् (दृष्टिपात) करते थे, उधर के समस्त कलाकार उनके देखने मात्र से अपनी कलाओं का प्रदर्शन उसी प्रकार करने लगते थे, जैसे कोई कठपुतली दूर से ही सूत्र के सहारे नाचती है ॥ ३८ ॥

अर्थ—इसी प्रकार श्री भरतेश के देखने मात्र से कोई नट (कलाकार) सामने गड़े हुये वांस के खम्मे पर चढ़ता था, और ऊपर जाकर अपनी कला का प्रदर्शन करता था ॥ ३९ ॥

Just as lotus blossomes forth as soon as rays of sun fall on it, in the same manner every one was full of joy towards whomsoever the Raja looked and they would begin to display their art (37-38-39)

पद्य—जट्टिग लुब्धि कोयेंदाल्दु भुजगळ । तट्टि कोंडोडेय जी येंदु ॥
थट्टघट्टने तिवि दोव्वरोव्वर तेगे । दिट्टाडि केडेदरचित्त ॥ ४० ॥
राज चित्तैसेंदु विस्मयकारनु । बीज मात्रव नोंद नेट्टा ॥
भूज वायतागळे कायायतु हएणायतु । सोजिग वट्टु दास्थाना ॥ ४१ ॥

अर्थ—राज सभा में वैठे हुये मल्लगण, श्री भरतेश के देखने मात्र से ताल ठोंक ठोंककर परस्पर एक दूसरे को ललकारते हुये मल्लयुद्ध करने लगते थे ॥ ४० ॥

अर्थ—इतने में ही एक विस्मय कारक ने राजा के चित्त को आकर्षण करने के लिये एक बीज को वहां पर वोया तत्क्षण ही वह-बीज पेड़के रूपमें परिवर्तित होगया और उसमें कच्चे फल भी लग गये, एवं पक भी गये, इस अद्भुत दृश्य को देखकर सभी दरवारियों को आश्चर्य हुआ ॥ ४१ ॥

Several wrestlers were engaged in bouts. One of the magician attracted the attention of the Raja, by sowing a seed there The seed atonce sprouted forth into a tree Green fruits appeared there, and became ripe Every one of the courtiers felt surprised at that performance. (40-41)

पद्य—लालिसोडेययेंदु गोविंद गतिकार । वालतृणव मंत्रि सिट्टा ॥
ओलेय मर केडेदंते हेव्वावुग । ळेळु तुरुळु तिद्‌वाग ॥ ४२ ॥

अर्थ—एक मन्त्रकार और सामने आया उसने एक घास के पत्ते को अभिमन्त्रित किया तव

उसमें से बड़े २ अजगर व काले सर्प निकल कर इधर उधर भागने लगे, यह देखकर सारी प्रजा चकित हो गई ॥ ४२ ॥

Another magician came before the Raja and charmed a blade of grass By his charm each blade turned into number of cobras which began to crawl hither and thither *(42)*

पद्य—इंद्रावतार चित्तैसेंदु केमुगि । दिंद्र जालिगनु मंत्रिसिदा ॥
इंद्र नीलदोळु माडवनोद्दि तंदु दे । वेद्रंन तोरिदनल्लि ॥ ४३ ॥

अर्थ—एक इन्द्रजाली सामने आकर प्रार्थना करने लगा कि, हे दया निधान् ! इन्द्र अवतार को आप देखें । उसी समय उसने अपनी कला के द्वारा देवेन्द्र के अवतार को आकाश में लाकर बतलाया ॥ ४३ ॥

One of the Indra Jalis came forward and said with folded hands, "O merciful Lord, please see Indravator now" At that time he with his art showed Devendra avatar *(43)*

पद्य—ऊर्वशिरंभे मेनकियर शृंगार । पूर्वक बागि तोरि दोडे ॥
उर्विय जनवरे बायूदेरेदीचि से । सार्व भौमनु नसु नक्का ॥ ४४ ॥

अर्थ—उसी समय एक और महेन्द्र जाली ने उर्वशी, रम्भा, मेनका आदि अप्सराओं को मन्त्र बल से लाकर बतलाया तब सम्पूर्ण राजसभा के लोग वाह वाह करते हुये हँसने लगे इस पर भरत जी भी थोड़ा हँसे ॥ ४४ ॥

Another Mahendra Jali brought forth a number of fairies, Menka and Urvashi etc which surprised every one in the court Raja smiled a little *(44)*

पद्य—तंद्र तोलगु तोलगेंदु बंदोडने म । हेंद्र जालिगनु कैमुगिदु ॥
सांद्र समुद्रव तोरिद होरगोटे । इंद्रादिदश दिक्कु तुंबि ॥ ४५ ॥

अर्थ—एक अन्य महेन्द्र जाली ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि मैं समुद्र का दृश्य दिखलाऊँगा, इतना कहते हुये तत्क्षण चारों ओर इन्द्र उपस्थित करते हुये समुद्र को दिखलाया ॥ ४५ ॥

Again another Mahendra Jali prayed with folded hands, "O merciful king, I shall show the incarnation of Ocean" He showed his art by showing the ocean all round *(45)*

पद्य—कोटे गड्डागि बान दोळ्र निर्मिस । कोट पात्रवनल्लि नेरहि ॥
सादिरियिल्लेनिसि गंधर्व नृत्य व खेंद्र । नाटक तोरिद नोडने ॥ ४६ ॥

अर्थ—एक और नृत्यकार ने आकाश में नृत्य करने वाले करोड़ों कृत्रिम पात्रों को बनाकर नृत्य कराया तब उस समय ऐसा मालूम पड़ता था कि गन्धर्व व किन्नरियां ही नाच रहीं हैं ॥ ४६ ॥

Then another artist with his art, showed crores of damsels dancing in the sky *(46)*

पद्य—अवरवरंग वनरिदे विद्याधिक । निवहके खुरु चागवनु ॥
नवनिधियागि कोट्टनु कोडुवागम । त्वनकैगेडे तडेयुंटे ॥ ४७ ॥

अर्थ—तब राजा भरत ने अनेक प्रकार की क्रीड़ा को देखकर आनन्दित हो सब कला विशारदों को सामने बुलाकर नवनिधि व और भी अनेक प्रकार की वस्तुयें भेंट में दीं । उस समय पुरस्कार देते हुये ऐसा जान पड़ता था कि कल्पवृक्ष ही इच्छित पदार्थों को दे रहा है, क्या ? ॥४७॥

Then Raja Bharat called all the artists, and gave them precious rewards. He appeared as if Kalp tree was giving all the rewards *(47)*

पद्य—पट्टणदोळु केरिकेरिगळोळुरत्ते । गट्टिद तेजिगळ्नेरेदु ॥
बेट्टविरिव वाद्यवेसेये हजार के । मुट्टलेयुतरुतिदु बाग ॥ ४८ ॥

अर्थ—उस दिन अयोध्या नगरी में जिधर देखो उधर गली कूचों में आनन्द ही आनन्द छा रहा है । हाथी, घोड़े, रथों को शृङ्गारित करके अनेक प्रकार के बाजे गाजों के सहित मार्ग में बड़े ठाट बाट के साथ जलूस निकाला जा रहा है ॥ ४८ ॥

On that day in every lane of Ayodhya felicitations were going on Elephants, horses etc were all decorated and accompanied by bands of different kinds were being taken in procession *(48)*

पद्य—मुँदे पुष्पकदल्लि गोमुखयक्षनु । संदणिवेत्त पताके ॥
हिंदे तेजिगळु सालागि कडल तेरे । द्ंददि कुणिदु नडेदवु ॥ ४९ ॥

अर्थ—सबसे आगे ऊँची फहराती हुई पताका को लेकर गोमुख यक्ष जारहा है उसके पीछे पीछे पंक्ति बद्ध घोड़े नृत्य करते हुये इस प्रकार जारहे हैं कि मानो समुद्र की लहर ही कल्लोल करती हुई आरहीं हों ॥ ४९ ॥

Ahead of every body the Gomukh Yaksh was bearing the banner in a chariot. He was a followed by a vast sea like procession of horses dancing all the time. (49)

पद्य—आडुव नृत्य वन्नलिगारति कूडे । कूडे पुष्पांजलियेसेये ॥
- पाडिंद् नडेसि पुष्पक वनु नृपनोळु । नोडलेयदिदनु सन्निधिगे ॥ ५० ॥

अर्थ—जहाँ तहाँ नृत्य होरहा है, कहीं आरती उतारी जारही है कहीं प्रजाजन पुष्प वृष्टि कर रहे हैं और कोई राजा भरत के मुख कमल को एक टक ही देख रहे है सम्राट भी उपरोक्त वातावरण को देखकर प्रसन्न मुद्रा में हैं ।। ५० ॥

Every where there was dancing, singing offering of 'arti' and showering of flowers The Raja was enjoying the sight (50)

पद्य—निंदुद् पुष्पक नृपनिदिरोळु कूडे । निंदुवु तेजिगळ्वळसि ॥
निंदल्लि निल्लदे कुणिवुतिद्दवु मक्क । चंदचंदद वाद्यगतिगे ॥ ५१ ॥

अर्थ—जब राजा भरत सिंहासन पर बैठे हुये थे तो सामने खड़े किये गये घोड़े नृत्य करने लगे , जिस प्रकार का बाजा बजता था उसी प्रकार का नृत्य करते थे ॥ ५१ ॥

The procession of horses passed by the throne. They began to dance when the Raja looked at them, to the tune of different kinds of music (51)

पद्य—रन्नद गग्गर वण्णवगेय जोलि । होण्ण हू वेसेव वासिगदि ॥
मन्नेय रोडेयन तेजियिद्दवु वीर । कन्नेय मदुवेयहंते ॥ ५२ ॥

अर्थ—गले में अनेक रत्नों के घुंघुरु और पीठ पर चित्र कारी किये हुए स्वर्ण खचित हिंडोले थे नाना प्रकार के आभरणों से सजावट किये राजा भरत के घोड़े अत्यन्त शोभा को प्राप्त हो रहे थे ऐसा मालूम पड़ता था कि मानो राज कन्याओं की सादी का मंगलमय समय ही हो ॥ ५२ ॥

There was a long line of horses arranged in rows These horses were very tastefully decorated with beautiful saddle, ornaments and other equipments "Ghunghroos" (small bells) were tied to their legs Their ringing due to restiveness of the horses gave one an impression that marriage celebrations were going on (52)

पद्य—मंजु मुसुकिदंते झल्लि कडेय रत्न । पुंजद वासिंगदिंद ॥
रंजि सुतिद्दुदु रायनेरुव पव । नंजय वेंचस्वरत्ना ॥ ५३ ॥

अर्थ—प्रातःकाल के समय घास के ऊपर पड़ी हुई ओस की बूँदें जैसी सुशोभित दिखाई देती हैं उसी प्रकार नाना वर्णों के झालर तथा रत्नों के पुंजों से शोभित राजा भरतकी सवारी का पवनजय नामक घोड़ा बहुत ही सजावट से शोभा को प्राप्त होरहा था ॥ ५३ ॥

Raja's horse named Pavanjai was well decorated with pearls and looked very beautiful like the scenery of dew drops shining on the grass blades (53)

पद्य—मंगल नील कन्नील श्रीवत्स सा । रंग कुंकुमगोर चेर ॥
कोंग कत्तल मुँज मोदलाद् वर्ण शु । द्धांगदश्वगळ् सेरेदुवु ॥ ५४ ॥

पद्य—माणिक्य जंब निंद्रायुध पचक । ल्याण तिलक मल्लिकाक्षु ॥
शोण मादल गंग वाणि मुंताद सा । म्राणिगळेसे दुवचरोदु ॥ ५५ ॥

अर्थ—मंगल, नील, कनेर, श्रीवत्स, सारङ्ग, कुंकुम वर्ण, गोर, चेर, कोंग, कत्थई, मुञ्ज इत्यादि वर्णों वाले और शुद्ध जाति वाले घोड़े अतीव शोभा को प्राप्त हो रहे थे ॥ ५४ ॥

अर्थ—माणिक्य, जाम्बुन, इन्द्रायुध, पंचकल्याण, तिलक मल्लिकाक्षु, शोणु, मादल, गङ्गवाणि इत्यादि साम्राणि जाति के घोड़े भी वहां लाये गये थे ॥ ५५ ॥

There were horses of different colour and species namely, Mangal, Neel Kaner, Srivatsa, Saranga, Kumkum, Gorchain, Kwang, Kattal, Munj, Manikya, Jamb, Indrayan, Panchkalyan, Tilak, Mallika, kush, Shone Madal, Gangwani (54-55)

पद्य—खुरदिंद नेलन होय्युवु घलगल नुलि । देरडु कालेत्ति निल्लुवुवु ॥
सरळिसि हरिंट हारि तेजिगळु भू । वर निदिरति दोरिदुवु ॥ ५६ ॥

अर्थ—उनके पांव जमीन में अधिक नहीं टिकते हुये एवं झल, झल ऐसी आवाज करते हुए दोनों पांव ऊपर उठा लेते थे, उनमें से आठ, दस घोड़े आकाश में उड़ते हुये राजा भरत के सामने आकर खड़े होगये । ५६ ॥

Several of the horses were very restive They were moving their legs constantly As soon as the horses saw the king about ten of them ran up and stood before him (56)

पद्य—सिंगर वडेदरमनेयिंदनृपन गा । नांगनेयरु नडेतंदु ॥
रंगु ढाळिप रत्नदारति गळ्नु य । चगेत्तिदरु लीलेयिंद ॥ ५७ ॥

अर्थ—शृङ्गार के साथ राजमहल से आती हुई राजा भरत की रानियों ने आगे बढ़कर अपने हाथों से बनाई हुई रत्नों की आरती से बहुत आनन्द के साथ यत्न नाम के घोड़ों की आरती उतारी ॥ ५७ ॥

Other horses well decorated were coming in a line through the palace where the queens offered "arti" to them. (57)

पद्य—पल्लिलने पुष्पक नडेदुदु मुँदके । मोळगुव वाद्य घोषदलि ॥
पलि पलिरेंव गग्गरदिंद तेजिग । ळ्वळेंदुवदर वळिविडिदु ॥ ५८ ॥

अर्थ—उस समय पुष्पक विमान के समान अनेक पालकियाँ यत्न नामक घोड़ों पर सजाई गई तब अनेक बाजे गाजे के साथ वे घोड़े आगे बढ़ गये उनके पीछे २ झल २ ऐसे शब्द करने वाले घोड़े भी पंक्ति बद्ध होकर आनन्द के साथ चले जा रहे हैं ॥ ५८ ॥

There were different kinds of bands playing music in front of the horses which were moving in proper arrangement (58)

पद्य—कुदुरेगळत्त लायके सार लोडनित्त । सदेव वाद्यद गलमे योळु ॥
मददाने योड्डु सार्तरुतिदु दाराय । निदिरागिदूरदोळाग ॥ ५९ ॥

अर्थ—मन्दिर की ओर सभी घोड़ों के बढ़ जाने के बाद नाना प्रकारके वाद्य घोष के साथ सुशोभित होकर आते हुये मदोन्मत्त हाथी दूर से सामने दिखाई दे रहे हैं ॥ ५९ ॥

When the procession of horses had passed by two big elephants were seen coming towards the Raja followed by smaller elephants (59)

पद्य—वेट्टगळिगे कालुबाल सोंडिलु दंत । हुट्टि नडेदु वप्प तेरदि ॥
कट्टाणेगळु बरुतिदु बुनडेसेतु । गट्टिदरेंव रीतियोळु ॥ ६० ॥

अर्थ—इस दृश्य को देखकर ऐसा मालूम पड़ता था कि कहीं पर्वत ही पाँव, सूंड, दाँत, पूँछ अपने आप में उत्पन्न कर चले आरहे हैं। इस तरह बहुत से बड़े २ हाथी, घोड़े, पंक्ति बद्ध होकर झुंड के झुंड अनेक शोभा के साथ चले आरहे हैं ॥ ६० ॥

It appeared as if hillocks with legs and tail fixed to them were moving up followed by small hillocks (60)

पद्य—पट्ट दानेय मेले जिनविंव सुत्तन । पुट्ट पुट्टाणेय मेले ॥
नेट्ट नेत्तिद् ध्वज चामर छत्र सं । घट्ट दोळोग्य्यनेय्दिदुवु ॥ ६१ ॥

अर्थ—पट्ट (सर्व श्रेष्ट) हाथी के ऊपर आदि नाथ भगवान का जिनविंव था । अन्य हाथियों पर आकाश को छूती हुई ध्वजा, पताका फहरा रही थी, और उनमें अनेक लोग चमर, छत्र इत्यादि लिये हुये आरहे थे ॥ ६१ ॥

The image of Lord Jinendra was placed on the "Howdah" on the Raja's elephant Other small elephants were carrying flags, banners chamar etc (61)

पद्य—प्रतिमेय पिडिदन्य रेरवारदु प्रौढ । क्षितिपन पट्टदानेयनु ॥
चतुरदिंद रॅजिकेयोळु जारदंते नि । मिंत माडि नडेसिद् मयनु ॥ ६२ ॥

अर्थ—जिस हाथी पर जिनविंव था उसमें अन्य कोई नहीं वैठा था । अतः आदिनाथ भगवान की प्रतिमा इधर उधर न खिसक जाय इस अभिप्राय से उसको मजवूती से अड़ा रक्खा था और वहुत सावधानी से महावत हाथी को ले जारहा था ॥ ६२ ॥

A very expert man was sitting on the back of the Raja's elephant guarding the image, since it was difficult for any body except the Raja to sit on its back (The elephant would not allow it) (62)

पद्य—नोसल गन्नडि ढणरेंव होक्कुळ घंटे । मिसुनि वरहदहावरणा ॥
वसिव गन्नद मदधारे यिंदानेग । ळ्मसगिवंदुवुरायनेडेगे ॥ ६३ ॥

अर्थ—गले में वंधे हुये अनेक प्रकार के आभरण व दर्पण और नाभि के नीचे टन, टन, घन, घन, शब्द करती छोटी २ घन्टियां व घन्टा तथा और भी अनेक उपकरणों व शोभा से युक्त मदझरित सभी हाथी राजा भरत के सामने आये ॥ ६३ ॥

A big bell was hanging from the neck of the elephant There was another bell round the navel Both the big elephants came before the king with the ringing of the bells (63)

पद्य—विजिय् पर्वतवेंव पट्टदानेय मेले । रजतादि योडेयन प्रतिमे ॥
विजयंगैसिरे काण लोडने राय । निज भक्तियिंदेद् निंदा ॥ ६४ ॥
करिगळेल्लवु तम्म सोंडिलनेत्ति श्री । करदिंद सेसेय सूसि ॥
स्वर दोरि वलगाल दंतद मेलिट्ट । शिर वागिदुवु चक्र धरगे ॥ ६५ ॥
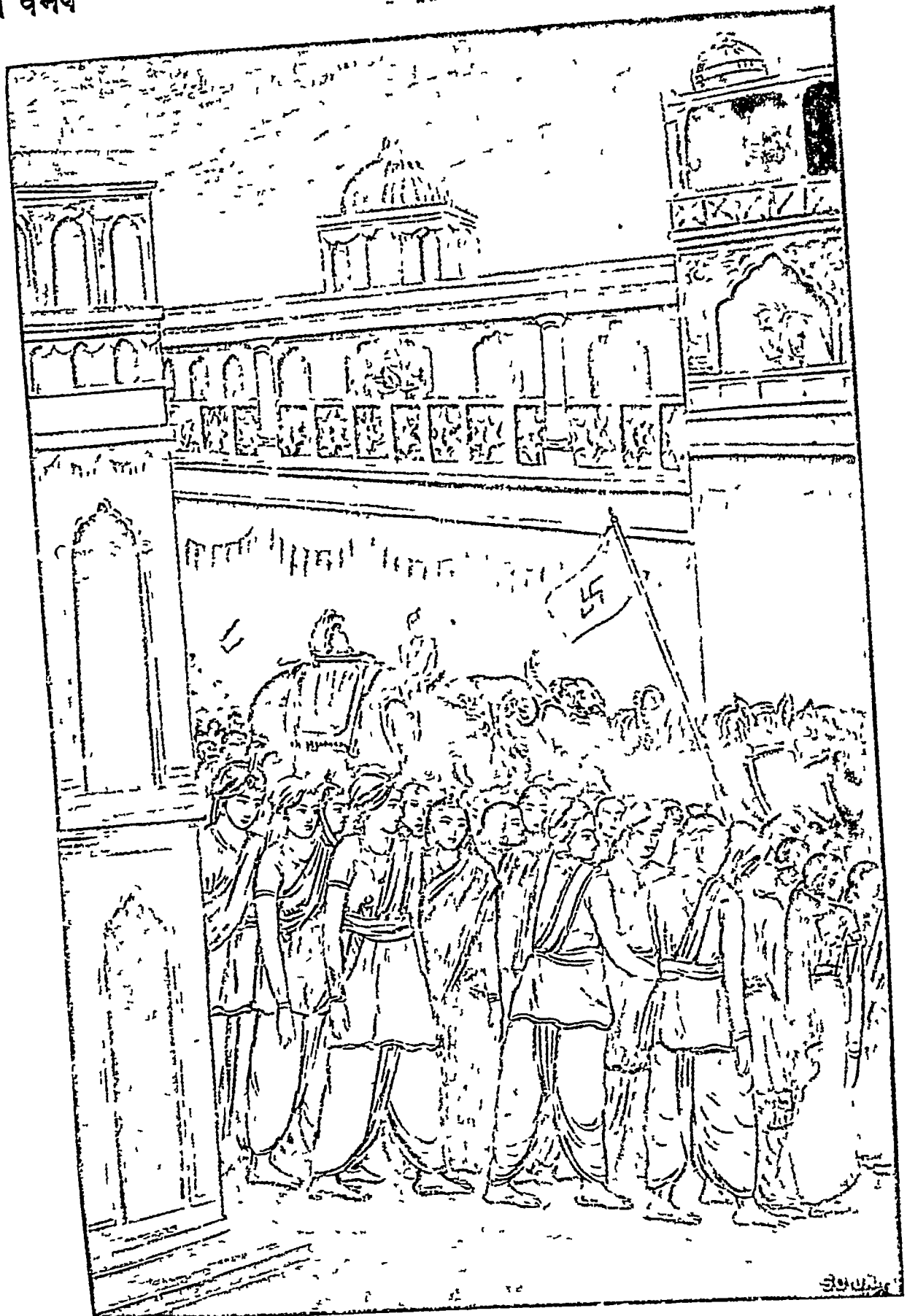
नवरात्रि के नौ दिन तक अयोध्या नगर में राजा भरत की आज्ञा पूर्वक मन्त्री ने रथोत्सव तथा धर्म प्रभावना किया गया।

यह चित्र गुणमाला देवी धर्मपत्नी ला० सुखपालदास जी जैन तिलोकपुर की ओर से छपा।

अर्थ—विजय पर्वत नाम के पट्ट हाथी पर रजताद्रि कैलाशाधिपति (आदिनाथ भगवान) की प्रतिमा को आया हुआ देखकर राजा भरत तुरन्त ही सिंहासन से उतरकर विनय पूर्वक हाथ जोड़ते हुये खड़े होगये ॥ ६४ ॥

अर्थ—सभी हाथियों ने अपनी २ सूंड को उठाकर आनन्द के साथ राजा भरत के ऊपर शेप चढ़ाया इसके बाद अपने पैर को दाँतों पर उठाकर बहुत प्रेम से राजा भरत को नमस्कार किया ॥ ६५ ॥

The Vijai Parbat elephant was carrying the image of Lord Adinath on its back

The Raja, as soon as he saw the image of the Lord on the elephant stood up, and paid his respects Both the elephants bowed to the Raja Other elephants also followed suit (64-65)

पद्य—अरसिय रेल्लरु बागिलोळ्गे निंदु । पुरुजिन बिंबव नोडि ॥
करगळ मुगिदुकळ्हिदरारतियं सौं । दरिय रेत्तिदरति यिंद ॥ ६६ ॥

अर्थ—सभी रानियाँ अपने २ महल के दरवाजे पर खड़ी हो कर जिनप्रतिमा को देखती हुई आनन्द के साथ कर बद्ध हो वे सुन्दरियाँ दासियों के द्वारा लाई गई रत्न रचित आरतियाँ उतार रही हैं ॥ ६६ ॥

The queens bowed to the Lord's image with clasped hands and offered Arti with great joy (66)

पद्य—बोग्गने गज घटे नूंकि नडेदुवत्त । दिग्गज घटेनडेवंते ॥
लग्गे दोरितु बाद्य जिननिळयद मुदे । जग्गिसि तेरेल्लेवाग ॥ ६७ ॥
तारगे सुसुकिद नाल्कु मेरुगळु सं । चार दोपंते नाल्देशेगे ॥
भूरिदीप गळिंडि किरेदिर्द नाल्कु हों । देरु नाल्देशगेहरिदुवु ॥ ६८ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार के बाजे गाजों के सहित हाथियों के झुंड आगे बढ़ते हुये मन्दिर के दरवाजे पर खड़े हो गये तब सुरशिल्पियों द्वारा निर्माण किये हुये मेरु पर्वत के समान अत्यन्त विशाल रथों को लोगों ने खींच कर आगे बढ़ाया ॥ ६७ ॥

अर्थ—चार दिशाओं मे खड़े किये गये चारों रथ रत्नादि दीप मालाओं से चमकते हुये अतीव शोभा को प्राप्त होरहे थे मानो चार मेरु पर्वत ही तारागणों से घिर कर शोभा को प्राप्त हो रहे हों ॥ ६८ ॥

When the elephants reached the temple, the image was then installed on a chariot dragged by devotees Then the procession proceeded ahead

There were four high topped chariots well decorated with jewels They looked like four Meru mountains with stars clustering round them (67-68)

पद्य—सोम वीथिगळ्ळि सूर्य वीथि । स्वामिय प्रथेमेय धरिसि ॥
भूमियिंद मर लोकव मुट्टि नाल्कु म । हामेरु रथ चरिसिदुवु ॥ ६९ ॥

अर्थ—पृथ्वी से लेकर आकाश को स्पर्श करते हुये मेरु पर्वत के समान वे चारों रथ भगवान की प्रतिमाओं से सुशोभित चारों दिशाओं में चन्द्र मार्ग व सूर्य मार्ग से घूम रहे हैं ॥ ६९ ॥

The chariots proceeded ahead on the "Chandra Marg" and "Surya Marg" with the image of the Lord The chariots were so high topped that it appeared as if Meru's peaks were touching the sky. (69)

पद्य—पल्लवसत्तिगेसुत्तत् गुवनिड्ड । झल्लि माणिक्यद्कलशा ॥
अल्लाडि दनिमाळ्प घंडे पताकेय । गेल्लदिनडेदुवा तेरु ॥ ७० ॥

अर्थ—उन विशाल रथों के चारों तरफ पल्लव, दर्पन, झालर माणिक, मोती रत्न आदि शोभा के साथ लटक रहे हैं, हिलने, डुलने से घन्टिओ की मधुर ध्वनि हो रही है । ध्वजा, पताका लहराते हुए बहुत लीला के साथ रथ आगे बढ़ते जा रहे हैं ॥ ७० ॥

With mirrors, kalash, jhulas, bells, and banners, the chariots were proceeding (70)

पद्य—हरिदुवु मूरुदिक्किगे मूरुतेरु ग । ळररे मत्तोंदुतेराग ॥
अरमनेयत्त हरिदुदवनीशन । हरसल रुहनेयदुवंते ॥ ७१ ॥

अर्थ—तीन दिशाओं में तीनों रथ विहार करते हुये आगे बढ़े जा रहे हैं , और एक रथ राजा भरत के महल की तरफ घूमकर बाद में भगवान जिनेन्द्र के मन्दिर की ओर आया ॥ ७१ ॥

Three chariots proceeded on three different sides and the fourth was taken towards the king to please him. (71)

पद्य—उरिवाण चेळ् वाणगळ विड्डत परि । परियल्लि पुष्प वाणगळा ॥
सुरिसुत वरुतिर्द रतिं काररु तर । तर विडिदातरेत्रळिसि ॥ ७२ ॥

पद्य—चार नारियर पात्रगळिंद् पाडिंद् । भेरि शंखद् घोषदिंद् ॥
तेरु तेरळि बंदु निंदुदु कडेय ह । जारद् मुंदे विंकदोळु ॥ ७३ ॥
मेले मेरेव पळुकिन सिद्धबिंबके । भूललनेश कैमुगिदा ॥
मेळु मेच्चि नोळु यसस्वति देविथि । दीलिसि भक्ति माडिदळु ॥ ७४ ॥

अर्थ—रथ के चारों तरफ जय जयकार के साथ अनेक लोग पुष्प वृष्टि आतशबाजी छोड़ रहे थे और भी नाना प्रकार के पुष्पवाण व गुब्बारे आकाश में उड़ाते हुये आनन्द के साथ रथ को घुमाकर ला रहे थे ॥ ७२ ॥

अर्थ—अनेक नर, नारियां और नत्य करने वाली नर्तकियाँ, गायक लोग महान् शब्द से गर्जने वाले नक्कारे, भेरी, शंख आदि वाद्यों व जय जयकार पूर्वक घोषणाओं के साथ रथोत्सव करते हुये , राजा भरत के दरबार के सामने आकर खड़े होगये ॥ ७३ ॥

अर्थ—रथ पर विराज मान किये हुये सिद्ध भगवान के बिंब को देखकर राजा भरत अति हर्षित हुऐ और हाथ जोड़ते हुये प्रणाम किया । तत्क्षण मातायशस्वी देवी ने भी आनन्द व भक्ति के साथ भगवन प्रतिमा को नमस्कार किया ॥ ७४ ॥

Fire works were being exhibited on all sides Then there were ladies behind the chariots and number of people were dancing in front of the image and playing on instruments The chariots then came back and stood before the palace Raja Bharat, bowed with clasped hands to the Lord, and at the same time his mother also bowed to the image with devotion (72-74)

पद्य—सोसेयरु रचसिद् रत्नदारतिगळ । हसनादु बेंदोल्दु नोडे ॥
ओसेदु कळुहिदरु तेर मेलनदेव । गेसगिद् रुचित दर्चनेया ॥ ७५ ॥

अर्थ—मात यशस्वी देवी ने अपनी बहुओं की बनाई हुई आरती से भगवान जिन देव की आरती उतारी और मन में बहुत ही प्रसन्न चित्त हुए बाद में उपस्थित सभी जनसमुदाय ने नमस्कार किया ॥ ७५ ॥

The queens offered 'arti' there after with precious jewels It was a very pleasant sight Then worship was performed in proper manner (75)

पद्य—तिरुगितु तेरु जिनालय दत्त के । सरि पीठदोळु राय कुळ्ळिता ॥
पुरेयिद्दु दांदु रात्रिय जिन महिमेयी । परि नडेयितु नवरात्रि ॥ ७६ ॥

अर्थ—तत्पश्चात रथ लौटकर जिन मन्दिर की तरफ चला गया बाद में राजा भरत रत्नों से सुशोभित स्वर्ण सिंहासन पर गौरव के साथ विराजमान होगये ॥ ७६ ॥

The chariots then returned towards the temple Raja Bharat there after sat down on his throne Every night this worship and rituals were performed. Every day different festivities were celebrated *(76)*

पद्य—पाड्यद दिन मोद्लागि नवमि मुट्ट । कुड्य लंघनदश्व मेरेदु ॥
ताड्यमानद वाद्यरव मुगमे नडेदुदु । जाड्य वळिदु नवरात्रि ॥ ७७ ॥

अथ— इस प्रकार शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त अनेक प्रकार की धर्म प्रभावना पूर्ण किया , नाना प्रकार के वाद्यरव के साथ भव्य जीवों के कल्याणार्थ नव दिन तक नवरात्रि महोत्सव मनाया ॥ ७७ ॥

From the 1st to 9th, for 9 days, every kind of festivities was celebrated up to Mahanaumi with the advice of the minister. *(77)*

पद्य—ओंदोंदु दिनके वेरोंदोंददु परिय ते । रोंदोंदु परिय विद्यार्था ॥
ओंदोंदु परिय प्रभावनेयिंदर्ति । संदेसगितु महानवमि ॥ ७८ ॥

अर्थ—प्रति दिन भिन्न २ प्रकार के शृङ्गार, शोभा, प्रभावना व रथ यात्रा आदि लोगों के देखने मे आते थे ॥ ७८ ॥

Shanti Kriya, Muni Tyag, Vai Vrati were performed and people kept themselves busy in these pious acts *(78)*

पद्य—शांतिक दिंद दानगळिदं त्याग भो । गातंराळद लीलोयिंद ॥
अतंरायत्ररायनरेयद्विमन्त्रि पे । ळ्दंते वर्तिसिद नुत्सववा ॥ ७९ ॥
राजर राजमान्यगळिदं सकल वि । प्राजनगळ गोष्टि यिंद ॥
भूजनगुरुजनपरिजन लालने । राजिसलर्ति माडिदनु ॥ ८० ॥

अर्थ—कहीं शांति पाठ, कहीं दान, त्याग, कहीं भोग, कही वैय्यावृत्ति आदि शुभ क्रियाओं को करते हुए लोग उत्सव के साथ अपने समय को व्यतीत कर रहे हैं ॥ ७९ ॥

अर्थ—कहीं राजाओं का सन्मान व कहीं विद्वान लोगों का आदर होरहा है कही ब्राह्मण गण, पुरजन, परिजन इत्यादि लोगों के साथ उचित सत्कार करते हुये नव दिन तक आनन्द के साथ समय व्यतीत किया ॥ ८० ॥

Feudatory chiefs, learned persons were honoured, all other persons were also shown proper courtesy, and the time was spent in the manner *(79-80)*

पद्य—नवमिय रात्रि योळोलगहरिवुदें । ववसरकोंदिष्ड्रु मुंचे ॥
युवराज नाप्त कंडनु वंदुसाष्टांग । दवनतियोळ् काणकेयिक्कि ॥ ८१ ॥

अर्थ—नवमी के दिन दरवार समाप्त करने के लिये अभी कुछ समय अवशेप है इतने में ही एक सुन्दर दीर्घकाय भद्र पुरुप ने दरवार में प्रवेश कर महाराज को साष्टाङ्ग नमस्कार किया और भेंट चढ़ाकर हाथ जोड़ते हुये खड़ा होगया, इस पर भरत जी ने योग्य स्थान पर वैठने के लिये अनुमति दी ॥ ८१ ॥

On the Naumi day a little time was left for the closure of the Darbar, when a hand some person entered the court He presented gifts before the king and bowed to him Bharat Ji permitted him to sit in a proper place *(81)*

पद्य—कामदेवन मंत्रि प्रणय चंद्रयवेंव । नाम कोप्पुवनु विवेकि ॥
भूमीश ननुयतदिंद कुळितनुरा । जामात्यनोत्तिनोळाग ॥ ८२ ॥

अर्थ— यह नवागन्तुक पुरुप कौन है यह राजा भरत जी के लघुभ्राता युवराज वाहुवली का मन्त्री प्रणयचन्द्र है, जैसा नाम है वैसा ही गुणनाम, विवेकी और दूरदर्शी है ॥ ८२ ॥

Who was this gentleman ? He was Prnaya Chandra the minister, of his younger brother, Bahubali He was very learned as his name indicated He was very able and farsighted *(82)*

पद्य—किरिदु प्रसंग वनत्तित्तनुडिदाडि । किरिदु वेळेयनुंकितन्न ॥
किरियन स्थितिय केळुवेन दंरायम । त्तु रेमंत्रियत्तनौडिदनु ॥ ८३
एनें प्रणयचंद्रम वाहुवलि निच्च । लेनु लीलेयो ळिरु तिहनु ॥
ई नम्म पयनव केळदेनें नुडिदनें । दानरपति केळ्दनवना ॥ ८४ ॥

अर्थ—कहीं प्रसंगोपत्त व वातचीत होने के पश्चात् कुछ समय वीताते हुए नव मन में यह विचार किया कि मेरे भाई वाहुवली की स्थिति अर्थात् समाचार पूँछने के निमित्त से प्रणयचंद्र के मुख की ओर देखा ॥ ८३ ॥

अर्थ—क्यों प्रणयचन्द्र ! वाहुवली आनन्द से तो है ? उनका समय आनन्द लीलामय तो व्यतीत हो रहा है ? हमारे दिग्विजय प्रयाण के समाचार को सुनकर क्या कहा ? सुना है या नहीं ? इसप्रकार राजा भरत ने पूछा ॥ ८४ ॥

After a little conversation Bharat enquired, "How is my brother and how is he spending his time and what is his daily routine and what is his reaction when he heard the news of my undertaking the victory of the world Is he doing well ?" (83-84)

पद्य—एंदरा नण स्वामिमत्ते विन्नविसुवे । नेंदु कैमुगिदेद्दु निदां ॥
कंदर्प निरवना चक्रेशनिदिरोळि । सेंदु सूचिसिदना सचिवा ॥ ८५ ॥
देवर कृपेयिंद देवर सोदर । गात्र चिंतेय तोडकिल्ल ॥
आवाग सुखदोळो लाडुतिहनु पुरु । देवनात्म जनल्ते येंदा ॥ ८६ ॥

अर्थ—भरत जी के प्रश्न को सुनते ही प्रणयचन्द्र उठकर खड़ा हुआ और विनय पूर्वक हाथजोड़ते हुये कहने लगा कि फिर कहेंगे, आपकी कृपा से आपके सहोदर भाई कुशल पूर्वक है, इसप्रकार मंत्री ने कहा । उन्हें कोई चिन्ता तथा किसीप्रकार की बाधा नहीं है वे सदा सुखी जीवन व्यतीत करते हैं क्योंकि वे भी भगवान आदिनाथ के पुत्र हैं न ! ॥ ८५-८६ ॥

On hearing the questions Pranya Chandra stood up and with clasped hands and respect said, "Rajan ! with your good wishes your brother is quite well, he has no anxieties, nor any obstruction, and he is spending his time with great pleasure, because he is also the son of Lord Adi Nath" (85-86)

पद्य—काव्य नाटक काम शास्त्र दोळोम्मोम्मे । दिव्य नाटकाग दोळोम्मे ॥
नव्य योवनेय रोलगदोळु निच्च का । लव्ययगळमाडुतिहनु ॥ ८७ ॥

अर्थ—हे स्वामिन ! कभी २ वे काव्य व नाटक का श्रवण करते हैं एवं कभी नृत्य देखते हैं और कभी २ अन्य प्रकार के खेलो में भी मग्न रहते हैं । कभी २ अन्तःपुर में कामिनियों के साथ क्रीड़ा करते हैं ॥ ८७ ॥

"Sometimes he listens to poems, sometimes looks dramatic performances, sometimes, dances and sometimes enjoys the company of the ladies" (87)

पद्य—शृङ्गार वनदल्लि कोळदल्लि होन्न मा । डंगळोळरमनेयल्लि ॥
तंगाळि तुंबि कोगिले गिळि कौळर्वक्कि । हेंगळोप्पिरे हाचु गळेवा ॥ ८८ ॥

राजा भरत एक दिन सभा समाप्त करने के पश्चात अपने मंत्री बुद्धिसागर जी के साथ बैठे थे कि इतने में पौदनपुर से उनके भाई बाहुबली द्वारा भेजा हुआ प्रणयचन्द्र मन्त्री आकर उपस्थित हुआ। तत्पश्चात ये दोनों (भरत व प्रणयचन्द्र) कुछ गोपनीय वार्तालाप कर रहे हैं।

[यह चित्र राजमती देवी धर्मपत्नी [illegible] जैन, हरियाणा की तरफ से छपा।]

अर्थ—कभी २ शृंगार वन में क्रीड़ा करने के लिये जाते हैं। कभी महल में अपनी प्रियतमाओं के सायठंडी हवा लेते हुये कोकिल, तोना आदि का विनोद देखकर आनन्दित होते हैं ॥ ८८ ॥

"Sometimes he goes for pleasure into the forest, sometimes he enjoys the company of his queens looking at the play of different kinds of birds in his palace *(88)*

पद्य—भोगव भोगिसुतिहनल्लि नेरे मग्न । नाग दोंदि निसडि गडिगे ॥
योगव नुञ्जु गिसुवनात चक्रियों । दागि हुट्टिनदल्ले स्वामि ॥ ८९ ॥

अर्थ—परन्तु सदा भोगों को भोगते हुये भी उसमें एक दम मग्न होकर योग का भी अभ्यास करते हैं हे राजन्! वे भी तो आपके सहोदर हैं न! ये हमारे राजा की दिनचर्या है, अस्तु! आपके दिग्विजय प्रयाण की बात उन्होंने सुनी है अतः वे बड़े प्रसन्न हुये ॥ ८९ ॥

"He enjoys the pleasant objects but with a sense of detachment and practises self-absorption He is after all your brother. This is his daily routine He has heard the news of your ambition to conquer the world and he has very much appreciated it" *(89)*

पद्य—इदु नम्म नृपन वर्तनेय दंतिरलि मं। पदिसेदेवर प्रयानवनु ॥
मदन केळ्दिनदु सन्तसु दन्नाजिय । गिं दिरिल्ल धरे काण्बुदेंदा ॥ ९० ॥
देवरोळ्प्पाजिगरसरोळण्णाजि । गावन सरिगाण बहुदु ॥
नावेल्लरवर नेनेदु बाळ्व बेंबनु । देव निन्ननुज नेम्मोडने ॥ ९१ ॥

अर्थ—हे राजन्! आपकी दिग्विजय का समाचार सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और आगे आकर मिलने को भी कहा है। इसके बारे में उन्होंने हमसे ये कहा कि मेरे बड़े भाई ने जो दिग्विजय का विचार किया है वह स्तुत्य है यह उनकी वीरता के योग्य कार्य है, उनका सामना करने वाला इस पृथ्वी में कौन है ॥ ९० ॥

अर्थ—गौरव पूर्ण शब्दों में ये भी कहा कि देवों में पिता जी की, राजाओं में मेरे बड़े भाई की बराबरी करने वाला इस पृथ्वी में कौन है। हम लोग तो उन दोनों का स्मरण करते हुये जीते हैं। इस प्रकार प्रणयचन्द्र मंत्री ने महाराज भरत से कहा ॥ ९१ ॥

He told me that he was very much pleacsed to hear the news of your

determination to conquer the world It is a fit task for your bravery and who can match you? Then he also spoke with a little tinge of pride that in this earth who was there to match his father among gods and his brother among men He exists on account of their blessings (90, 91)

पद्य—वंदु देवर कंडु वुद्धि गलिसिकोंबे । नेंदेम्म नृपनोम्मे बगेदा ॥
वंदु शास्त्रव केळ तोडगिद् मोदलद । रिंदेन्न निल्लिगड्डिदनु ॥ ६२ ॥
हेळुव रात्म प्रवाद व मुनिगळु । केळुवे नेम्म वनीशा ॥
नाळे नाडिदि नोळु मुगिवुदा ग्रंथ भू । पाल वंशांबर भानु ॥ ६३ ॥

अर्थ—और उन्होंने ये भी कहा कि आपके सहोदर इस समय आशीर्वाद लेने के लिये आने वाले थे परन्तु कोई अनिवार्य कार्य होने से नहीं आसके। कारण कि वे आजकल शास्त्र सुनने में दत्तचित्त हैं एक आचार्य मुनि महाराज आत्मप्रवाद नाम के शास्त्र का प्रवचन कररहे हैं उसे आपके सहोदर सुन रहे हैं सम्भव है शायद कल परसों तक पूर्ण हो जायेगा ॥ ९२-९३ ॥

He (minister) further added, "Your brother was about to come to take your blessing, but due to unavoidable reasons could not present himself He is busy busy in listening to a 'shastra' (scared book) since there is 'chaturmas' of a saint The saint is giving discourses on Atma and your brother is listening to it It may be possibly be completed within a day or two (92-93)

पद्य—इन्नोंदु गूढार्थ वुंटेंदु नृपतिगे । सन्ने गाणिसिदना मंत्रि ॥
चेन्नायतु साकिन्नु कुळितु सुरेंदु रा । जोन्नत पेळे कुळितनु ॥ ६४ ॥
गूढार्थ वुंटेंदु मंत्रि कुळ्ळिरलल्लि । प्रौढिरिहरुमूढरिहरे ॥
प्रोढ चक्रिगे कैय मुगिदरेल्लरु तम्म । प्रोढि गणिसि तोलगिदरु ॥ ६५ ॥

अर्थ—हे राजन् एक और गूढार्थ बात आपसे निवेदन करनी है उसे भी सुनने की कृपा करें ये बात सुनने के बाद राजा भरत ने उस मन्त्री को बैठने की आज्ञा दी ॥ ९४ ॥

अर्थ—गूढार्थ शब्द को सुनते ही बुद्धमान लोग वहाँ से चले गये अब वहाँ एकान्त होगया, उपस्थित सभी लोग चतुर बुद्धि वाले थे, इसलिए सभी, महाराज को प्रणाम करके चले गये ॥ ९५ ॥

"I have one more thing to say, my lord, but it is a matter of policy." Raja asked him to take his seat Hearing that a confidential matter was to

be discussed all intelligent people left the court People in those days were not lacking in intelligence (94-95)

पद्य—प्रजे परिवार मंडलिक सामंत व । त्यजद् सूळेयरु केळेयरु ॥
गज वजिसुत हरिदरु कंड कडेगे भा । वजनरण नोलगदिंद् ॥ ९६ ॥
आट काररु करणिकरु विद्वांसरु । कोटि भटरु लक्ष भटरु ॥
नोटक रेल्लरु हरिदरु नृपन स । घाट दोलगव्र कीर्तिसुत ॥ ९७ ॥
सागि दोळ् सेवकरु निंदरु बुद्धि । सागर निंद् नोत्तिनोळु ॥
आग रायन कूडे प्रणयचन्द्रममंत्रि । कूगदोय्यय्यने नुडिदा ॥ ९८ ॥

अर्थ—प्रजा परिवार, सामन्त, मन्डलीक, मित्र, विद्वान, नृत्यकार, खेल करने वाले, नाटक, अर्थात् देखने वाले इत्यादि सभी लोग राजा भरत का यशगान करते हुए बहुत आनन्द पूर्वक सब के सब क्षणमात्र में जब वहाँ से चले गये सिर्फ महाराज का बुद्धिसागर नाम का मन्त्री व सेवकगण ही वहाँ पर रह गये तब प्रणयचन्द्र धीरे २ कहने लगा ॥ ९६-९८ ॥

Subjects, family members, ministers, artists and poets ets all disappeared in a moment Then, when all had left, Pranya Chandra stated with low voice At that time Raja's minister was also present (96-98)

पद्य—मातेनु पेरतल्ल स्वामिय निज । मातेय लोकमातेयनु ॥
तातनर्धांगि ता तन्न पुरकंग । जातनेयतं दोयुवे नंदा ॥ ९९ ॥

अर्थ—स्वामिय निज माता, लोक माता अर्थात् पिता की अर्धाङ्गिनी को आपके छोटे भाई अर्थात् बाहुबली जी ने पौदनपूर ले जाने का विचार प्रकट किया है। उसकी सूचना लेकर आपके पास आया हूं ॥ ९९ ॥

"Rajan ! there is nothing particular Your brother has expressed his wish to take your mother to Podan pur during your absence from the kingdom" (99)

पद्य—राय नीनिळेय साधिसि सुगळ्चक्र । श्रीयशस्वति महादेवियवा ॥
कायजतन्ननगरिगोयेवनेंदनु । तायविहुइनेपुत्रा ॥ १०० ॥

अर्थ—बाहुबली जी ने कहा है कि क्या वह मेरी माता नहीं हैं ? जो आपके दिग्विजय करके लौट आने तक माता यसस्वनी देवी को हम छोड़ देंगे क्या हम उनके पुत्र नहीं हैं ? ॥ १०० ॥

His intention is to keep the mateshwari with him as long as you do not return from your Digvijay. Can a son remain separate from his mother ? (100)

पद्य—घनविल्ल शास्त्र नाडिदु मुगिवुदु मरु । दिन दोळ्गज ताने वंदु ॥
जननीय विजयंगैसुवेनेंब सू । चनेगेन्न कळुहिद नेंदा ॥ १०१ ॥
मगन मनेगे तायि होहरे तायना । मग ताने करेदोय्यरिदके ॥
तेगे विगियेनेम्म नेन केळुवुदु तानु । मगनानुमगनम्मगल्ते ॥ १०२ ॥
अम्माजि ननगोजे कालिसुव रल्लदे । अम्मगानोंद सोल्लिपेने ॥
तम्मगेकेणिकेतन्नम्मनतन्नूर्गे । सुम्मनैदिसलिहोगेंदा ॥ १०३ ॥

अर्थ—बहुत देरी नहीं है, कल या परसों वहाँ भी शास्त्र की समाप्ति हो जायगी उसके बाद स्वयं ही यहाँ आकर मातेश्वरी को पोदनपुर में ले जायेंगे। इस बात की सूचना देने के लिये उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है ॥ १०१ ॥

अर्थ—तब राजा भरत ने कहा अगर मेरी माता तुम्हारे जवाब के अनुसार उसके घर चली जायेगी, तो क्या मैं पुत्र नहीं हूँ ? अतः मैं भी माता को रोक सकता हूं ॥ १०२ ॥

अर्थ—क्या मैं इस बात को माँ से कह सकता हूँ कि तुम वहाँ जाओ ? क्या मैं माता को उपदेश देसकता हू ? मैंने तो माता से ही बुद्धि सीखी है और उनकी आज्ञा मानता हूं। चाहे वहाँ रहे, चाहे यहाँ रहे। माता की इच्छा है ॥ १०३ ॥

On hearing these words of Pranya Chand, Bharat said, "There is nothing new for a mother to go to her son or for the son to take his mother. What was the necessity of asking me about it. He is also her son and has the some right as I have in this matter I work under's mother commond It is my duty to carry out her wishes My respected mother always gives me religious advice and teaching I can say nothing to her If brother wants to take her, he may do so What can I say ?" (101-103)

पद्य—मोदलेदेवरतम्मदेवरंताडिद । निदकारकेळ्वेकेंदु ॥
अदु मतवल्ल स्वचिस बेकु विभुविगें । दिदक्रूतूबंदेनानेंदा ॥ १०४ ॥

अर्थ—यह सुनकर प्रणयचन्द ने फिर कहा कि स्वामिन् ! आपने जैसा विचार प्रकट किया उसी प्रकार आपके सहोदर ने भी कहा था कि इस काम के लिये पूँछने की क्या आवश्यकता है

बाहुबलि के प्रति राजा भरत और बुद्धिसागर मन्त्री गुप्त वार्तालाप कर रहे हैं।
धर्मपत्नी ला० श्रीराजदास जैन लहरपुर द्वारा यह चित्र प्राप्त हुआ।

परन्तु मैंने ही उनसे निवेदन किया कि यह ठीक नहीं है, सूचना तो अवश्य देनी चाहिये इसलिये मैं मुख्यतया आपको सूचित करने के लिये ही आया हूँ ॥ १०४ ॥

On hearing this Pranya Chandra said again, "My lord, your brother has expressed exactly the same ideas as you have been pleased to say that there is no necessity to ask you about such a matter, but I respectfully pointed out that it was not quite proper and it is necessary to give this information to you For this reason I have come to inform you" *(104)*

पद्य—उत्तमनैं नीनु बिडदेम्म भुजवलि । योचि नोळ्पि मंत्रियेंदु ॥
उत्तम दुडुगरेयित्त् वीळ्कोडलु कैं । येचि मुगिदु होदनवनु ॥ १०५ ॥

अर्थ—भरत जी प्रणयचन्द्र की बात सुनकर मन ही मन में हंसते हुये एवं मुस्करा कर कहने लगे कि प्रणयचन्द्र तुम बहुत ही बुद्धिमान् हो, मुझे तुम्हारे कर्त्तव्य पर बड़ी प्रसन्नता हुई अतएव तुम बाहुबली के पास में ही रहो ऐसा कहकर उसको उत्तम वस्त्राभूषण पुरस्कार में दिये ! प्रणयचन्द्र भी भरत जी को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुये वहाँ से चला गया ॥ १०५ ॥

Bharatji laughed within himself on hearing this and said, "Pranaya Chandra, you are very wise, I am very glad on the manner you have performed your duty. You should remain with Bahubali" He then gave him rewards of precious jewels and clothes Pranya Chandra bowed to the Raja and left the place *(105)*

पद्य—अवनत्त सागिद्ना राय नोडनित्त । युवराज नंतरंगवनु ॥
तवे तन्न मनदोळा लोचिसि नसुनगे । चव चविसुत मत्ते नुडिदा ॥ १०६ ॥
बुद्धिसागर मंत्रि कंडेय भुजवलि । युद्धतिकेयनेम्मवळिगे ॥
शुद्ध चित्तदोळेयुद् लोल्लदे शास्त्रद । शुद्धिगाणिसि बिट्टनेंदा ॥ १०७ ॥

अर्थ—प्रणयचन्द्र के बाहर जाने के पश्चात् राजा भरत, बाहुबली की वृत्ति पर मन में ही कुछ हसे फिर प्रकट तौर पर अपने मंत्री बुद्धिसागर से कहने लगे कि देखो तो सही मेरे भाई की उद्दण्डता को, वह मन में कुछ मायाचार रखकर यहाँ नहीं आना चाहता इसलिये बहाना बनाकर उसने प्रणयचन्द्र को भेजा है। वह भी शास्त्र सुनने का बहाना लगाया है ॥ १०६-१०७ ॥

After Pranya Chandra had left Bharat laughed within himself at the cle-

verness of Bahu Balı Then saıd to his minister, "Look Buddhı Sagar, the audacıty of my brother He does not want to come here for certain reasons whıch out of deceitfulness he does not want to clarıfy. For thıs reason he has sent his man for puttıng forward some excuse It is also a pretence that he is hearing a shastra (106-107)

पद्य—दर्पवे भुजबलिगदर मेलिप्डु कं । दर्पनेंबुदु हेम्गे तनगे ॥
अपर्ट तनगेंब परिपिदु हुंडाव । सर्पिणियलते ई काला ॥ १०८ ॥
वणिणसि प्रणयचन्द्रन पेळ्दिदेल्लवु । वणण गारिकेय प्रेमोक्ति ॥
अणणनेंदेनगे दोर्बलि भक्ति माडनु । तणण गिरलिननगेनु ॥ १०६ ॥

अर्थ—यह भी क्या अच्छा उपाय है, उसे मैं कमदेव हूं इस बात का अभिमान् है और वह यह समझता है कि मेरी बराबरी करने वाला कोई नहीं है यह तो हुंडा अवसर्पिणी काल का ही प्रभाव है। प्रणयचन्द्र ने असली बात को छिपाकर ढंग चढ़ाते हुये बात की, मैं इस बात को अच्छी तरह जानता हूं कि मेरे प्रति (बाहुबली) भाई के नाते भक्ति प्रेम नहीं करेगा, ठीक है उसकी मर्जी रही, इसमें मेरे को क्या पड़ी है ॥ १०८-१०९ ॥

It ıs a good polıcy He is proud of the fact that he ıs one of the Kamdevas He thınks that he ıs above all No one can equal hım It ıs all due to the effect of Hunda Avasarpını era Pranya Chandra concealed the real purpose and has put the matter ın a very dıplomatıc manner. I know ıt very well that Bahu Balı has no brotherly devotıon towards me. All rıght, let hım do what he thınks proper I cannot help ıt nor I have any concern wıth thıs (108-109)

पद्य—इवनिप्डु युवराजनेंब गर्व दोळिर । लिवनिद नेगिरियवरु ॥
रविय कंडुत्पलदंतोरे यागिह । रिविरिगू दुगुडवेम्मोडने ॥ ११० ॥

अर्थ—बाहुबली तो युवराज है और छोटा भाई क्या कम है ऐसा सोचते हुये उसे अभिमान् भी है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने पर नील कमल अपने मुख को छिपा लेना है उसी प्रकार मेरे साथ उसका व्यवहार है ॥ ११० ॥

Babu Balı is the crown prınce That ıs the reason of hıs prıde He thınks that he ıs ın no way ınferıor to me Just as Neel Kamal closes ıts petals at the rays of sun, he has behaved exactly lıke thıs wıth me (110)
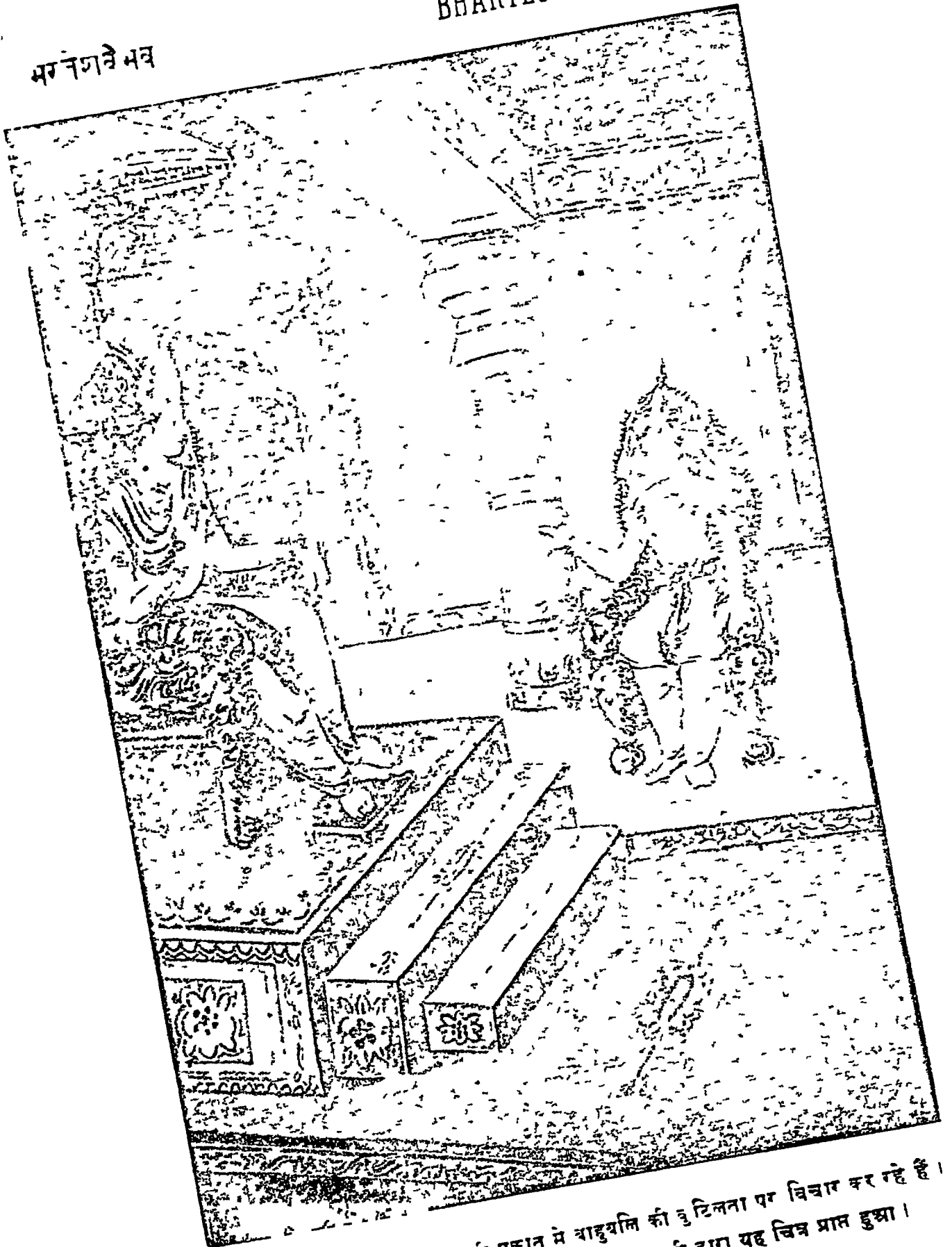
राजा भरत और बुद्धिसागर मन्त्री एकान्त में बाहुबलि की कुटिलता पर विचार कर रहे हैं।
धर्मपत्नी ला० कपूरचन्द्र (बड़े) जैन वागरकी द्वारा यह चित्र प्राप्त हुआ।

पद्य—अम्माजिय रोळगप्पाजिय रोळगेम्म । तम्मंदिरिगे महाभक्ति ॥
नम्म कंडरे तमगरस विरस पर । बोम्म सुतगिंदु नडेय ॥ १११ ॥

अर्थ—पूज्य पिता जी व माता जी के प्रति मेरे भाइयों की अत्यन्त भक्ति है परन्तु मुझे देखने पर नाक भौं सिकोड़ते हैं । क्या ! परब्रह्म श्री आदिनाथ के पुत्रों का यह व्यवहार उचित है ॥ १११ ॥

My brothers are very much devoted to my respected father and mother, but my sight is an eyesore to them, they are so jealous me Is it the proper behaviour of Lord Adinath's sons ? Does it befit them ?" (111)

पद्य—नानिवरोळगे विनयव नेनेवनु ता । वेनो नन्नोळ् पेरतिहरु ॥
एनु माडिदेनु नानिवरिंगेन्दु नोवाग । नीनरियेय हेळु मंत्रि ॥ ११२ ॥

अर्थ—मैं हमेशा इनलोगोंके साथ अच्छा वर्ताव करताहूं कभी भी मैंने उनके मन दुखाने का प्रयत्न नहीं किया लेकिन वे मुझसे भेद रखते हैं नमालूम मैंने ऐसा क्या किया, क्यों इस प्रकार मेरे प्रति विरोध रखते हैं । मन्त्री (बुद्धिसागर) क्या तुम नहीं जानते हो बोलो तो सही ॥ ११२ ॥

"I always give them good treatment, and have never tried to make them miserable or to injure their feelings But they are not fair to me I do not know what I have done to them to deserve this treatment of discrimination Minister, do you not know this ? Please speak out" (112)

पद्य—जिननाणे गड निन्नोळिंदु नुडिदेनैसे । इनिवरचेष्टेयनेन्न ॥
जननियरिदरे नोंद हळेंदु माजिकों । डनुज रोळ्ळिदरे नुतिहनु ॥ ११३ ॥

अर्थ—हे बुद्धिसागर ! जिनेन्द्र भगवान् की शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैंने तुमसे ही भाइयों के व्यवहार को कहा है और किसी से भी आज तक नहीं कहा, क्योंकि पुत्रों के आपसी व्यवहार को देखकर माता जी दुःखी होंगी इस वास्ते उनकी (भाइयों की) प्रशंसा करता रहता हूं ॥ ११३ ॥

"Buddhi Sagar, by the name of Jinendra, I tell you that it is only you to whom I have expressed my opinion about my brothers I have not uttered a word about it before anybody so far Lest my respected queen mother might feel aggrieved at the action of her sons, I have always been praising them (113)

पद्य—मुनिगळा दस्वरेनगे तक्क सोदर । रेनगीग गुरुवादरवरु ॥
अनुमानवदु साकु नोडु नोडिवरु न । मनुज रोदनुज रोयेंदा ॥ ११४ ॥

अर्थ—छः भाई दिक्षा लेकर मुनि होगये वे मेरे भाई होने पर भी गुरू बन गये परन्तु इनको तो देखो, इन लोगों को मनुज कहूँ या दनुज कहूं कुछ समझ में नहीं आता ॥ ११४ ॥

Six of us have become ascetics They have become my preceptors inspite of the fact that they were my brothers, but look at this man Should I call him my brother or a foe I cannot understand" (114)

पद्य—किरिय रवरु स्वामि सैरिसु निनगाद । कोरते येनिदरिंद चक्रि ॥
अरिय रवरु देव निन्नोळु पुदुवाळ्दु । मेरेव वर्गति पुण्य बकु ॥ ११५ ॥

अर्थ—बुद्धिसागर मन्त्री बोला हे राजन्! आप जरा सहन करें वे आपसे छोटे हैं आपके साथ अगर उन्होंने ऐसा व्यवहार किया तो आपका विगड़ ही क्या गया। वे मूर्ख हैं आपके साथ रहने के लिये पुण्य भी चाहिये, विना पुण्य संचय किये आपके साथ कैसे रह सकते हैं ॥११५॥

"Rajan", spoke Buddhi Sagar, "please do not be impatient They are younger to you. Their bad treatment does not affect you at all They are not wise Only those who have acquired Punya can only live with you on good terms. Who else can do so ?" (115)

पद्य—मूरु लोकद जाणरेल्लरु निन्न व । ल्लारिके गतिं माडुवरु ॥
आरु कडिमे नूरुमंदि सोदररड्ड । मोरे योळिरलिद् रेनु ॥ ११६ ॥

अर्थ—तीन लोक में जितने बुद्धिमान् हैं और विवेकी हैं वे सब तुम्हारी चतुराई को देखकर प्रसन्न होतेहैं। यदि छः कम सौ मनुष्य तुम्हारे साथ नाक भौं भी सिकोड़े तो इसमें तुम्हारा विगड़ ही क्या गया ॥ ११६ ॥

"All the wise and able persons of these three worlds appreciate yours wisdom If six less hundred of the persons are jealous of you, what does it matter." (116)

पद्य—निन्न नुडिये साकु जगवेल्ल भास्कर । नुन्नतिगतिंमाडुवुदु ॥
कन्नेंदिलड्ड मोरेयोळिरुवुदरिंद । चन्नवुंटे प्रभाकरिगे ॥ ११७ ॥

अर्थ—राजन्! सूर्य की उन्नति को देखकर जगत् को हर्ष होता है इस पर यदि नील कमल मुकुलित (बन्द) होवे तो उसमें सूर्य का क्या दोष है ॥ ११७ ॥

"World gets a pleasure on seeing the rise of the sun, but if the Neel lotus closes itself, how does it affect the sun?" *(117)*

पद्य—अदु तानुवल्ल निन्ननुजरा पाटिय । मद्मुखरल्लानु वल्ले ॥
वेदस्वररस निन्नोत्तिगे वहुदके । मदरवे निन्न गंभीरा ॥ ११८ ॥

अर्थ—ये भी जाने दो. असली बात तो और ही है तुम्हारे भाई उजड्ड नहीं हैं मैं उनको अच्छी तरहसे जानता हूं वे तुम्हारे पास आने के लिये डरते हैं। क्या ? तुम्हारी गम्भीरता सामान्य है ॥ ११८ ॥

"Besides, the real thing is different. The brothers are not audacious I know them very well They have not got the courage to appear before you. Is your sobriety, seriousness, and considerateness an ordinary thing ?" *(118)*

पद्य—नीनोब्बनी सिरियी प्रायदोळ् जय । मान गंभीर दोळ्नडेदे ॥
ई नडे निन्न नुजरगिन्नु वदुदि । ब्ला नृपरदके नारियहरु ॥ ११६ ॥
चिक्कवरल्लवे निन्ननुजरि गिन्तु । मक्कळाटके किरिदुंडु ॥
चिक्कएण गंजदेयुदुवरु दोड्डएणन । दिक्कें दरिप्डु योचिपरु ॥ १२० ॥

अर्थ—हे राजन्! इस युवावस्था में अतुल सम्पत्ति को पाकर न्याय, नीति की मर्यादा को रक्षण करने के लिये तुम्हीं समर्थ हो! ये बातें तुम्हारे भाइयों में कहाँ से आसकती हैं ? अभी तक उन्होंने यह सीखा ही नहीं है इसलिये तुम्हारे पास आने के लिये वे शर्माते हैं ॥ ११९ ॥

अर्थ—राजन्! तुम्हारे जितने भी सहोदर हैं अभी वे छोटे बच्चे हैं उनकी उम्र भी अधिक नहीं है. ऐसी अवस्था में उनका तो बचपन ही समझना चाहिये इसलिये वे बाहुबली से नहीं डरते अपितु आपसे ही डरते हैं ॥ १२० ॥

"Rajan, with the acquisition of immeasurable wealth only you in this era are capable of maintaining justice and policy Your brothers donot possess so much intelligence or capabilties They have not yet learned this. That is the reason why they are shy in appearing before you Rajan, all your brothers are mere children before you Their ages are not sufficiently advanced to

understand all this They have not yet shed their childishness. That is the reason why they are afraid of you and not of Bahubali " (119-120)

पद्य—चच्च हुच्चगे नडेदरु भुजबलि राज । मेच्चुव नदकंजरवरु ॥
हुच्चु नडेगे नीनु मेच्चेयेंद वरेल्ल । वेच्चि दूर दोळिरुतिहरु ॥ १२१ ॥

अर्थ—आपके अन्य भाई बाहुबलीके साथ किसी भी प्रकार की बातें करें तो उसेमें बाहुबली प्रसन्न ही रहता है, परन्तु आप इसमें प्रसन्न नहीं होंगे, ये बातें वे अच्छी तरह से जानते हैं, इसलिये तुम्हारे सामने नहीं आते ॥ १२१ ॥

"Bahubali does not mind their light hearted behaviour, but you would not tolerate such stupidity They know this well That is why they are shy of you" (121)

पद्य—नम्म नडेगे तावु नाचिच हरललदे । हेंम्मे योळ्ळिद्वरल्ल ॥
तम्म तावे नाळे वंदेरगुवरेंदु । कम्मने नुडिदना मंत्रि ॥ १२२ ॥

अर्थ—वह अपने ही वर्ताव से स्वयं लज्जित है इसलिये उस लज्जा के मारे नहीं आता अभिमान से नहीं आता ये बात नहीं है कल वह अपने आप आकर आपकी सेवा करेगा, आप चिन्ता न करें ॥ १२२ ॥

They are ashamed of their own behaviour It is this feeling that prevents them in appearing before you and not their pride Tomorrow they will come to serve you Do not worry please" (122)

पद्य—तोड हगारिके योळा मंत्रियाडिद मातिं । गोडनहुदहुदेंद नगुत ॥
वडकुहुट्टिसद वांधवतंत्रियेंदद । नुडियदे मेच्चिदनोळगे ॥ १२३ ॥
अरे थिरुळिन सन्नेयायूताग जिनसिद्ध । शरणेनुतवनीश नेद्दा ॥
वर मंत्रि सेवक रोडगूडि शस्त्रम । दिरकेवंदनु गमकदोळु ॥ १२४ ॥

अर्थ—"राजा भरत" मन्त्री के चातुर्य पूर्ण बातों को सुन कर हंसे और कहने लगे, ठीक है, ठीक है, तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो इस प्रकार भ्रातृ प्रेम संरक्षण करने के लिये मन्त्री के तन्त्र से मन ही मन में बहुत प्रसन्न हुये इतने में मध्य रात्रि का समय होगया था तब 'जिन शरणं' कहते हुये उठे । और मन्त्री तथा सेवकों के साथ शस्त्रालय की ओर चले ॥ १२३-१२४ ॥

Chakravarti was pleased to hear this clever conversation of the minister
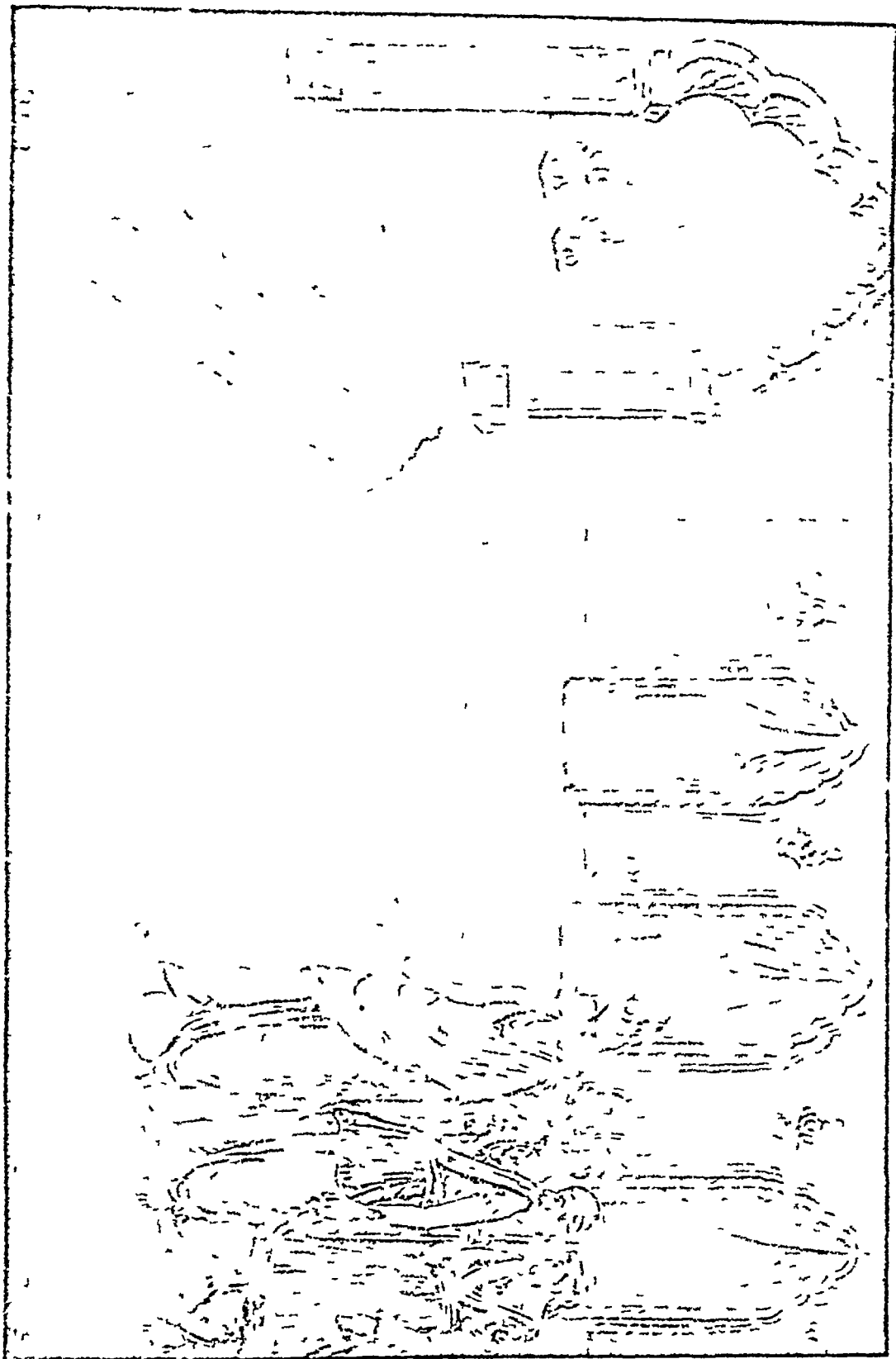
and said, "Minister. you are perfectly correct". He was really much pleased at the genuine attempt of the minister to keep the brotherly ties intact and to maintain their mutual affection. (123)

It was midnight now. Bharatji left the throne after uttering "Jin Sharan", with his ministers and officials for the armoury. (124)

पद्य—बळु नेरपिन शस्त्र शाले योप्पोरे युत्ति । दळगुगळेल्ल माल्पागि ॥
बलि पुष्पगंध सुंगाद पूजेयोळु वे । ग्गळिसुतिद्दु वीर रसवा ॥ १२५ ॥

अर्थ—उस समय शस्त्रालय की शोभा अपार होरही थी अनेक शस्त्रास्त्र वहाँ पर व्यवस्थित रूप से रक्खे हुये थे । उनकी नैवेद्य बलि, पुष्प चन्दन इत्यादिक पूजाओं से वहाँ पर बराबर वीर रस टपक रहा था ॥ १२५ ॥

The beauty of the armoury was a treat to see. Different kinds of arms were arranged decoratively and in proper order. With the offerings of sandal wood flowers rice, etc a feeling of bravery had been created all round in the atmosphere (125)

पद्य—रक्त चंदनदल्लि मारुगो कागदे । रक्त चंद्रिकेय मेल्लाट्टु ॥
रक्त वर्णद पुष्पमालेयिंदा शाल्ने । युक्तियोप्पितु मंजयाद्दु ॥ १२६ ॥

अर्थ—धूप से चन्दन. से. सुगन्धित वस्तुओं से. रक्त वर्ण पुष्पमालाओं से आयुध शाला की अनुपम शोभा होरही थी ॥ १२६ ॥

There were different kinds of scented articles. red rosaries, sandalwood, Dhoop etc. purifying the armoury. (126)

पद्य—पंचवर्णदकुल्लगिरि रज्जादद ! कॅच कारिकिनिद्दुद्दु ॥
अंचिनोळुरिव तुप्पगळ हेज्जोडगिंद । मंचेमिंद दु शव्व दने ॥ १२७ ॥
हुलेग किच्चिडि येंरयप्प सेवेग हिंडि । गुग्गुगि धूमनुंडलिगे ॥
बोल्गद नेट्टियिट्टल्लिगे देलेय मर्व । दर्नेयाहुति योप्पितल्लि ॥ १२८ ॥
चुर चुर चुरिव हेज्जोडन त्रि टिलेव । तप्पिंडगळ होम कुंडा ॥
नरिदोडिदोड्डिद कल्लु नेंगगिंद । सेंट्टुगिद दुव्वडुगपूजे ॥ १२९ ॥

अर्थ—पाँच प्रकार के अन्न का ढेर, कचौड़ी, सेवई, पकौड़ी, आदि से शस्त्र पूजा की, एवं खीर, खिचड़ी, लड्डू, पूरी हलुवा आदि सामान भी था उसके साथ २ हवन कुण्ड में होम करने से चिर, चिर आवाज आरही थी नारियल इक्षुदण्ड आदि सामग्री चढ़ाने से आयुधशाला वहुत ही सुशोभित होरही थी ॥ १२७-१२९ ॥

The offering consisted of five kinds of cereals, 'katchori' ' Pakori ' cooked in ghee, 'kheer', 'khichri', 'senwai', 'laddoo' 'poori' etc Holy fire was also burning giving out tinkling sound Cocoanut, suger cane were also some of the articles offered This was increasing the splendour of the armoury (127-129)

पद्य—होगेयेळ्व धूप होंगेडि गेदेरुव दीप । वगे वगे वएणाद पुष्पा ॥
चिगुरेले केंगूळु पएकाय मेदेयिंद । दिगुवलि गोट्टिटदु दल्लि ॥ १३० ॥

अर्थ—धूप से धूम निर्गमन, व जलते हुये दीप तथा अनेक वर्ण के पुष्प, कोमल पत्ते वाले आम्रपल्लव और फलों के ढेर के ढेर लगे हुये थे ॥ १३० ॥

'Dhoop' with smoke, flowers, fruits, beautiful mango leaves were all lying in heaps before the armoury. (130)

पद्य—अलतिगेरसदल्लि कलसुगूळगट्टि गू । ळोले दुरि निमिर्वधूपघटा ॥
मिळि मिळिसुव साळुगेदिंद रक्कस । वोळलंते मेरेदुदा सदना ॥ १३१ ॥

अर्थ—लाइन वद्ध धूप दान सुवासित धुंवा देरहे थे और अनेक प्रकार से सजावट किये गये पंक्तिवद्ध दीप प्रज्वलित होरहे थे इस प्रकार से शस्त्रालय जगमगा रहा था ॥ १३१ ॥

'Dhoop' utensils were placed in a row and so were the lamps of ghee increasing the beauty of the armoury, (131)

पद्य—मलेय कत्ति कठारि मुप्पाडि वंकि । सल्लेह गदे लौडि सबळा ॥
विल्लंवु जव दाडे किग्गिसे गळा गृह । दल्लिदवुरिमारियंते ॥ १३२ ॥

अर्थ—माला, खड्ग, कटारी, गदा आदि अनेक शस्त्रों को देखने पर अकस्मात राक्षश व चन्डी भैरव के मन्दिरों का स्मरण आजाता था ॥ १३२ ॥

Spear, sword, rapier, club etc. were numerous arms and missiles and

they reminded one of the horrible sights of goddess of sacrifice The sight was so terrifying (132)

पद्य—खंडेय पेटलिट्ट गदे चंद्र हास चि । चंडि मोग्गरणे कृपणा ॥
दंडरत्ना युधा वळि गळिद्दु सर्प । मंडलवेने भुगिलिड्डत ॥ १३३ ॥

अर्थ—खड्ग, गदा, चन्द्रहास आदिक दन्डरत्नों को वहाँ पर जिस प्रकार रक्खा गया था उससे सर्पमण्डल का ही स्मरण होआता था ॥ १३३ ॥

Sword, gada, Chandra Has were all arranged in circular rows (133)

पद्य—सुरगि कराचूरि कडितले पट्टिस । परशु कोडलि शक्ति डाणे ॥
सिरिमुरि कक्कडे चुंचुले रविहास । उरियनुगुळुतिदु वह्नि ॥ १३४ ॥

अर्थ—रति हास, कराछुरी, परसा, कुल्हड़ी; शक्ति, ढाल, रविहासइत्यादि कितने ही आयुध इस प्रकार चमक रहे थे कि मानो अग्नि वमन ही कर रहे हों ॥ १३४ ॥

'Rati-Has', 'Karchuri', 'Parsha', 'Kuladhi', 'Shakti', shield 'Ravi-Has' etc number of arms looked as they were emitting fire (134)

पद्य—एंदिगी दोरे दंडुनडेवनी रिपुगळ । तिंदु तेगुवे नेंदु मृत्यु ॥
इंदे नालगे नीडिदंतिदु दह्नि सा । नंदक वेंचसितरना ॥ १३५ ॥

अर्थ—सानन्द नाम का एक खड्ग (तलवार) रत्न तो इस प्रकार मालूम पड़रहा था कि कब तक में चक्रवर्ती दिग्विजय के लिये प्रयाण करेंगे और कब हमें शत्रुओं को भक्षण करने का मौका मिलेगा । इस प्रकार जीभ को बाहर निकालकर प्रतीक्षा ही कर रहा हो ॥ १३५ ॥

There was one sword called Sanand It looked as it was impatiently waiting to make short shrift of the foes like a dragon with mouth open and tongue jutting out ready to devour its prey (135)

पद्य—कालन दाडेगळंते कराळ ख । ड्गाळिगळिरे नडुवे ॥
ज्वालर्कनंते सेदुदु चक्ररत्न भू । पाल नोडिदनद निंदु ॥ १३६ ॥

अर्थ—काल की दाढ के समान अनेक खडेगो के बीच मेंसूर्य के समान तेजपुंज चक्ररत्न वहाँ पर प्रकाशित होरहा था, थोड़ी देर खड़े होकर चक्रवर्ती ने उसे देखा ॥ १३६ ॥

Shinning like sun, Chakra Ratna was visible among the arms like jaw of death Chakravarti cast one look at it (136)

पद्य—चक्रि विन्नह विंदु मुद्द संभ्रमदल्लि । चक्र रत्नद पूजेयायतु ॥
विक्रांत लग्न दोळगे नाळे पयण य । थाक्रम वेंदना मंत्रि ॥ १३७ ॥

अर्थ—तब चक्रवर्ती से मन्त्री ने प्रार्थना की कि स्वामिन ? आज तक इस चक्ररत्न की महावैभव से पूजा होगई। कल वीर लग्न है, योग्य मुहूर्त्त है अतएव दिग्विजय के लिये आप प्रस्थान करें ॥ १३७ ॥

The minister then prayed to the king, "My Lord, till to-day worship of the Chakra Ratan has been done with great splendour and glory Now tomorrow is the auspicious day and opportune moment for the undertaking of the victory of the world" (137)

पद्य—आनुडि गेळतपतिनृचक्रदमेले । तानोंदु कमलव निट्टा ॥
भानु विगव्ज सादुदुदेव निनगिदु । ताने लेसिह चिन्हवेंदा ॥ १३८ ॥

अर्थ—इस बात को सुनकर चक्रवर्ती ने एक कमलपुष्प को चक्र रत्न पर रक्खा उसे देखकर मन्त्री ने कहा कि सूर्य को कमल मिलगया यही आपके लिये शुभ शकुन है ॥ १३८ ॥

Hearing this the Chakravarti placed a lotus flower on the Chakra Ratna. Minister said at this "Rajan, the sun got the lotus It is very auspicious for you (138)

पद्य—धात्रीश नल्लिंद मुगुळ्दना मंत्रिय । नेत्र लीलेयोळु बीळ्कोट्टा ॥
स्त्रिसितन्नरमनेवोक्कनिदु नव । रात्रिय संधि सुगंधि ॥ १३९ ॥

अर्थ—तब चक्रवर्ती उस शस्त्रालय से लौटे और मन्त्री को जाने की तैयारी करने के वास्ते बोल दिये और आप अपने महल में चले गये ॥ १३९ ॥

The Chakravarti then left the armoury and bidding farewell to the ministers entered his palace In this way the Nav Ratri Maha Naumi was passed (139)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळिद्वर पाप । बीज निर्नाशन वहुदु ॥
तेज वहुदु पुण्य वहुदु मुंदोलिप । राजितेश्वरण काणुवरु ॥ १४० ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेगा उनका पाप बीज नष्ट होगा। तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य वन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेगा ॥ १४० ॥
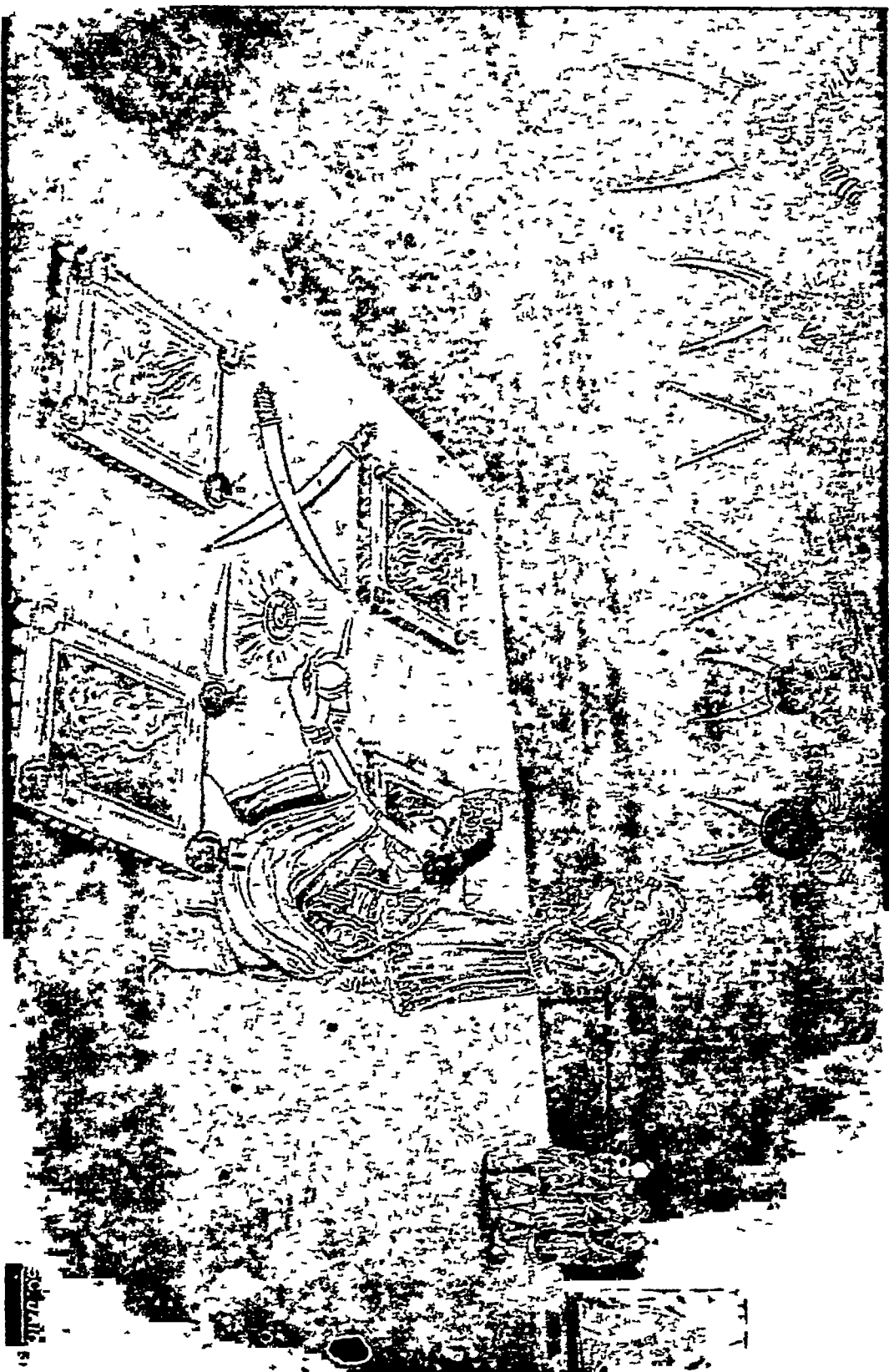
राजा भरत सुदर्शन चक्र पर कमल के फूल चढ़ा रहे हैं।

धर्मपत्नी ला० शोकचन्द सहरपुर द्वारा प्राप्त हुआ ।

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation). (140)

पद्य—प्रेमदिंद नोदिद्रे पाडिद्रे केळ्द । रामोद वैदुवरवरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंधर । स्वामिय काण्वरर्तियोळ् ॥ १४१ ॥

अर्थ—इस कथा को जो लोग प्रेमसे पढ़ेंगे तथा सुनेंगे वे आमोदको प्राप्त होंगे और नियमसे देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ १४१ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (141)

पद्य अधिकक्काधिकने मलत्वकमलने । मधुरकत्यंतमधुरने ॥
सुधेय सूसुत नन्न हृदयदोळिरु सुख । निधिये चिदंबर पुरुषा ॥ १४२ ॥

अर्थ—हे परमात्मन् ! आप सुख निधि हैं, लोक में जो पदार्थ सर्व श्रेष्ठ कहलाता है उससे भी आप अत्याधिक श्रेष्ठ हैं, जो वस्तु निर्मल है उससे भी आप अत्याधिक निर्मल हैं, और जो वस्तु मधुर है उससे भी आप अत्याधिक मधुर हैं, इसलिये हे सुखनिधे चिदंबर पुरुष सिद्ध भगवान ! मेरे हृदय में चिरकाल तक वास करिये ॥ १४२ ॥

राजा भरत को इतना वैभव कैसे प्राप्त हुआ ? इसलिये उन्होंने पुर्व भवमें आत्मा व शरीर को भेद विज्ञान द्वारा भिन्न भिन्न जानकर इस प्रकार की भावना किया था । इसलिये समस्त भव्य जीवों से आचार्य देशभूषण मुनिराज भी सम्बोधन करके कहते हैं कि तुम लोग भी भेद विज्ञान द्वारा यदि आत्मज्ञान प्राप्त करोगे तो तुम लोगों को भी ऐहि लौकिक व पार लौकिक शाश्वत् सुख की प्राप्ति होगी ।

O Lord ! Thou art the treasure
of bliss
Thou art better than
what is best in the
world

Thou are purer than
What is purest on the
earth
Thou art sweeter than
What is sweetest in the
three Loks
Be enshrined in my heart
for ever.

O, Siddh Bhagwan.

॥ इति द्वितीयः भागस्य प्रथम सर्गः नवरात्रि संधि संपूर्णम् ।

द्वितीय सर्गः

❀ पत्तन प्रयाण संधिः ❀

पद्य—काणु तरिवुत मैगत्रमणि गेयोळिह । माणिक्य मुकुरवे स्वामि ॥
काणिगु ननगे मन्मति ढोरु नित्य क । ल्याण निरंजनसिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—अपने ही स्वरूप को देखते हुये एवं जानते हुये एवं सतत मोतीरत्न व दर्पण के समान चिन्मय रूप में विद्यमान तथा नित्य कल्याण कारी हे मेरे स्वामी! निरञ्जन सिद्ध भगवान्! आप मुझे शीघ्र ही सद्बुद्धि प्रदान कीजिये ॥ १ ॥

May omniscient Sidh Bhagwan repose in my heart, and reflecting in the Mirror of my heart bestow on me perpetual happiness and wisdom (1)

पद्य—उत्तम लग्न दोळगे दशमियोळु रा । जोत्तम शृंगारवागि ॥
उत्तुंग दिग्विजय के पोरमोट्ट मं । पत्तनदेन वणिणपेनु ॥ २ ॥

अर्थ—राजोत्तम राजा भरत दशमी के दिन श्रेष्ठ लग्न में सबसे प्रथम योग्य शृङ्गार करके महान दिग्विजय करने के लिये जाने की तैयारी की। उन महान् संपत्ति शाली महाराज भरत का मैं अधिक क्या वर्णन करूं ॥ २ ॥

To day was the auspicious tenth day Raja Bharat had equipped himself beautifully for the Digvijay It is difficult to give a description of this beauty (2)

पद्य—रायविद्याड राजादित्य मलेवरि । राय दल्लण रिपुमथना ॥
पाययधारु जतन जययेने तन्न । ताय रमनेगेनडेदनु ॥ ३ ॥

अर्थ—राजचिन्हों से सुशोभित महाराज भरत जिस समय अपने स्तुति पाठकों के द्वारा स्तुत्य होकर अपनी माता के पास दर्शनार्थ जा रहे थे उस समय ऐसा मालूम पड़ता था कि कहीं साक्षात् सूर्य देव ही राजा भरत के रूप में अत्यन्त वीरता के साथ जारहे हों ॥ ३ ॥

The first act of Raja Bharat, the vanquisher of foes, was to go to his revered mother to offer his respects At that moment the bards and other devotees were praising Bharat with cries of Jai Jai and were following him to his mother's palace (3)

पद्य—वरुतिह मगन सोभाग्यव तायि त । न्नेरडुकणतणिवंते नोडि ॥
हरुष वेरिदउ संपूर्ण चंद्रन कंडु । शरनिधि हेच्चुवंददोळु ॥ ४ ॥

अर्थ—दूर से आते हुए पुत्र को माता यशस्वनी देवी हर्ष भरे नयनों से देखने लगीं। जिस प्रकार पूर्णिमा के चन्द्रमा को देखकर समुद्र उमड़ आता है उसी प्रकार आते हुये पुत्र को देखकर माता यशस्वनी देवी के हृदय में हर्ष उमड़ आया ॥ ४ ॥

The mother was looking with affection and pleasure towards her son, who was still a bit distant Just as the ocean goes for the tide at the sight of full moon, in the same manner the mother's heart overflowed with joy at the sight of her noble son (4)

पद्य—सकल विलासिनियर नडु नडुवे मा । णिकद देवतेयंते मेरेव ॥
अकळकगंविकेयट्खंड ना । यकनेरगिद काणकेयित्त्कि ॥ ५ ॥

अर्थ—बहुत सी रमणियों के बीच में माणिक रत्न रचित देवता के समान सुशोभित अकलंक चरित्र को धारण करने वाली माता यशस्वती देवी की सेवा में भेंट रखकर भरतजी ने साष्टाङ्ग नमस्कार किया ॥ ५ ॥

Raja Bharat bowed with respects to his mother, who was surrounded by a number of ladies and who was like a diamond in conduct and character among ordinary pebbles (5)

पद्य—धनद समुद्रांत धरेय लीलामात्र । दनुविंद जयसेन्न कंदा ॥
जिनभक्तियल्लि भोग दोळिंद्र नागेंदु । जननि हरसिदळु मगना ॥ ६ ॥

अर्थ—"बेटा ! महा समुद्रांत पृथ्वी को लीलामात्र से जीतने में तुम समर्थ हो जावो ! जिन भक्ति व भोग में तुम देवेन्द्र हो जाओ ! इस प्रकार माता ने पुत्र को आशीर्वाद दिया ॥ ६ ॥

The mother with great joy gave him blessing She said, "My son, may you conquer the whole world without difficulty May you attain the glory of Devendra in Jin Bhagti, acquisitions, and enjoyments (6)

पद्य—पयनवे दोड्डणगिंदेंदु केळ्दलो । जेव्वात्म सुतनना तायि ॥
नयनलीलार्थ राज्यदोळादि वंदु नि । म्मय पादगळ काणवेनेंदा ॥ ७ ॥

अर्थ—साथ ही माता ने यह भी पूछा कि बेटा क्या ? आज तुम्हारा प्रस्थान है भरत जी ने उत्तर दिया हाँ माता ! आलस्य परिहार व विनोद के लिये जरा राज्य विहार कर आने का विचार है। शीघ्र ही लौटकर आपके पुनीत चरणों का दर्शन करूंगा ॥ ७ ॥

"My son, are you starting to-day?", enquired the mother Bharatji replied, "Mother, I just want to shake off my idleness and for this I would like to do a little administrative work and returning soon I shall offer you my respects and have 'darshan' of your holy feet" *(7)*

पद्य—भुजबलिनाडिदिल्लिगेवंदु दिवर । विजयं गैसुवेनेंदु ॥
रजनियोळेनगे सूचिसि कळुहिद नदु । सुजनत्वलेसेंदे ताये ॥ ८ ॥
अम्म नोडगंजनेंदु विवेकन । सुम्मने नानयदे नीनु ॥
निम्मनिल्लिरि वारदेंदोयुवेनेंदनु । तम्मनेने नगएणनेंदा ॥ ९ ॥

अर्थ—माता जी ! बाहुबली कल या परसों तक यहां पर आने वाला है एवं आप को मेरे दिग्विजय से लौटने तक पौदनापुर में ले जायेगा। देखिये तो यही मेरे भाई की सज्जनता ! वह विवेकी है ! मै यहां पर नहीं रहूंगा तब अकेली आपको कष्ट होगा इस विचार से वह आपको ले जारहा है। वह कहने को मेरा छोटा भाई है परन्तु बड़ा भाई है ॥ ८-९ ॥

"Mother, Bahu Bali will be here in a day or two and he will take you to Podanpur till my return from digvijay Please look at my brothers's good conduct and gentleness He is wise He wants to keep you with him lest you might feel any inconvenience in my absence He is like my elder brother" *(8-9)*

पद्य—नानिल्लदागनीविल्लिहुदुचितवे । मीनांकनालयदल्लि ॥
आनंददल्लिरि धरेय साधिसि वेग । नानेरद लोडे चित्तैसि ॥ १० ॥

अर्थ—माता ! मेरी अनुपस्थिति में आपका यहां पर रहना उचित नहीं है। इसलिये आप बाहुबली के महल में आनन्द के साथ रहें, जब मैं दिग्विजय कर के लोट आऊं तब फिर यहीं आपको ले आऊंगा ॥ १० ॥

"Mother, it is not proper for you to remain here during my absence Hence you may kindly live for the time being in Bahu Bali's palace and return here when I come back from Digvijay" *(10)*

पद्य—अदु साकुमुँदनुपायवनेनगे भा । बदि बुद्धि गलिस बेकेंदा ॥
अद् केळुता देवि नसु नक्कु नुडिदळ् । मुददिंद तन्नपुत्रनोळु ॥ ११ ॥

अर्थ—अच्छा ! अब रहने दीजिये । अब मैं दिग्विजय के लिये प्रस्थान कर रहा हूं । मुझे, मेरे योग्य उपदेश दीजिये जिससे दिग्विजय में सफलता मिले । भरत जी की बात सुन कर हंसती हुई यशस्वती देवी कहने लगीं ॥ ११ ॥

"Very well, now I am leaving for the conquest of the world Please give me suitable advice so that I may attain success in my undertaking" Hearing this, the mother smiled a little (11)

पद्य—मगने निनगे नानु बुद्धि वेळ्ववळे नी । नोगुमिगेकेळिनडेवने ॥
जगके नोनुरे बुद्धिगलिसुवे साकु सु । म्मगे होगु जयिसु धारिणिया ॥ १२ ॥

अर्थ—बेटा ! तुम्हें मेरे उपदेशकी क्या आवश्यकता है । क्या तुम दूसरे के उपदेशानुसार चलने योग्य हो ? सारे जगत को तो तुम उपदेश देते हो, वह तुम्हारे उपदेश के अनुसार चलता है ऐसी अवस्था में तुम्हें उपदेश वगैरह देने की क्या आवश्यकता है ? जाओ, दिग्विजय कर आनन्द से लौट आओ ॥ १२ ॥

She said, "My son, you do not need my advice Do you still need others' help and advise when you advise the whole world yourself and they all act according to your guidance There is no necessity for me to give you any advice Please start and come back glorious crowned with victory" (12)

पद्य—हेळ बेकहुदण्ण मगगे बुद्धिय तायि । खूळतनदिनडेववगे ॥
हाल हिडिव हंसदंतेनडेवगेन । हेळवेनिन्नु बुद्धियनु ॥ १३ ॥

अर्थ—बेटा ! पुत्रको माता के उपदेश की जरूरत है । परन्तु किस पुत्र को ! जो दुर्मार्गगामी हो उसे माता की शिक्षा चाहिये । दूध को पीकर पानी को पृथक छोड़ने वाले हंस के समान जिस पुत्र का आचरण है माता उसे क्या शिक्षा दे तुम्हीं बताओ ॥ १३ ॥

"Son, some advise is needed from the mother to that son, who is not on the right path But what teaching can be imparted to a son who acts with discrimination like the swan which separates the milk from water and drinks the former, please say" (13)
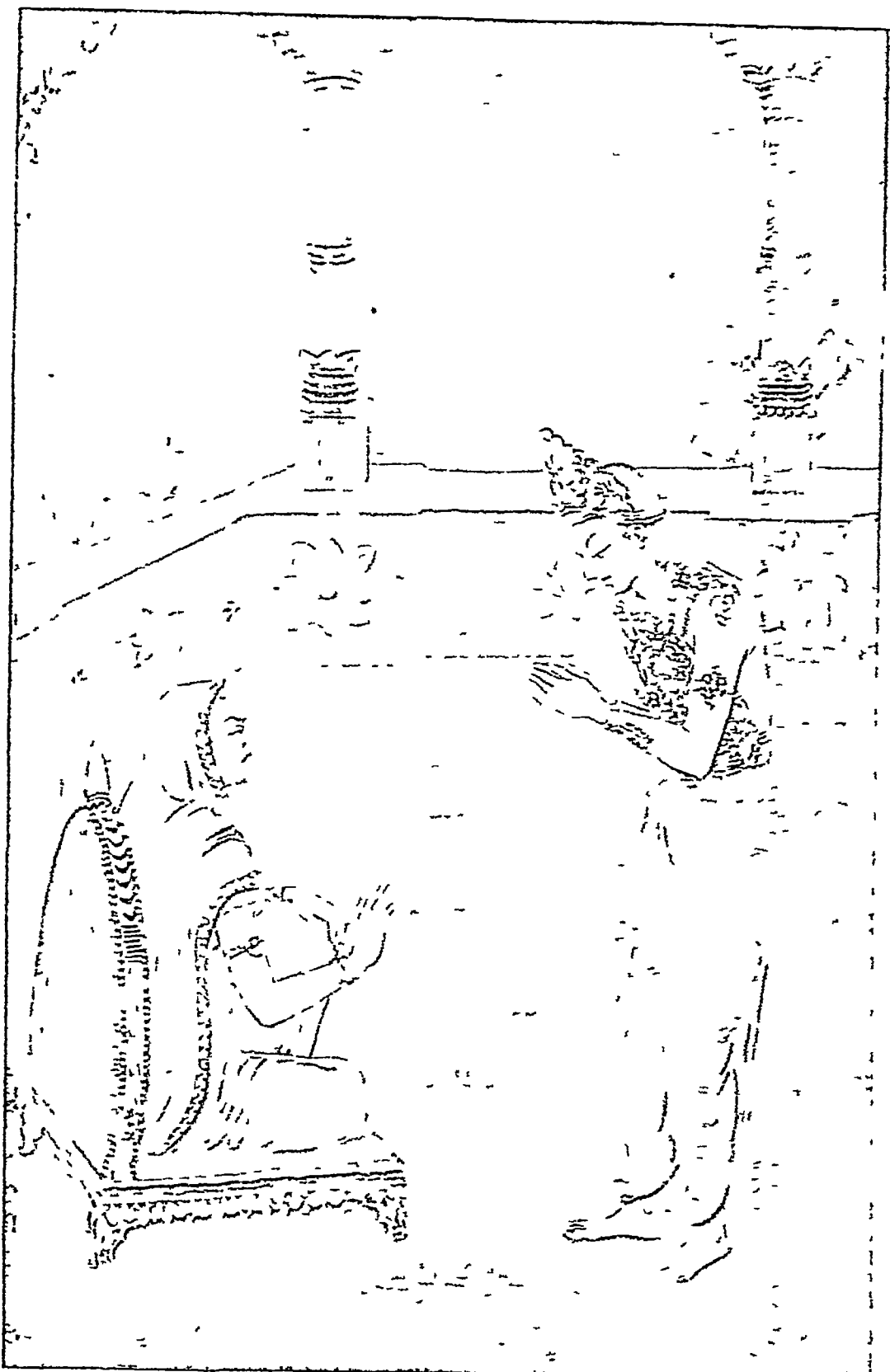
राजा भरत माता के मिष्ट वचन सुनकर उनके चरणों का स्पर्श कर बहुत भक्ति के साथ नमस्कार किया, उसी समय माता ने पुत्र के माथे पर मोती का तिलक लगाया और पुत्र को आलिंगन करके कहा कि बेटा मन में किसी प्रकार की आकुलता न करो तुम्हारी सेना को व तुम्हारे हाथी घोड़े इत्यादि को किसी प्रकार की तकलीफ न पाते हुए षट्-खण्ड पृथ्वी पर विजयी होकर जल्दी लौटो, इस प्रकार आशीर्वाद दे रही है।

(यह चित्र ला० शिवालदास मटीलाल जी जैन तिलोकपुर की ओर से छपा।)

अजन्ता प्रेस वाराणसी

पद्य—हेत्त तायेंनुदकागि केळिदे यहु । दुत्तमिकेय नीनु मेरेदे ॥
मुत्तय्य गोजे दोर्पुदु निन्न नडे नन्न । चित्त गेच्चिहुदु दोड्डरणा ॥ १४ ॥

अर्थ—बेटा ! मैं समझ गई कि मैंने तुम्हें जन्माया है इसलिए तुमने मुझसे उपदेश की बात पूँछी यह तुम्हारी सुशीलता है मैं तुम्हारी इस वृत्ति से अत्यन्त संतुष्ट हूँ ॥ १४ ॥

"My son, I now understand that as I have given you birth, you have made this request This is your high principle'. (14)

पद्य—अरसरण नीनदरिंदेन्न केळ्दि । ररिगळगेल्ल चक्रदरणा ॥
भरतरण सुखदल्लि तन्नूरों वारेंदु । वरमाते नुडिदळात्मजगे ॥ १५ ॥
अहुदे देवर चित्तदोळगेन्न मनदल्लि । सहज वुद्धियुंटेंदु ॥
नहळ निश्चयवुंटे उंटुंटु मगने स । न्नह वेत्तु नडेयेंदळोसेदु ॥ १६ ॥

अर्थ—बेटा ! तुम पूँछते हो, तो मैं कहती हूँ कि भरत तुम शत्रुओं को परास्त कर विजय पताका फहराते हुए कुशलपूर्वक अपने अयोध्या नगर में लौट आओ । इस प्रकार माता ने आशीर्वाद दिया ॥ १५ ॥

अर्थ—बेटा ! क्या कहूं ? तुम्हारी वृत्ति से तुम्हारे पिता भी प्रसन्न हैं, मेरा हृदय भी अत्यधिक प्रफुल्लित हुआ है इसलिए प्रिय भरत ! मुझे मत पूँछो । तुम आनन्द से षट्खण्ड पृथ्वी को वश में करो, तुम में सर्व सामर्थ्य है ॥ १६ ॥

"Well, If you still need it, I have only to say that you may after conquering the enemies return with joy and pleasure to your kingdom My son, even your father is pleased with your noble principles and ideas and so am I Why do you ask me then dear. Go with all pleasure and conquer the world You possess unlimited capabilities" (15-16)

पद्य—एंदरे लेसेंदु जननीयचरणार । विंद गळिगे नमिसिदनु ॥
चंददिदेदाकेमुत्तिनत्तेयना । नंददिंदिट्टळात्मजगे ॥ १७ ॥

पद्य—तक्कै सिकोंड्ड तूपिरिदल्लु हरसिद । ळक्करिं मोगव नोडिदळु ॥
नक्कळु मगने तामस माडवेड न । न्निक्केगेयुददल्लु वेग ॥ १८ ॥

पद्य—आने कुदुरेय कालिगे मुळ्ळु तागदे । मानवेंद्रर निन्न कालगे ॥
आनतगैसिकोंडेन्नूरों वारेंदु । मूतुव चीळ्कोंट्टळोडने ॥ १९ ॥

अर्थ—माता के मीठे वचनों को सुनकर भरत जी बहुत प्रसन्न हुए और आनन्द के वेग में ही पूँछने लगे कि माता ! क्या ? आपको विश्वास है कि मुझमें इस प्रकार की बुद्धि और सामर्थ्य रन है तब माता यशस्वती ने तत्क्षण कहा. हाँ ! हाँ ! बेटा विश्वास है । तुम जाओ ! "तबतो कोई हर्ज नहीं' ऐसा कहकर भरत जी ने माता के चरण स्पर्श करते हुए भक्ति से प्रणाम किया, तब उसी समय माता ने पुत्र को मोती का तिलक कर दिया ॥ १७ ॥

अर्थ—पुत्र को छाती से लगा कर प्रेम के साथ आलिंगन करती हुई एवं वारम्वार स्नेह भरी दृष्टि से देखती हुई शुभाशीर्वाद देकर हंसती हुई कहने लगी बेटा ! अधिक दिन मत लगाना शीघ्रातिशीघ्र लौट कर आना देरी मत करना ॥ १८ ॥

अर्थ—पुत्र ! मन में कोई आकुलता नहीं रखना और तुम्हारी सेना के हाथी घोड़ों के पैर मे एक कांटा भी नहीं चुभे एवं कांटा चुभने के बराबर भी तुम्हारी सेना के किसी भी जीव को दुःख न हो तथा षट्खण्ड पृथ्वी पर राज्य करने वाले राजागण सब तुम्हारे चरणोंमें मस्तक रक्खेंगे इसमें कोई सन्देह नहीं है, निर्विघ्नतया दिग्विजय करके शीघ्र वापिस आओ इस प्रकार आशीर्वाद देते हुये बहुत प्रेम के साथ पुत्र की विदाई की ॥ १९ ॥

Hearing these sweet words of the mother, Bharat was overwhelmed with joy and asked with affection, "Well dear mother, have you confidence that I have the requisite wisdom and ability for this task" Mother said, "Yes dear, you have it, go without any hitch". Bharat touched the feet of his mother with devotion and the mother put the 'Tilak' on Bharat's forehead and gave the blessing "You can rest assured that not one number of your army even horses and elephants will come to the slightest grief The Rajas of all the six realms will bow their head at your feet. Please go and conquer the world". The mother bade farewell with this affection (17-19)

पद्य—जननीय हरकेय कैकोंडु जिनसिद्ध । एनुत राजेंद्र नडेदनु ॥
अनित रोळगे मोसेयरु बंदरसेगे । विनमेमे नीळ्कोंबेबेंदु ॥ २० ॥

अर्थ—मातेश्वरी की आज्ञा पाकर, भरत जी वहाँ से चल दिये इतने में माता यशस्वती के दर्शनार्थ राजा भरत की समस्त रानियों ने आकर उनके (माता के) चरणों में नमस्कार किया ॥ २० ॥

Taking mother's permission Bharat left the palace At that time Bharat's wives came to offer their respect to the queen mother Yashaswati Devi (20)
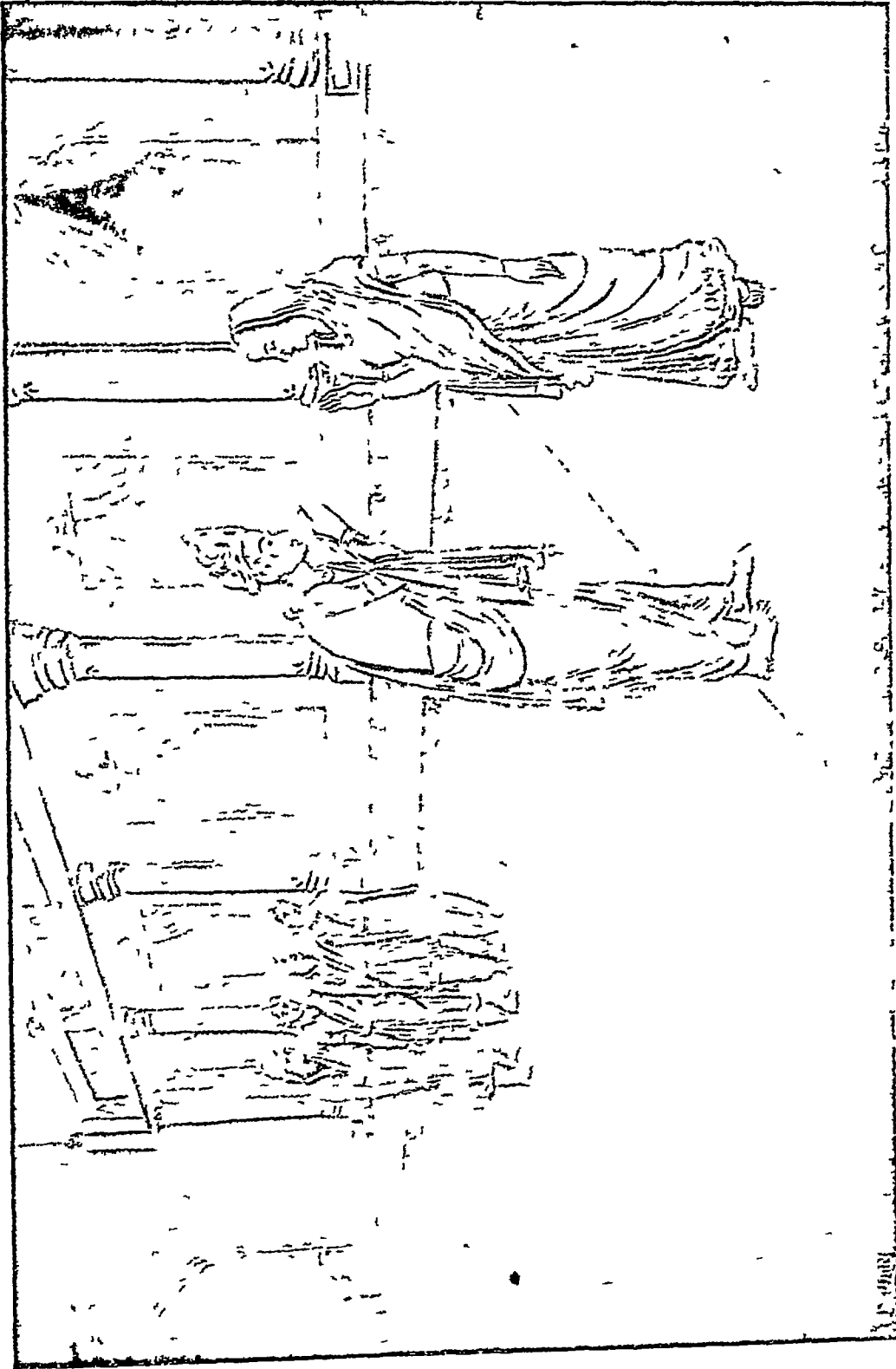
राजा भरत दिग्विजय करने जाने से पहले अपनी माता के पास आशीर्वाद ले रहे हैं।

यह चित्र—जसोदा देवी धर्म पत्नी स्वर्गीय ला० [illegible] प्रसाद सुपुत्र स्वर्गीय ला० मंगलसेन जी जैन महमूदाबाद के द्वारा छपा

पद्य—नीवु जाड्ययरल्ल मत्सर निम्मोळि । ल्लावुदिन्नु सुरुव बुद्धि ॥
आव चिंतेयु ननगिल्लडियिडियेंद । ळा वनितेयरतिंवडलु ॥ २५ ॥

अर्थ—आप लोग अविवेकी नहीं हैं और न आप में आपसी ईर्षा है। आपमें आपस में सौतमात्सर्य भाव नहीं है, ऐसी अवस्था में आपको उपदेश देने की कौनसी वात रही यह समझ में नहीं आता, इसलिये मुझे इस वात की चिन्ता नहीं है, अतः आनन्द से आप लोग जावें और दिग्विजय करके पति के साथ लौट आवें ॥ २५ ॥

"You are not unwise, nor you have any jealousy for each other In such a condition what else remains to advise you about I do not know what to say and hence I have no anxiety about you With all happiness you can accompany your husband and come back crowned with the glory of victory" (25)

पद्य—अत्यम्म नडिगळ काणव तनक व्रत । कृत्यवोंदोंदु बेकेंदु ॥
सत्य कांतेयरेल्ल तम्मोळालोचिसि । वृत्तनुमतदि माडिदरु ॥ २६ ॥
उंब रसगळल्लि मुडिव पुष्पगळल्लि । तंबुलदुगुलगळल्लि ॥
इंबरिदोब्बोब्ब रोंदोंद तोरेदरे । नंबेनवर भक्ति रसवा ॥ २७ ॥
मल्लिगेयनु सूडेनेंदळोब्बळु जाजि । योल्लेनेंदोर्वळाडिदळु ॥
मोल्ले वेडनगेंदळोर्वळत्यम्मन । मेल्लडिगळ काणव तनक ॥ २८ ॥
चिळपालु व्रतवेंद ळोर्वळु पेणिय । मेलोल्ले नेंदळोर्वळले ॥
एळेयेल्ल व्रतवेंदळोर्वळत्यम्मन । तळिरडिगळकाणव तनक ॥ २९ ॥
गोरोचनव तोरेदळोर्व रमणि क । स्तूरिय तोरेदळोर्वरसि ॥
दोरिय पट्टेय तोरेदळोर्वळु होम । सीरेय तोरेदळोर्वळले ॥ ३० ॥

अर्थ—तव फिर सभी सुशीला रानियों ने सासू से प्रार्थना की कि आज हम सब पति के साथ दिग्विजय विहार में जारही हैं, ऐसी अवस्था में हमें प्रति दिन आपके चरणों के दर्शन नहीं मिल सकते, इसलिये पुन आपके पूज्य चरणों का दर्शन हो, तव तक कुछ न कुछ व्रत नियम अवश्य दीजिये, इस प्रकार उन रानियों ने अपने मन में व्रत लेने का विचार कर लिया ॥ २६ ॥

अर्थ—तदनुसार सभी रानियोंने भिन्न २ प्रकार के व्रत लिये,किसीने पांचों रसोंमें से एक रस के त्याग का नियम, किसीने अमुक पुष्प त्याग का नियम, किसीने ताम्बूल त्याग का नियम, किसीने

माता की आज्ञा पाकर भरत जी वहां से चले गये, तत्पश्चात् भरत जी की सभी रानियां अपनी मातेश्वरी यशस्वती (सास) जी के दर्शनार्थ

अमुक वस्त्र त्याग का नियम लिया, यानी एक ने मल्लिका पुष्प का त्याग किया, तो दूसरी ने जाई पुष्प का, तीसरी ने दूध का त्याग किया, और चौथी ने केले का त्याग किया, तो पाँचवीं ने फेनी (चोटी की सजावट) का, छठी ने कस्तूरी का त्याग किया इसप्रकार किसी ने गोरोचन का त्याग, किसी ने रेशमी वस्त्रका त्याग, तो किसीने मोती के आभरण का त्याग कर दिया, इसप्रकार अनेक रानियों ने एक एक नियम ले लिया ॥ २७-३० ॥

Then all the virtuous queens submitted their request, "To-day we are starting with our husband on the world conquest expedition As we shall not be able to worship your feet everyday, hence till we are able to return and touch your feet again please administer some vow to us" Then all the ladies with mutual consultation decided to take some vow till their return back Then all of them took different kinds of vow Some took vow regarding renunciation of tasteful articles, some about giving up some flower, some betel chewing, and some regarding clothes One of them gave up 'Mallika' flower One' Jay' flower, one milk, one plaintain, one the decoration of dresses, one goloehan and kasturi one silk clothings, and one pearl ornaments Thus every one took some vow or the other. *(26-30)*

पद्य—कैर गुळ्गिे नोरंयडके बुत्तिन सुएण । नेरद् चवरि मुँताद् ॥
भृरिग्रोल्लेनगिदुतनगेदेदेल्लरु । कोरिदुटुव्रतव ताळ्दिदरु ॥ ३१ ॥

अर्थ—पुनः किसी ने अंगूठी, किसी ने चमर किसी ने छत्र आदि चीजों का नियम बहुत आनन्द और भक्ति के साथ सभी रानियों ने ले लिया। यह व्रत (यम) नहीं है बल्कि सासू के पुनः दर्शन होने तक का ही काल नियम है, बहुओं की बातों को सुनकर माता यशस्वती देवी को बहुत हर्ष हुआ ॥ ३१ ॥

These are all temporary vows because they had taken them till their return This religious attitude and devotion of her daughter-in-laws gave the queen mother much pleasure *(31)*

पद्य—पर राज्य केवदु तिदिपिरि पेंगळिर में । चर व्रतव बेंडदळ्से ॥
भरतोर्वि नम्मदु परराज केयुदेवें । दोरेदेल्ल व्रतव ताळ्दिदरु ॥ ३२ ॥

अर्थ और कहने लगीं कि ! बहुओ तुमलोग परदेश गमन करने जारही हो, इसलिये प्रयाणके समय व्रतों की क्या आवश्यकता है ? आप लोग ऐसा नियम मत करें वैसे ही चली जावो । इसपर

रानियाँ वोली माता ! भरत राजा हमारे ही हैं ये परदेशी नहीं हैं अतः हम स्वदेश ही में गमन कर रही हैं इसलिये इन व्रतों की हमें आवश्यकता है ऐसा कहकर सब रानियों ने सासू के चरणों में मस्तक नवा कर नमस्कार किया। सासू ने भी 'तथास्तु' कह कर आशीर्वाद देते हुये मोती का तिलक किया ॥ ३२ ॥

Saying this all the ladies bowed their head at the feet of their mother-in-law, who gave them her blessings. (32)

पद्य—वगे मेच्चि मत्ते तम्मत्ते गेरगियाके। तेगेदिट्ट सेसेयनांतु ॥
दुगुडदि बाळ्व गृहस्थर वाळ्केय। नगुवंते नगुत नडेदरु ॥ ३३ ॥

अर्थ—सासू की आज्ञा पाकर सब रानियाँ वहुत आनन्दोल्लास पूर्वक वहाँ से चलीं। उन लोगों का ऐसा पारस्परिक प्रेम था कि लोक में ईर्षा व मत्सर भाव से जीने वाली एक पति की अनेक स्त्रियों के दुःखमय जीवन को तिरस्कृत कर रहा था ॥ ३३ ॥

The queen mother then put 'Tilak' on the forehead of every queen and gave the blessing, "May you live happily in the company of your husband with bliss for ever".

All the queens then left with joy in their heart after getting the blessings of their mother-in-law (33)

पद्य—होरि शपिसि निच्च सवति मत्सरदि क। एणीरिक्कि बाळ्वर बदुकु ॥
नारक रिर वेंदु तोरि नडेदरु म। हाराज ललनेयरोसेदु ॥ ३४ ॥

अर्थ—सदा परस्पर झगड़ा एवं स्पर्धा करती हुई और दूसरे को गाली गलौज व शाप देती हुई एवं मत्सर भाव के साथ जीती हुई स्त्रियों को धिक्कार है। इस प्रकार कष्टमय जीवन से संसार में जीने वाली स्त्रियों से नारकी जीवन ही कदाचित अच्छा है इस वात को स्वीकृति से व्यक्त करती हुई वे रानियाँ वहुत आनन्द के साथ जा रही थीं ॥ ३४ ॥

Their mutual affection was an example for the cowives of other men. It was a condemnation of the jealousy usually seen in the world among cowives, who quarrel among themselves, abuse each other, and who are worse than the inhabitants of the hellish region The queens set the ideal with their own example (34)

पद्य—कनक पल्लकीय पन्नंग दोळु राज। वनतेय रेल्लरेय्दिदरु ॥
कनक दंडिगेयल्लि दोरेपाटियूळिग। दनुभवांगियरु सागिदरु ॥ ३५ ॥

अर्थ—इतने में वे रानियाँ पहले स्वर्ण निर्मित पालकियों में आई थीं। उन्ही में आरुढ़ हो चली गई। अन्य छोटी २ पालकियों से अन्य राजपत्नीय स्त्रियाँ, गायक स्त्रियां तथा अनुभविक स्त्रियाँ पीछे से गई ॥ ३५ ॥

The palanquins were mae ready The queens got on them Their maid-servants got on silver palanquins with this splendour They left for the journey (35)

पद्य—सामान्य सेवकियरु बेळ्ळियणसिन । नामदंडिगे योळोय्दिद्दरु ॥
ए मातो होळेव गोळ्गियनडरि मिक्क । स्तोम सेवकियरेय्दिद्दरु ॥ ३६ ॥

अर्थ—चाँदी की बनी हुई पालकियों में दासियाँ रानियों के चारों ओर से एकत्रित होकर जारहीं थीं। उन सबको प्रस्थान शोभा का वर्णन करना मेरी कवित्व शक्ति के बाहर है ॥ ३६ ॥

Every maid-servants was supplied with a silver palanquin Every queen was surrounded by palanquins of twenty maid-servants (36)

पद्य—इट्टणिसिद सतियर बळसिनोळळ । यट्टोंदु होन्न रथदोळु ॥
कट्टु मेन्चि नोळर्क कीर्ति कुमारन । तोट्टिलेयृतरुतिर्दुदाग ॥ ३७ ॥

अर्थ—जाती हुई सभी रानियों के बीच में एक स्वर्ण जटित अत्यन्त सुन्दर नाना प्रकार के रत्नों से जगमगाता हुआ एक मनोहर रथ और जारहा था। उसमें अर्ककीर्ति कुमार का सुन्दर झूला सुशोभित होरहा था ॥ ३७ ॥

Surrounded by all the palanquins a big chariot was proceeding with the cradle of Arkirati Kumar (37)

पद्य—रूप नंबुगे बंदरे नलएणगळ नाम । कापुगोंडवरु राणियरा ॥
आ पुर द्वार दचोय्दि सुतिरलित्त । भूप नडेद जिन गृहके ॥ ३८ ॥
अनकूल नागर दक्षिण मोदलाद । विनदद केळेय रोग्गिनोळु ॥
जिनगेह कडियिट्ट मंत्रिवेरसु मणि । कनकद हावुगे मेट्टि ॥ ३९ ॥

अर्थ—इस प्रकार अपनी दासियों व परिवार सहित पालकियों में बैठी हुई वे रानियाँ जारहीं हैं तब राजा भरत उनको महल के द्वारपर ठहरा कर जिन मन्दिर की तरफ चले ॥ ३८ ॥

अर्थ—राजा भरत अनुकूल नागरॉक, दक्षिणांक आदि मंत्री, मित्रों व चाकरों के साथ स्वर्ण खड़ाऊँ पहिनकर चले ॥ ३९ ॥

Raja Bharat, along with his able ministers, proceeded towards the Jain temple with golden sandals (38-39)

पद्य—जोयिस रोदुव पंचांग शुद्धल । ग्नायतार्थगळ लालिसुत ॥
श्री यशो जयसिद्धि रस्तेंव शास्त्रोपा । ध्यायर नोडुतेयिददनु ॥ ४० ॥

अर्थ—ज्योतिषी लोग पंचांग में तिथि, वार, नक्षत्र, योग आदि की शुद्धि को देखकर एवं लग्नशुद्धि पूर्वक सुमुहूर्त निवेदन कर रहे हैं उसको सुनते हुये तथा "श्री यशो जय सिद्धिरस्तु" ऐसा मुख से उच्चारण करने वाले उपाध्याय, पाठक गण उच्च स्वर से घोषणा कर रहे हैं इस प्रकार राजा भरत सुनते हुये आगे जारहे हैं ॥ ४० ॥

On the way all kinds of astrologers and admirers were offering good wishes for the victory

The astrologers, looking to their 'Panchang' (almances) Suddhi, were describing the auspicious day. The reciters of scriptures were saying with loud voice, "May the king achieve victoryn'. Raja was proceeding looking at all these persons, pandits etc (40)

पद्य—श्री रागदोळु मधु माधवि योळगात्म । सारव हाडे लालिसुत ॥
भूरिवाद्य गळिल्ल धवळ शंखगळु भुं । भोरने नडेदोजेयोळु ॥ ४१ ॥

अर्थ—गायक विशारदों के मुख से श्रीराग, मधुमाधवीराग में आत्मविवेचन करने वाले गायन को सुनते हुये और इसके अलावा अनेक प्रकार के वाद्यों के सुमधुर शब्द और धवल शंखों की ध्वनि को सुनते हुये भरत जी जारहे हैं ॥ ४१ ॥

The musicians were singing Sri Rag, Madhu Madhvi Rag etc containing the theme of the Atma In addition the sweet sounds of musical instruments and conch shells were resounding allround (41)

पद्य—तायरमनेयिंद तेरळ लोडने मुंदे । वायस तिद्दुवेरडु ॥
वायुव्वि कणि कणि येडदल्लि करे दुवा । राय पोपल्लिपल्लिगळु ॥ ४२ ॥
गगनदोळगे तन्न मुंदुरे हादि । तेगेदेयदुतिद्दुगरुडा ॥
वगेदनुकूल नायकनद सन्नेयो । ळगे धरणिपगे काणिसिदा ॥ ४३ ॥

राजा भरत राज दरबार को ज्योतिषी सामंत इत्यादि लोगों के साथ शुभ मुहूर्त में प्रस्थान किया ।

लाला शिखरकुमार जैन सुपुत्र लाला [illegible] जैन [illegible] द्वारा यह चित्र प्राप्त हुआ ।

अर्थ—जब भरत जी माता के महल से निकले उस समय दो कौवे देखने में आये और वायीं ओर छिपकिली रोदन कर रहीं थीं एवं आकाश मार्ग से एक गरुण भागा जारहा था इसे नायकों ने समय की अनुकूलता जानकर भरत जी को इशारे से बतलाया ॥ ४२-४३ ॥

When Bharat emerged from his mother's palace two crows were seen, a lizard began to cry from the left side, and a big vulture was seen flying in front Ankul Nayak indicated these auspicious signs to Bharat (42-43)

पद्य—सलहि देरळे नाल्कु घंटे सहित गल । गल नोडु तिद्दु वेदरि ॥
एले स्वामि वैरिदल्लनद सूचनेय नी । नोलिदीचिसेंद नागरनु ॥ ४४ ॥

अर्थ—पाले हुये घरेलू मृग भरत जी के सामने से ही डरते हुये इधर उधर भाग रहे हैं तब सेना नायक महाराज से कह रहे हैं कि स्वामिन् ! वैरी शत्रु भी आपके सामने नहीं ठहर सकेंगे और इन हिरनों की तरह भागते हुये नजर आवेंगे । इस बात की यह सूचना है ॥ ४४ ॥

A little ahead, a pet deer was looking at Bharat with great awe. The guide said, "Rajan, your enemies will hold you in terror like the creature. It is the indication of the same". (44)

पद्य—धूळ चेल्लुत गुडुरिस्कुत केरेवुत । गूळिवंदुदुवलकडेय ॥
धाळि विक्रमद सूचनेय चिचैसेंदु । हेळि काणिसिद दक्षणनु ॥ ४५ ॥

अर्थ—सामने से एक कुकद्मान् सांड धूल उड़ाता हुआ आरहा है और मुंह से शब्द भी कर रहा है तब दक्षिणांक ने उसे वीर सूचना कह कर भरत जी से कहा महाराज यह अगले दाहिने पॉव से मिट्टी खोदने हुये गुड़ गुड़ाता हुआ आरहा है अतएव इसका तात्पर्य यह है कि शत्रु तुम्हारे प्रति वैर रखते हुये अभिमान से युद्ध के लिये आवेगा यह इसकी सूचना है । ॥ ४५ ॥

A bull was seen coming, kicking up clouds of dust, and yelling 'Dakshinank, said, "Look at this Rajan" (45)

पद्य—केळेयरु तोरुव शुभशकुनव नोडु । तोळनगे नगुत तनोळगे ॥
गेलविंद हंसनाथन स्मरिसुत वंद । पोळ्ल मध्यद जिनगृहके ॥ ४६ ॥

अर्थ—इस प्रकार मित्रगण अनेक प्रकार के शुभ शकुनों को देखते हुये जारहे हैं । भरत जी भी मन ही मन हंसते हुये एवं अत्यधिक उत्साह के साथ परमात्मा का स्मरण करते हुये नगर के मध्य स्थित जिन मन्दिर में प्रवेश किया ॥ ४६ ॥

Raja Bhrat was hearing and seeing the signs and omens and was contemplating on the Atma Hans Nath He reached and entered the Jain temple (46)

पद्य—होरगण पोळि गाणुत पावुगेय मारदु । सेरगुडे सुत्ति नडेदनु ॥
मिरूपेदु होन्न कोटेय दाटि कंडनु । मेरेवादि जिननबिंबवनु ॥ ४७ ॥

अर्थ—बाहर के परकोटेके बाहर ही उन्होंने खड़ाऊँ उतार दी । उसके बाद बहुत उत्साह के साथ स्वर्ण निर्मित उत्तम पाँचो परकोटा पार कर भीतर से श्रेष्ठ आदिनाथ भगवान की प्रतिमा को देखा ॥ ४७ ॥

He put off his sandals outside the outer boundary and then entered the golden boundary, saw the holy image af Lord Adinath (47)

पद्य—भद्र मंडपदल्लि निंदु काणिकेयित्कि । भद्रभावदोळेरगिदनु ॥
चिद्रूप भावनेयुळ्ळ योगिगळ स । मुद्रविद्दु नमसिदनु ॥ ४८ ॥

अर्थ—उन्हों ने सबसे पहले भद्र मण्डप में प्रवेश किया । वहाँ भगवान आदिनाथ स्वामी की प्रतिकृति का दर्शन किया । तत्पश्चात् उस भद्र मण्डप में योग्य द्रव्यों की भेंट चढ़ाकर बहुत नम्रभाव से भगवान के चरणों में मस्तक नवाया । तदनन्तर उस मन्दिर में रहने वाले चिद्रूपभावना को धारण करने वाले योगियों को नमस्कार किया ॥ ४८ ॥

Thereafter he entered Bhadra mandap (the 2nd approach to the temple) He had the 'darshan' of Lord Adinath's form, with all devotion

He bowed before the Lord's image full length on the ground after offering the sanctified eignt articles Thereafter he bowed to the feet of those saints who had realized the identity of their soul (48)

पद्य—सिद्ध दिग्विजय कार्यो भव भूप स । मृद्ध सुखी भवरेंदु ॥
सिद्धांत घोष दोरेदरु निरंजन । सिद्ध भावनेय योगिगळु ॥ ४९ ॥

अर्थ—निरञ्जन सिद्ध भगवान को धारण करने वाले योगियों ने भी भरत जी को आशीर्वाद दिया कि "सिद्ध दिग्विजय कार्योभव" हे राजन् ! "समृद्ध सुखी भव" ॥ ४९ ॥

Then the saints gave him the blessings, "May you achieve your object of world conquest May you have all the acquisitions of the world and live a long life" (49)
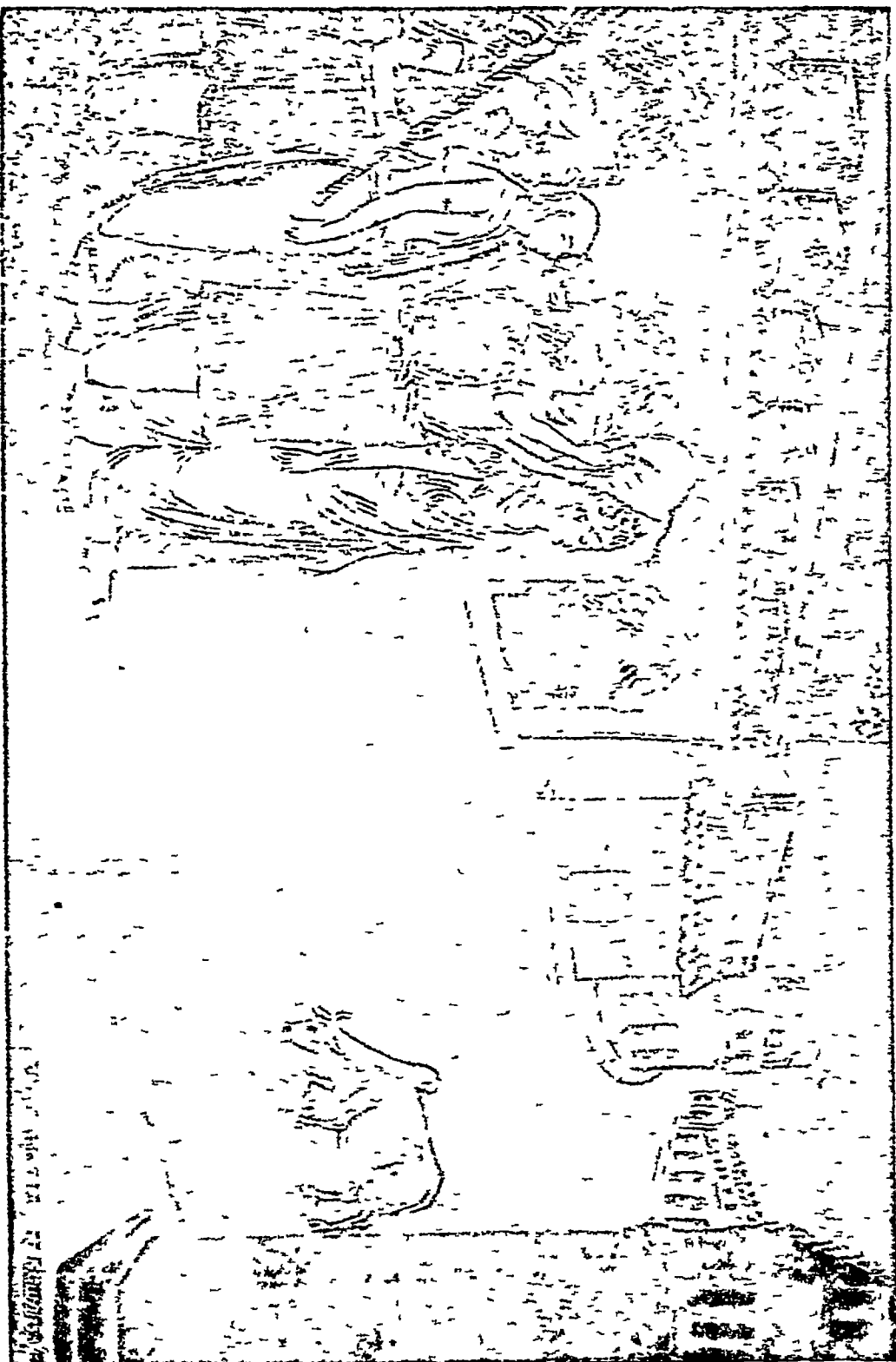
राजा भरत को दिग्विजय करने के लिये जाते समय पर ज्योतिषी लोग शुभाशुभ फल बता रहे हैं और सामने एक सांड जो डर के मारे अपने पैर से धूल उड़ाते हुये मिट्टी खोद रहा है। उसे देखकर ज्योतिषी लोग युद्ध की सूचना और अशुभ फल बता रहे हैं।

याद चित्र—मन्नालाल दयाचन्द जी जैन गनेशपुर के द्वारा छपा—

पद्य—सिद्ध सेसेय मंडेगिट्ट मृत्युंजय । सिद्ध चक्रादि यन्त्रगळ ॥
शुद्ध विभूतिय मुट्टि कोरळिगिट्ट । पद्धति कारना नीरा ॥ ५० ॥

अर्थ—तदनन्तर सिद्ध पूजा किया हुआ गन्धोदक को भरत जी ने मस्तक में लगाया बाद में सिद्ध चक्र, मृत्युञ्जय आदि की आराधना की हुई होम भस्म को तिलक व कंठ में लगाकर भक्ति को व्यक्त करते हुये नियमानुसार महाराज चल दिये ॥ ५० ॥

Thereafter Reja Bharat applied the holy water which remained after the worship of the Lord to his forehead, and also applied the ashes from the Mortanjaya and Sidh chakra etc In the neck with proper ritual, displaying his devotion. (50)

पद्य—होम कर्मगळु चेन्नागि नडेदुवु म । होमुनि भुक्ति नडेदुदु ॥
स्वामिय पूजे लेसागि नडेदुदेंदु । भूमिश गोरेदना राया ॥ ५१ ॥

अर्थ—बुद्धिसागर मंत्री ने प्रार्थना की कि स्वामिन् ! आपने हवनादि कर्म को विधि पूर्वक निष्पन्न किया एवं नवधा भक्ति पूर्वक निरंतराय से मुनियों को आहार दान भी दे दिया ॥ ५१ ॥

Buddhi Sagar entreated, "My Sire, the function has been performed is in an absolutely correct manner. The saints were offered the gift of food with proper devotion Lord Adinath's worship has been performed with the great splendour and devotion". (51)

पद्य—पाडिव मोदलागि दशमि तनक देव । राडम्बर सिगे नमिस्ति ॥
माडिद जिन पूजे निनगिन्तु पूजेय । माडिसदिहुदे लोकदोळु ॥ ५२ ॥

अर्थ—भगवान आदिनाथ प्रभु की पूजा बहुत वैभव के साथ की गयी है एवं प्रतिपदा से लेकर दशमी तक अद्वितीय उत्साह से आपने पूजा की व कराई है । अब इस लोक में आपकी पूजा की बराबरी करने वाला कोई नहीं है ॥ ५२ ॥

"There is not the least doubt that just as you have carried out the worship of the lord from the 1st to the 10th day, you will also be worshipped in the world. There is hardly any-one else in the world who can celebrate the function in this glorious manner". (52)

पद्य—धर्म पूर्वकवागि राज्यवनाळ्व । धर्मागवरिदु भोगिसुव ॥
मर्मव नीनल्ल दार्बल्लरेन्नेंदु । नर्ममंत्रीशनाडिदनु ॥ ५३ ॥

अर्थ—स्वामिन्! धर्म पूर्वक राज्य पालन करने की शक्ति व पद्धति, धर्मांग भोग क्रम इत्यादि बातों के मर्म को तुम्हारे सिवाय और कौन जान सकता है? इस प्रकार मंत्री ने राजा भरत से अत्यन्त विनय के साथ कहा ॥ ५३ ॥

"Sire, who can understand the implications and the underlying basis of carrying on the administration with proper religious sanctions except yourself" *(53)*

पद्य—धरिसिल्लि स्वामि किरीटवनेंदना। दरदिंद मंत्रि मत्तदके ॥
दरे हसिताननराय नोडवङ्ग। धरिसिद नुत्तमांगदोळु ॥ ५४ ॥

अर्थ—हे राजन्! अब यहाँ किरीट धारण कीजिये, इस प्रकार बुद्धिसागर मंत्री के निवेदन को स्वीकार करते हुये नृपश्रेष्ठ भरत ने अपने मस्तक पर सुन्दर रत्न जटित किरीट को धारण किया ॥ ५४ ॥

"My sire, now you may put on your crown", Raja was pleased to hear this and put it on his head *(54)*

पद्य—जिनगे कैमुगिदु स्वामि पुनर्द। र्शन वागलेंदु किरीट ॥
मुनिगळ्गे नमिसिद जयजयवेंदु घो। षणेयोळु मुगुळ्दनल्लिंद ॥ ५५ ॥

अर्थ—किरीट धारण करने के पश्चात "भूयात्पुनः दर्शन" ऐसा पद उच्चारण करते हुये भगवान जिनेन्द्र को नमस्कार किया। इसके बाद मुनियों के चरणों में मस्तक नवाकर जयघोष के साथ वहां से लौटे ॥ ५५ ॥

Thereafter Raj Bharat took off the crown with his hand, again bowed to the Lord's image, and then at the feet of the saints He then put it on again *(55)*

पद्य—कुलवृद्ध जनद परकेयिंद विबुधरु। तळिवमंत्राक्षतेयिंद ॥
गळवळिसुव मगळाष्टकदिंद भू। तळपति नडेदनोजेयोळु ॥ ५६ ॥
अडिगडिगिदि रेंदु पुष्पफलव कारके। गोडुत कैमुगिववरिंद ॥
कडुलेसु जयघोळिळतुत्तम वेंदु बा। ळ्नुडिय सूचनेयोळेयिददनु ॥ ५७ ॥

अर्थ—मार्ग में गमन करते समय बहुत से कुलवृद्धजन, भरत जी को आशीर्वाद दे रहे है और उनके ऊपर पुष्प, अक्षतों का क्षेपण कर रहे हैं तथा विद्वान लोगों के द्वारा मंगलाष्टक पढ़े जा रहे हैं। इस विधि से जयघोष पूर्वक राजा भरत गौरव के साथ आगे बढ़े जारहे हैं ॥ ५६-५७ ॥

Number of learned men were giving blessings to Raja Bharat in the route and were showering the sanctified articles. Other people also came and offered their presents of fruit etc The bard were saying, "May you live along. May you achieve victory". *(56-57)*

पद्य—विलसितानंद दोळ्गा राय पुरु जिन । निळय दिंदडियिडुवाग ॥
वलद् तोळ्तोडे कएणु केत्तविद्दु मुंद् । गालघुसंपददन्सूचनेगे ॥ ५८ ॥

अर्थ—जिस समय राजा भरत अत्यन्त गौरव के साथ बाहर निकले उस समय अकस्मात ही उनकी दाहिनी भुजा, जंघा व आंखों में स्फुरण (फड़कन) होने लगा, जो कि निकट भविष्य में अद्वितीय विजय व संपत्ति प्राप्त होने की सूचना थी ॥ ५८ ॥

When Raja Bharat came out of the temple, suddenly his right arm, right thigh, and right eye began to quiver. This gave the auspiciuos indication that in the near future he was to attain great glory. *(58)*

पद्य—सर्व संभ्रमदिंद पंचकोटेय देसिटि । सार्व भोमनुनडेतंदु ॥
पर्वतदातिद्पट्टद नेयनेरि । सर्वज्ञशरणेनुतडद ॥ ५९ ॥

अर्थ—उस समय बहुत संयम के साथ आप पांचों परकोटाओं से बाहर आये तब बाहर एक पर्वत के समान सजा हुआ हाथी खड़ा था । शीघ्र ही महाराज उसके पास चल कर "जिनं शरणं" ऐसा मुख से उच्चारण करते हुये उस हाथी पर चढ़कर बैठ गये ॥ ५९ ॥

With great splendour he came out of the boundary of the temple. His elephant was waiting for him high like a hillock. He mounted on his back uttering the words "Jin Sharan' *(May Jina protect me). (59)*

पद्य—एत्तितु मुत्तिन सत्तिगे चामर । वत्तित्तचिम्मिदुवाग ॥
सुत्त पताके येद्दवु वाद्यकोटि दि । म्मित्ति तिरियै मोळ्गिदवु ॥ ६० ॥

अर्थ—उस समय सेवकों ने मोती के छत्र, चामरों को ऊपर उठाया और इधर उधर से चमर डुलाने लगे इतना ही नहीं चारों ओर से ध्वजा पताकायें भी फहराने लगीं और अनेक प्रकार के बहुत से बाजे बजने लगे ॥ ६० ॥

At that time the servants raised the canopy decorated with jewels a a little high and chanwars began to be flow allround, flags and banners were raised high and numerous kinds of musical instruments began to be played *(60)*

पद्य—मोत्तद् रिपुगळगंड वैरिगळेंब । कत्तले गुदय मार्तंडा ॥
मत्ते जयांगनामिड चांगेदुंकै । येत्ति भटरु होगळ्दिरु ॥ ६१ ॥

अर्थ—स्वामिन् ! आप अनेक शत्रु राजाओं के पति हैं। शत्रु रूपी अन्धकार को नष्ट करने के लिये सूर्य के समान हैं। जय लक्ष्मी आपकी वाट देख रही है। जय हो, महाराज की जय हो इस प्रकार स्तुति पाठकों के द्वारा स्तुति को सुनते हुये राजा भरतजी नगर के विशाल मार्गों में होकर जारहे हैं ॥ ६१ ॥

The bards shouted, "The trampler of the pride of the foes, the destroyer of the Karma enemy, Raja Martand and the husband of victory, may you live long". *(61)*

पद्य—इट्ट किरीट मूडुव सूर्यनंते मै । गट्टु होंबोंबेयंतेसेयि ॥
बेट्टव नडिसुवंता राय मुँदेके । पट्टादानेय नडसिदनु ॥ ६२ ॥

अर्थ—जाते समय राजा भरत के मस्तक पर सुशोभित किरीट दूर से ऐसा मालूम पड़ता था कि मानों उदयाचल पर सूर्योदय होरहा हो और चारों तरफ उसकी किरणें लालिमा को विखेर रही हों ॥ ६२ ॥

The crown on the head of the Raja was shining like the rising sun. His complexion was sparkling gold. Mounting on the elephant he looked like the rising sun. *(62)*

पद्य—तोरेगे योडगूडि पूर्णचन्द्रम बंदु । सेरि मेलोलैसुवंते ॥
भूरामगेत्तिद मुत्तिन सत्तिगे । राराजिसुतिदु दाग ॥ ६३ ॥

अर्थ—भरत जी के ऊपर मोती का छत्र अपने प्रकाश से ऐसी शोभा को बढ़ा रहा था कि मानों अनेक तारागणों के बीच में चन्द्रमा ही सुशोभित होरहा हो ॥ ६३ ॥

Just as the stars look beautified on the rise of the full moon and just as the moon looks charming with the stars, in the same way the Raja was surrounded by flags and banners decorated with jewels and pearls and looked beautiful. *(63)*

पद्य—सूळरि दिक्कुव मूवत्तेरडु वि । शाल चामर विराजिसळु ॥
हाल समुद्रदोळानेय नडेसुवं । तालसितांगतोरिदनु ॥ ६४ ॥

अर्थ—सुन्दर व विशाल चारों ओर मलने वाले श्वेत ३२ चमरों के द्वारा महाराज भरतेश इस प्रकार सुशोभित हो रहे थे, कि मानों हाथी पर बैठकर क्षीर सागर के बीच से चले जा रहे हों ॥ ६४ ॥

When 32 chanwars were being flown round him, it appeared as if Raja was going through the ocean of milk, (64)

पद्य—चंद्र सूर्यरु बंदु दिग्विजय के मनु । जेंद्रन करेदोय्वरेनलु ॥
चंद्र सूर्यर ध्वज बेरडेत्तिदुवु मुंदे । रूंद्र पताकेय नडुवे ॥ ६५ ॥

अर्थ—अनेक वैभव के साथ महाराज भरतेश के प्रस्थान काल में, हाथी के आगे दो सुन्दर श्वेत ध्वजा, क्रमशः सूर्यध्वज व चन्द्रध्वज नामक इनकी शोभा को सूर्य व चन्द्रमा के समान इस प्रकार बढ़ा रहे थे, कि मानों सूर्य व चन्द्रमा दोनों भूतल पर मनुजेन्द्र श्रीभरत जी को दिग्विजय के लिये ले जा रहे हों ॥ ६५ ॥

There were two white and spotless flags in-front of the elephant, known as moon flag and sun flag Looking at their beauty it appeared as if sun and moon were leading the king In this glorious manner the march for Digvijay commenced, (65)

पद्य—पुरुषोत्तम निंदु पुरुदिंद मुंदके । तेरळु तिद्पनेंबुदरिदु ॥
पुरदोळगिद्द परगंडेल्ल रोलविंद । नेरेदुनिट्टिसिदरेनेंबे ॥ ६६ ॥

अर्थ—पुरुषोत्तम महाराज भरत जी आज अयोध्या छोड़कर दिग्विजय के लिये जा रहे हैं। यह बात प्रत्येक प्राणी को मालूम ही थी। अब महाराजके दर्शन शीघ्र नहीं होंगे इसलिये इनकी विहार शोभा देखने के लिये सारी प्रजा एकत्रित हुई ॥ ६६ ॥

Purshottam Bharat was leaving Ayodhya for the world conquest Everyone knew thts For this reason all the subjects were swarming in to see his glory Some were looking from their house tops The blooming beauties of the city were elbowing themselves into the crowd to have a glimpse of the Raja (66)

पद्य—कुरु माडवनेरि माळिगेय मेल्केन्नेरि । इरुनेरि गोपुर वेरि ॥
तरुणियरेल्लरु राजमन्मथन क । ण्डरेगोंडु नोडिदरोसेदु ॥ ६७ ॥

पद्य—बरबारदेम्म तम्मय पेंडिरातन । परिकिसवारदेंदेंब ॥
हुरुडिल्लदा परदार सोदरन सौं । दरव नोडिद्रेल्ल रोसेदु ॥ ६८ ॥

अर्थ—वहुत सी युवतियाँ असावधानी , चञ्चलता से राजमन्मथ श्री भरतेश को दीवाल, महल, द्वार तथा चवूतरे पर से देख २ कर आनन्दित होरहीं थीं ॥ ६७ ॥

अर्थ—स्त्रियों की वात को क्या कहना है ? किसी पुरुष के मन में भी यह वात नही रहती थी कि मेरी स्त्री उनका दर्शन न करे ।

क्योंकि महाराज भरतेश परदारा सहोदर हैं । तो भाई को वहिन के देखने से क्या विगड़ता है ? अतः प्रत्येक स्त्रियां स्वतंत्रता पूर्वक उनका दर्शन करके परमानन्द प्राप्त कर रही हैं ॥ ६८ ॥

What to say of the ladies They were too anxious to see the Raja. Their husbands were not jealous of this action, because Bharat was known as brother of every man's wife Therefore what was the harm if a sister saw her brother *(67-68)*

पद्य—गंडपेंडिरु निंदु नोडुवरल्लि । पेंडिरेनोळ्परल्लि ॥
तंडतंडद सूळेयरु नोळ्परा ष । ट्खंडाधिपतिय चेल्विकेया ॥ ६९ ॥

अर्थ—कहीं २ पुरुष अपनी स्त्रियों के साथ खड़े होकर देख रहे हैं । और कहीं २ स्त्रियां एकाकी खड़ी होकर देख रही हैं । और कहीं २ झुंड की झुंड वेश्यायें खंडाधिपति महाराज श्री भरतेश की सुन्दरता को देख रही हैं ॥ ६९ ॥

In some places husbands and wives were together enjoying the sight, somewhere the wives alone were looking at the Raja At that time groups of dancing girls burst from the crowd to have a sight at the Raja *(69)*

पद्य—कासुव पालनि ळुहदे मुंदळुवेळे । गूसनिट्टिस दैदेवंदु ॥
कासि तोळेद होन्न पुत्तळियंतेसे । वा सोवगननिट्टिसिदरु ॥ ७० ॥

अर्थ—कोई स्त्री चूल्हे पर गरम होते हुये दूध ही को छोड़कर, और कोई स्त्री सामने रोते हुये वच्चे को ही छोड़कर तथा वहुत सी स्त्रियां असावधानी से संपूर्ण कार्य को छोड़कर वाहर निकलकर स्वर्णमय पुतला के समान शोभने वाले महाराज श्री भरत जी को देख रही हैं ॥ ७० ॥

Several ladies were coming hurry scurry to have a glimps of the king A woman left the pot containing milk on the stove, her child weeping in the house and ran to see the king *(70)*

महाराज भरत का दिग्विजय प्रस्थान

यह चित्र शीतल प्रसाद अजीत प्रसाद जी जैन तिलोकपुर की ओर से छपा।

पद्य—आडुव नेरवनर्थदोळ्गे विट्टु । हाडुव रागव निलसि ॥
माडवनेरिमदिलनेरिरायन । नोडिदरोसेदु नीरेयरु ॥ ७१ ॥

अर्थ—जो स्त्री अनेक वार्ता विनोद लीला कर रही थी, और अनेक राग में गायनादि कर रही थी, वह उसे अधूरे में ही बंद करके अपने महल के ऊपर चढ़कर श्री भरत जी को उत्सुकता पूर्वक देख रही है ॥ ७१ ॥

Those ladies, who were enjoying some fun or music, left their enjoyment and ran to have a 'darshan' of Raja Bharat (71)

पद्य—गिळिय नोदिसुतिदु राय पोपुद केळ्दु । बोळ्गेयिदपंजरकिडलु ॥
तळु वहुदें देयिद् तलेवागि लोळ्निंदु । गिळिस हिंतोल्दु नोडिदरु ॥ ७२ ॥

अर्थ—एक स्त्री तोते को पढ़ा रही थी । अब तोते को पिंजड़े में रख कर जाने में देरी होगी इस कारण तोते को भी हाथ में लेकर गई और राजा भरत की शोभा को देखने लगी ॥ ७२ ॥

One lady was tutoring the parrot and lest she might be too late ran with the cage of the bird in her hand to see the king (72)

पद्य—कन्नडि विडिदु ओट्टि इतिदु नृपतिय । सन्नेय केळ्ला चणवे ॥
कन्नेय रेदूतंदु कन्नेमाडव नेरि । कन्नडि सहित नोडिदरु ॥ ७३ ॥

अर्थ—बहुत सी स्त्रियाँ हाथ में दर्पण लेकर तिलक (सिंदूर) लगा रहीं थीं । वे, अनेक प्रकार के वाद्य व गायनादि के साथ शब्दायमान जुलूस को देखते ही, तिलक लगाना भूलकर दर्पण सहित बाहर आईं और परमानंद के साथ देखने लगीं ॥ ७३ ॥

Several ladies were putting tilak on their forehead with mirrors in their hands As soon as they heard the sound of the band they came out as they were with mirrors in hand to see the sight (73)

पद्य—मुडिसडिललु वलगेयिंद वलिवुत । एडगैयोळ्सेरगुत निरिया ॥
दुडदुड नेयदेंदु दुंडेयरा चेल्व । रोडेयन चेल्व नोडिदरु ॥ ७४ ॥

अर्थ—एक स्त्री की चोटी की जड़ ढीली हो गई थी, और पहनी हुई साड़ी भी ढीली पड़ गई थी, तो भी चोटी को तो दाहिने हाथ से व साड़ी को बायें हाथ से सम्हालती हुई बाहर दौड़कर आई और राजा भरत के रूप को देखकर अचेत हो गई ॥ ७४ ॥

One woman's braid was loose and also her 'sari' She caught the sari with her right hand and the braid with the left and ran out (74)

पद्य—दगदगिसुव वळुमोलेयिंद जुगुळ्व मे । इदर सरेगनु सागिसुत ॥
मदगजगमनेयरडियिट्टु नूमंडि । मदननंनोडिदरोसेदु ॥ ७५ ॥

अर्थ—एक स्त्री भूलते हुये अपने दोनों स्तनों को सम्भालते हुये खड़ी थी, किन्तु पूरी सम्भाल नहीं चुकी थी, इतने में गीत, वाद्य के साथ महाराज भरतेश के जुलूस का शब्द कान में पड़ते ही सब कुछ भूलकर स्तम्भित होकर उन्हें देखने लगी ॥ ७५ ॥

One lady was just arranging her clothes to cover her body, getting down from the swing, but before she could do this the sound of the drums and bands reached her ears She forgot herself and like image began to look towards the coming procession (75)

पद्य—केळिगेंदोडवट्टु विटन कैविडिदोळ । शालेगे पोगुवष्टरोळु ॥
केळि सन्नेय विट्टनोत्तेय वीसाडि । सूळेय रेयिंद नोडिदरु ॥ ७६ ॥

अर्थ—एक वेश्या विट के साथ क्रीड़ा के लिये स्वीकृति देकर अन्दर जा रही थी । इतने ही में वाजे के शब्द को श्रवण कर उस विट को वहीं छोड़कर भाग गई और महाराज भरत की शोभा को टकटकी बाँधकर देखने लगी ॥ ७६ ॥

One prostitute had given her consent to her lover and was going inside the room, when all of a sudden she heard the sound of the coming procession. She left the man ran away and began to gaze at the Raja's beauty (76)

पद्य—वहुदिन वेटव वळसिद विटरोल्दु । गृहकेय्दे कंडतिंपाग ॥
महिपन पयण सन्नेय केळि विटर नि । स्पृह माडिवंदु नोडिदरु ॥ ७७ ॥

अर्थ—वहुत दिनों से अपेक्षित विट पुरुष को घर पर आने पर वहुत हर्षित होने वाली वेश्यायें जुलूस के शब्द को सुनते ही विट के प्रति निस्पृह होकर भाग गईं और राजा भरत की ओर निस्तब्ध होकर देखती रहीं ॥ ७७ ॥

A number of prostitutes, at whose infamous abodes their previously invited guests had come and who were enjoying their company, left them with indifference and ran to see the Raja (77)

पद्य—मुनिद् नल्लर दैन्यदिंद तिळ्हुतिद् ¸ । मुनिसिन्दु तिळिवुदेंवाग ॥
जनपन पयण सन्नेय केळि नल्लर । नेनेय देयूतंदु नोडिदरु ॥ ७८ ॥

अर्थ—किसी घर में स्त्री, पुरुष परस्पर में क्रोधित होकर झगड़ रहे थे । उसी समय महाराज भरत के दिग्विजय के शब्द को सुनकर आपसी मत भेद तथा झगड़ा भूल गये और उनके दर्शनार्थ सहर्ष चल दिये ॥ ७८ ॥

In one house a couple were hotly engaged in quarrel As soon as the noise of the coming procession fell on their ears, they forgot their quarrel and with happiness together ran out to have a sight of their emperor (78)

पद्य—वीळेयगोंवुद मरेदु जारिद तम्म । सेज्जेय सेरग नरियदे ॥
वेळ्ळागि वायूविट्टु वयसि नोडिदर.ग । सूळेयरा चक्रवरना ॥ ७९ ॥

अर्थ—जब वेश्या और विट दोनों सप्रेम पान खाने बैठे थे वे भी महाराज भरत की सवारी के शब्द को सुनकर पान खाना भूल गये और वेश्या तथा विट दोनों अपने कपड़ों को सम्भालना भूलकर राजा भरत को देखने लगे । ७९ ॥

In one house a prostitute and her visitor were engaged in love affair and were enjoying betels But as soon as they heard the beating or the drums, they forgot even to arrange their clothings properly and began to look towards the procession (79)

पद्य—आडलळवे चक्रनाथ न सोवगनु । नोडिद् पेएगळ्ळ्ल्लि ॥
नोडुत सैवरे गागिद्रुसुरद । ल्लाडद् पुत्थळियंने ॥ ८० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के सौंदर्य का क्या वर्णन किया जाय ! जिन स्त्रियों ने उनका दर्शन प्राप्त कर चुकीं, वे अपने को भूल गई और स्तब्ध पुतली की भाँति खड़ी हो गई ॥ ८० ॥

What can be said about the beauty of the Raja's person I have no words to express it Those ladies who saw him forgot themselves and stood at their places like images (80)

पद्य—नरे वंद मुदुकियररे वायदेरेदु कों । डिरदल्लि गोडेय नेम्मि ॥
भरत राजन नोडि अमिसिदरंदरे ।तरुणियरेदे सुम्मनिहुदे ॥ ८१ ॥

अर्थ—जिनके केश अति परिपक्व (जीर्ण) थे ऐसी ६० वर्षीया वृद्धा महाराज भरत को देखकर कामान्ध हो गई। और आधा मुंह खोलकर देखने लगी तथा भ्रमित हो कर दीवाल के सहारे टिक गई। तब तरुण स्त्री के हृदय में जिस प्रकार की भावनाओं का संचार हुआ होगा यह तो पाठक गण स्वयं ही समझ सकते हैं ॥ ८१ ॥

Old haggard ladies of sixty and above whose hair had grown grey got infatuated with passion at the sight of the Raja Who can then describe what would have happened to the hearts of the ladies who were in the full bloom of youthfulness (81)

पद्य—हेंगळु सोल्वदेनच्चरि पुरद ज। नंगळु राजमन्मथन ॥
शृंगार केदेसातु नोडुत भ्रांत सा। रंगदंत डियिट्ट रोडने ॥ ८२ ॥

अर्थ—स्त्रियों की तो बात ही क्या है ? नगर के पुरुष तक भी महाराज भरत के सौंदर्य का अवलोकन कर मुग्ध होकर भ्रान्त चित्त हो गये ॥ ८२ ॥

Let alone the ladies even men forgot themselves on looking at the handsomeness of their emperor (82)

पद्य—मानिनियरु तन्न नोडुतिद्दरु राय। तानवरनु नोडुतिल्ल ॥
आनेय कुंभदतीचि सुतेयतंद। येन कलितनो गौरववा ॥ ८३ ॥

अर्थ—स्त्रियाँ भरत की ओर बड़ी चाह से देख रही हैं। पर राजा भरत की दृष्टि गज-मस्तक की ओर ही थी। वे इधर-उधर देख नहीं रहे थे। ये गम्भीरता भरत जी ने कहाँ सीखी थी ? ॥ ८३ ॥

The looks of all the ladies were rivetted on the Raja's person but his looks were fixed on the head of the elephant He was not looking on any side Where did he get this sagacity (83)

पद्य—त्रिभुवनसार चिदम्बर पुरुषन। विभुवव कंडात्म सुखिगे ॥
लुबित बहुदे चित्त मत्त गजवनेरि। प्रभु सारुतिद्द नोजेयोळु ॥ ८४ ॥

अर्थ—जिन महा पुरुषों ने तीनों लोक में सार्वभूत श्री चिदम्बर पुरुष परमात्मा के अतुल वैभव का दर्शन किया है, क्या उसका चित्त इधर उधर के क्षुद्र विषयों में क्षुब्ध हो सकता है ? कभी नहीं। इस लिये महाराज भरत जी भी मत्त गज के ऊपर आरूढ़ होकर बड़ी गम्भीरता से जा रहे हैं ॥ ८४ ॥

There is nothing surprising in this Those great persons, who have through their inner vision gained the 'darshan' of the Lord Chidamber Purusha, the supreme being in all the world, cannot allow their minds to be vitiated by such lower animal feelings This was the explanation for the considerateness of Raja Bharat, who was proceeding seated on his elephant. *(84)*

पद्य—कोटि पात्रगळु सिंगरवागि मुंदे स । घाटिसि नृत्यवनाडे ॥
चाटु पाठकरु कैयेत्ति कीर्तिसे नडे । नाटक दोळ्गेयुदुत्तिर्दा ॥ ८५ ॥

अर्थ—करोड़ों नर्तकी स्त्रियाँ शृङ्गार करके आगे से नृत्य करती हुई जा रही हैं । और उनके साथ अनेक श्रुति पाठक गण विविधि सौम्य शब्दों से श्री भरतेश जी की शुभ कामना करते हुये जा रहे हैं ॥ ८५ ॥

Ahead of the procession were dancing with pleasure thousands of dancing girls followed by bards singing the praise of the king, and praying for his well being. *(85)*

पद्य—पुरुजिन सूनु पुष्पायुध नग्रज । भरत षट्खंडाधिनाथा ॥
गुरु हंसनाथ भावक जयवेंबर । करिगरल्लल्लि कैयेत्ति ॥ ८६ ॥
पद्य—मेदनीशरगंडमत्तेयदेरोधि र । जोदयाट विगुरिगंड ॥
कादलोड्डुव राजगिरि वज्रदंड नें । दोडुत्तिहरु भट्टरल्लि ॥ ८७ ॥
पद्य—इरियद पंथवमेरेयदमोडिय । अरियद कलेयजाणमेयनु ॥
होररचनेयोळु होगळिसि कोंवरगंड । नेरे चांगु वलरेंवरल्लि ॥ ८८ ॥

अर्थ—आर्य पुत्र, पुष्पायुध, अग्रज भरत षट् खण्डाधिपति गुरू हंसनाथ भावक ! आप की जय हो, इस प्रकार प्रत्येक प्राणी हाथ ऊपर उठाकर जय २ कार कर रहे हैं ॥ ८६ ॥

अर्थ—संपूर्ण पृथ्वी के राजपति ! अहंकारी, विरोधी राजगण रूपी जंगल के लिये दावानल-सदृश प्रति स्पर्धा करने वाले तथा राजगिरि के लिये वज्र दंड के रूप में रहने वाले आप की जय हो ॥ ८७ ॥

अर्थ—हे राजन् ! लोक में आत्म कला, विवेक से वंचित होने के कारण बहुत से राजा अपने कर्त्तव्य को न जानते हुये भी भाट रचनाओं से अपनी प्रशंसा कर लेते हैं ऐसे राजाओं के ऊपर भी आप अपना आधिपत्य रखते हैं, अतएव आप की जय हो ॥ ८८ ॥

Everyone was shouting with hands raised "Victory to you Rajan, Arya-putra, the devotee of Parmatman Hansnath and the head of the rulers of Bharat Kand".

Jai (victory) to you Rajan, the destroyer of proud foes like five to the forest, and the emperor of those kings also who through devoid of the knowledge of soul have attained fame through external achievements. (86-88)

पद्य—सिरियोळु शीलदोळोजेयोळाज्ञेयो । ळरसुतनदोळुवीरदोळु ॥
धरेयोळु त्यागदोळ् भोगदोळ् नरलोक । सुरपति जययेंब रोडने ॥ ८६ ॥

अर्थ—मृत्यु लोक में संपत्तिशील, तेज, आज्ञा प्रभुत्व, तथा वीरता इत्यादि गुणों से युक्त ही नहीं, बल्कि त्याग व भोग में आप सुरपति के समान हैं, इस लिये आप की जय हो ॥ ८९ ॥

"Victory to you, Rajan, who in this middle world is like the Indra in enjoyment and renunciation and who possesses brilliance, authority, bravery, and other qualities" (89)

पद्य—रंजिसि पात्र वाडुवरल्लि गल्लि पु । ष्पांजलि माळ्परल्लल्लि ॥
जंजडविल्लदिडुवरुनिवाळिय । कुंजर निदिरोळानृपगे ॥ ६० ॥

अर्थ—वहुत से कलाकार गण अनेक वैभव के साथ भाँति भांति के खेल बतला रहे हैं। और बहुत से पुजारी वार २ सम्मुख आकर श्री भरतेश की आरती उतार कर शुभ कामना कर रहे हैं। तथा अनेक प्रकार के सुगंधित पुष्पों को हाथ में रखकर जयनाद कर रहे हैं ॥ ९० ॥

Artists were showing their art in different manners, the admirers were offering 'arti' every now and then before the Raja and were shouting cries of 'Jai' offering the presents of fragrant flowers. (90)

पद्य—अडिगडिगिदि रोळारति यनेत्तुवरु म । त्तेडवलदोळुपुरजनवु ॥
मुडिवाळ मोल्ले मल्लिगेयनानेय मेल । किडुतुन्वि जयजयें वरोसेदु ॥ ६१ ॥

अर्थ—इस प्रकार पुनः पुनः आरती उतारते हुये दायें व वायें तरफ पुरुजन, परिजन अनेक प्रकार की पुष्प वृष्टि करते हुये जय जय कार कर रहे हैं ॥ ९१ ॥

All-round were admirers shouting cries of 'Jai' showering flowers and offering arti (91)

पद्य—वीरावळियनु नोडुवरोंदु देसेयोळु । दा रावळियनु नोडुवरु ॥
चारु गुणावळियोंदु देसेयोळु शृं । गारा वळियनु नोडुवरु ॥ ९२ ॥

अर्थ—एक तरफ वीरावली दूसरे तरफ दारावली, एक तरफ वीर गुणावली दूसरी तरफ शृङ्गारावली है, इन सब की शोभा प्रत्येक प्राणी को पारमानन्दित कर रही है ॥ ९२ ॥

All kinds of praises were showered allround pleasing everyone. (92)

पद्य—करि करिगोंडु वाजिप वाद्यरभस दो । ळुरुजय जयरभसदोळु ॥
कुरु कुरुमेट्टि लानेय मेले बंदनु । मेरेव देहार दंददोळु ॥ ९३ ॥

अर्थ—इस प्रकार राजा भरत भाँति २ के वाद्य गायन तथा जयघोष के साथ पर्वत के समान शोभने वाले, हाथी के ऊपर बैठकर प्रत्येक महल से होते हुये जुलूस के साथ जा रहे हैं ॥ ९३ ॥

With this splendour Raja Bharat seated on his hillock like elephant was passing in a procession with bands playing through different palaces. (93)

पद्य—मुंदे नर्तिपरिगे होगळुवरिगे लीले । यिंदुडुगोरे गळनिडुत ॥
मंदराद्रियनेरि सूर्यनेयुतप्पंते । बंदनु मदगजवेरि ॥ ९४ ॥

अर्थ—श्रुति पाठकों एवं खिलाड़ियों को अनेक प्रकार के पुरस्कार वितरण करते हुये श्री भरत जी इस प्रकार जा रहे हैं मानो सुमेरु गिरि पर चढ़कर सूर्य आ रहे हों ॥ ९४ ॥

On the route he was distributing prizes and rewards to different reciters of scriptures, bards, and dancers He looked like sun coming on mount Meru (94)

पद्य—दुगुलद तोरण पुष्प तोरण तळि । रुगळ सत्फलद तोरणवा ॥
नुगुळुते यतंदनु हलवु वरणदसाळ । मुगिल नुसुळुवनर्कनंते ॥ ९५ ॥

अर्थ—दिग्विजय किशुभ कामना से श्री भगवान जी के स्वागतार्थ नगर में यत्र तत्र तोरण बंदन करा दिये हैं । कहीं वस्त्र का तोरण कहीं पुष्प का तोरण और कहीं कोमल पत्तों का तोरण इन सब तोरणों को पारकर जब भरत जी आगे बढ़ रहे थे उस समय ऐसा मालूम हो रहा था कि मानों अनेक वर्णों के सूर्य आकाश में चढ़ रहे हों ॥ ९५ ॥

Everywhere there were buntings and flags to bid Raja Bharat a royal

farewell on the eve of his departure for Digvijay. There were buntings of cloth, buntings of flowers, buntings of leaves and other buntings Bharat Ji passing through them looked as if sun was passing through sky of different colours (95)

पद्य—कंचिन तोरण कनक तोरण रत्न । संचयतोरणगळनु ॥
मिंचिन मालेय नुगुळ्व चंद्रमनंते । हिंचिसि नुगुळ्तेयिददनु ॥ ९६ ॥

अर्थ—कहीं कांसे के तोरण तो कहीं स्वर्ण के तोरण और कहीं रत्न संचय तोरणों को भी पार कर श्री भरत जी ऐसे मालूम हो रहे थे कि मानों प्रतिभाशाली चन्द्रमा अनेक नक्षत्रों के बीच में से चमकता हुआ जा रहा हो ॥ ९६ ॥

Then there were 'kansa' buntings, gold buntings, and pearls buntings. While Bharatji was passing under them, it appeared as if glorious moon was coming through a galaxy of shining stars (96)

पद्य—तोरणगळ रायं नुसुळ्वाग मेलोडिड । सेरिसिर्दलरपोट्टणवा ॥
दूर दोळिद् सूत्रव मिडिदुरे पुष्प । सारभिषेक माडिदरु ॥ ९७ ॥

अर्थ—उन तोरणों की रचना में यह विशेषता थी कि कहीं कहीं उसके बीच में पुष्प पोटली बांधकर रक्खी गई थी। भरत जी जब उसमें प्रवेश कर रहे थे तो दोनों तरफ दो दीर्घ डोरी खींचने से उन पर पुष्प वृष्टि होती थी तब सब लोग जय जय कार करते थे ॥ ९७ ॥

There was some novelty in the manner in which the buntings were set up They had tied a small bundle of flowers in them at different places. Two strings were tied to them The strings were pulled on either side, (when Raja Bharat passed under them) releasing bunches of flowers on him At that time people used to shout cries of 'Jai' (97)

पद्य—सिरिवनदोळगे मन्मथ राज बर्प्पंते । पुरद वीदियोळितु बंदु ॥
सिरि नेलसिप्प होत्तिनोळु विनीता । पुरद कोटेयनुदाटिदनु ॥ ९८ ॥

अर्थ—नगर प्रयाण की शोभा इस प्रकार अपूर्व थी, जिस तरह शृङ्गार वन में मन्मथ राजा बहुत वैभव के साथ प्रवेश करता है। उसी प्रकार राजा भरत जी अयोध्या के परकोटा को पार किया ॥ ९८ ॥

The ceremony of departure from the city was being celebrated with great eclat Raja Bharat reached the outer wall of the city like cupid entering a garden flowers (98)

पद्य—पट्टणवनु दाटि पोज नोडुत्त बळु । बट्ट वयलिगागि नृपतिं ॥
वेट्टदानेयनेरि वरुतिर्द निन्निंगे । पट्टण पयणद संधि ॥ ६६ ॥

अर्थ—नगर के वाहर प्रस्थान के लिये विशाल सेना तैयार होकर खड़ी है । और सेनापति जी सम्राट् की आज्ञा की प्रतीक्षा में हैं । महाराज भरतजी भी उसी ओर से जा रहे हैं और सजी हुई सेना को देखकर उन्हें अपार हर्ष हुआ ॥ ९९ ॥

A vast army was standing outside the wall ready for the march and the commander-in-chief was waiting for orders from his Majesty, the king Bharatji emerged on the same side and was pleased to see his well equipped army (99)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळ्दिवर पाप । बीज निर्नाशनवहुदु ॥
तेज वहुदु पुण्य वहुदु मुंदोलिप । राजितेश्वरणकारुवरु ॥ १०० ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेगा उसका पाप वीज नष्ट होगा । तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य वन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेगा ॥ १०० ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un conquerable position (liberation) (100)

पद्य—प्रेमदिंदिद नोदिदरे पाडिदरे केळ्द् । रामोद वैदुवरवरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय काणवरतियोळु ॥ १०१ ॥

अर्थ—इस कथा को जो लोग प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनगे वे आमोदको प्राप्त होंगे और निश्चय से देवपद को प्राप्त कर अन्त में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ १०१ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (101)

पद्य—अत्यत भोगवनधिक सौभाग्यव । सत्यात्मरिगे माळ्पशांता ॥
स्तुत्या नीनेन्नोळगिरु भव्यकमला । दित्या चिदम्बरपुरुषा ॥ १०२ ॥

हे परमात्मन् ! आप भव्य कमल के लिये सूर्य के समान हो, प्रशान्त हो, और जो लोग सत्य प्रकृति के हैं उन्हें अत्यन्त भोग व शोभा प्राप्त करने में प्रधान सहायक हो अतएव आप स्तुत्य हो और मेरे हृदय में सर्वदा बने रहो ॥ १०२ ॥

Parmatman ! you are like sun to the lotus like Bhavyas, and your name is a source of happiness and enjoyment to the votaries of truth. You alone are praisworthy May you always reside in my heart. (102)

॥ इति द्वितीय भागस्य द्वितीय सर्ग पत्तन प्रयाण संधि संपूर्णम् ॥

तृतीय सर्गः

❁ दशमी प्रस्थान संधि ❁

पद्य—मूजग तुंविद जीव राशिय पौज । माजदावाग काण्व भवा ॥
राजित मतिदोरु कैवल्य लोकाधि । राज निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—पोल में कूट कूट कर भरे हुये तिल की भांति तीन लोक की पोल में भरे हुये समस्त चराचर जीवों को एक साथ ही केवल ज्ञान रूपी नेत्रों से देखने वाले ज्ञानाधिपति हे निरंजन सिद्ध भगवान्! आप सर्वदा मेरे हृदय में रहकर मुझे विशुद्ध बुद्धि प्रदान कीजिये ॥ १ ॥

Purify, my heart O Lord,
Reside in my heart, O Lord
Omniscience is thine eyes
O Lord,
Thou perceivest all beings
O Lord,
filling the whole universe
O Lord,
Like rapeseed compact pit
O Lord (1)

पद्य—इभवनडरिभरतेशनानावाद्य । रभस दोळेयुत रुवाग ॥
अभि मुखदोळु मुंदे वन्निय मरदल्लि । प्रभे दोरेदुदु चक्ररत्ना ॥ २ ॥

अर्थ—अनेक वैभव के साथ श्री भरतेश जी हाथी पर चढ़कर आगे जा रहे हैं। अयोध्या नगर के बाहर कुछ दूर पर ही सामने एक विजयवृक्ष पर चक्ररत्न का प्रकाश दिखाई दिया ॥ २ ॥

Mounted on an elephant Bharatji was proceeding with all grandeour. The lustre of Chakra Ratna propped against Vijai tree was visible at a little distance from Ayodhya (2)

पद्य—सिंहलग्न दोळरमनेयिंद तेरळ्वाग । सिंहासनेशनाज्ञेयोळु ॥
रंहदि दंडनायक नडेसिद चक्र । तां होळेदोप्पि तिदिरोळु ॥ ३ ॥

पद्य—फलपुष्प झल्लि पट्टेगळिंद श्रृंगार। वळवट्ट विजय वृक्षदोळु ॥
तोळगुतिद्दु चक्ररत्न रायन महा। वल नोड लच्चरिवट्ट ॥ ४ ॥
उन्नत देळेगोनेगळु घाळियिंद कै। सन्नेगैवंददितूगे ॥
बन्नियेदेल्लरनोत्तिगेकरेवंते। वन्निय मर विराजिसितु ॥ ५ ॥

अर्थ—सिंह लग्न में सिंहासनाधीश श्री भरत जी जब राज महल से बाहर निकले तो इनकी आज्ञा से सेनापति ने अनेक अलंकारों से अलंकृत करके चक्र रत्न को आगे चलाया और वह चक्ररत्न विजयवृक्ष पर चमकने लगा ॥ ३ ॥

अर्थ—"उसका शृङ्गार" फल, पुष्प, झालरादि अनेक वस्त्रों से इस प्रकार सुशोभित किया था, वे पराक्रमी राजा भरत जी के सामने अत्यन्त चमक रहे थे ॥ ४ ॥

अर्थ—विजयवृक्ष में लगे हुये पुष्प कलियों के गुच्छे हवा के झोंकों से हिलते हुये इस प्रकार मालूम देते थे कि मानो विजयवृक्ष स्वयं ही हाथ हिलाकर श्री भरत जी को बुला रहा हो ॥ ५ ॥

While Bharteshwar was proceeding forward with all glory out of Ayodhya he saw the lustre of ChakraRatna on the victory tree ahead Bharteshwarji ordered the Commander to move the Chakra Ratna forward. The Chakra Ratna was fully decorated to the very liking of Emperor Bharat In the Shiv Lagon (auspicous moment), the Vijai tree (tree of victory) was decorated with different varieties of fruits and flowers and adorned with multifarious borders The beautilul sight of nicely decorated Vijai tree with the glare of Chakra Ratna filled Bharat with thrill and astonishment Chakra Ratna was moving to and fro in the open air in such a way as if it was calling Bharteshwar (3-4-5)

पद्य—सुट्टल्दुव शंख विप्पुत्तु नालकेंत्ति। कुट्टुव भेरि पन्नेरडु ॥
मुट्टुव पटह पन्नेरड रोळ्वन्निय। कट्टेय सादनाराय ॥ ६ ॥
अंके गोट्टानेय निल्लसि मेल्गिर्दो। दंकुशदोळु हस्तविट्टु ॥
चिंक दोळ्ळोलेदु नोडिदनु श्रृंगारद। सोंकिनोळेसेवप्रायद्ळवा ॥ ७ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार के तुड़ही, व चौबीस प्रकार के भों भों शब्द करने वाले शंख, तथा बारह प्रकार के वाद्यादि बाजे गाजे के साथ श्री भरत जी विजय वृक्ष के पास गये ॥ ६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी विजयवृक्ष के पास गये। वहां जाकर हाथी के गंडस्थर पर अंकुश रखकर हाथी को खड़ा करके चारों ओर देखा तो सारी पृथ्वी सेना से परिपूर्ण दिखाई दी ॥ ७ ॥

पद्य—कएणेट्ट्‌ वष्टरोळ्वेत्त नोडिद्‌रत्त । हरिएणदानेगळु तेजिगळु ॥
वएण वगेय रथ वीर भटर मोत्त । पएणे पएणेयोळ्दिु दाग ॥ ८ ॥
वेरे वेरेल्लल्लि पौजिक्क तम्मेळे । दोरुव टिक्केयनेत्ते ॥
चीरुव कहळे कोंवि नोळ्दि रैव । तारु देशद धरणिपरु ॥ ९ ॥

अर्थ—राजा भरत जी जिधर ही दृष्टि डालते थे उधर ही अनेकानेक हाथी, घोड़े, रथ तथा योधा ही दिखाई देते थे ॥ ८ ॥

अर्थ—उस समय अनेक वैभव के साथ अपनी सेना सजाकर साथ में लेकर पृथक् पृथक छप्पन देश के राजा आने लगे ॥ ९ ॥

Emperor Bharat was going mounted on elephant to have the sight of Chakra Ratna with all the courtiers and twentyfour varieties of musical insttruments with different kinds of drums Emperor Bharteshwar while seeing the Vijai tree, put his hand on the forehead of the elephant and saw his countless army and all the kings of 56 countries with their armies in all the four direcitons- (6-9)

पद्य—जय राज नेंद्‌योध्यांकनेंदि्‌तु च । क्रिय द‌ळपति गेरळ्पेसरु ॥
जयवंत नव नतिवीर विवेकि च । त्रिय निर्दनरसनोत्तिनोळु ॥ १० ॥

अर्थ—राजा भरतजी के सेनापति जयराज हैं। इन्हें अयोध्यांक भी कहते हैं। इन्होंने संपूर्ण सेना की समुचित व्यवस्था कर दिया है। ये विजय शील, पराक्रमी, विवेकी तथा असल क्षत्री हैं। ये भरत जी के निकट विद्यमान हैं ॥ १० ॥

Jaikumar, the commander-in-chief of Bharat's army also known as Ayodhyaank had marvellously trained organised armed forces Jaikumar was most prudent, brave and he belonged to the respectable family of Kshattriya and he always remained with the Emperor Bharat (10)

पद्य—मध्यान्ह तिरुगि सूर्य्य जावदोळ्ग। योध्यन कैमन्नेगेळ ॥
अध्यल राजरु सर्तंदु कंडर । योध्याधिपतियनेनवे ॥ ११ ॥

अर्थ—अपराह्न काल में तीसरे पहर राज सभा हुई। सेनापति जंराज के संकेत से सब राजाओं ने आकर श्री भरत जी का दर्शन किया ॥ ११ ॥

In the midday, the court began its functions and all the kings noticing the presence of the commander-in-chief Jaikumar came forward to have the sight of the great emperor Bharat (11)

पद्य—सिंगाडि बिल्ल मोहरद्ल्लि हिरिय तु। रंगवनेरि कुशिसुत ॥
अंगदेशद रायमुंगडे गेयि्द रा। यंगे कैमुगिदु सागिद्रु॥ १२ ॥

अर्थ—अनेक शृङ्गार के साथ अश्व पर बैठकर अङ्ग देश का राजा आया। और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर चरणों में प्रेम पूर्वक नमस्कार करके उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ॥ १२ ॥

The ruler of Angdesh came forward holding a big bow hearing his inscriptions paid his salutation to King Bharat and stood aside (12)

पद्य—भल्लिय बिल्ल मोहरद नडुवे दोड्ड। बोल्ल ननेरि कुशिसुत ॥
पल्लव देशद नृप बंदु नृपनिदि। रल्लि कैमुगिदु सागिदनु ॥ १३ ॥

अर्थ—बीच में चांदी की मुहर लगी है जिसके ऐसे विशाल धनुप को हाथ में लेकर पल्लव देश का राजा आया। यहां आकर बहुत सा भेंट श्री भरत जी को देकर प्रेम पूर्वक चरणों में नमस्कार करके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ॥ १३ ॥

Then came the ruler of Pallav Desh mounted on a horse, holding in his hand his bow bearing his flag, and bowed before the Emperor with grace (13)

पद्य—बेळ्ळिय कट्टिण बिल्ल मोहर दल्लि। सल्लीले योळ्ु तेजियेरि ॥
वल्लिद् निदिरोळ्ु बंदु कैमुगिदोरे। यल्लि केरळराय नोलेदा ॥ १४ ॥

अर्थ—चॉदी से मढ़े हुये धनुष में अपनी मुहर लगाकर घोड़े पर चढ़कर केरल देश का राजा आया। वह बहुत सी भेंट श्री भरत जी को समर्पित करके चरणों मे प्रेम पूर्वक नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ १४ ॥

Then came the king of Kerala, sitting on an elephant and holding in his hand a bow mounted with silver

He bowed to the king and took his place on one side ((14)

पद्य—चिन्नद कट्टिन बिल्ल मोहरदल्लि । कन्नील नेरि कुणिसुत ॥
मन्निधि गेयुतंदु कै मुगिदोलेदनु । कान्नोजराज नोजेयोळु ॥ १५ ॥

अर्थ—स्वर्ण जड़े हुये धनुष में अपनी मुहर लगाकर कनेर रंग के घोड़े पर बैठकर उसे नचाते हुये कन्नौज देश का राजा आया । और बहुत गौरव के साथ बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर प्रेम पूर्वक चरणों में नमस्कार करके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ॥ १५ ॥

Then came the king of Kanauj mounted on a horse of deep brown colour and holding in his hand his golden bow bearing the flag He saluted the Emperor Bharat and stood aside (15)

पद्य—करिय कट्टिन हरिगेय बेळुवरि कें । बरिगेय मोहरदल्लि ॥
तुरुगवडरि बंदु कैमुगिदोलेदनु । करहाट देशद राया ॥ १६ ॥

अर्थ—काले रंग के धनुष के मध्य में चांदी की मुहर लगाकर करहाट देश का राजा आया । वह बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर प्रेम पूर्वक चरणों में नमस्कार करके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ॥ १६ ॥

Then came the ruler of Karhat mounted on a red horse and bearing a bow coloured black and bearing his seal in silver He bowed before the Emperor and took his place (16)

पद्य—चिन्नद कासे बेळ्ळिय कासे निडुभल्लि । कन्नडि नड्ड हरिगेय ॥
सन्नहदोळु बंदु सौराष्ट्र देशद । मएणेय मणिदु सागिदनु ॥ १७ ॥

अर्थ—अनेक भांति की ध्वजा, पताका, चांदी के चमर आदि तथा अनेक गाजे बाजे के साथ सौराष्ट्र देश का राजा आया । तथा बहुत सी भट श्री भरत जी को देकर प्रेम पूर्वक चरणों में नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ १७ ॥

. Then proceeded forward the chieftain of Saurashtra holding in his hand his bow mounted with silver and gold shining like rain-bow and mounted on a new horse He bowed before the emperor and took his place (17)

पद्य—अरिद तन्नेय कीर्ति मुखद पेरानेय । पिरिय मिंहद हरिगेगळ ॥
नेरत्रि नोळेयिद्द केमुगिदु काशिय देश । दरम नोलेदनोंदु देसेगे ॥ १८ ॥

अर्थ—अनेक हाथियों के बीच में एक छोटे हाथी को बहुत सजाकर उसपर बैठकर काशी देश का राजा आया। और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ १८ ॥

Then came the ruler of Kashi seated on an elephant and surrounded with other elephants and saluted the emperor He also occupied his place (18)

पद्य—होगेयंते पेटळु तुपाकिय बलगूडि । धिगिधिगिनिदिरिगे बंदु ॥
नगेमोगदरसगे कैमुगिलोदनु । तिगुळररसनोंदु कडेगे ॥ १९ ॥

अर्थ—भयंकर शब्द करने वाले फटाके के साथ तिगुल देश का राजा आया और अनेक प्रकार की भेंट समर्पित करके चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ १९ ॥

Then came the ruler of Tigul on an elephant displaying fire work bowed before the emperor and took his place on one side (19)

पद्य—गडेयूटि कैगत्ति सबळ मुंताद पे । बंडेगूडि घुडुघुडु नेयूदि ॥
ओडेयगे कैमुगिदोय्यने तेलुग ना । डोडेय सागिदनोंद बळिगे ॥ २० ॥

अर्थ—घुड़ घुड़ शब्द करते हुए अपनी सेना के साथ तेलुग देश का राजा आया। और विविध प्रकार की भेंट श्री भरत जी को समर्पित करके चरणों में सादर नमस्कार करके खड़ा हो गया ॥ २० ॥

Now came the chief of Telgu with bands playing and bowed to the emperor (20)

पद्य—संजोग दश्वगळत्तित्त कोळिय । हुँजुनंददि पारि हरियै ॥
कुंजरद ग्रदोळ्सेव रायन हुरु । मुंजियरस बंदु कंडा ॥ २१ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार से सजी हुई सेना को साथ ले हुरमुंजि देश का राजा आकर बहुत सी भेंट देकर चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ २१ ॥

Then pushed forward the king of Munja country accompanied by well decorated army who stood with folded hands after offering many presents and saluting him (21)

पद्य—हारैसु तेरइ कालेत्ति निंदुलि देळ्व । वाम्बगळ वळसिनोळु ॥
सारलेयुतेंदु चक्रिगे कैय मुगिदनु । पारसिनाड वल्लहनु ॥ २२ ॥

अर्थ—अनेक घोड़ों के बीच में एक घोड़े पर बैठकर दोनों पावों को ऊपर करके घोड़े को नचाते हुए पारसीय देश का राजा आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर उनके चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ॥ २२ ॥

Then came the chief of Persia mounted on a horse standing on its hind legs and saluted the emperor (22)

पद्य—धारिणियोळु निंदु निल्लदे कुणिदेळ्व । कारुरगनु कणेवट्टा ॥
चेर चोळ्नु कैर तेजिगळोडगूडि । चेरदेशद राया कंडा ॥ २३ ॥

अर्थ—पृथ्वी को स्पर्श न करने वाले ऐसे आकाश गामी घोड़े पर बैठकर उसे नचाते हुये और नाना प्रकार के गाजे बाजे के साथ चेर देशीय राजा आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ २३ ॥

Then proceeded the king of Ber with army and bowed before the emperor. (23)

पद्य—गंध वाहन शीघ्रगति तम्म मुंदे जां । त्यंधद गतियेंदु नगुत ॥
बंधुर वाजिगळोग्गि नोळ्येतेंदु । सिंधुदेशद राय कडा ॥ २४ ॥

अर्थ—परम सुन्दर शीघ्रगामी जात्यंद घोड़े को आगे करके अनेक घोड़ों के साथ सिंध देशीय राजा आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ २४ ॥

Seated on a Jatyand horse came the King of Sindhu with smiling face paid his respects to the emperor and stood aside (24)

पद्य—होल्केय कुदुरेय हिंडिनोउ तानोदु क । चळ्न दुव्वाळिमि बंदु ॥
कलहरि देशद राय कैमुगि दोग्य । नोते दोंदु देशेयोळ् निंदा ॥ २५ ॥

अर्थ—नाना प्रकार के घोड़ों को खूब सजाकर कलहरि देश का राजा आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ २५ ॥

पद्य—गुड्डेगळनु वळनेट्टगळनु तेगे । दोड्डोड्डि नडेसुवंददोळु ॥
दोड्डाने चिक्कने योड्डि नोळड्ड वं । दोड्डिराय कैमुगिदा ॥ २६ ॥

अर्थ—छोटे छोटे पर्वतों को सूँड़, पांव से ठुकराते हुये अनेक छोटे हाथियों के मध्य में एक बड़े हाथी पर बैठकर ओड्डि देश का राजा आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को समर्पित कर चरणों में सादर नमस्कार करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ २६ ॥

पद्य—कुँड्युपमान कुंभस्थळगळ परि । चंड्य मत्तेभ घटेयोळु ॥
पांडय देशद राय बंदु कंडनु वैरि । दंड्यमानन धरणिपना ॥ २७ ॥

अर्थ—अनुपमेय गंडस्थल से सुशोभित मतवाले हाथियों के साथ पांड्य देश का राजा आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ २७ ॥

पद्य—सिंहनादकेरडे दत्तित्त कदलुत । बृंहिसुवाने योड्डिनोळु ॥
सिंहपराक्रम निदिरेयिद्द कंडनु । सिंहळ देशद राया ॥ २८ ॥

अर्थ—सिंह के समान गर्जते हुये विशाल हाथी पर बैठकर शिव पराक्रमी श्री भरत जी के सामने सिंहल देश का राजा आकर हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ २८ ॥

पद्य—आर्जिसि दोंदोंदु दुर्गगळंते स । म्मार्जिसि चौकदोळेसेव ॥
ऊर्जित रथ दोड्डिनोळु बदु कंडनु । गुर्जर देशद राया ॥ २९ ॥

अर्थ—किले के समान ऊँचे ऊँचे रथों को सजाकर गूर्जित रथ के साथ गुर्जर देश का राजा आया। और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ २९ ॥

पद्य—चाप बाणगळिगे भटरिगे तेरपिन । रुपिंदनोडलोंदोंदु ॥
द्वीपदंतेसेव रथदोळेयिदिकंडनु । नेपाळ देशद राया ॥ ३० ॥

अर्थ—रत्नों से युक्त सजी हुई सेना में धनुष, बाण हाथ में लिये हुये शूर वीरों के साथ देदीप्यमान नैपाल देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३० ॥

पद्य—चिर्वोकु गिकुगिरेंदुळ्ळुव गालिय । अमेंटेयग्विल रथदोळ्‌ ॥
वोमुगिलेंव वाद्यदोळोत्ति बंदुवि । दर्भ देशद राय कंडा ॥ ३१ ॥

अर्थ—अनेक रथों के पहियों के घरघराहट के साथ कोलाहल करते हुये विदर्भ देश का राजा आया व बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३१ ॥

पद्य—आने कुदुरे रथ कालाळ मोत्त म । मान वागिग्लोत्तिवंदु ॥
चीन महाचीन दरमुगळिव्वरु । भूनाथ गेरगि नागिदरु ॥ ३२ ॥

अर्थ—हाथी, घोड़े रथ, सेनादि को बराबर लेकर चीन व महाचीन देश का राजा आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३२ ॥

पद्य—तादिसे ठण ठण तुलिव तंबदि मुंदे । कोटि भटर मोत्त हिंदे ॥
भोट्ट महाभोट्ट देशपतिगळु कि । रीटिय कंडरुव्विनोळु ॥ ३३ ॥

अर्थ—नाना भांति के टनटनाहट शब्दों को करते हुये अपने पीछे शूर वीरों को करके भोट्ट महाभोट्ट देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३३ ॥

पद्य—खेटक खड्ग कवचद भटरु नंड । गोटे यंनोले सिवरन्तु ॥
लाट महालाट देशद नृपरु म । वाटिके सिगे कंडरार ॥ ३४ ॥

अर्थ—आखेट व युद्ध में बहुत तेज चलने वाली तलवारों को हाथ में लेकर कवच पहने हुये अनेक शूर वीरों की पंक्तियाँ बनाकर लाट व महालाट देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरतेश जी को देकर हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३४ ॥

हय—करमपवळिदु कुंकुमद भूळिय शोण । रश्मि रंजिमे देहर्तुवि ॥
कारमीर दरमु केंग्रुगिदतु बंदु मं । दस्मितमुखद भूभृजगे ॥ ३५ ॥

अर्थ—निर्मल स्वर्णादि आभूषणों से रश्मि घोड़े को भली भांति सजाकर कुंकुम वर्ण के घोड़े पर बैठकर कारमीर देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर हाथ जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३५ ॥

पद्य—तुरक सिंगाडि खेडेय लाळि कोल नि । ष्ठुर वाक्यदाळ्गळोग्गिनोळु ॥
चुर चुर यृदि केलुगिदु गड्डद दोड्ड । तुरुक ररसु तोलगिदनु ॥ ३६ ॥

अर्थ—तुड़ही नामक वाद्य से तुड़तुड़ाहट करते हुये और भी वहुत से वाद्यों को वजाते हुये अनेक घोड़ों पर वैठकर वड़ी वड़ी दाढ़ी मूँछ वाले सैनिकों को साथ लेकर तुर्क देश का राजा आया और वहुत सी भेट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़के चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३६ ॥

पद्य—कर्णद चोकुळि गेणुह चुंगु वि । कीर्णिप चमर पताके ॥
घूर्णिप वाद्य दोळेयृतंदु कंडनु । कर्णाट दरसना नृपना ॥ ३७ ॥

अर्थ—कर्ण में किरीट, कुंडल धारण किये हुये तथा हाथ में छत्र चमर लिये हुये कर्णाट देशीय राज अया और वहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ३७ ॥

पद्य—कुंमियकुंभ दोळ कुंशविट्टुति । गंभीर मिगे नोडुतिप्प ॥
कुंमिनीपतिगे कैमुगिदोय्य नोलदनु । कांबोज देशद कर्ता ॥ ३८ ॥

अर्थ—हाथी के मस्तक पर अंकुश रखते हुए आगे पीछे देखते हुये न्याय शील कांबोज देश का राजा आया व नाना प्रकार की भेंट श्री भरत जी को समर्पित कर दोनों हाथों को जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ ३८ ॥

पद्य—तिगळ वेळगिन तेनेयंते चवरद । दांगुडि दाळिसे मेरेव ॥
संगर मल्लन कंडु कैमुगिदाग । वंग देशद रायनोलेदा ॥ ३६ ॥

अर्थ—पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान चमकता हुआ वंग देश का राजा आया व अनेक भेंट श्री भरतेश जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ ३९ ॥

पद्य—कित्त कठारिय राजपुत्ररु गूडि । वृत्त देशद राय वंदु ॥
मुत्तिन सत्तिगे नेळलोळ गेसेवरा । जोत्तुग गेरिगिंदनाग ॥ ४० ॥

अर्थ—अनेक शस्त्रादि लेकर राज कुमारों के साथ मोती का छत्र, चमर लिये हुये वृत्त देश का राजा आया व विविध भांति की भेंट श्री भरत जी को देकर दोनो हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४० ॥

राजा भरत सिंह लग्न में दसमी के दिन सेनापति के द्वारा चक्ररत्न को प्रस्थान कराके बरगद के पेड पर विठा दिया था आज एकादशी के दि[illegible]
उसको लेकर आगे बढेगें।

यह चित्र सौभाग्यवती शान्ती देवी धर्म पत्नी ला० पुत्तीलाल जी जैन के द्वारा छपा।

पद्य—वेत्रधररु मुंदे निंदवनित्र नेंदु । धात्रीपालर तोरे नोळ्प ॥
चत्रिय रोडयगे कैमुगिदनु बंदु । चित्रकूटद देशदरसु ॥ ४१ ॥

अर्थ—अनेक वेत्रधारी राज दूत सेना के आगे हटो, चलो ऐसे कोलाहल करते हैं जिस सेना में ऐसी सेना को साथ लेकर चित्रकूट देशका राजा आया और श्री भरत जी का विविध प्रकार की भेट देकर दोनों हाथों को जोड़कर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४१ ॥

पद्य—पंचसरद पदकद मकुटद नत्र । पंचरत्नद कांति होळेय ॥
पंचबाणन हिरियण्णन कंडनु । पांचाळ देशद राया ॥ ४२ ॥

अर्थ—पाँच प्रकार के (पदक) हमेल और मुकुट में पंच रत्न की काँति से चमकना हुआ तथा पंचबाण को नष्ट करने वाला पाँचाल देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४२ ॥

पद्य—गौळ सारंगोळु चक्रिय गुणगळ । गौळ रागदोळु पाडिसुत ॥
गौळि फलदोळु लियल्तंदु कंडनु । गौळ देशद राय नृपना ॥ ४३ ॥

अर्थ—गौड़सार राग में श्री भरतेश जी की स्तुति करता हुआ गौलदेश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४३ ॥

पद्य—काळगदाळग ळोग्गिनोळु जेजेयंदु । काळेय नूदिसिकोळुत ॥
काळिंग देशद राया बंदापूर्व । कालद चक्रिय कंडा ॥ ४४ ॥

अर्थ—तुरही की ध्वनि से अनेक कोलाहल करता हुआ बड़े बड़े अश्वों के साथ सेना सजाकर कालिंग देश का राजा आया और अनेक प्रकार की भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४४ ॥

पद्य—आळु कुदुरेगळ हरिदभूचरगे त । न्माळ्वनोरवेंकंदु ॥
माळ्वपति बंदु कंडनु पडे निड्ड । माळव मुत्ति मुक्ळसि ॥ ४५ ॥

अर्थ—अपनी सेना को खूब सजाकर अनेक अश्वों को नचाते हुये मालव देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४५ ॥

पद्य—जवदाडे विडिदु लागिगुत नडेव भट । निवहद पोजिनोळेयुदि ॥
धवल देशद राय बंदु चक्रेश्वर । गवनतनागि साजिदनु ॥ ४६ ॥

अर्थ—अगणित सेना के साथ अनेक वाद्य, गायनादि करता हुआ मक्का देश का राजा आया और वहुत सी सेना श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४६ ॥

पद्य—लेक्क विल्लद मंदिगुडि नेगळ दोंदु । टिक्केयनेत्ति गाडियोळु ॥
मक्क देशद राय वंदु कैमुगि दोंदु । दिक्किनोळगे सादु निंदा ॥ ४७ ॥

अर्थ—विद्युत् के समान देदीप्यमान शस्त्रों को हाथ में लेकर वंगाल देश का राजा आया और वहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४७ ॥

पद्य—मुँगार मिंचिनंददि कित्त खड्ग द । संगर वीर नोग्गिनोळु ॥
बंगाळ देशद राय बंदा रण । रंगमल्लगे कैय मुगिदा ॥ ४८ ॥

अर्थ—ताम्र वर्ण के समान चमकते हुये घोड़ों को सजाकर पूर्ण सेना के साथ साम्राणि देश का राजा आया व वहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर सामने ख,ा हो गया ॥ ४८ ॥

पद्य—आमृमुड्डु किलु वळिदु होळेव होस । तामृद वर्ण दोळेसेव ॥
साम्राणिय नेरि वंदु कैमुगिदनु । साम्राणि देशद राया ॥ ४९ ॥

अर्थ—वाल विखरे हुए अनेक राज कुमारों को साथ में लेकर छत्र, चमर से युक्त कुंतल देश का राजा आया और वहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ४९ ॥

पद्य—कुँतु कोरते होद्दरसु मक्क ळुगूडि । कोंत तोमरद सेनेयोळु ॥
कुँतळ देशदरसवंदु कंडनु । दंतियमेलननृपना ॥ ५० ॥

अर्थ—अनेक प्रकार की चतुरंगिणी सेना के साथ दिम्बु दिम्बु शब्द करते हुए हम्मीर देश का राजा आया और वहुत भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ५० ॥

पद्य—चिम्मुव कालाळ चवरद सेनेय । सम्मुख दोळु तोरि नडेसि ॥
दिम्मु दिम्मेंव वाद्य दोळेय्दि । हम्मीर देशद राया ॥ ५१ ॥

अर्थ—गगन चुम्बी ध्वजा हाथ में लेकर अनेक वैभव से सजी हुई सेना सहित गौड़ देश का

राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ५१ ॥

पद्य—चौडने नेरि पायद्ळ गूडिगगन के । लौडिय निड्डतानुतैदि ॥
तौडेळे बडिवेनेन्नोडेयगांतरनेंदु । गौड देशद राय कंडा ॥ ५२ ॥

अर्थ—अनेक वीर भटों के साथ अल्लोल-कल्लोल करते हुये तथा स्वर्ण कंगन हाथ में पहने हुये कोंकण देश का राजा आया व बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ५२ ॥

पद्य—नूँकि नडेसि वीर भटर नाना वाद्य । दिंकिडलि दरिंगे वंदु ॥
कंकण वेसवे कैयेत्ति राजेंद्रगे । कोंकणपति पोडवट्टा ॥ ५३ ॥

अर्थ—अनेक भूषणादि से सजावट किये बहुत सी सेना को साथ में लेकर तुलु देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर दोनों हाथों को जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ ५३ ॥

पद्य—होळेव भूषण वरण वस्त्र डोंकिन काडि । तलेय कूराळ्ग नोगिनोळ्ु ॥
तुळुनाडि नरसु दोद्‌गर तुळिसु तेय्दि । तुळिडु गेंदनु चक्रधरगे ॥ ५४ ॥

अर्थ—अनेक भांति से मूँछ, दाढ़ी ऐंठते हुए तिरछी दृष्टि इधर उधर डालते हुये घोड़े चढ़कर बहुत शस्त्रों को हाथ में लेकर वर्वर देश का राजा आया और बहुत सी भेंट श्री भरत जी को समर्पित करके दोनों हाथों को जोड़कर सामने खड़ा हो गया ॥ ५४ ॥

पद्य—कोर्विं दोडड्ड केदरिद मीसे कॆंगणणु । पेञ्र्लि डिक्केय वेसेये ॥
कूर्वाळ जडितुतश्व दोळेय्दि कंडनु । वर्वरदेशद राया ॥ ५५ ॥

अर्थ—इस प्रकार मलय, मगध, हैव, महाराष्ट्र, डुपारी, मलेयाल, कोडगु, बाल्हिक , मले, मधुर, चोल देशीय, राजा, आकर बहुत सी भेंट देकर दोनों हाथों को जोड़कर चरणों में सादर नमस्कार करके खड़े हो गये ॥ ५५ ॥

पद्य—मलय मगधहैव माराष्ट्र दूपारि । मलेयाळ कोडगु बाल्हिका ॥
मलेय मधुर चोळ देशद रायरु । बलदोरिदरु चक्र धरगे ॥ ५६

अर्थ—इसी भांति कुरु जांगल, मथुरा, अवन्ति इत्यादि देश के राजा गण आकर बहुत सी भेंट श्री भरत जी को देकर हाथों को जोड़कर सामने खड़े हो गये ॥ ५६ ॥

पद्य—कुरुजांगण देशदवंति देश म । शुरदेश मोदलाद नृपरु ॥
परमकौसल मध्यद कौशल । पुरदरसन कंडरेल्ल ॥ ५७ ॥

अर्थ—छः खंड के राजाओं में पाँच खंड के राजा आकर श्री भरतेश जी से मिल जुल कर भेंट प्रदान किये ॥ ५७ ॥

Then came the kings of the following countries Kalharı, Pandya, Sınhal, Gurjar, Nepal, Vıdarbh, Chına, Mahachına, Mahabhot, Mahalat, Kashmır, Turkey, Karnataka, Bhoj, Bang, Brıta, Chıtrakut, Panchal, Kalıng, Malav, Makka, Bengal, Samrani, Kuntal, Hammır, Gaur, Konkan, Tulu, Barbar, Malaya, Magadha, Maharashtra, Haıva, Duparı, Malaya, Kodugu, Balhıka, Male, Madhur, Chol, Kuru, Jangal, Mathura, Avantıand saluted the emperor and stood aside (25-57)

पद्य—आरु खंड दोळेदु खंडद नृपरल्लि । तोरु तिल्लोंदु खंडदोळु ॥
तोरुव नृपरेल्ल वंदु कंडरु पंथ । कारननाचक्रधरना ॥ ५८ ॥

अर्थ—आर्य खंडके राजा शूरता वीरता के साथ आकर राजा भरत को नमस्कार किया, किन्तु जो लोग नहीं आये हैं ऐसे पॉच म्लेच्छ खंड के राजाओं को वश में करन के लिये चढ़ाई करने की आवश्यकता है ॥ ५८ ॥

In this manner all the rulers of Arya Khand were present but for the rulers of five regions of Malekshkhand. (58)

पद्य—आर्यखंडद नृपरेल्ल कंडरु । शौर्य दिंदेदु म्लेच्च दोळु ॥
कार्य के वारद नृपर कैवशमाळ्प । कार्यकी बलव कूडिदनु ॥ ५९ ॥

अर्थ—तीन समुद्र के अधिपति तीन व्यन्तर हैं उनको वश में करके पाँच म्लेच्छों को वश करने के लिये जायेंगे ॥ ५९ ॥

Thus the rulers of Arya Khand acknowledged the supremacy of kıng Bharat. Now he prepared the forces to conquer the other contrıes whose kıngs had not come to pay their respects

The rulers of three oceans are three Vyantar Devas Bharat will first conquer them and then proceed to brıng the five regions of Mlekshakhanda under his subjugation (59)

पद्य—जलधि योळिद् मूवरु व्यंतरेंद्रर । गेलिदैदु म्लेच्छ दोळु ॥
वळु तंत्रका चक्रि वलव कूडिद् निन्तु । बलद् लेक्कवनेननेंबे ॥ ६० ॥

अर्थ—राजा भरत की सेना अगणित थी उनके साथ अपनी मद्धारा बहाते हुये जंवृण शब्द करने वाले हाथियों की संख्या ८४ लाख है ॥ ६० ॥

He had a vast army There were 84 lacs strong elephants (60)

पद्य—दंभद् कीळाने लेक्क वल्लनुदिन । संभूत मद्धारे जिंद् ॥
जृंभिप भद्र हस्तिगळोप्पु तिरुवल्लि । यंभत्त नाल्कु लक्षदोळु ॥ ६१ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार चीत्कार, मरमरध्वनि करने वाले छोटे व बड़े रथों की संख्या ८४ लाख है ॥ ६१ ॥

There were 84 lacs chariots with high tops like mountain peaks. (61)

पद्य—ग्रंथिसि चित्कारदि नडेव भरके शैल । शिथलव माळ्प पेंपुळ्ळ
रथगळेंभत्त नाल्केंब लक्षदोळरि । मथन गोप्पिहु वेननेंबे ॥ ६२ ॥

अर्थ—सामान्य घोड़ों की संख्या अगणित थी, पर उत्तम व सुन्दर लक्षण के घोड़ों की संख्या १८ लाख करोड़ थी ॥ ६२ ॥

Ordinary horses were innumerable in number, but those with auspicious bearings were 18 lacs crores (62)

पद्य—कूटद् नाडाडि कुदुरे गळेणिकेयि । ल्लाटनडेयोळ् लक्षणादि ॥
मीटिगे मीटेनलेसेदुवु हदिनेंदु । कोटि सांब्राणिया नृपगे ॥ ६३ ॥

अर्थ—साधारण मनुष्यों की संख्या अगणित थी, परन्तु उत्कृष्ट क्षत्रियों की संख्या-८४ करोड़ थी ॥ ६३ ॥

Let alone the number of ordinary servants, there were high class Kshattriya warriors to the tune of 84 crores (63)

पद्य—माताळि बंटरु लेक्कवल्लिरलिन्तु । जा ते वीररु रणजितरु ॥
रुयाति योळेंभत्त नाल्केंब कोटिय । दाति योप्पिदुदु क्षत्रालु ॥ ६४ ॥

अर्थ—इसी प्रकार रणभूमि में सुशोभित श्री भरतेश जी की अंगरक्षा के लिये व्यन्तर कुलोत्पन्न गण बद्ध देवों की संख्या १६ हजार थी ॥ ६४ ॥

In addition there were 16 thousand body-guards born of peripetatic class of celestial beings who were always ready to defend the king's person at all cost. (64)

पद्य—रणरंग जज्भार चक्रेशनगर । चणके व्यंतर कुलोत्तमरु ॥
गण वद्ध देवर्क ळीरेंडु साविर । देणिके योळिहरुघूर्णिसुत ॥ ६५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी सेना के मध्य में हाथी पर वैठकर अपनी जंघा के संकेत से जब उसे आगे चलाया तो सारी जनता प्रेम में मग्न होकर जय जयकार करने लगी ॥ ६५ ॥

He then mounted on his elephant and when it moved with the pressure of his thigh Cries of Jai came forth from millions of his subjects (65)

पद्य—पडेय नेह्लव कूडि भरत राजेंद्र नु । तोडे सन्नेयिंद हस्ति यनु ॥
नडेसिद नेह्लरु जय जय चांगेंदु । कडलंते कूगि वोब्बिरिये ॥ ६६ ॥

अर्थ—उस समय सेना के साथ छुट-पट, सुर-मुर, घुस-घुस, चिर-चिर, ठप-ठप, शब्द करते हुए नाना प्रकार के तमाशे फटाके इत्यादि छूटने लगे । उसे सुनकर वीर गण जय जयकार करने लगे ॥ ६६ ॥

Crores of sound like chat chat, surgur, busbus, chirchati, tuptaup, dap-dap were being heard all round and the brave army swarming in millions followed their king. (66)

पद्य—छटि छटि सुरुवुरु वुस्सु वुस्सेंदु ची । चिंजि ठोप्पु ठोप्पु ठप्पेंदु ॥
पेटळु कोटाकोटि सुङ्डु वीररा । भंट सिदरोंदे लग्गेयोळु ॥ ६७ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार की भेरी, पटहादि वाद्यों की गर्जना से यह प्रतीत होता था कि मानों आकाश ही निकटस्थ होकर आच्छादित हो चुका है। ऐसे वाद्यों की सख्या एक करोड़ थी ॥ ६७ ॥

That time different kinds of bands were playing, conch shells were blowing, and the sky resounded with their sounds like the roaring of waves in a surging ocean (67)

पद्य—भेरि निस्साळ पटह शंख हेग्गाळे । वीर तंवट तुडु मुगळा ॥
भोरनोंदे वारिसदेदरु प्रळयद । भर वार्भटे तोरि तेनिसि ॥ ६८ ॥

महाराज भरत दिग्विजय प्रयाण करके अयोध्या नगर से कुछ दूर आने के पश्चात् सुर शिल्पकार के द्वारा निर्मित किये हुये महल में ठहरने के लिये सेनापति को संकेत कर रहे हैं।
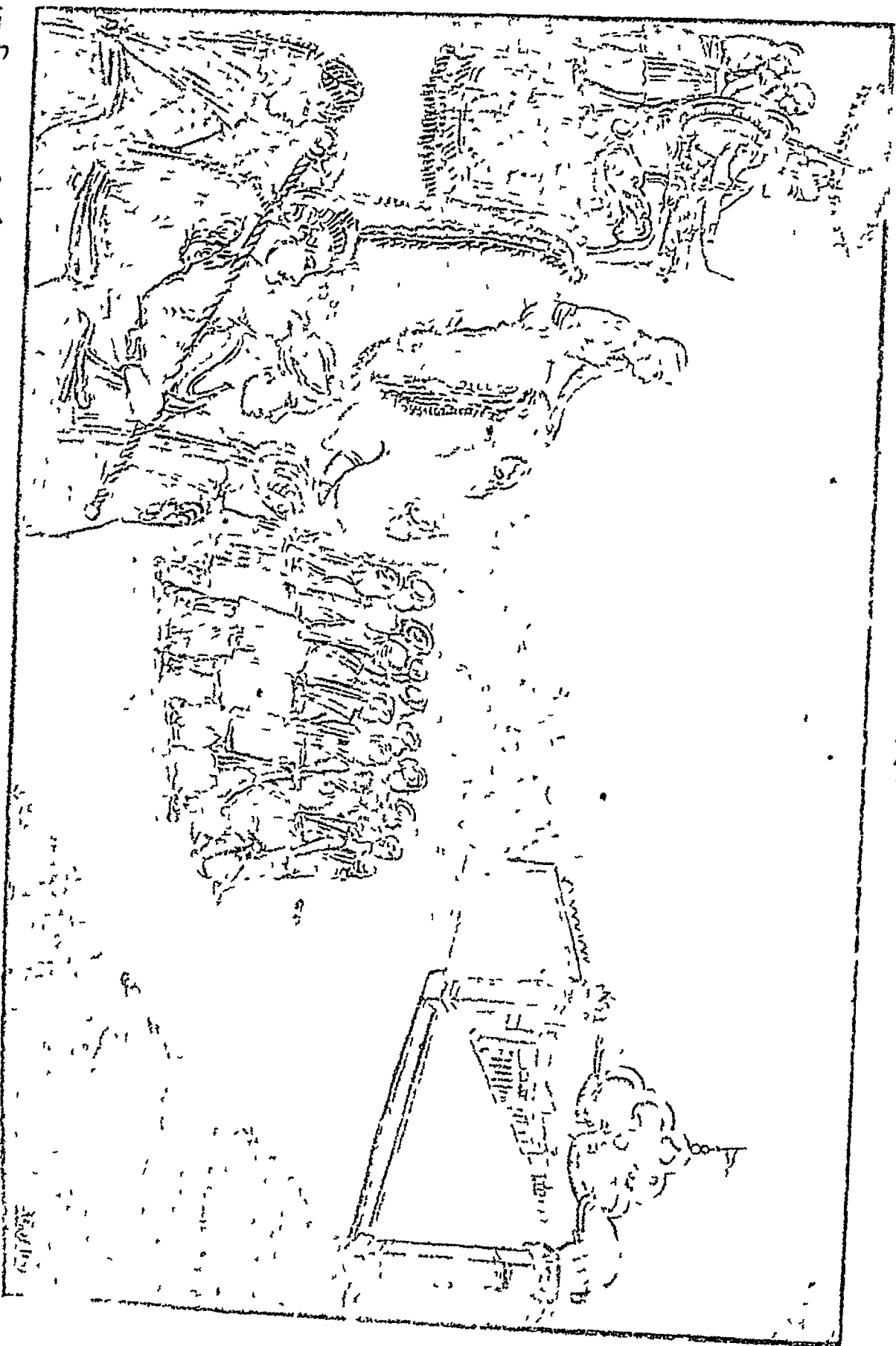
यह चित्र कुन्दन बाई धर्मपत्नी ला० निरमचन्द जी जैन मु० फतेहपुर जिला बाराबंकी द्वारा छपा

अर्थ—उस समय विजय वृक्ष को दायें तरफ करके विजय पर्वत नामक हाथी को चक्रवर्ती ने चलाया। उस हाथी के सामने ध्वजा सहित चक्र रत्न चमक रहा था ॥ ६८ ॥

Keeping the victory tree on his right the king moved his elephant Vijaya rath ahead Chakra Ratna was moving in front of him *(68)*

पद्य—विजय वृक्षव बलकिक्कि नडेसिदनु । विजय पर्वतवनाचक्रि ॥
ध्वज दोग्गि नोळ्ळि होळेवुन तेरळिदुदुसा । मजद् मुंगडे योळ् चक्रा ॥ ६९ ॥

अर्थ—भरत जी सेना के वीच में सुमेरु गिरि के तुल्य मोती का छत्र, चमर धारणकिये हुए जा रहे हैं और उनके चारों ओर सजी हुई सेना इस प्रकार उछलती, कूदती हुई जा रही थी कि मानों समुद्र में वाढ़ आने पर उसका पानी उछल, कूद मचा रहा हो ॥ ६९ ॥

Surrounded alround by a sea of warriors equipped with a canopy of pearls and Chamars was advancing like Sumer mount *(69)*

पद्य—एडवल हिंदु मुंदल्लियु तुंबि पे । वंडे नडेदुदु कडलंते ॥
नडुवे मंदरदंते राजेंद्र मुत्तिन । कोडेय नेळ्ळलोळेयदुतिर्द ॥ ७० ॥
दोरे दोरेगळु तम्म पौजि नोळ्डुव । विरुदिन कहळे वाद्यदोळ् ॥
बरुतिद् रोलैसि भरत राजेंद्रन । सिरिगेणेयह सिरियुंटे ॥ ७१ ॥

अर्थ—राजा लोग अपनी सेना के साथ भरत जी के ऐश्वय को इस प्रकार गाते हुये आ रहे थे कि श्री भरतेश जी की तुलना अतुलनीय है ॥ ७० ॥

अथ—श्री भरत जी सूर्य को पीछे व पूर्ण चन्द्रमा को सामने देखते हुए सेना सहित गाजे वाजे के साथ जा रहे हैं ॥ ७१ ॥

Every vassal king was following with his warriors with their bands playing The glory and splendour of King Bharat was indescriable *(70-71)*

पद्य—भानुन्न वेन्निक्कि हेन्चुव चंद्रन । तानिदिरोळगे निट्टिसुत ॥
सेना सहित भुगुमोरेंव वाद्यम । हानाददोळु मुंदे नडेदा ॥ ७२ ॥

अथ—श्री भरत जी के प्रस्थान काल की शोभा अकथनीय थी ॥ ७२ ॥

Keeping the sun on the back and fullmoon in front, the Commander-in-chief with a vast army was proceeding ahead *(72)*

पद्य—जय घोषदोळ् पुरुकातिदूरवागदो । जेयोळु किरिदुदूरगमिसि ॥
मय रचिसिद बीडुदानद केलदोळा । नेय निलिसिदनवनीशा ॥ ७३ ॥

अर्थ— उसे देखकर प्रत्येक प्राणी आनन्द में मग्न हो कर उनका जय जयकार मनात था ॥ ७३ ॥

The scene of Bharat's departure was of unsurpassed splendoor Wild cries of Jai were resounding all round (73)

पद्य—तेरा मेलानेय मेले तेजिय मेजे । सारे निंदखिल भूमिपरा ॥
तोर हस्तद सन्ने कएसन्नेयिंद वी । डारके वीळ्कोट्ट नोडने ॥ ७४ ॥

अर्थ—जय घोष के साथ कुछ दूर चलने के बाद व्यन्तर के द्वारा रचित स्थान को देख कर श्रीभरत जी ने विशाल हाथ उठाकर सेना को संकेत किया कि यहीं ठहरो ॥ ७४ ॥

Raja Bharat ordered the army to stop a little at the appointed camping place prepared by Vishwa Karma at a little distance from Ayodhya

Elephants, horses, chariots, and all others stopped at once at the signal from their kings (74)

पद्य—मोडि यारिदु दोरे दोरेगळिगे मनेगळ । रूडिसिर्दनु विश्वकर्मा ॥
गूडार गुडिगळ हुंगिल्लदेल्लरु । वीडारगळ होक्करोसेदु ॥ ७५ ॥

अर्थ—विश्वकर्मा ने सब राजाओं की हैसियत के अनुसार पुरुष स्त्री, दास-दासी इत्यादिकों के रहने के लिये पृथक-पृथक महलों का निर्माण किया और सभी लोग स्वतन्त्रता पूर्वक अपने अपने महलों में प्रविष्ट हुये ॥ ७५ ॥

Vishva Karma had arranged camping-place for each subsidiary chieftain There were tents for ladies, servants and the army, and all occupied their respective tents (75)

पद्य—बेट्टदिंदिळिवंते गजवनिळिदु वी । ळ्कोट्टनु बुधर वेश्ययरा ॥
कट्टिगे कार रुग्गडिसे पावुगेगळ । मेट्टि वीडिगे पच्चेयिट्टा ॥ ७६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी पर्वत के तुल्य हाथी से उतरकर पैर में खड़ाऊँ पहने हुये विद्वानों, वेश्याओं तथा इत्यादि जनो को आज्ञा दिये कि तुम सब महल में चलकर निवास करो ॥ ७६ ॥

विवाह का मंडप देखकर महाराज भरत कुसुमा जी से कहने लगे कि यह विवाह मंडप किस लिये तैयार किया गया है। तब कुसुमा जी ने उत्तर में कहा, कि हमारे पिता यहां आकर छोटी बहिन मकरन्दा जी का पाणिग्रहण आपके साथ करने का विचार किया है।

यह चित्र धर्मपत्नी स्वर्गीय ला० नानकचन्द जी जैन गनेशपुर की ओर से छपा (जनता प्रेस, बाराबंकी)
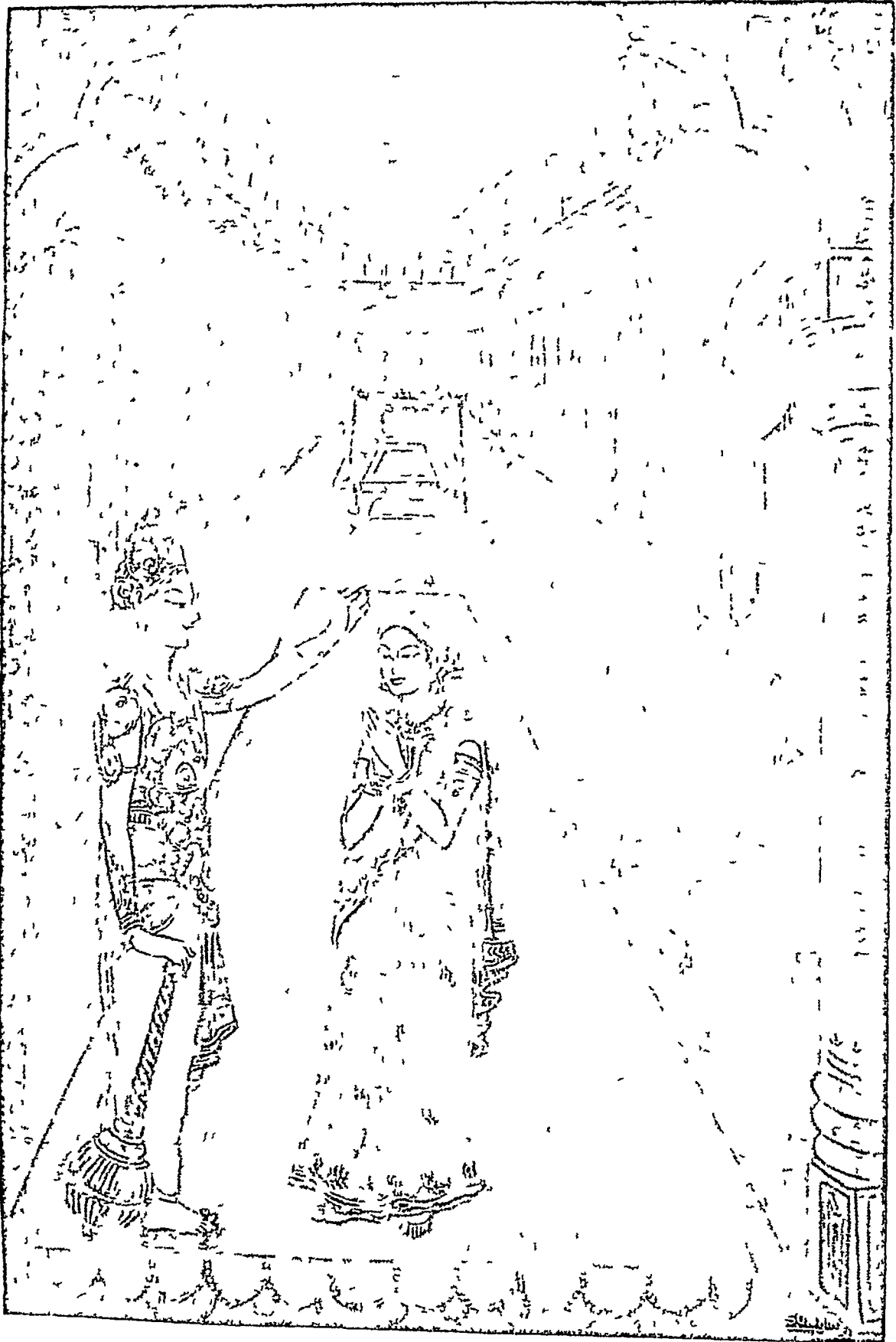
These staying places were all set up according to the status of every member of the army, All accupied their respective places on receiving orders from the kings. Thereafter king Bharat got down from the hillock of the elephant. *(76)*

पद्य—नागर बोंदेरडनु दाटि मुँदोंडु । बागि लोळ्निंदना राया ॥
होगि होसद बेळ्ळेयायुनेडुवेंबळि । बागि बंदवर बीळ्कोट्टा ॥ ७७ ॥

अर्थ—श्री भरतेशजी अपने अनुयायियों को भेजकर खाने पीने इत्यादि की समुचित व्यवस्था करके दरवाजे पर आकर कहा कि अब शाम हो गई और भोजन वेला हो चुकी अत. अब मैं जा रहा हूँ ॥ ७७ ॥

After getting down from the elephant, king distributed food to all. Then he left from his staying palace accompanied by number of persons. Standing outside the place, he informed them that it was time to take meals for the evening and told them to go their places. Then Raja entered his palace *(77*

पद्य—बुद्धिसागर सेनाधिपतिय गण । बदर केळ्वेयर कळुहि ॥
शुद्धंतरंग होक्कनु भद्रमुख नेंब । बिङ्कि माडिद शिबिरवनु ॥ ७८ ॥

अर्थ—इस प्रकार बुद्धि सागर सेनापति व गण बद्ध देवों को विदा करके श्री भरतेश जी भद्रमुख नामक परम सुख दायक महल में प्रविष्ट हुये ॥ ७८ ॥

In this way Buddhisagar, the commander-in-chief, Aide-camps were all permitted to go. Bharat entered his palace known as Bhadramukh. *(78)*

पद्य—ओळगोंडु मदुवेय जगलिसिंगरिसिर । लोत्तेडु राजेंद्र नोडुतिरे ॥
केलदल्लि कुसुमाजि नुडिदळु मुंदे मं । गलद सूचनेनिवगेंडु ॥ ७९ ॥

अर्थ—उस महल में प्रविष्ट हो कर श्री भरतेश जी ने देखा कि शृङ्गार किया हुआ विवाह मण्डप तैयार है। उसे देख कर इनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा वहाँ पर पास ही में खड़ी हुई इनकी रानी श्री कुसुमा जी ने कहा कि स्वामिन्! यह मंडप आपके भविष्य के लिये शुभ सूचक है ॥ ७९ ॥

His surprise knew no bounds when he saw there a well decorated

marriage canopy His queen Kusumaji was standing nearby. She said, "My sire, it is an auspicious indication of your future success". (79)

पद्य—इदुतन्न तगिय मदुवेगिंद वळे स । गिद तिट्टवेंदद नरिंदा ॥
सुदतिय कार्यव पुरुदोळिद्दाग सं । पादिसुवु देनादुदेंदां ॥ ८० ॥

अर्थ—आज ही मेरी वहिन श्री मकरन्दा जी का शुभ विवाह आपके साथ इसी मंडप में होगा। तव श्री भरत जी ने कहा कि देवि ? सुन्दर नगर होते हुये तुमने इस कार्य को वहाँ क्यों नहीं किया ? वाहर इसकी तैयारी क्यों की गई ॥ ८९ ॥

"My sister's marriage will be celebrated with you under this canopy to-day"

Then King Bharat enquired, "Devi, Why did you not do this while you were in the city Why this preparation was made out-side it" (80)

पद्य—कळुहिदेनहु दिल्लि गप्पाजि वहुदिष्ठु । तळुवादुदरिंदमुंदे ॥
तळ्दाग वेळे संधडि सदेंल्लि सं । गळिसिदे नेंदळा कुशले ॥ ८१ ॥

अर्थ—तव चतुर श्री कुसुमा जी ने कहा कि स्वामिन् ? पिता जी को मैं इसकी सूचना पहले से ही देचुकी थी, पर उनके आने में अति काल हुआ अतः विवाह योग यहीं उपस्थित हुआ ॥ ८१

"Sire, I had informed my respected father sometime ago, but his arrival was a bit delayed Hence marriage had to be performed at this place" (81)

पद्य—इरुळिगे लग्न लेसेंदेम्म जनक नि । र्धरिसि वंदिहनेन्ननुजे ॥
परिपूर्ण शृङ्गार वडेदिर्दळेनुताके । पुरुव नोळ् नुडिवुते यदिदळु ॥ ८२ ॥

अर्थ—ज्योतिषियों ने पिता जी से निर्णय कर चुके हैं कि विवाह मुहूर्त्त आज ही है और मेरी वहिन भी पूर्ण यौवन व सुन्दरता से युक्त है। इस प्रकार की वात चीत करती हुई भरत जी के साथ कुसुमा जी राज महल में गईं ॥ ८२ ॥

"Today is the most auspicious hour for the celebration and has been in consultation with the astrologers My sister has also attained her full bloom and beauty". Thus saying Kusumaji accompanied her husband inside (82)
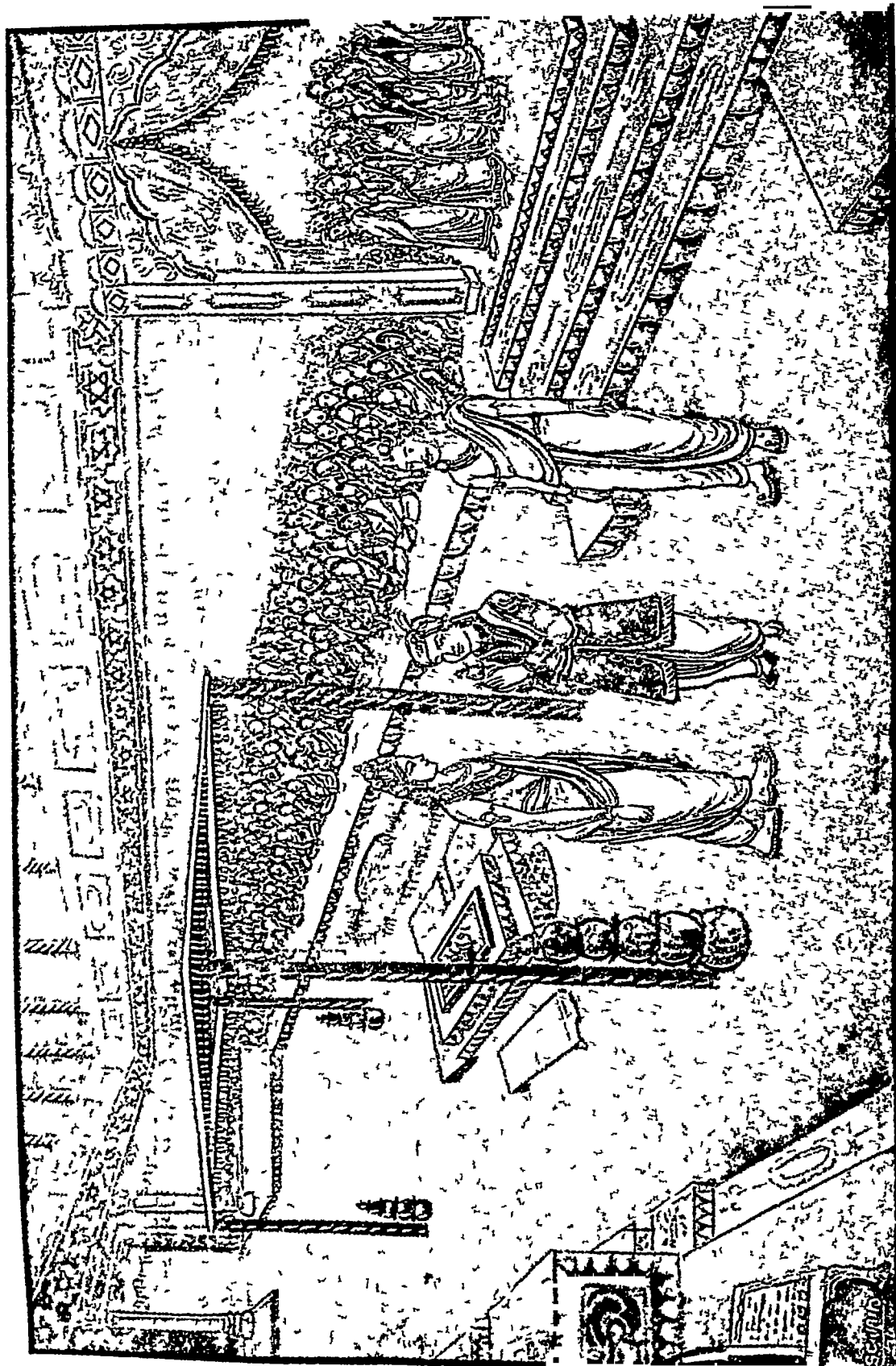
राजा भरत जी की मकरंदा जी के साथ शादी की तैयारी में विनोदवार्ता अपने साले के साथ कर रहे हे विवाह मंडप में ।

यह चित्र—रानीदेवी धर्म पत्नी ला० कुन्दन लाल जी जैन गनेशपुर के द्वारा छपा ।

पद्य—ओंदु पंतियोळंतराय विल्लदे पेंडि । रोंदागि भोजिसि नृपति ॥
मुंदन जयद सूचनेयिदु नवगेंदु । सौदरियर कूडे नुडिदा ॥ ८३ ॥

अर्थ—वहां जाकर श्री भरतेश जी अनेक रानियों के बीच में बैठकर भोजन करते हुए कहने लगे कि यह मॉगलिक दृश्य मेरे लिये भविष्य काल की शुभ सूचना है। इस लिये मालूम होना है कि कुसुमा जी के बहिन के समान श्री विजय लक्ष्मी जी भी मेरे गले में जयमाला पहिनायेंगी (अर्थात् दिग्विजय यात्रा में मेरी विजय ध्रुव है) ॥ ८३ ॥

Bharat and his queens took their meals together. The Raja said, "It was an indication for his future success The "victory" queen will put her garland in my neck in the same manner as would Kusumaji's sister would do today *(83)*

पद्य—अर्क नम्तमिसे संध्याचरणेय माडि । अर्क कीर्तियनु मुद्दाडि ॥
तोर्के योळोडने सिंगरिसि कांतेयर सं। पर्क दोळ्दि निर्पाग ॥ ८४ ॥

अर्थ—अब सूर्यास्त हो चुका। संध्या वेला आ गई। श्री भरत जी संध्या वंदन से निवृत्त हो कर अरिकीर्ति कुमार को अंक (गोद) में लेकर प्यार किया उसके बाद अनेक आभूषणों से शृङ्गार करके राज कुमार को रानियों के पास भेज दिया ॥ ८४ ॥

Meanwhile sun was setting King Bharat performed his evening routine of worship, took his son Ari kirti in his lap and kissed him, and then decorating him nicely sent him to his queens *(84)*

पद्य—मुट्टलादुदु लग्नवेने राय नडेतंदु । मेट्टक्किगळ मेट्टि निंदु ॥
निट्टिसि भाव नोत्ति नोळ्दि मैदुन । गट्टिहास दोळ्तु नुडिदा ॥ ८५ ॥

अर्थ—स्वयं विवाह योग्य आभूषणों को पहन कर स्त्रियों के साथ विनोद वार्त्ता करते हुए विवाह मंडप में आये विवाह मंडप में अखंड अक्षतों की पंक्तियां सुशोभित थीं उस पर आकर खड़े हो गये ॥ ८५ ॥

There after he put on marriage garments The hour of the celebration was very near On getting this information Bharat entered the pandal and engaged himself in lively conversation with his wives There were rows of unbroken rice He stood on them *(85)*

पद्य—कुसुमाजियंतद्ल कमलांक कुळु को । पिसि नन्न जरेदिळवळु ॥
अवमानदवळ नीनेन गीवेनेंवुदु । रसिकर मार्गवे येंदा ॥ ८६ ॥

अर्थ—पास में श्वशुर के साथ कुसुमा जी का सहोदर कमला खड़ा था। उसके साथ विनोद करने के अभिप्राय से भरत जी ने कहा कि कमला ? तुम्हारी यह वहिन कुसुमा के समान नहीं है। इसने वड़ी क्रूरता के साथ मेरा तिरस्कार किया था यह लोक में अपने को असमान समझती है, तो इस अवस्था में भी मेरे साथ शादी करना बुद्धिमत्ता नहीं है ॥ ८६ ॥

Nearby, his brother-in-law Kamla was standing with his father Bharat addressed him, "Kamlank, your sister is not so beautiful as Kusumaji. She had insulted me badly once in anger" (86)

"She considers herself above all in the world Is it wise to marry her to me in such a situation"? (86)

पद्य—वसुधे योळ्निनगे समान विल्लागि नी । नसमानद वनदरिंद ॥
असमान दवनीश गसमानद वळेय । रसिक रीयरयें दनवनु ॥ ८७ ॥

अर्थ—तव कमला ने कहा कि हे राजन् ? संसार में आप भी तो असमान हैं और मेरी वहिन भी असमान है तो असमान पुरुष के साथ असमान स्त्री का विवाह करना बुद्धिमत्ता नहीं तो क्या है ॥८७ ॥

Kamlank replied, "Rajan, you and my sister are both matchless in this world It is but proper to unite such a couple in marriage ties " (87)

पद्य—पयणद वेळे यादुदु वहुवाक्य का । श्रयविल्ल सैरिसे दोरेदु ॥
नियत शोभनवनभंग लाष्टक गेळु तो । जेयोळ्दिना मोडिकारा ॥ ८८ ॥

अर्थ—इस प्रकार मंगल प्रसंग के मंगलाष्टक शोभाणादि पदों को श्रवण करते हुये श्री भरतेश जी खड़े हो गये और वीच का पर्दा हटा दिया गया ॥ ८८ ॥

Raja smiled a little at this and said, "The hour for celebration has come and now there is little time for discussion" There after he stood up hearing the auspicous songs

The intervening curtain was removed (88)

पद्य—निकटद तेरे जारे वाद्य घूर्णिसे गजा । नकराजनु धारेयरियें ॥
मकरंदाजियना राय होम-सा । चिक दल्लि हस्तविडिदनु ॥ ८९ ॥
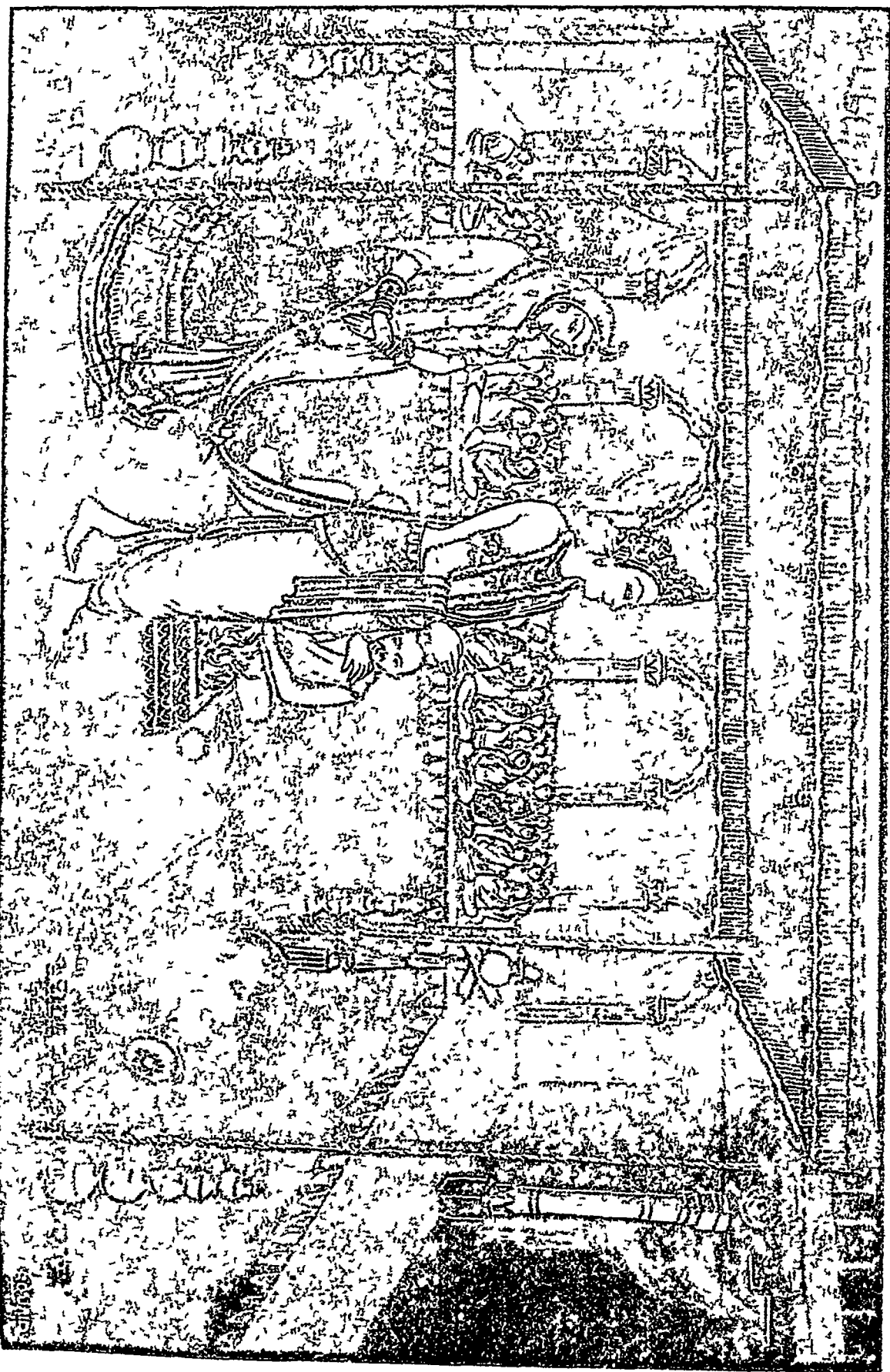
कुसुमा जी की बहिन मकरन्दा जी का ब्याह राजा भरत के साथ हो गया है और अन्त में हवन कुन्ड की प्रदक्षिणा दे रहे हैं।
यह चित्र लाला महिपालदास, गनेशपुर द्वारा प्राप्त।

पद्य—राजेंद्र नरमने गवळ नोयूदनु कुसु । माजि वीळ्कोट्टुळय्यनतु ॥
सोजन्य कांतेयरेल्ल रोळा महा । राजनिद्दनु सुखांग दोळु ॥ ९० ॥

अर्थ—उस समय अनेक वाद्य व गायनादि होने लगा और पुरोहित जी ने गुरु मंत्र साक्षी पूर्वक तथा होम साक्षी पूर्वक जलधारा छोड़ने लगे तथा श्री भरतजी होम साक्षीपूर्वक मकरंदाजी का पाणिग्रहण किया ॥ ८९ ॥

अर्थ—राजेन्द्र श्री भरतेश जी मकरंदा जी को लेकर अपने रंगमहल में गये । कुसुमा जी अपने पिता जी को विनय पूर्वक विश्रान्ति के लिये भेजा और भरत जी सौजन्य रानियों के साथ विहार करने लगे ॥ ९० ॥

The Purohita came chanting mantras and sprinkled sacred water and duly witnessed by holy fire made over Makrandaji's to his palace Kusumaji and her father retired for rest Raja Bharat mean while lost himself in conjugal bliss (89-90)

पद्य—वश वहुदीत गुर्वरे नाळेका । दशि मुँदे नडेव वेंदेनुत ॥
कुशल वृत्तियोळु पायूदळ विट्टु दिल्लिगे । दशामि प्रस्थानद संधि ॥ ९१ ॥

अर्थ—सेना में आकस्मिक विवाह हो जाने से प्रत्येक प्राणी आश्चर्यान्वित होकर कह रहे थे कि श्री भरत जी का पुण्य अगाध है । इन्हें निश्चय ही षट् खंड पृथ्वी प्राप्त होगी, क्योंकि मॉगलिक विवाह ही इसका शुभ सूचक है । अब हम लोग आगे बढ़ेंगे इस प्रकार की बात चीत करते हुये सैनिक गण विश्रान्ति करने लगे ॥ ९१ ॥

This sudden marriage was the topic of disscussion in the army All said, "His good karma is unfathomable He is sure to conquer the six regions of the world For this the marriage is the indication of the future Tomorrow is the 11 th day (Eka Dashi) We shall proceed ahead" With all such thoughts the army also retired for rest (91)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळिदवर पाप । वीज निर्नाशनवहुदु ॥
तेज वहुदु पुण्य वहुदु मुँदोलिप । राजिनेश्वरगणकारुवरु ॥ ९२ ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेगा उसका पाप बीज नष्ट होगा । तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य बन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेगा ॥ ९२ ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation) (92)

पद्य—प्रेमदिंदिद् नोदिद्रे पाडिद्रे केळ्द् । रामोद वैदुवरवरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय काणबरर्तियोळु ॥ ६३ ॥

अर्थ—इस कथा को जो लोग प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे वे आमोदको प्राप्त होंगे और निश्चय से देवपद को प्राप्त कर अन्त में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ ९३ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (93)

पद्य—अरिवु नोटवे निजरुपागि कांतिय । करेव ज्योतिर्मय रूपा ॥
मरे याग देन्न मैमरे योळगिरु भव्य । रेरेया चिदम्बर पुरुषा ॥ ६४ ॥

अर्थ—हे विश्वात्मन् ? ज्ञान व दर्शन ही तुम्हारा स्वरूप है । ज्ञान व दर्शन का प्रकाश आप के रूप में प्रतिभाषित हो रहा है और आप का प्रकाश ही संसार के मोह रूपी अंधकार में पड़े रहने वाले प्राणियों को मोक्षपद प्रकाशित करता है । आप मनुष्यों के परम हितैपी हैं इसलिये अपनी आत्मा को छिपाइये नहीं हमारे शरीर की आड़ में बराबर बने रहिये ॥ ९४ ॥

Knowledge and conation are thy
attributes, O Atman.
Knowledge and conation are thy
reflection, O Atman.
Thy light shows the path
O Atman.
To persons in delusions,
O Atman
The benefactor of Bhavyas,
O Atman.
Reside in me for ever,
O Parmatman. (94)

॥ इति द्वितीय भागस्य तृतीय सर्गः दशमी प्रस्थान सन्धिः सम्पूर्णम् ॥

चतुर्थ सर्गः

❀ पूर्वसागर दर्शन संधिः ❀

पद्य—भव दुःख भंजन भव्यानु रंजन। अवधृत कर्म सुशर्मा ॥
सविशुद्धि दोह सन्मुनि मनोहर सदा। शिवने निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—हे सिद्धात्मन् भगवान् ! सदा शिव कारक आप भव्यों के समस्त दुःख को दूर करने वाले हैं। संपूर्ण कर्म को दूर कर चुके हैं तथा अनन्त शुभ के पिंड में मग्न रहने वाले हैं। आप सर्व कल्याण कारी महा मुनियों के हृदय में ज्ञान ज्योति उत्पन्न करने के लिए साधक हैं। इसलिए हमें भी सद्बुद्धि प्रदान करिए जिससे हम मधुर वाक्य द्वारा संसार का कल्याण कर सकें ॥ १ ॥

"O Lord, Siddhatman ! thou art supreme benifactor as well as destroyer of sufferings of gracious beings Thou hath out lined all the worldly actions and art now taking dips in the infinite ocean of supreme joy. Thou art a hermit to infuse gracious enlightenment into the hearts of cosmopolitan great 'Munis' Thou, therefore, offer to us righteousness in thought, so that we may also benifit this world by our sweet toungue" (1)

पद्य—एकदशियुदयदोळेद्दु भरतेश। साकेत पुरद रक्षणेगे ॥
माकाळ नेंबन चीळ्कोट्टु मुंदेसे। या कोटि नडेय हेळिदनु ॥ २ ॥

अर्थ—आज एकादशी है। भरत जी प्रातः काल अपनी नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर बाहर आए और महाकाल नामक व्यन्तर को बुलाकर आज्ञा दिया कि हमारे लौटने तक अयोध्या नगर की रक्षा का कार्य तुम्हारा है, इसलिए इस कार्य को सावधानी से सम्पन्न करना। और सेनापति को बुलाकर आज्ञा दिया कि अब प्रस्थान भेरी बजवाओ ॥ २ ॥

Today is the eleventh day of the moon king Bharat, getting rid of his morning calls came out of his royal palace Sending for a Vigantar named Mahakal ordered him, 'You are responsible for the defence of the city of Ayodhya, till I return So complete this duty carefully He ordered the 'Senapati' commander of the army to proclaim the royal departure (2)

पद्य—वेट्टय तोडि तोगल कट्टिदंतळ । वट्ट पन्नेडु भेरिगळा ॥
कुट्टिद रागळे जगवेल्ल मोळगिन। मोट्टेय कट्टिदंतायतु ॥ ३ ॥

अर्थ—उनकी आज्ञा होते ही वहुत विशाल १२ प्रकार के वाजे वजने लगे और उनकी ध्वनि इतनी तेज थी कि मानों एक छोटे पर्वत ही को खोखला करके ऊपर से चमड़ा मढ़ के वजा रहे हों। इसके अतिरिक्त यह मालूम पड़ता था कि मानों समस्त विश्व को एक साथ ही वॉधकर यहाँ लाकर रख दिए हों ॥ ३ ॥

Big and beautiful twelve kinds of musical instruments began to be played at his order. The sound was so sharp that it appeared as if some hillocle is being sewed with leather after being made hallow. Besides that it so appeared as if all the pillars of the world being tied together have been brought here (3)

पद्य—टिक्कुेय नेजय वेद्दु तिळिवेळ । गुक्कुत तेरळितु चक्रा ॥
किक्किरिदनुपम रत्न मयद प । ल्लक्कि योळिर्दना राया ॥ ४ ॥

अर्थ—उस समय प्रस्थान भेरी के साथ सजी हुई वहुत वड़ी सेना जा रही थी, और उसमें सजे हुये वड़े वड़े अश्व उछलते कूदते जा रहे थे तथा चक्ररत्न भी चमकता हुआ आगे आगे जा रहा था और श्री भरतेश जी उत्तम रत्नों से निर्मित पालकी पर वैठकर जा रहे थे ॥ ४ ॥

At that time with the proclaimation of royal departure, the big army was advancing. It consisted of well decorated, galloping army horses, Chakra Ratna in the front part advancing with great brightness The royal personage king Bharat was advancing in palanquin decorated and prepared of jewells of best kinds (4)

पद्य—विळिय तावरे यंते नेगेद सत्तिगे हंसे । सुळुहंते वीसुव चमरा ॥
केळेयरु मगुविंदु मरुतनंतेयुतरे । तळर्दना राजमनोजा ॥ ५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के सिर पर श्वेत कमल के समान दो छत्र, चमर इस प्रकार मालूम देते थे कि मानों श्वेत हंस पक्षी ही ऊपर उड़ रहा हो और उनके चारों ओर सजी हुई सेना अनेक प्रकार की ध्वनि करती हुई जा रही थी वह शोभा अनुपमेय थी ॥ ५ ॥

Two white umbrellas like white lotus flower and one chammar were beautifying the royal head It so appeared as if white doue was flying over
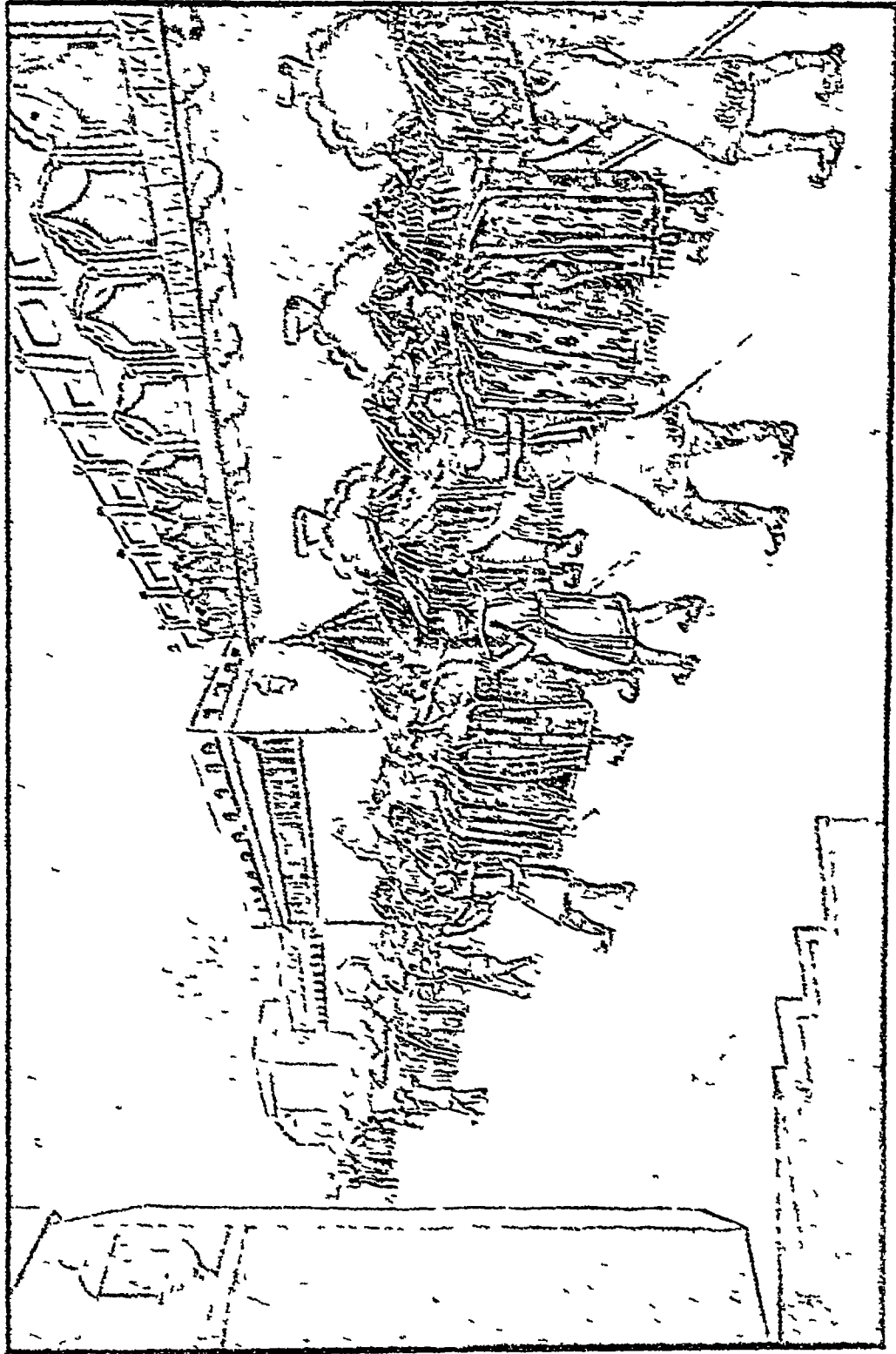
राजा भरत अपनी रानियों के साथ दिग्विजय करने के लिये सेना के साथ प्रस्थान कर रहे हैं।
यह चित्र चन्द्रवती श्री धर्मपत्नी भगवानदासी जैन फतेहपुर के द्वारा छपा।

his head The army surrounding him was merching with great noise That beauty of the occasion was unique one (5)

पद्य—सय्यरिदुत्तमरुदि कोळ्लु तप्प । कैय्योळ्दयरागं दोडने ॥
मेय्योळिद्दात्म कलेय होडुतिरे केळु । तोय्मने यिदद्नात्म रसिका॥ ६ ॥

अर्थ—वहुत से गायक लोग उत्तम उत्तम वंसी वजाते हुए अनेक राग के साथ गान कर रहे हैं और वहुत से वाजे वज रहे हैं। उनमें शरीरस्थ परमात्म कला का वर्णन है उसे सुन कर श्री भरत जी प्रसन्नता पूर्वक जा रहे हैं ॥ ६ ॥

A number of musicians are singing songs of various tunes and many kinds of instruments are being played It comprises a beautiful description of "Paramatma Kala" King Bharat, enjoying its merit is marching on. (6)

पद्य—मणिमय खेटक जडे वीरगासे च । व्रण कित्त खड्गगळिंद् ॥
गणवद्द् देवर्कळेयूतंद राग सं । दणिसि पल्लक्कि यसुत्त ॥ ७ ॥

अर्थ—श्री भरत जी के पालकी के चारों ओर मणियों से भूपित तथा चारों ओर वाल विखेरे हुए, सैनिक पोशाक धारण किए हुए अनेक चमकती हुई तलवारों को हाथ में लिए हुए गण वद्ध देवों का समुदाय जा रहा था ॥ ७ ॥

Bharat ji surrounded by decoration with jewellary and chieftains with their scattered hair and shining swards in their hands, was advancing (7)

पद्य—पोडवि नंगरत्तणे योळिन्द्रोसिर । नडेदुदु गणवद्द निवहा ॥
नडेगोटेयेने वंदुदरसिय रोडने पिं । गडेयोळारिळु सहस्रा ॥ ८ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के कार्य में कटिवद्ध, केवल शतखंडाधिपति वीर दो हजार हैं और उनके साथ में रानियों की पालकी के रक्षक सात हजार गणवद्ध हैं। इस प्रकार सेना की शोभा अपार मालूम देती थी ॥ ८ ॥

Two thousands warriors belonging to the master of "Shatkhadda" are devoted to the work of king Bharat The guards of the palanquins of the queens numbering seven thousand chieftains, are also accompanying him Thus the army is looking extremely beautiful (8)

पद्य—दंडिगे कुदुरेयोळूलिग वेंगळु । पेंडिरु पल्लक्कि गळोळु ॥
मंडित रथदोळु कुवरन तोट्टिलु । दंडिगेयूतरु तिर्दराग ॥ ९ ॥

अर्थ—हाथी, घोड़े, रथ, व पदातियों की चतुरंगिणी सेना एक कोश तक फैली हुई जा रही है और उसके बीच में अर्ककीर्तिकुमार का सुन्दर झोला सोने के रथ में बंधा हुआ झूलता हुआ जा रहा था ॥ ९ ॥

The Chaturangini army, consisting of elephants, horses, chariots and infantry, is advancing within an area of two miles The golden bag of Kumar Arkirti is also hanging in between them (9)

पद्य—सार्तद पोजु तन्नदु पेन्न पोजर्क । कीर्तिय पोगेंदु जगके ॥
वार्तेय पुट्टिसि नडेतंदना चक्र । बर्ति मुंदधिक लीलेयोळु ॥ १० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के सैनिक परस्पर में बात चीत करते हुए जा रहे थे कि आगे की सेना भरत जी की और पीछे की सेना अर्ककीर्ति कुमार की है। सभी रानियां बच्चों को साथ लिए जा रहीं हैं ॥ १० ॥

The soldiers of king Bharat are advancing talking among themselves. They are saying that the front army belongs to Bharatji and back army belongs t prince Arkirti Rest of the queens are taking their sons with them (10)

पद्य—तरळन पौजिन हिंदिष्टु दूरवा । गिरे कोटि भत्त रोडगूडि ॥
भरत पादुक वेरंब गोल्लनाथ करिब्ब । ररि विजय वरुतिहरु ॥ ११ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति की सेना के कुछ पीछे एक करोड़ वीरों के साथ भद्र पादुक नामक दो गोपाल राजा आ रहे हैं। वे अत्यंत वीर व अरियों की सेना को नाश करने में परम कुशल हैं ॥ ११ ॥

Following the army of Arkiriti two Gopal kings named Bhadra and Paduk are coming They are very clever in destroying the army of the enemy (11)

पद्य—पूर्वान्हि कालदोळो पुरुजिन पुत्र । पूर्युगद चक्रवर्ति ॥
पूर्वाभि मुखनागे दंडु नडेदुदोंद । पूर्व संभ्रम-वनेनेंबे ॥ १२ ॥

अर्थ—पूर्वाह्ण काल के समय में तीर्थंकर के प्रथम पुत्र पूर्व युग के प्रथम चक्रवर्ती भरत जी पुर्वाभिमुख होकर अगणित सेना के साथ जारहे थे। उस समय की शोभा अपार एवं अवर्णनीय थी॥ १२॥

At the afternoon time, the first son of the Tirthankar and first Chakravarti of previous Yuga, facing the eastern direction was marching with his innumberable army the beauty of that occasion was unique one It can not be put into the limited sphere of words (12)

पद्य—करिघटे तेजिय तट्टु तेरोड्डु सं। गरवीर भटर समूहा॥
वरुतिद्द देडवल हिंदु मुंदेन्नदे। शरधि मेरेय मीरिदंते॥ १३॥

अर्थ—श्री भरत जी के चारों ओर हाथी के समुदाय, घोड़े के समुदाय, और रथ व वीरों के समुदाय इस प्रकार मालूम देने थे कि मानों समुद्र ही अपनी मर्यादा को छोड़कर उछल रहा हो॥ १३॥

The gath ring of elephants, horses and chariots all round king Bharat, appeared in such awe as if the ocean itself is crossing the limits of its glory (13)

पद्य—परि परि टिक्के परिपरि सत्तिगे। परि परि वाहन वाद्या॥
परि परि शृंगार वेसेये नडेद्रात्म। परिवार गूडि भूभुजरु॥ १४॥

अर्थ—श्री भरत जी समस्त कुटुम्बियों को साथ में लिये हुये छत्र, चमर धारण किये हुये, छोटे छोटे ढोलक व भाँति भाँति के वाद्या को बजाते हुये जा रहे हैं॥ १४॥

King Bharat, accompanied by his family and with his umbrella and chamar and playing on several small dholaks, was advancing (14)

पद्य—आनेगळ्नेगळु मत्तारथ पडगु न। वीन तुरंग तरंगा॥
आनेलद्द गलदोळादि चक्रेशन। सेने नडेदुदब्धियंते॥ १५॥

अर्थ—श्री भरत जी के प्रस्थान काल में सेना के मध्य में हाथी गण, रथ गण, और नूतन नूतन अश्व गण चलते हुये ऐसे प्रतीत होते थे कि मानों बड़े जोर की हवा से समुद्र की तरंगे बढ़ती हुई जा रही हों॥ १५॥

At the time of the daparture of Bhartesh, the multitude of elephants, chariots and new horses appeared as if the waves of the ocean are advancing being pushed by the stormy wind. (15)

पद्य—घुडुघुडिसुव वाद्य गुडुगु चिर्चटिलेंदु । सिडिव पेटलु ताने सिडिलु ॥
कडुमिंचिनंते कूरलगु पोळेय पडे । नडेदुदु कार्गल दंते ॥ १६ ॥

अर्थ—आकाश के वीच में घुड़ घुड़, गुड़ गुड़, चिरचट शब्द करने वाले अनेक फटाके ऐसे मालूम देते थे कि मानों आकाश में विजली चमक रही हो ॥ १६ ॥

Innumerable sound producing to the sky appeared, as if lightening is shinning in the sky. (16)

पद्य—वुरुवुरि सुव वहुवाद्यके कालतर । हरिसदे रायनिदिरोळु ॥
हरिगेकाररु तेजियतंड्ड रथदोळु । हरिदाडु तेयुतंदराग ॥ १७ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के साथ अनेक प्रकार के गर्जने वाले वाद्य तथा घोड़े वाले घोड़े पर और रथवाले रथ पर वैठे हुये विविधि भाँति के नृत्य करते हुये जा रहे थे ॥ १७ ॥

King Bharat accompanied by many musical instruments, horsemen, charioteers dancing in different manner was advancing (17)

पद्य—सालामि तेरेयंते हरिवरु मुगुळ्वरु । गालिगळु रुळुवंददोळु ॥
काळगदोळगोम्मे विट्टु नोडोडेया नि । न्नाळनेंदिदि रोळुलिवरु ॥ १८ ॥

अर्थ—जिस प्रकार नदी का पानी वढ़ जाने से उछलता हुआ शब्द करता है उसी प्रकार रण भूमि में रथ के पहिये शब्द करते हुये मानों यह कह रहे थे कि मुझे भरत जी एक वार युद्ध स्थल में लड़ने के लिये आज्ञा दे देते तो कैसा अच्छा होता ॥ १८ ॥

Just as the water of the river in spate produces roaring sound, similarly the ratlling sound producing chariot wheels seem to have been saying that King Bharat should give them a chance in the battle field (18)

पद—तोडेचाचि हरिगे वेरसि नेगेवरु वाळ । जडिवराळवरु तेळवरु ॥
ओडेयनेंदिगे विट्टु नोळ्प नेंदुरे कैय । कडिदुकोंवरु रायनगळु ॥ १९ ॥

अर्थ—अनेक योधा गण भरत जी के सामने जाकर अपने चारों ओर ढाल, तलवार घुमाकर

वीरताके साथ कह रहे थे कि राजा हमें शत्रुओं के सामने लड़नेके लिये कब भेजेंगे। ऐसा कहते हुये भावुकता के साथ अपने हाथ ही को काट लेते थे। उसे देखकर भरत जी हँसने लगते थे ॥ १९ ॥

A number of warriors showing their bravery in various way before king Bharat, were asking Bharatji, "when will they be ordered to go to the battle field" Saying so, in extreme joy, they used to cut their own hands. Bharatji began to smile to see that *(19)*

पद्य—नूकिरि दोवोव्वरतिंगे हरिगेय । ताकिसुवरु तगरंते ॥
जोके योळोळे वुतोलैसि वंदरु चक्र । वावद् पक्षिगळंते ॥ २० ॥

अर्थ—उस समय सैनिक गण ढाल, तलवार ले लेकर परस्पर में एक दूसरे को धक्का देते हुए श्री भरत जी से अपनी वीरता इस प्रकार बतला रहे थे कि मानों चक्रवाक पक्षी अपनी कला को बता रहा हो ॥ २० ॥

At the very moment, the soldiers dressed with their swords and shields dashing each other, were displaying their bravery in such away as if 'Chakravarti' bird is showing its own art *(20)*

पद्य—बिल्लोव नोक्कैयगोंड्र बिलगाररु । हुल्ले वारुवरु होळेवरु ॥
गेल्लरेय गतेगोडाडि बंदरु । जल्लियमृग बेन्विदंते ॥ २१ ॥

अर्थ—धनुषधारी धनुष लेकर जैसे मृगों को मारने के लिए जाते हैं उसी तरह योधागण हाथ में धनुष लेकर उछलते कूदते हुए अपनी वीरता को श्री भरत जी से बतला रहे थे ॥ २१ ॥

The warriors are displaying their bravery before King Bharat, by jumping and hopping with a bow in their hands, like that archer who taking the bow goes out to hunt the deers *(21)*

पद्य—बाणव तुंबनेगेवरु पलगा डेदिडि । गाणदं कूडिळ्‌ हुवरु ॥
चूणियोळगे नम्म विट्टोम्मे नोंडले । चोणीश नेंबरि देरोंळु ॥ २२ ॥

अर्थ—उस समय धनुष पर तीर चढ़ाकर मार मार कर उनको दिखा रहे थे कि यदि आपकी आज्ञा मिले तो इसी भांति हम लोग शत्रुओं को मार डालेंगे ॥ २२ ॥

At that time drawing their string of their bow and fixing arrows upon them, they were showing that only royal order is awaited to bring the enemies to their mortal end *(22)*

पद्य—तलेय मेलेत्ति बिलुदिरु हुवरेडवल । कोलेयरु कुप्पि नडेवरु ॥
कलह सिक्किदरेम्म भाग्यवेनुत तम्मो । ळुलिवुते यदुवरु बिल्लवरु ॥ २३ ॥

अर्थ—धनुष पर बाण चढ़ाकर योधा गण अपने सिर के चारों ओर उसे घुमाते हुए यह कह रहे थे कि हम लोगों क कहाँ ऐसे भाग्य हैं कि शत्रुओं का नाश करके अपनी क्रोधाग्नि प्रशान्त करें । आर्थात् सभी शूर वीर श्री भरतेश जी की आज्ञा की ही प्रतीक्षा में थे ॥ २३ ॥

The warriors, giving the arrows upon their bows and moving at all round their heads, were saying that it would be their luck to have a chance to pacify their fine of anger by shooting at the enemies That is to say all the heroes are awaiting the order of the king (23)

पद्य—गडेय भटरु गगणव तिविवंते ने । गंडे येत्ति पेर्गडेगूडि ॥
गडवडिसुव वाद्यगतिगे भूभुजन मुं । गडेयोळु कुणिवुतेय्युवरु ॥ २४ ॥

अर्थ—अनेक योधागण रणभेरी के साथ आवेश में आकर नृत्य करने हुए ऐसा कोलाहल करते थे कि शब्द चारों ओर व्याप्त हो जाता था ॥ २४ ॥

A number of warriors, on listening the beating of battle drum, used to be so much excited and produce so much noise that the noise spread everywhere in the universe (24)

पद्य—गडेय नुब्बि नोळ्पदकिडुवरा नुवरोंदु । कडेय हिडिदु भळपिपरु ॥
नडुगुव गडेय कैदुडुके नडेवरु हा । वडिग सर्पननाडिपंते ॥ २५ ॥

अर्थ—योधा गण वीरता की अनेक कला को दिखा रहे थे और निर्बल सेवक को धनुष पर उठाकर काले साँप की भाँति इधर से उधर ले जा रहे थे ॥ २५ ॥

The warriors were displaying a number of beats of bravery and were carrying weak servants on the points of their arrow like serpents (25)

पद्य—ओब्बोब्बरिदिरागि मोने मोने गाणिप । रुब्बि हारुवरु जारुवरु ॥
ओब्बुळिगडे येत्ति नडेवरु जोळद । हेब्बेळसेद्दु देवंते ॥ २६ ॥

अर्थ—योधागण परस्पर में वीरता के साथ उछल कूदकर झूमते हुए इस प्रकार जा रहे थे कि मानों खेतों के बीच में ज्वार की फसलें तेज हवा चलने से झुक रही हों ॥ २६ ॥

The warriors were advancing by hopping and jumping in such away that it appeared as if the barly crop is roding its head in the field due to the blowing wind (26)

पद्य—कुदुरे काररु कुदुरेय नूकि भरतेश । निदिरिगेयुतंदु केमुगिदु ॥
सदेव वाद्यद गतियोळु तम्म कुदुरेय । चदुरिंद कुणिसुतेयुदुवरु ॥ २७ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के सामने घोड़े वाले हाथ जोड़कर घोड़े को बाजे की गति केअनुसार बड़ी चतुराई के साथ नचा रहे थे ॥ २७ ॥

The horsemen are making their horses dance before King Bharat to listen the war drums. (27)

पद्य—अड्डवड्डके तेगेवरु तिरिमुरियेन । लड्ड हरिव होळेयंते ॥
ओड्डागि मरित माड्वरु नेरदोळु सा । लोड्डिड हरिवतोरेयंते ॥ २८ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के सामने योधागण पंक्ति बद्ध होकर अपने अपने घोड़े पर बैठकर घोड़े को शर्त लगाकर दौड़ा रहे थे कि देखें किसका घोड़ा सबसे तेज दौड़ेगा ॥२८ ॥

Lined before king Bharat, the horsemen were new competing each other in race to find out which one was fastest (28)

पद्य—चेंडेयदोळु तेगेवरु कुँमकारण । स्लडिय चक्रदंददाळु ॥
ग्रींद चक्रिय बलवेंब मसुद्रद । गाढद सुळियोवेंबंते ॥ २९ ॥

अर्थ—जिस प्रकार कुंभकार चक्र को घुमाता है उसी प्रकार गोलाकार घूमते हुए घोड़े इस प्रकार मालूम देते थे कि मानों समुद्र के बीच में भँवरे उठ रहे हों ॥ २९ ॥

Just as the potmaker rounds his wheels, similarly the horses racing in circle seemed as if whirls are being formed in the midst of the ocean (29)

पद्य—किरिदिनोळोलेवरल्लिगे हारिसि । तुरुगे दुव्वाळि मुतिहरु ॥
तेरप नरिदु सडिलव बिट्टु दार्येदु । नेरे वेगदोर्प रोंडयगे ॥ ३० ॥

अर्थ—सवार गण घोड़े को अनेक चाल से आकाश में उड़ाते हुए श्री भरतेश जी के सामने खड़े हो जाते थे ॥ ३० ॥

The horsemen, displaying varieties of racing and flying their horses in the sky, stand down before king Bharat (30)

पद्य—कुप्पिसुवरु कुणिसुवरेडवल कंद । कप्पिसुवरु मेणदंते ॥
तेप्पव तेगेंते तेगेदेरि रावुत । रोप्पदि बंदरोलेसि ॥ ३१ ॥

अर्थ—राजा भरत के सामने वे घोड़े बैठकर, लेटकर, सिर, पैर हिलाते हुए मछली के समान खड़े हो जाते थे ॥ ३१ ॥

Those horses, sitting, sleeping moving their heads and tails, stand before the king like a fish (31)

पद्य—मावतिगरु मददानेय नूंकि क । लाविदनिदरिगे वंदु ॥
देवगे-पोडव डेंदानेय नेरगिसि । तावु कैमुगिद रुव्विनोळु ॥ ३२ ॥

अर्थ—महाउत लोग अपने अपने मतवाले हाथियों को श्री भरत जी के सामने खड़ा करके उनसे कहते थे कि देव को नमस्कार करो तव हाथी वा महारत दोनों नमस्कार करके चले जाते थे ॥ ३२ ॥

The drivers of the elephants are standing and making their elephants to salute the king They go back after saluting the royal personage. (32)

पद्य—अंकुश विट्टड्ड तेगेवरानेय काल । संकले झणरुझग्गेनलु ॥
नूँकुवरिदरिगे कडलोळु हडग व । ल्लंकदि नूकुवंददोळु ॥ ३३ ॥

अर्थ—महावत लोग हाथियों को इतने जोर मारते थे कि शीघ्र गति से घंटा इत्यादि की झनकारों से यह मालूम देता था कि मानों समुद्र में वड़े वड़े जहाज इस पार से उस पार क्षिप जा रहे हों ॥ ३३ ॥

The drivers used to beat the enemies in such a way that their speed, ringing ship is crossing the ocean (33)

पद्य—आनेय वळिविडिदानेय नडेसि सा । लानेय काणिसिदाग ॥
सेनांबुराशिगे सेतुगट्टिदवोलु । गान वेंद्रगे तोरुतिहरु ॥ ३४ ॥

अर्थ—मानवेंद्र श्री भरत जी के सामने पँक्ति वद्ध हाथियां इस प्रकार शोभा देती थीं कि मानों समुद्र में पुल वंधा हुआ है ॥ ३४ ॥

The elephants lined before king Bharat seemed as if there is a bridge bridge upon some ocean. (34)

पद्य—सोंडिलनेत्ति वालवनीडि किविगळ । मंडिसि वल्दनिदोरि ॥
चंडेभसुळिदुवु गिरियिंद कड्दोड्ड । गुड्डगळुरुळु वंददोळु ॥ ३५ ॥

अर्थ—जिस समय हाथी अपने सूंड़, पूँछ, कान हिलाकर इधर उधर दौड़ रहे थे तो उसके अंगों के शब्द ऐसे मालूम देते थे कि मानों बड़े बड़े पत्थर टूट कर गिर रहे हों ॥ ३५ ॥

While the elephants were running hither and thither, it so appeared from the sounds produced by the moments as if big stones are falling down (35)

पद्य—सुरिव मदद कंपिगेरगुव तुंबिय । नेरवि घम्मेंदुब्बि केदरे ॥
भरतेश निदिरोळु दिंकिट्टु नडेदुदु । करिघटे कब्बरेगोंडु ॥ ३६ ॥

अर्थ—मतवाले हाथियों के गंडस्थल से मद झरते हुए इस प्रकार मालूम देते थे कि मानों कमल के पुष्प पर बैठकर भौंरे गुंजार कर रहे हों ॥ ३६ ॥

The Gandasthala of the elephants seemed as if bees are humming over the lotus flower (36)

पद्य—गालिगळुरुळे पताके गळदिरे मुं । गालु मडिदु कुदुरेगळा ॥
भूलंबदोळु रथगळ तेगेदुवु नीर । मेलेनिसुव वेडगिनोळु ॥ ३७ ॥

अर्थ—ध्वजा से युक्त रथ में जुते हुए घोड़े भरत के सामने आकर दोनों पावों को जमीन में टेकते हुए इस प्रकार नमस्कार करते थे कि मानों समुद्र या नदी में तैरते हुए जा रहे हों ॥ ३७ ॥

Flag hoisted charriots with their horses arrived any saluted the king bending before him in such away, as if they are swimming in the river or some ocean (37)

पद्य—चीत्कार वेसेये रथिकरु रथगळ च । मत्कार दिंदोत्ति तंदु ॥
पूत्कार वेसेये कैमुगिदु नडेसिदरु । कुत्कीलगळ नूकुवंते ॥ ३८ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार के चीत्कार करने वाले रथिक लोग चमत्कार तथा बहुत गौरव के साथ रथों को लाकर चले गए ॥ ३८ ॥

Charioteers with their shrilling cry gloriously brought their chariots with a flash and went away (38)

पद्य—गरिगरि तुरुळुव गालि वायोळु नोरे । सुरितुत तेगेव तेजिगळु ॥
उरु हेमेरथद मालुनडेदुदु चित्रदु । प्परिगेय सालुनडेदंते ॥ ३६ ॥

अर्थ—अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा गड़, गुड़, ध्वनि के साथ तीव्र गति से चलते हुए रथ ऐसे प्रतीत होते थे कि मानों स्वर्णमय महल ही दौड़ते हुए जा रहे हों ॥ ३९ ॥

The white foam coming out of the mouth of the horses due to excessive labour, appeared like a running golden palace (39)

पद्य—उप्परिगेय माडदोळु निंद वहुवणं । दोप्पुव मुगिलोळेवंते ॥
दप्पवडेद पंचवर्णद रथद सा । लुप्परवेत्तु नडेदुदु ॥ ४० ॥

अर्थ—रथ के ऊपरी महल के प्रत्येक हिस्से नील रंग के मणि, रत्न से युक्त इस प्रकार मालूम देते थे कि मानों नील वर्ण आकाश ही आकर दौड़ रहा हो ॥ ४० ॥

Every upper appartment of the chariot studded with blue jewells seemed as if blue sky itself is running (40)

पद्य—स्यदन गज हय भटर मोत्तदोळु पो । न्नंदण गळनेरि नृपरु ॥
इंदुव नोलैप नक्षत्र गणदंते । वंदरोलैसि चक्रियनु ॥ ४१ ॥

अर्थ—स्यन्दन, गज, हय इन सबों पर बड़े बड़े शूर वीर बैठकर स्वर्ण मय आभूषण धारण किए हुए श्री भरत जी को टकटकी बाँध कर इस प्रकार देख रहे थे कि मानों चन्द्रमा को नक्षत्र तारा टकटकी लगा कर देख रहा हो ॥ ४१ ॥

Many warriors weaving beautiful ornaments and riding upon chariots, elephants, were looking towards the king in such a way as if some star is looking at the moon with its fixed eye (41)

पद्य—अमरेंद्र नोडनेयुदुवमररो भवनेंद्र । गमिस लेयदुव भवनजरो ॥
अमम चक्रेशन नोलैसि वंदरु । तम देशपाल रोगिगनोळु ॥ ४२ ॥

अर्थ—सौधर्मेंद्र की सभा में मानों अमरेन्द्र आ गये उसी तरह भरत भवनेंद्र को देखने के लिए अनेक देश के राजा आकर भरत को देख रहे हैं। चक्रेश्वर को देखकर सभी राजा अत्यंत प्रसन्न हुए ॥ ४२ ॥

Many chieftains have been looking at king Bharat in such away as if

Lord Amrandha has come in the court of 'Saudharmendra' All the Rajas were highly pleased to see the 'Chakreshvar'. (42)

पद्य—करवाळ नांत परंजिय संजोग । उरिव साम्राणिगळेरि ॥
अरसु मक्कळु वरुतिद्दरु रायन । मुरिमुरि दीव्वि सुतोडने ॥ ४३ ॥

अर्थ—अनेक राजकुमार विविधि भॉति के तलवार भाले इत्यादि हथियारों को सजाकर शीघ्रगामी घोड़ों पर बैठकर आते हुए श्री भरतेश जी के चरणो में नमस्कार करते थे ॥ ४३ ॥

The princes, armed with all kinds of swords, spears etc and, riden on the horse back, are saluting the advancing Chakravarti king (43)

पद्य—हरिदाडु तेराडु तिदिरोळु पोप वं । दर नेरळपक्कद नृपरा ॥
वरवंशदरसुमक्कळ नोलेदोतेडु भू । वर नोडुतेयुतरुविर्दा ॥ ४४ ॥

अर्थ— वहुत से रथ, सेना के साथ इधर उधर घूमने वाले तथा श्रेष्ठ वंश में उत्पन्न हुए राजकुमारों को देखते हुए श्री भरत जी सानन्द पूर्वक जा रहे थे ॥ ४४ ॥

King Bharat is passing on happily, looking upon the princess of noble family and warriors moving with the army and chariots (44)

पद्य—कोळल रागव केळुतोळ गरिदाडुव । केळेयर नुडिय लालिसुत ॥
दळपति दळद मुँदेयुदे सचिव तन्न । केळदोळेयुतरे तेरळिदनु ॥ ४५ ॥

अर्थ—सेवकों की वंशी ध्वनि तथा अनेक प्रकार की कलाओं को सुनते हुये सेनापति व मंत्री जी अपने सैनिकों को प्रोत्साहित करते हुये ले जा रहे थे ॥ ४५ ।

The commander of the army and minister are carrying on their enemies with listening to the pipe playing and others fats of warfore (45)

पद्य—दरियोलिप्टिष्ट रोळ वहुर्देदु कु । मारण राजीवस्थिया ॥
आरय्युता राय तळर्दनु पुडे तुंवि । भोरेंव वाद्यघोषदोळु ॥ ४६ ॥

अर्थ—नाना प्रकार के वाद्यों के साथ घोष करते हुये राजकुमारों की अगणित सेना को देखते हुए श्री भरत जी आनन्द पूवक जा रहे थे ॥ ४६ ॥

King Bharat was advancing happily and seeing the innumerable army of the royal prince (46)

पद्य—देसे तुंबि नडेव पायद्ळगूडि तन्न भा । विसुतोंदु पयन व सागि ॥
विसिळ वलियद मोदले वीड बिडिसिद । नोसेदोंदु तेरपिनेडेयोळु ॥ ४७ ॥

अर्थ—जब सेना कुछ दूर जा चुकी तो धूप कड़ी हो गई। इसके बाद एक उत्तम स्थान को देखकर श्री भरत जी अपने सैनिकों को ठहरने की आज्ञा दिये अर्थात् हाथ से संकेत किया ॥ ४७ ॥

It was very hot, when the army covered some distance. After that finding a suitable place Bharatji ordered his army to halt. *(47)*

पद्य—उचित दिंदेल्लर वीळ्कोट्टु शुरशिल्पि । रचसिद शिविरव होक्का ॥
प्रचुरार्क कीर्तिय पौजु वंदुदु राय । नचलितलीलेयोळिर्दा ॥ ४८ ॥

अर्थ—उनकी आज्ञा पाकर सैनिकगण ने शिल्प कारों द्वारा रचे गये सुन्दर महल में प्रवेश किया। इसके बाद विशाल सेना साथ में लिये हुए राजकुमार अरिकीर्त्ति जी भी आगये। उनको देखकर श्री भरत जी को अपार हर्ष प्राप्त हुआ ॥ ४८ ॥

Being ordered thus, the army soldiers entered the palace prepared by the architects Then prince Arkiriti also arrived with a huge army. Bharatji felt excessive pleasure to see him *(48)*

पद्य—कोट्टिगे कोल्हार कीलार होरेय ता । ळ्दोट्टि गळ्पासु भंचगळु ॥
पेट्टिगे मंडार वोक्कस सागि वं । दोट्टु गूडिदुवु वीडिनोळु ॥ ४९ ॥

अर्थ—उस समय उस महल में अनेक प्रकार के कुर्सी, मेज, सन्दूक, पर्यंकादि शय्या तथा अनेक प्रकार की भोज्य वस्तुयें आकर एकत्रित हो गईं ॥ ४९ ॥

At that time, a number of chairs, tables, boxes, cots etc and varieties of eatables were collected *(49)*

पद्य—परदरु वेलेवेंग ळाडुव पाडुव । पॅरिदु वर्त्तिसे पाळेयदोळु ॥
अरसु विट्टल्लि पट्टण वेंब तुडिदोरु । तिरलोंदु दिनविद्नल्लि ॥ ५० ॥

अर्थ—जिस समय बहुत सी स्त्रियाँ गायनादि करती हुई आकर बसे कि उस समय ऐसा मालूम होता था कि मानों क्षण भर में ही कोई परम सुन्दर नगर तैयार हो गया हो। श्री भरतेश जी उस महल में आकर विश्रान्ति लिये ॥ ५० ॥

When a number of ladies resided there with their sweet melodies, it seemed as if some city is founded in a moment Shri Bhartesh took his rest in that palace (50)

पद्य—वरसिडलंते भारिय भेरि सूळेसे। मरुदिन वेद्नाळिंद ॥
तोरेयुक्कि हरिवंते हरिवुतिद्दु राय। रेरेयन सेने लीलेयोळु ॥ ५१ ॥

अर्थ—दूसरे दिन आकाश में जिस तरह बिजली का शब्द होता है उसी तरह घोष करते हुए श्री भरतेश जी नदी के लहर के वेग के समान बढ़ते हुए प्रस्थान किए ॥ ५१ ॥

On the second day, King Bharat marched on like the flooded water in a river or lightening in the sky (51)

पद्य—दिग्गजदंदद गजघटे नडेवाग। लग्गेय रथ हरिवाग ॥
तग्गुतिद्दु भूमि किरु वेट्ट बडवेट्ट। नुग्गागि नेलसमवायतु ॥ ५२ ॥

अर्थ—जिस समय हाथी व रथ का समुदाय वेग से आगे बढ़ रहा था उस समय जमीन में कहीं कहीं गड्ढे पड़ जाते थे। इतना ही नहीं छोटे छोटे पर्वत तथा वृक्षादि भी टूटकर नष्ट भ्रष्ट हो जाते थे ॥ ५२ ॥

When the host of elephants, chariots and horses was advancing, the earth used to go much down Not only this much even small hillocks and trees used to break into pieces (52)

पद्य—हदिनेंटु कोटि साम्राणि गळत्तित्त। केदरि कलिदुवु बावेडेगे ॥
अदिरुतिद्दु नेल वैरिरायर धैर्य। कदलुत्तेदे हारुवंते ॥ ५३ ॥

अर्थ—जिस समय अठारह करोड़ घोड़े इधर से उधर पॉव उठाकर पृथ्वी पर रखते थे उस समय पृथ्वी मारे बोझ के कंपायमान हो जाती थी और सारी जनता घबड़ा जाती थी ॥ ५३ ॥

When eighteen carors of horses galloped on the earth the earth used to shrink and people lost their heads (53)

पद्य—आळुगळत्तित्त हरिव भरके काल। धूळेद्दु गगन व मुसुके ॥
कालवल्लद काल सजे दोरितु वैरि। जालकुत्पात वेद्ते ॥ ५४ ॥

अर्थ—जिस समय सेना जा रही थी उस समय धूलियों से आच्छादित आकाश ऐसा मालूम देताथा कि मानो शत्रुओं के उत्पात के लिये जाल फैलाया गया हो ॥५४ ॥

When the army was marching, the dust covered sky appeared like a net spread for the enemies (54)

पद्य—बडिव वाद्यद रभ सके दूरदोळु निंद । निडुवेट्टगळ कट्ट सडलि ॥
गुडुगुड्डि गुडुगळु रुळदुरु डलिगेय । मडकेय नोडेय होयवंते ॥ ५५ ॥

अर्थ—जिस समय वाद्य बजाने वाले ज़ोरों के साथ उसे बजाते थे उस समय उसकी गर्जना से छोटे छोटे पर्वत गिरकर मिट्टी के कच्चे घड़े के समान चकना चूर हो जाते थे ॥ ५५ ॥

When the drums were beaten, huge mountains used to break like earthen pots, to hear the fearful sound (55)

पद्य—एडे तोरेगळ मुंदे नडेवव कुडिदरु । नडुवे पोपरिगरि लायतु ॥
कडेयोळेयदुवर कालोळु हुडि हारतु । नडेदुदु चक्रिय कटका ॥ ५६ ॥

अर्थ—जिस प्रकार बहती हुई नदी में अन्य नदियों के मिल जाने से उसका वेग अत्यंत बढ़ जाता है उसी तरह श्री भरत जी की सेना के वेग को अन्य राजाओं की सेनाने मिलकर बढ़ा दी ॥ ५६ ॥

Just as the confluence of rivers with a river increases its speed, similarly the strengths of Bharat's army is increased by the armies of other chieftains (56)

पद्य—पडेगूडि राजेंद्र नल्लल्लि पाळेय । बिडुतेळु तेयतंद नित्त ॥
पडेय पताके-योळल्लल्लि पक्कि ग । ळेडेगेडु हारिदुवत्त ॥ ५७ ॥

अर्थ—इस प्रकार अनेक राजा तथा श्री भरत जी के सेना पति थे सब ध्वजा द्वारा सूचित करके अपनी अपनी सेना को बीच बीच में ठहराते हुए आगे जा रहे थे ॥ ५७ ।

Thus a number of chieftains and the commander of Bharats army were advancing distinctly with their flags upon their army (57)

पद्य—जयराज विन्नविमिद बोळु कुरु कुरु । पयण दोळल्लल्लि विट्ट ॥
द्वयत्रय दिन विरुतेयतंदु नृपत्ति गं । गेय तडियोळ वीडुविट्टा ॥ ५८ ॥

अर्थ—इसके बाद जैराज सेनापति ने अनेक युक्ति के साथ दो घंटा दिन बाकी रहने पर ही श्री भरत जी की सेना को गंगातट पर ठहराया ॥ ५८ ॥

Then one of the commander's named Jai Raj halted Bharat's army at the bank of River Ganga, even two hours before evening (58)

पद्य—बडगण हिमगिरियोळ् हुट्टि तेंक वं । दोडने डोंकिसि मूड हरिदु ॥
कडल कूडिद्दा गंगेयदर डोंके । नेडेयोळ् विट्टना चक्रि ॥ ५९ ॥

अर्थ—यह गंगा नदी हिमालय से निकलकर दक्षिण दिशा को बहती हुई पूर्व दिशा में जाकर समुद्र से मिल गई है। दक्षिण से पूर्व के मोड़ भाग (कोमर) पर ही सेना रुक गई ॥ ५९ ॥

That river Ganga, rising from mount Himalya, flowing in the southern direction has fallen into ocean The army hatted at the South Easten turn of the river (59)

पद्य—गंगे योळगे तन्न पडे मिंदु सर्व शु । द्धांग वडेये तडेदिदु ॥
चांगु वलोयेने तळर्दनस्लिद वा । द्यंगळब्बरिसे दंडोत्ति ॥ ६० ॥

अर्थ—सेना रुकने के बाद समस्त सैनिक स्नानादि क्रिया को समाप्त कर के नाना प्रकार के वाद्य को बजाते हुये वहाँ से गंगा नदी के बांये किनारे से पूर्व समुद्र की तरफ चल दिये ॥ ६० ॥

After taking their baths, the whole army playing on musical instruments, following the left bank of the river marched towards east. (60)

पद्य—देवगंगेगे तेंकलिद्दु पलवशाथि । भूवरणद बलकिक्कि ॥
देवगंगेय तडिविडिदु नडेदनु पू । र्वावलंबनद वारिधिगे ॥ ६१ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ५६ देशीय राजाओं को साथ लेकर गंगा नदी के किनारे किनारे चलकर बीच बीच में सेना को ठहराते हुए पूर्व समुद्र तट पर पहुँच कर सेना को रोक दिया॥ ६१ ॥

King Bharat accompanied by fifty six chieftains, marching along the course of river Ganga, halting the army in the journey halted the army, on reaching the eastern sea shone (61)

पद्य—बीडुबीडुत गंगेयोत्ति नोळ्ळल्लि । कूडे कूडेत्ति नडेतुत ॥
नाडर सुगळोगिनोळ् बंदकंडनु । मूडन लवन वार्धियनु ॥ ६२ ॥

अर्थ—यहाँ पर पूर्व समुद्र के दर्शन मात्र से ही सभी सैनिकों को नूतन उत्साह उत्पन्न हो गया ॥ ६२ ॥

There all the soldiers got new energy only to see the Eastern ocean(62)

पद्य—ई कडलोळु मागधामर निहनु म । हा कोपि यातन जयसि ॥
बेकाद् कार्यव मुंदे योचिपर्वेंब । ना किरीटिय कूडे मंत्रि ॥ ६३ ॥

अर्थ—बुद्धिसागर ने आकर समयोचित प्रार्थना किया कि हे राजन् ! इस समुद्र का अधिपति "मागधामर" नामक व्यन्तर अत्यंत क्रोधी, क्रूर तथा वीर है। इसलिए सर्व प्रथम उसे वश में करके तदनन्तर आगे के कार्य पर विचार करिए ॥ ६३ ॥

Buddhisagar requested proper to the occasion and said, "O King! Magadhamar the master of this ocean, is extramely angry, cruel, and brave. So after overcoming him. think for others" (63)

पद्य—कोपवे मागध नवन कोपाग्निय । लोपिसि वूडि माडुवेनु ॥
ईपयोधि योळिद्नेव सोक्कैमे सा । का पेतिनाटवेनेंदा ॥ ६४ ॥

अर्थ—बुद्धिसागर के वाक्य को सुनकर राजा भरत जी ने कहा कि क्या मागधामर क्रोधी है ? उसे समुद्र में रहने का गर्व होगा। मैं उसके क्रोध को क्षण भर में प्रशान्त करके उसे वश में कर लूँगा ॥ ६४ ॥

Having heard the words of Buddhisagar the king said, "Is Magadhamar angry by nature ? He is proud of living in the ocean I will pacify his anger in a moment and bring him to his knees (64)

पद्य—ओले मात्रव नेच्चु नोडुवे नोदिसि । केळ्लोडने बारदाग ॥
मेले हेळुवे नवनिगे तक्क हरुव वा । गुजाल वेकीग साकेंदा ॥ ६५ ॥

अर्थ—पहले मैं यहीं से उसके पास पत्र भेजकर उसके अभिप्राय का पता लगाऊँगा। यदि वह पत्र पढ़कर भी नहीं आया तो उसे योग बुद्धि सिखलाऊँगा। अभी उससे बोलना ठीक नहीं है ॥ ६५ ॥

I will find out his objective by sending a letter from here. If he does not come even on reading letter, I will train him in 'Yoga' It is not proper to interfer with him now (65)

पद्य—आनुधि साकदंति रलिदु कूडेंदु । मानव होयिस दनल्लि ॥
सेने बिड्डितु तडेयोळु नोडे तानोंदु । मानुष्य सागर दंते ॥ ६६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने कहा कि अप्रयोजन बात चीत करना बेकार है । सेना को यहीं रोक दो । उनको आज्ञा पाते ही सारी सेना पूर्व सागर तट पर ठहर गई ॥ ६६ ॥

"Shri Bhartesh said," It is useless to talk upon worthless things Let the army halt here Being ordered thus, the army halted at the Eastern coast (66)

पद्य—पेळे मुवत्तारु योजन दगलदो । ळालंब विडिदोजें विडिदु ॥
नीळ नाल्वत्तेंदु गावुद संदिरे । पाळेय विट्टुदा कटका ॥ ६७ ॥

अर्थ—३६ योजन चौड़ाई व ४० योजन लम्बाई है जिसकी ऐसी समतल भूमि में सेना ने अपना स्थान बना लिया । उस स्थान की शोभा का क्या वर्णन किया जाय ? भाँति भाँति के वाद्य साश्वालय, गजालय' वेश्यालय, श्रुति पाठकालय इत्यादि की रचना विश्वकर्मा ने क्षण भर में ही इस प्रकार कर दिया था कि मानो कोई अनुपम नगर बस गया हो ॥ ६७ ॥

The army encamped over on area of thirty six Yojanas width and forty Yojanas length How can the beauty of that place he described The Divine mason prepared music house, stables, elephant's houses, houses for dancing girls, for reciters of shrutis in a second of time It appeared as if some city has been constructed (67)

पद्य—वनजरंगडिगळु हय शाले गजशाले । गणिकांगनेयर केरिगळु ॥
क्षणदोळादुवु विश्वकर्म निर्मितद प । ट्टण वल्ते पाळेय नृपना ॥ ६८ ॥

अर्थ—राज गण, राज मित्र, राजकुमार, सचिवादि तथा समस्त कुटुम्बियों के लिए समुचित वास स्थान का प्रबन्ध हो चुका था ॥ ६८ ॥

The residence for Rajas, friends of king, princes, ministers and other royal family members were managed (68)

पद्य—दोरेगळि गरसु मक्कळिगे केळेयरिगे । करणि कारिगे मंत्रिवरिगे ॥
परिवार कडियागि सक लारिगावास । नेरेदु बागळे हलवेनु ॥ ६९ ॥
नड्डनडुवे राय गोळगोटे होरगोटे । पट्टशालेगळु माडगळ ॥
बट्ट चावडिनीट चावडिग ळय । कटायदोळु रचिसिदनु ॥ ७० ॥

अर्थ—उस नगर के मध्य में अनेक प्रकोटाओं से वेष्टित राज महल तैयार हो गया था ।

श्री भरतेश जी की रानियों के लिये पृथक् पृथक् रनिवास, शयन गृह, तथा जिन मन्दिरादि की समुचित व्यवस्था की गई थी ॥ ६९-७० ॥

A palace had been constructed in the middle of that city Seperate palaces, containing inner apartments, sleeping houses and Jin temples were monaged for the queens of shri Bharteshji. (69-70)

पद्य—अरसियरिगे तक्क मनेगळु शयनमं । दिर जिनगृह मोदलाद ॥
अरमने रचिसिदु वागळे चक्रिय । सिरियेनु नाडाडि सिरिये ॥ ७१ ॥

अर्थ—श्री भरत जी सबको अपने अपने स्थान को जाने की आज्ञा दिया और अपने सेनापति 'जैकुमार' से बहुत सावधानी के साथ सेना को सम्हालने की आज्ञा देकर स्वयं अपने महल में प्रवेश करने का विचार किया ॥ ७१ ॥

Shri Bharatji directed everybody to go to their respective places Asking Jaikumar, the commander to keep the army well, Bharatji himself thought to go to his own palace (71)

पद्य—राजरेल्लरनु बीडारवो बीळ्कोट्ट । नोजेर्यिदुळिद्र- कळुहि ॥
पौजि नारैके जतनवेंदु नृप जय । राजन बीळ्कोट्ट नोडने ॥ ७२ ॥

अर्थ—इतने में ही अर्ककीर्तिकुमार की भी सेना आगई। उसे देखकर भरत जी पालकी से उतर कर परमानन्द के साथ उन लोगों की समुचित व्यवस्था करके स्वयं राज महल में प्रवेश किया॥ ७२ ॥

In the meantime, the army of prince Arkirti arrived there, Bharatji being highly pleased to see them, got down from the palanquin and making comfortable arrangements for them entered into his royal palace (72)

पद्य—बंदुष्ट रोळर्ककीर्तियपौजोल । विंदरमने योळ्गायतु ॥
मंदर धीरनु पल्लक्कि यिळिदोजे । यिंद नडेदनगर मनेगे ॥ ७३ ॥
नाळेयोचने युंड्ड मंत्रि होगेंदे नृ । पालक नातन कळुहि ॥
आलय दोळु होक्कु नवभद्र शालेय । ळोलगगोट्ट नर्तियोळु ॥ ७४ ॥

अर्थ—श्री भरत जी महल में प्रवेश करते समय बुद्धि सागर मंत्री से कहा कि मंत्री तुम

भी जाकर विश्रान्ति लो, आगे का विचार कल करेंगे ऐसा कहते हुये नौ रत्न मंडपशाला में प्रवेश करके एक सिंहासन पर विराजमान हुये ॥ ७३-७४ ॥

King Bharat entering into the palace said to Buddhisagar, "O minister! you too should take your rest, we shall discuss tomorrow" Saying thus he entering the 'mandapshale' studded with nine jewells, seated himself on a throne. *(73-74)*

पद्य—मुनन तरिसि कोंडु नोडि मुद्दाडि स । म्मनद दादिय कैगे कोट्टु ॥
सतियरेल्लरु बंदु कंडरवर मुंदु । स्मित मुखदिंद नोडिदनु ॥ ७५ ॥

अर्थ—वहाँ पर सर्व प्रथम अर्ककीर्तिकुमार को बुलाकर उनके साथ प्रेम विनोद किया। तत्पश्चात् उसे विश्वस्त दासी को समर्पित कर रानी की ओर मुस्कराते हुये देखा ॥ ७५ ॥

There he enjoyed first of all with the prince Arkirti After that offering him to some reliable maid. looked smilingly towards the queen *(75)*

पद्य—होदहिंदिनपयनगळल्लि पेंगळ्ळ । नादरि मुवनद्दिगडिगे ॥
आ दिन मुन्निनंतल्ल पेंगळोळ् ता । पोदय विद् दोंदिनिमु ॥ ७६ ॥

अर्थ—पिछले मुकाम की अपेक्षा इस मुकाम पर उन रानियों को थकावट अधिक मालूम हो रही थी। भरत जी जहाँ जहाँ मुकाम करते थे वहाँ सर्व प्रथम रानियों से पूछा करते थे कि आप लोगों को कोई कष्ट तो नहीं है ॥ ७६ ॥

The queens were feeling tiresomeness more than the first place Whenever the king resided, he first asked the queens, if they had any trouble. *(76)*

पद्य—नेळ्ळु मुरोप्पाच्चि हेच्चि मै बाडिद । दल्लि मोग वेमरिट्टु ॥
पल्लव विसिलु तागिदवोडु तन्नदि । गल्लि निट्टवरोळ्ळु नुडिदा ॥ ७७ ॥

अर्थ—आज रानियों की मुखाकृति मलीन हो गई है। शरीर से पसीना आ रहा है इसलिये मन कुछ खिन्न सा मालूम हो रहा है ॥ ७७ ॥

Today the facial appearance of the queens was dull Swat was coming out of their body. So they were somewhat feeling unwell. *(77)*

पद्य—कुळ्ळिरिगे बळ्ळलिदेयेंद नवरद । केळ्ळरु नगुत कुळ्ळितरु ॥
पल्लक्किगळ मरदल्लि तंदरे देह । बल्लाडि नोंदुदेंदा ॥ ७८ ॥

अर्थ—रानियों को खिन्न देखकर श्री भरतेश जी उन लोगों से कहने लगे कि रानियो ! आप लोगों को देखने से मालूम हो रहा है कि वहुत थक गई हो, अत. कुछ देर वैठकर विश्रान्ति ले लो भरत की वात को सुनकर रानियॉ हंसते हंसते वैठ गईं। फिर भरत जी कहने लगे कि मालूम होता है कि आप लोगों की पालकियों को कहार लोग वड़े वेग के साथ लाये हैं इसलिये शरीर हिलने से अधिक कष्ट मालूम हो रहा है, क्योंकि मुख कमल सूखा हुआ दिखाई दे रहा है ॥ ७८ ॥

Finding the queens troubled, Bharatji said to them, "O queen ! appears from your appearance that you are very much timid So take rest Listening thus the queens sat smilingly Then they said to Bharatji, "It seems that the bears of your palanquins have brought you quickly Due to moments in the body, trouble is being eaused because your lotus like face is fading" *(78)*

पद्य—नसुकंदि मुख तोरुतिदे निवगिंदिष्दु । विसिलु तागिदुदकटा ॥
पिसुनरु दद्दद पन्नंगगळनिव । गेसगितिल्ल हुदेंदु नोंदा ॥ ७६ ॥
मुद्दि नन्नोडने वंदरे परिवार सं । घट्टद सेकेयहुदेंदु ॥
वट्टे योळगे नीवु दूरदिवप्पंतु । कट्टु मादिर्दितुटायतु ॥ ८० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी रानियों से कह रहे हैं कि मैं अपने साथ अधिक भीड़ भाड़ के कारण न लाकर आप लोगों के लिये पीछे से आने का प्रवन्ध किया था जिससे कष्ट न हो, पर कड़ी धूप के कारण कष्ट हो ही गया। क्या आप लोगों को गुलाव जल इत्यादि नहीं मिला था ॥ ७९-८० ॥

Shri Bharteshji is saying to the queens, 'I did not manage to take you with me due to rush and that is why you had managed to come afterwards So that there may be no trouble but it was caused due to sun Did you all not get rose water etc *(79-80)*

पद्य—नीवोम्मे सुम्म नेयि्ददरे निम्मोत्तिन । सेवकियरिगु पराके ॥
जीव वळिदरेनंबुगेवंतरेंदेनु । नोविंद तन्न पेंडिरोळु ॥ ८१ ॥
इंदु समुद्र समीप वेंदरे नोळ्पे । वेदु वेगदि सागिरेनलु ॥
तंदरवरु नावु पेळ्दंते वेसदव । रिंद तप्पिल्लें दरवरु ॥ ८२ ॥
सेवेकतियरु नंबुगे वंतरुसिर्दरु । देव मुनिवतवगेंदु ॥
नावु केळ्दे वंदे वेम्मपराधव । कावुदेदिंप नाडिदरु ॥ ८३ ॥

अर्थ—यदि नहीं मिला था या कड़ी धूप हो गई थी तो इन सब बातों पर कम से कम दास व दासियों को तो विचार करना था। क्या प्राण चले जाने पर ये सब काम आयेंगे? क्या करूँ आप लोगों को बहुत दुःख हुआ। इस प्रकार बार बार कहते हुये श्री भरतेशजी ने शोक प्रकट किया। उन्हें चिन्तित देखकर रानियाँ कहने लगीं कि स्वामिन्! इन बेचारे दास व दासियों का क्या दोष है? आज पूर्व सागर समुद्र देखने की हम लोगों की उत्कट इच्छा हुई थी इसलिये हमी लोगों ने शीघ्र चलने की इन्हें आज्ञा दी थीं। इन लोगों ने तो हमारी ही आज्ञा का पालन किये ॥ ८१–८३ ॥

. If it was not available or the day was very hot, the maids should have taken come of all these things Will they be of service after life is spent- "You are very much troubled" Saying thus Bhartesh is repenting To see him troubled the queens said, "O Darling! How are these maids and servants faulty? Today we were extremely anxious to see the eastern ocean, so we gave orders to proceed in hurry They have only obeyed us" (81-82-83)

पद्य—ई पयण दोळोत्ति वंदे वेल्लदे हिंद। णा पयण दोळेदगिदेवे ॥
तापवागळे निम्म काणुते होदुदें। दोष नोळाडिद्रोसेदु ॥ ८४ ॥

अथ—ये दासियाँ तो कह चुकी थीं कि जल्दी चलने से अधिक कष्ट होगा और राजा रुष्ट होंगे इसलिये आनन्द पूर्वक शनैः शनैः (धीरे धीरे) चलिये तब हमी लोगों ने उन लोगों की बात को काटकर शीघ्र चलने की आज्ञा दी थी। आप को मालूम होना चाहिये कि हम लोग इसी स्थान (पूर्वी समुद्र) को देखने के लिये इतनी आतुरता के साथ आई हैं। हम लोगों से आज तक ऐसा अपराध नहीं हुआ था इसलिये इस अपराध को क्षमा कीजिये। प्राणनाथ! आप के दर्शन मात्र से ही हम लोगों की थकावट दूर हो गई। अतः अब आप निश्चिन्त होकर आगे का कार्य देखिये ॥ ८४ ॥

"They had told us that trouble will arise due to hurry und the king will be anoyed We ourselves did not agree and wanted hurry You should kindly be informed that we had come so anxiously only to see this place (eastern ocean) Kindly excuse us for this fault, over falling is remined only to see you Hence kindly proceed on with your routine without any anxiously (84)

पद्य—एंद रुप्परिगेय नेरे हिंनोत्तिगा। नंदर्दिद्ब्यिय नोळ्पा ॥
मिदु देवार्चने गेदु भोजिप वेळि। रेंदेह नवलेयरेरसि ॥ ८५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने कहा ठीक है अभी आप लोग स्नान, पूजा तथा भोजनादि क्रियाओं से निवृत हो जाइये तत्पश्चात् मध्याह्न काल में समुद्र की शोभा को देखने के लिये चलियेगा। राजा की आज्ञा पाते ही सभी रानियां महल के ऊपर चली गईं ॥ ८५ ॥

King Bharat said, "Right you are" All of you should finish the morning calls, when we shall go to enjoy the beauty of Eastern ocean All the queens then, went to the upper apartment *(85)*

पद्य—सहसदि मयनु पेंडिरिगु तनगु मीव । गृह लक्षगळ रचिसिरलु ॥
गृहपति रत्न प्रेरिसिद जलदि सं । ग्रहदि मज्जनव माडिदनु ॥ ८६ ॥

अर्थ—महल के अंदर एक भयानक व्यन्तर ने श्री भरतेश जी तथा रानियों के स्नान करने के लिये पृथक् पृथक् स्नानालय का निर्माण करके स्वच्छ एवम् सुन्दर जलाशय का प्रबन्ध कर दिया था। उसमें प्रवेश करके भरत जी रानियों के सहित स्नान क्रिया से निवृत्त हुये ॥ ८६ ॥

A wonderful vyantar, had already prepared separate both rooms and watertanks for Bhartesh and his queens, in the royal palace Entering into it, Bharatji got rid of bathing performence *(86)*

पद्य—ओंदोंदु मनेयोळोंभोंत्र पेंडिरु होक्कु । मिंदरु तानु वेरोंदु ॥
मंदिरदोळु होक्कु मज्जनगैदन । दोंदु गण्यवे चक्रधरगे ॥ ८७ ॥
वेंकिय नुरुहु कट्टिगेय हाकिवरव । रंकै रेकीगाग लेंव ॥
डोंकिल्ल गृहपतिरत्न प्रेरिसे मिद । भोंकने नारेय वेंरसि ॥ ८८ ॥

अर्थ—देवताओं के द्वारा निर्मित जलाशयों में किसी प्रकार की वाधा नहीं थी । ईंधन लाओ, अग्नि जलाओ तथा इसे या उसे बुलाओ इत्यादि झंझटों का सर्वथा अभाव था । अर्थात् गृहपति की आज्ञानुसार प्रत्येक वस्तुओं की समुचित व्यवस्था पहले से ही हो चुकी थी ८७–८८ ॥

There was no check in the tanks full of water, prepared by the gods The anxeties of full, fine and good were seldom met That is to say that in accordance with the direction of house master, proper arrangement was already made *(87-88)*

पद्य—नेनेद वस्त्रव पञ्चनिधियेंबुदीवुदु । तन तन गुडकोडसिदनु ॥
विनुत पिंगळ नेत्र निधि तोडेगेय नीवु । दनिवर्गे तोडिगेतोडिसिदा ॥ ८९ ॥

अर्थ—स्नान करने के पश्चात् स्फुरण मात्र करने से ही सभी प्राणियों को पहनने के लिये उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणों को 'पद्मनिधि' नामक रत्न देता था। इसी की सहायता से सभी लोग दिव्य वस्त्राभूषणों को धारण किये। इसी प्रकार और भी ईप्सित वस्तुओं को 'पिंगल निधि नामक रत्न देता था जिसको प्राप्त करके सभी लोग शृङ्गार करके सुसज्जित हो गये ॥ ८९ ॥

The master offered 'Padmanidhi' jewel and best types of ornaments to those who took bath in the tanks Many people were 'Divyabhusan' (gracious ornaments) Thus he offered almost all the desired of things and 'Pingalmiddh' jewel having obtained that all the people eompleted their decorations (89)

पद्य—देव तंत्रदोळेल्ल मिंदुट्ट तोट्ट जि । नावास कडियिट्ट रोसेदु ॥
देव पूजेयमाडिदिव्यान्नपानव । सेविसिदरु लीलेयिंद ॥ ९० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी अपने कुटुम्बियों के साथ देवतंत्र के द्वारा स्नान करके उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणों को धारण किये और मन्दिर में जाकर बड़ी भक्ति के साथ देव पूजा इत्यादि क्रियाओं को समाप्त किया। तत्पश्चात् रानियों के साथ बैठकर प्रेम पूर्वक दिव्यान्न पान किया ॥ ९० ॥

Shri Bharteshji along with his family members took his baths and wore beautiful ornaments to the temple, they performed worships of gods After that he took delicious food with his queens (90)

पद्य—परिमळ तंबुलगळ कोंडु शयन मं । दिर केय्देद सुखनिद्रेगैयुदु ॥
सरस विनोददि मध्यान्ह दासर । परि हरिसिदरुभोगिगळु ॥ ९१ ॥

अर्थ—भोजन कर लेने के बाद सब लोग तांबूल इत्यादि सुगंधित द्रव्यों को ग्रहण करके कुछ देर तक परिश्रम निवारण करने के लिये विश्रान्ति लिये और निद्रा देवी ने अपनी कोमल गोदी में सबको स्थान दिया ॥ ९१ ॥

After taking food and other scented eatables, all of them took their rest The goddess of sleep lulled them to sleep (91)

पद्य—अळिक मूरनेय जावदोळवनीशना । नळिनाक्षियरुसहवागि ॥
मेले माडवनेरि गेलमनेयोळ कुळितु पं । गळिगवु निधिय तोरिदनु ॥ ९२ ॥

अर्थ—मध्याह्न काल के बाद तीसरे पहर में भरत जी अपनी रानियां के साथ समुद्र की

शोभा देखने के लिये महल के ऊपर चढ़ गए और वहाँ पर बैठकर समुद्र की शोभा को बतलाकर सभी रानियों को दिखाने लगे ॥ ९२ ॥

After the noon time, King Bharat along with his queens got on the roof of his palace to enjoy the beauty of the eastern ocean From then he began to show the scenery to his queens (92)

पद्य—कडल मुन्नरियद पेंगळच्चरि वट्ट । निडिवेरळिट्टु नासिकके ॥
मुडिमोले दोले दुनोडिद रदरोंदु व । लगडणेगे वगेयोळु मेच्चि ॥ ९३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी की रानियां इसके पहले समुद्र की शोभा कभी नहीं देखी थी । अतः आज बड़ी उत्कण्ठा के साथ देख रही हैं । भरत जी भी खूब समझा बुझा कर दिखा रहे हैं और रानियां नाक पर अंगुली रखकर कौतुक पूर्वक निर्निमेष दृष्टि से देख रही हैं ॥ ९३ ॥

The queens had never seem the scenery of the ocean previous to this occasion So on that day they were very anxiously enjoying that Bharatji is showing it in details The queens are seeing with fixed eyes (93)

पद्य—दिट्टिगे मिगे हायुदु तोर्प समुद्रद । कट्टळलिगे चोद्यवट्ट ॥
अट्ट हासव माडुतोव्वरोव्वर मैय । तट्टुत तोरि नुडिदरु ॥ ९४ ॥
अट्टुव तेरेय मुंदोडुव तेरेय पे । वेट्टदंतेळव तेरेगळा ॥
तोट्टने वयलह तेरेगळनवरु क । ण्णट्टु नोडिदरर्ति वडुत ॥ ९५ ॥
एडेगुत्ति गळनल्लिगल्लि निदद्रिय । निडुगल्ल गळनदरोळगे ॥
एडेयाडुतिह दोणि दुग्गि कप्पलु दोड्ड । हडगु गळिरव नोडिदरु ॥ ९६ ॥

अर्थ—समुद्र का अन्त उनकी दृष्टि के बाहर है । उसमें अगाध जल है । एक तरंग उठकर नष्ट हो जाती है एवं तत्काल दूसरी तरंग उठने लगती है । इसी तरह एक के पश्चात् दूसरी अगणित तरंगे उठकर विलीन हो रही हैं । कहीं कहीं बीच बीच में पर्वत पड़े रहकर इस प्रकार मालूम होते थे कि मानो नौका ही तैरती हुई दृष्टि गोचर हो रही है ॥ ९४–९६ ॥

The horizon of the ocean is beyond the reach of their sight It has unfathomed water Waves rise and fall one after another Thus a number of waves rise and lose their existence Small boats are also to be seen here and there in the ocean (94-96)

राजा भरत अपनी रानियों को महल की छत से समुद्र की शोभा दिखा रहे हैं।

(यह चित्र ला० अनन्तलाल दर्शनलाल तिलोकपुर की ओर से छपा)

(जनता प्रेस बागपत)

पद्य—तुंतुरु तेरे नोरे मुळि घुळुघुळुरव । तंतिद्दु होगेव वारिधिया ॥
कांतेयरेल्ल रंजि सुतिरे भूपाल । निंतेंदु नुडिदनवरोळु ॥ ९७ ॥
इंदु मोदलगोंडु निच्चलु नीवु पें । पोंदि दब्धिय नोडवहुदु ॥
इंदिगे माकेंदु करेदु कोंडरसिय । रेंदागि माडदिंदिळिदा ॥ ९८ ॥

अर्थ—इसी तरह अनेक प्रकार के श्वेत फेन तथा तरंगोंके उठने से 'घुड़घुड़' शब्द करने वाले समुद्र की ऐसी अनोखी छटा को देखकर सभी रानियां बहुत प्रसन्न हो गईं। तब भरत जी ने कहा कि तुम लोग प्रति दिन इसी तरह समुद्र की शोभा देख सकती हो। आज इतना पर्याप्त है अब नीचे उतर चलो ॥ ९७-९८ ॥

The queens were highly pleased to see the white foam and roaring sound of the dashing waves Bharat told them that they could enjoy the scenery of the ocean daily Today it is enough Now let us go down (97-98)

पद्य—रागदिंदा दिन सन्दे कालोचित । भोगदोळा रायनिर्दा ॥
सागर तटदोळु पडेयिद दिदु पूर्व । सागर दर्शन संधि ॥ ९९ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ऐसा कहकर सभी लोगों को साथ में लेकर नीचे उतर आये और समुद्र तट पर राज भोग करके बड़े हर्ष से उस दिन को व्यतीत किये ॥ ९९॥

Having said so, king Bharat came down with them and spent that day on the seashore with great pleasure (99)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळिदवर पाप । बीज निर्नाशन वहुदु ॥
तेज वहुदु पुण्य वहुदु मुंदाळिदप । राजितेश्वरन काणुवरु ॥ १०० ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेंगे उनका पाप, बीज नष्ट होगा। तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य बन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेंगे ॥ १०० ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation) (100)

पद्य—प्रेमदिंदिद नोदिदरे पाडिदरे केळ्द । रामोद वेंदुवरवरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय काणवरर्तियोळु ॥ १०१ ॥

अर्थ—इस कथा को जो प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे व आमोद को प्राप्त होंगे और नियम से देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ १०१ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (101)

पद्य—कडल नगुव कडु गंभीर कडलोंदु । कडुपिगे तेरपाद महिमा ॥
कडेसार देन्नेदे योळगिरु नीनेडे । विडदे चिदम्बर पुरुषा ॥ १०२ ॥

अर्थ—हे परमात्मन् ? लोग कहते हैं कि समुद्र गंभीर है परन्तु आप की गंभीरता के सामने उसकी गंभीरता क्या कर सकती है ! समुद्र का जल अगाध है, किन्तु आपकी महिमा भी तो अपार है। इसलिये हे परमात्मन् चिदंबर पुरुष ! मेरे हृदय में आपका अध्यवास निरंतर बना रहे ॥१०२ ॥

"O Lord ! people say the ocean is deep But how does that matter before your grave nature Your heart is unfathomable But your grace is also infinite So O Lord Chidamber Purush ! reside in my heart forever. (102)

॥ इति द्वितीय भाग का चतुर्थ सर्ग पूर्व सागर दर्शन संधि संपूर्ण ॥

पांचवां अध्याय

❀ राजविनोद संधि ❀

पद्य—मारमदेभ कंठीरव बोध प । यो राशि पूर्ण सुधांशु ॥
कारुण्य दोरु सन्मतियनु कर्म सं । हारा निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—हे सिद्धात्मन्! कामदेव रूपी आप मतवाले हाथी के लिये सिंह के समान हैं, ज्ञान समुद्र को भड़काने के लिये चंद्रमा के समान है तथा कर्म पर्वत को आप सम्हाल चुके है इसलिये हमें भी उसी प्रकार का ज्ञान दीजिये जिससे हम अपनी कायरता को त्याग सकें ॥ १ ॥

"O Sidhutman ! thou art lion for an young elephant, moon for brightening the ocean of knowledge Thou have shouldered the burden of mountaneous actions Hence thou preach me the same lesson as may wash me of my cowardice" (1)

पद्य—अंदिन दिनदोळु दळपति सचिवर । मंदिरका चक्रि करेसि ॥
मुंदन कार्यव योचिसि नुडिदन । दोंडु लीला मात्रवागि ॥ २ ॥

अर्थ—दूसरे दिन भरतेश्वर जी अपनी महल में मंत्री, सेनापति इत्यादि प्रमुख व्यक्तियों को बुलाकर कहने लगे ॥ २ ॥

पद्य—विडुमागधन गेल्वुदाव गहनवेले । पडेवळ्ळ केळमंत्रिकेळु ॥
कडल तडियोळेन गोम्मे योगदोळिर । लडरुतिर्द्पुदर्तियेदा ॥ ३ ॥

अर्थ—मागधामर को वशमें करने की कौन सी बड़ी बात है? सेनानायक व मंत्री तुम लोग सुनो उस व्यंतर को वश में करने के लिये कोई चिन्ता नहीं है, परन्तु इस समुद्र तट पर एक बार ध्यान करने की मेरी प्रबल इच्छा हुई है ॥ ३ ॥

पद्य—निन्ने समुद्रव कंडुडु मोदलागि । नन्नेदेयोळु ध्यानदर्ति ॥
भिन्न विल्लदे दळवेरुतिद्पुदद । मन्निसवेकु नानेंदा ॥ ४ ॥

अर्थ—कल जबसे मैंने समुद्र को देखा है तभी से मेरे हृदय में ध्यान करने की भावना वारंवार उठ रही है। ऐसी अवस्था में इस इच्छा की पूर्ति करना मेरा परम कर्तव्य है ॥ ४ ॥

Since yesterday, ever since I saw this ocean, my heart is thrilling with the idea of meditation In such a state of mind it is my duty to fulfil my desire *(4)*

पद्य—काननदोळु कडलोळु होळेयोळु गिरि। सानु मुँतादवरल्लि ॥
ध्यानके लेसेंदु पेळ्दुदध्यात्म दो। ळा नुडि होळेदुदेन्नोळगे ॥ ५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी मंत्री व सेनापति से कह रहे हैं कि ध्यान करने के लिये जंगल, नदी तट, समुद्र तट और पर्वत प्रदेश इत्यादि स्थान उत्तम कहे गये हैं। ऐसा अध्यात्म शास्त्र में वर्णन किया गया है ॥ ५ ॥

Forests, rivers, sea shore and mountains are the places considered most suitable for meditation has been described in the scriptures *(5)*

पद्य—भरदिद तळ्दुदु मोदलागि पथदल्लि। पिरिदु योगव माडितिल्ल ॥
शरधियोत्ति नोळोम्मे योग दोळिदुदु। परिकिस बेकु नानेंदा ॥ ६ ॥

अर्थ—ये वचन मुझे स्मरण हो गये हैं। जबसे मैं अयोध्या नगर से आया तब से आत्म शान्ति के लिये कहीं भी ध्यान नहीं किया इसलिये इस समुद्र तट पर ध्यान करने की उत्कट इच्छा हुई है ॥ ६ ॥

These words are fined in my memory I have not meditated for peace of my soul, after my departures from Ayodha So I have an unbending desire to take up meditation on this sea shore *(6)*

पद्य—विन्नह देव ध्यानव माळ्पोडब्धिय। सन्निधि लेसहुददके ॥
चेन्नागि पगेय जयसि मत्ते माळ्पुदु। मुन्न लेंतहुदेंदरवरु ॥ ७ ॥

अर्थ—भरत के इस वाक्य को सुनकर बुद्धि सागर मंत्री ने कहा कि स्वामिन्! मेरी एक प्रार्थना यह है कि ध्यान करने के लिये समुद्र तट यद्यपि उपयुक्त है, पर, आप जिस कार्य के लिये यहाँ पधारे हुये हैं वह कार्य सर्व प्रथम करना चाहिये। शत्रुओं को अपने वश में करके स्वतंत्रता पूर्वक ध्यान करिये। इसमे मुझे कोई आपत्ति नहीं है ॥ ७ ॥

Buddhisagar, a minister of king said, "O master ! although sea shore is the most be fitting place for meditation, yet the objective for which you have come here is the most important one and that should be your first concern after overcoming the enemies, meditated freely I have no objection them *(7)*

भी जाकर विश्रान्ति लो, आगे का विचार कल करेंगे ऐसा कहते हुये नौ रत्न मंडपशाला में प्रवेश करके एक सिंहासन पर विराजमान हुये ॥ ७३-७४ ॥

King Bharat entering into the palace said to Buddhisagar, "O minister! you too should take your rest, we shall discuss tomorrow." Saying thus he entering the 'mandapshale' studded with nine jewells, seated himself on a throne. *(73-74)*

पद्य—सुतन तरिसि कोंडु नोडि मुद्दाडि स । म्मतद दादिय कैगे कोट्टु ॥
सतियरेल्लरु बंदु कंडरवर मुंद । स्मित मुखदिंद नोडिदनु ॥ ७५ ॥

अर्थ—वहाँ पर सर्व प्रथम अर्ककीर्तिकुमार को बुलाकर उनके साथ प्रेम विनोद किया। तत्पश्चात् उसे विश्वस्त दासी को समर्पित कर रानी की ओर मुस्कराते हुये देखा ॥ ७५ ॥

There he enjoyed first of all with the prince Arkirti. After that offering him to some reliable maid. looked smilingly towards the queen. *(75)*

पद्य—होदहिंदनपयनगळल्लि पैंगळ । नादरि सुवनडिगडिगे ॥
आ दिन मुन्निनंतल्ल पेंगळोळ् ता । पोदय विद्दोंदिनिसु ॥ ७६ ॥

अर्थ—पिछले मुकाम की अपेक्षा इस मुकाम पर उन रानियों को थकावट अधिक मालूम हो रही थी। भरत जी जहाँ जहाँ मुकाम करते थे वहाँ सर्व प्रथम रानियों से पूछा करते थे कि आप लोगों को कोई कष्ट तो नहीं है ॥ ७६ ॥

The queens were feeling tiresomeness more than the first place. Whenever the king resided, he first asked the queens, if they had any trouble. *(76)*

पद्य—तेळ्ळु सुरोप्पाच्चिच हेच्चि मै बाडिद । दल्लल्लि मोग बेमरिदुदु ॥
पल्लव विसिळु तागिदवोळु तन्नदि । रल्लि निंदुवरोळु नुडिदा ॥ ७७ ॥

अर्थ—आज रानियों की मुखाकृति मलीन हो गई है। शरीर से पसीना आ रहा है इसलिये मन कुछ खिन्न सा मालूम हो रहा है ॥ ७७ ॥

Today the facial appearance of the queens was dull. Swat was coming out of their body. So they were somewhat feeling unwell. *(77)*

पद्य—कुळिळरिरौ बळलुदेरियेंद नवरद । केल्लरु नगुत कुळितरु ॥
पल्लक्किगळ भरदल्लि तंदरे देह । बल्लाडि नोंदुदेयेंदा ॥ ७८ ॥

"Or if you say, I may get some of the genie to drop mountain upon his city. Or I may bring him in chains by bridging the ocean and thus sanding my army to that part of the ocean" *(11)*

पद्य—चक्र वेडन्निगे चापास्त्रवेडेन्न । विक्रमदरसु मक्कळोदु ॥
आक्रमिसिल्लिगे तरिसिकोंडेनगे पा । दोक्रांत गेय्सि नूकिसले ॥ १२ ॥

अर्थ—उसके लिये चक्र धनुष की आवश्यकता नहीं है। मेरे साथ जो राजपुत्र हैं उन्हें भेजकर बुलवा सकता हूँ। वह आकर चरणों पर गिर सकता है ॥ १२ ॥

There is no need of Chakra or bow for him I can get him here by sending my princes He will bow at my feet" *(12)*

पद्य—अङ्ङ नोडिर निंदुबिरिसागे मुंदिन्नु । गुहेयोळगेरडु पेर्दोरेया ॥
वहिसि दांडुव परियेंतेंदु नुडिदनु । गहगहिसुत चक्रधरनु ॥ १३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने मंत्री से कहा कि तुम क्यों नहीं सोचते ! आज हम यदि इन भूतों से डरते हैं तो आगे विजयार्ध पर्वत में रहने वाले प्रताप शाली दोनों राजाओं को कैसे जीतेंगे और विजयार्द्ध पर्वत के उस पार कैसे जा सकेंगे ! तुम लोग क्यों निरुत्साहित हो रहे हो ! ॥ १३ ॥

King Bharat said to the minister, "why do you not consider this that if we are afraid today of these devils, how shall be conquer those powerful rajas as living in the mountain region of "Vijyardhi' How shall be cross the mountain of 'Vijyardhi' why are you losing your heart ?" *(13)*

पद्य—अदरिंद ननगिदु तोर वल्लिदक्के नी । वेड्डे हारु गोळ्ळ दोप्पिहुदु ॥
उदधियोत्ति नोळोम्मे परमात्म योग सं । पदव नोडुवेनु नानेंदा ॥ १४ ॥

अर्थ—उसको वश में करना मेरे लिये कोई बड़ी वात नहीं है। इसलिये एक बार इस समुद्र तट पर मुझको परमात्म संपत्ति का दर्शन कर लेने दो। सवेरे उठकर उसे वश में करने का विचार किया जायगा। तुम लोग इस विषय में चिन्ता मत करो ॥ १४ ॥

It is not at all defficult for me to bring him under subjugotion So let me once obtain the 'darshan' of Lord on the morrow we shall plan for bringing him under control You should not worry about it" *(14)*

अर्थ—यदि नहीं मिला था या कड़ी धूप हो गई थी तो इन सब बातों पर कम से कम दास व दासियों को तो विचार करना था। क्या प्राण चले जाने पर ये सब काम आयेंगे? क्या करूँ आप लोगों को बहुत दुःख हुआ। इस प्रकार बार बार कहते हुये श्री भरतेशजी ने शोक प्रकट किया। उन्हें चिन्तित देखकर रानियाँ कहने लगीं कि स्वामिन्! इन बेचारे दास व दासियों का क्या दोष है? आज पूर्व सागर समुद्र देखने की हम लोगों की उत्कट इच्छा हुई थी इसलिये हमीं लोगों ने शीघ्र चलने की इन्हें आज्ञा दी थीं। इन लोगों ने तो हमारी ही आज्ञा का पालन किये ॥ ८१-८३ ॥

If it was not available or the day was very hot, the maids should have taken come of all these things. Will they be of service after life is spent- "You are very much troubled". Saying thus Bhartesh is repenting. To see him troubled the queens said, "O Darling! How are these maids and servants faulty? Today we were extremely anxious to see the eastern ocean, so we gave orders to proceed in hurry. They have only obeyed us". *(81-82-83)*

पद्य—ई पयण दोळोत्ति बंदे वेल्लदे हिंद। णा पयण दोळोदगिदेवे ॥
तापवागळे निम्म काणुते होदुदें। दोप नोळाड्डिदरोसेदु ॥ ८४ ॥

अथ—ये दासियाँ तो कह चुकी थीं कि जल्दी चलने से अधिक कष्ट होगा और राजा रुष्ट होंगे इसलिये आनन्द पूर्वक शनैः शनैः (धीरे धीरे) चलिये तब हमीं लोगों ने उन लोगों की बात को काटकर शीघ्र चलने की आज्ञा दी थी। आप को मालूम होना चाहिये कि हम लोग इसी स्थान (पूर्वी समुद्र) को देखने के लिये इतनी आतुरता के साथ आई हैं। हम लोगों से आज तक ऐसा अपराध नहीं हुआ था इसलिये इस अपराध को क्षमा कीजिये। प्राणनाथ! आप के दर्शन मात्र से ही हम लोगों की थकावट दूर हो गई। अतः अब आप निश्चिन्त होकर आगे का कार्य देखिये ॥ ८४ ॥

"They had told us that trouble will arise due to hurry und the king will be anoyed. We ourselves did not agree and wanted hurry. You should kindly be informed that we had come so anxiously only to see this place *(eastern ocean)*. Kindly excuse us for this fault, over falling is remined only to see *you. Hence kindly proceed on with your routine without any anxiously. (84)*

पद्य—एंद रुप्परिगेय नेरे हिन्नोत्तिगा। नंददिंदव्विय नोळ्पा ॥
मिंदु देवाचंने गैदु भोजिप वेळि। रेंदेद नवलेयरेरसि ॥ ८५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी कह रहे हैं कि मुझे कर्म समूह को जीतने के लिए विचार करना पड़ता है। परन्तु इस समुद्र मे कर्म के समान रहने वाले उस मागधामर को जीतने के लिए क्या विचार करना पड़ेगा? आप लोग मर्मज्ञ होते हुए भी आप इतनी चिन्ता क्यों कर रहे हैं ॥१८॥

King Bharat is saying, "I have to think for overcoming the crowded actions But what have I to think for overcoming Magdhamar living in the ocean Being great discriminating people Why are you worrying so much ?" (18)

पद्य—ध्यान दोळगे मूरुदिन विद्दु मरुदिन। नानवगोंदव नेच्चु ॥
ई निळयके बहेनिदु राजयोगांग। सेने जतन होगिरेंदा ॥ १९ ॥

मैं तीन दिन तक ध्यान करके उसके पास राजयोगांग के द्वारा एक बाण भेजकर उसके बल का पता लगाकर यहाँ आऊँगा। तब तक आप लोग सेना की रक्षा सावधानी पूर्वक करिए ॥१९॥

· I will come back after testing his power through the feet of 'Rajyogang' Till then you people should protect the army very carefully. (19)

पद्य—उडुगोरेयित्त वरिब्बर बीळ्कोट्टु। नोडने सागर दोळिगेद्दा ॥
वडगियोडिड्द गृहदोळु मूरुदिन योग। बिडिदिद्दना राजयोगि ॥ २० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी मन्त्री, सेनापति को अनेक वस्त्राभूषणों को देकर संपूर्ण कार्य भार समर्पित करके स्वयं समुद्र तट पर चले गये। वहां पर पहले से ही विश्व कर्मा ने राजा के योग करने के लिए प्रशस्त योगालय का निर्माण कर रखा था। उसमें प्रवेश करते ही श्री भरत जी राज योग में मग्न होगये क्योंकि समुद्र तट पर ध्यान करने की उनकी प्रबल इच्छा पहले से ही थी ॥ २० ॥

King Bharat, offering many precious jewells to his minister and commander-in-chief' of the army and making them responsible for all the functions, went to the she shore. There the devine manson had already built up 'Yogalaya' befitting to a royal meditaion on entering into that king was lost in meditation, because he had an intense desire to meditate on the seashore (20)

पद्य—नेमिसि यमनियमासन प्राणा। याम प्रत्याहार ध्यान ॥
कोमल धारणे सुसमाधियेंब यो। गामृताष्टांग व बगेदा ॥ २१ ॥

पूर्व समुद्र तट पर महाराज भग्न ध्यान कर रहे हैं।

श्री जैन गनेशपुर की ओर से छपा
जनता प्रेस_बाराबंकी

अर्थ—योग शास्त्र में ध्यान करने के लिए आठ अङ्ग प्रतिपादित किये गये हैं जो कि क्रमशः निम्नलिखित हैं:—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान, प्रत्याहार, कोमल धारणा और सुसमाधि इन अष्टांग योग में भरत जी एकाग्र चित्त होकर मग्न होगये ॥ २१ ॥

Yogshastra records eight kinds of 'Yoga,' which are as follows 'Niyam', 'Asan', 'Pranayan,' 'Dhyan,' 'Pratyahar,' 'Kamal,' 'Dharan' and 'Sushmadhi. King Bharat was absorbed in such Yogas (21)

पद्य—लोकदवर मुँढ तोरदे निधिय तं । देकांत दोळु नोळ्परंने ॥
आ कडलोचि नोळात्मन कंडना । भूकांत तन्न देहदोळु ॥ २२ ॥

अर्थ—जिस प्रकार कोई निर्धन प्राणी उत्तम निधि प्राप्त करके उसे एकान्त में ले जाकर हर्ष पूर्वक अकेले देखता है, उसी प्रकार श्री भरत जी भी आत्म निधि को प्राप्त करके समुद्र तट के एकान्त में अपने हृदय के अन्दर ही मुग्ध होकर देख रहे हैं ॥ २२ ॥

Just as a poor is very much pleased to see some obtained wealth in lonliness, similarly king Bharat, in ecstacy of happiness, is looking upon his obtained 'Atmanidhi' in lonliness (22)

पद्य—मुन्न ता माड्ड योगदिंदाग म । होन्नत वेत्तुदायोगा ॥
मुन्नीर तडिय योगके सरियिल्लेंदु । तन्नोळु तानतिंवट्टा ॥ २३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी पहले भी अनेक बार ध्यान कर चुके थे पर इस दिन का ध्यान योग अपूर्व ही था। इस ध्यान में आनन्द, उत्साह तथा उल्लास अधिक था। इसलिए भरत जी अपने हृदय में अत्यन्त आनन्दित हो रहे थे ॥ २३ ॥

King had meditated in lonliness on previous occasions also, but this day's meditation was strange one He felt much pleasure sprit So he was amused highly. (23)

पद्य—पर्व योगद संधियोळ् पेळ्द क्रमदोळा । सार्व भौमनु योगविद ॥
दुर्धार कर्मव जज्जर गैदन । पूर्वात्म सुखव पडेदनु ॥ २४ ॥

अर्थ—पर्व योग संधि में कहे हुए क्रम के अनुसार सार्वभौम भरत जी योग में स्थिर होकर दुर्धर कर्म को जर्जरित करके अपूर्व सुख को अपने हृदय में किया ॥ २४ ॥

According to the ways mentioned in the 'Parvayog Sandhi', emperor Bharat, observing Yoga and shattering the evil deeds, was enjoying extra ordinary pleasure *(24)*

पद्य—मूरुदिवस मूरुगळि गेयागिद्दु । तोरितिल्लदराग्नि नृपगे ।।
मूरुलोकद सारवेनिपात्म सुखदोळा । नीर नोलाडि तणिदनु ।। २५ ।।

अर्थ—श्री भरतेश जी को ध्यान किये हुए तीन दिन से तीन घटिका अधिक बीत गई पर भूख प्यास की कोई बाधा नहीं आई । भला तीनों लोक में सार नामक 'आत्मामृत' को सेवन करने पर लौकिक भूख प्यास लग सकती है ।। २५ ।।

It passed three hours more than three days when Bharatji had meditated, but no obstacle of hunger and thirst was met How can hunger and thirst may trouble one who had already tasted 'Atmamrit' *(26)*

पद्य—तीरके योनगुडिके बरे मरुदिन । पारणेगेदु विश्रमिसि ।।
धीरर देव मूरनेय जावदोळु पों । देरेरि नडेद नदियोळु ।। २६ ।।

अर्थ—धीर वीर चक्रवर्ती भरत जी ने तीसरे दिन पारणा करने के बाद विश्रान्ति लिया । तत्पश्चात् मध्याह्न काल में स्वर्ण रथ पर आरूढ़ होकर समुद्र में प्रयाण किया ।। २६ ।।

On the third day, king Bharat after taking his 'Paran' went to take his rest After that in the noon time, he riding on a chariot proceeded in the ocean *(26)*

पद्य—ध्वजघंटे कलश पूमालेय शृंगार । दजितंजयवेंब रथवा ।।
अजड सांत्राणिगळीरेदु तेगेये भू । भुज गमिसिद नोजेयिंद ।। २७ ।।
केलदोळु गणबद्ध नोर्व सारथियागि । सल्लेदत्ति दायेंदु नडेसे ।।
नेलद मेलोय्वंते जलद मेलोय्दुदा । जलगामि वाजिगळोसेदु ।। २८ ।।

अर्थ—श्री भरतेश जी के 'अजितंजय' नामक रथ का शृंगार ध्वजा, घंटा, कलश तथा पुष्पादि के द्वारा खूब किया गया था । एक गणबद्ध देव उस रथ का सारथी था वह जिस प्रकार स्थल पर रथ चलाता था उसी तरह अपनी बुद्धिमत्ता से पानी में भी रथ चला रहा है । अनेक तरंग एक के बाद दूसरी उठकर नष्ट होती जा रही हैं । इन सब को पार करता हुआ रथ आगे बढ़ रहा है ।। २७-२८ ।।
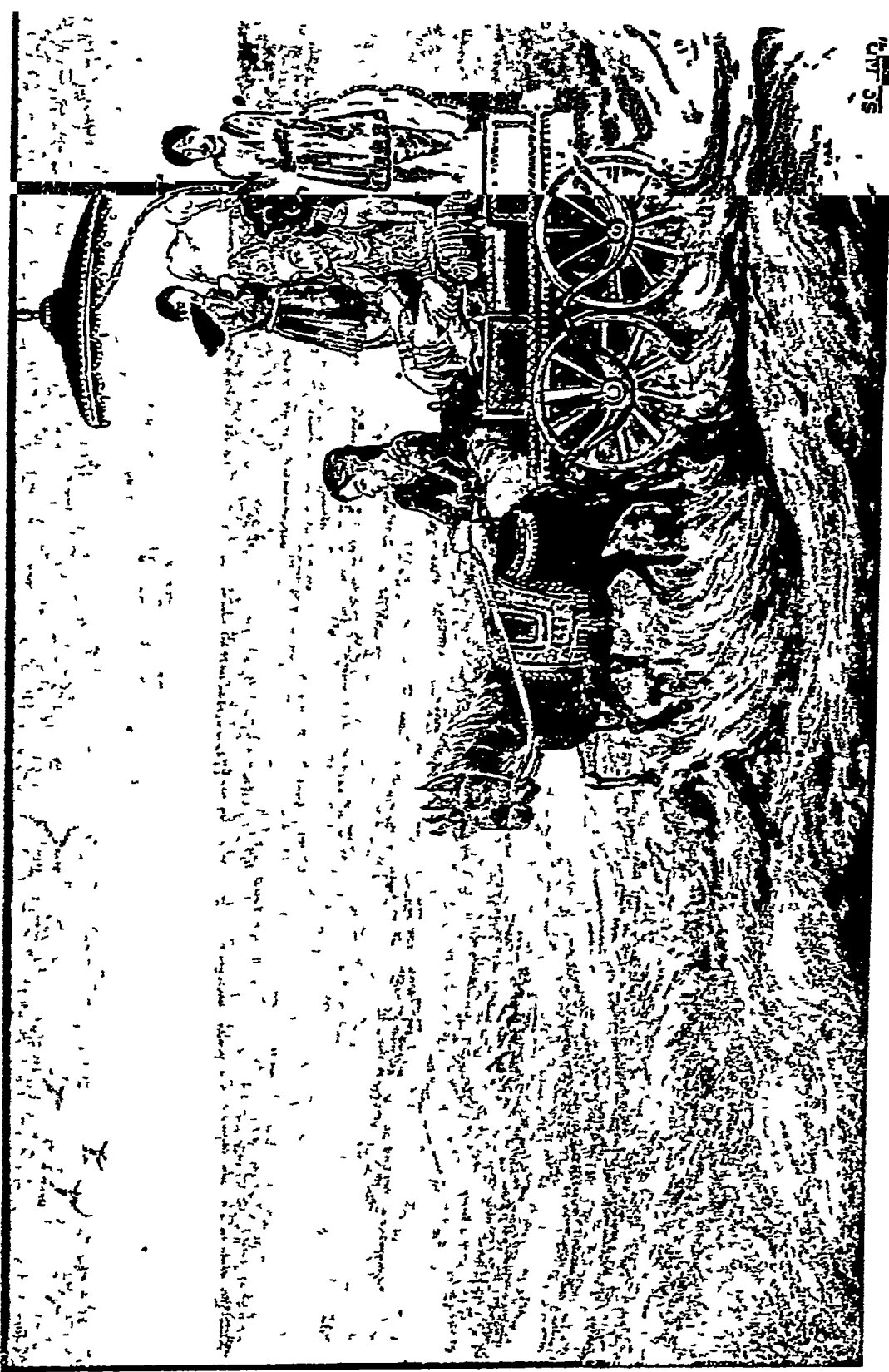
मागधामर व्यन्तर को वश करने के लिये राजा भरत रथ में सवार होकर समुद्र में प्रवेश कर रहे हैं।

बाबू भगवानदास महमूदाबाद के द्वारा यह चित्र प्राप्त हुआ।

The 'Ajitanjai' chariot of king Bharat was decorated with flags bells, 'Kalash' flowers etc One of the 'Gangabodha Devas' is the driver of his chariot Just as he drove chariot on the ground, similarly he due to his craftiness drove it on the ocean Innumeroble ripples rose and subsided. Thus overcoming all this the chariot is advancing (27-28)

पद्य—मुँगडेयोळु वंदु तागुव हलवु त। रंगमोलेगे मोगेवेत्ति ॥
मुँगाल मडिदु हिंगाल्नीडि रथव तु। रंगमालेगेळु तेगेदुवु ॥ २६ ॥

अर्थ—रथ में जुते हुए जलगामी घोड़े आगे के दोनों पैरों को ऊपर व पीछे के दोनों पैरों को नीचे करके तैरते हुए बड़े बड़े तरंग मालाओं को चीरते हुए वेग पूर्वक जारहे थे ॥ ३० ॥

The chariot horses in the river overcoming the waves, were advancing into the water with their front legs lifted and hind legs hanging downwords (29)

पद्य—चेंगचेंगने तेजि तेगेये द्वादशयोज। नांगण पर्यंत हरिदु ॥
नंगल्न निळुहिद हडगु निलवंते र। थांग निंदुदु तोड्डिनल्लि ॥ ३० ॥

अर्थ—इस प्रकार आने वाले तरंगों को चीरते हुए वारह योजन प्रयाण करने के वाद जहाज के समान रथ ठहर गया ॥ ३१ ॥

Thus crossing the waves and covering a distance of twelve yojnas, the chariot stopped like ship (30)

पद्य—तंदेयवनु निन्न कंड रोड्डय निन्नु। मुँदेयुद वेडवेंदव्धि ॥
वंदु काल्विडिदु निल्लिसिदंते निंदुदा। होंदेरु हरियेदे मुँदे ॥ ३१ ॥

अर्थ—जिस समय रथ रुक गया उस समय समुद्र ने आकर भरतजी से प्रार्थना किया कि स्वामिन्! अब आगे न वढ़िये क्योंकि आगे वढ़ने से शत्रु गण डर करके भाग जायेंगे। अतः आपका ठहरना यहीं युक्त है ॥ ३१ ॥

When the chariot stopped, the ocean approached him and prayed O ! master kindly do not advance further, otherwise the enemies would flee away Hence it is proper for you to stop here (31)

पद्य—निडुबिल्ल रथदमेल्गरि दच्चिणदोंदु । तडे सोंकि वागिसि हेदेया ॥
एडगैयोळेरिसि नीविजेवडेदनु । सिडिल वीणेय मुट्टिदते ॥ ३२ ॥

अर्थ—समुद्र के प्रार्थना करने पर भरत जी वहां पर रुक कर धनुष को बायें हाथ पर टेका और दाहिने जंघा को दबाकर झुका दिया । फिर बायें हाथ से धनुष को सीधा करके दाहिने हाथ से खूब तानकर बाण को चढ़ा दिया ॥ ३२ ॥

Being requested by the ocean then king Bharat lifted the bow on his left arm and folding the right thigh bent it down Thus catching the bow by his left hand fixed the arrow by his right hand (32)

पद्य—सिंजिनि योळगे बानवनिट्टु परमनि । रंजन सिद्धन नेनेदु ॥
मंजुळात्म राम कर्मव गुरिगाणव । रंजनेयोळु गुरिगंडा ॥ ३३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी पहले परम निरंजन सिद्ध भगवान का ध्यान करके आत्म योग के द्वारा आत्म ध्यान रूपी बाण से लक्ष्य का ठीक ठीक पता लगाकर जिस प्रकार बाण छोड़ते थे उसी प्रकार इस समय शत्रु का ठीक ठीक पता लगाकर के बाण छोड़ना चाहते हैं ॥ ३३ ॥

Remembring the Lord, king Bharat through his 'Atnayog' with the help of his arrow of selfmeditation, should find out the enemy's where about (33)

पद्य—आकर्ण पर्यंत बाणव तेगेदुब्बि । भूकांत सरित गोट्टेच्चा ॥
आकाशदोळु बाण चुम्मु भोचुर्य्येंदु । भीकरिसुत होदुदत्त ॥ ३४ ॥

अर्थ—ऐसा निश्चय करके बाण को छोड़ दिया । बाण छूटते ही इतना भयंकर शब्द हुआ कि तीनों लोक में त्राहि त्राहि मच गया ॥ ३४ ॥

Thinking thus, the king threw his arrow It produced so fearful sound that all the three lokas shivered (34)

पद्य—हूंकरिसिद रायनार्भटे गा बिल्ल । टंकार दार्भटे गब्धि ॥
दिकिट्टु गगण केद्दु कोळ वियोळ्दे । बेंकि नालगे नीडुवंते ॥ ३५ ॥

अर्थ—जिस समय भरत जी हुंकार करते हुये बाण को खींचकर छोड़ा था उस समय छूटा हुआ बाण टंकार करता हुआ ऐसा मालूम होता था कि मानों अग्नि की जिह्वा आकाश से टूट कर गिर रही हो ॥ ३५ ॥

भरत जी समुद्रमें रथ के ऊपर जाते हुये दूर ही से मागधामर की परीक्षा करने के लिये धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ दिया।
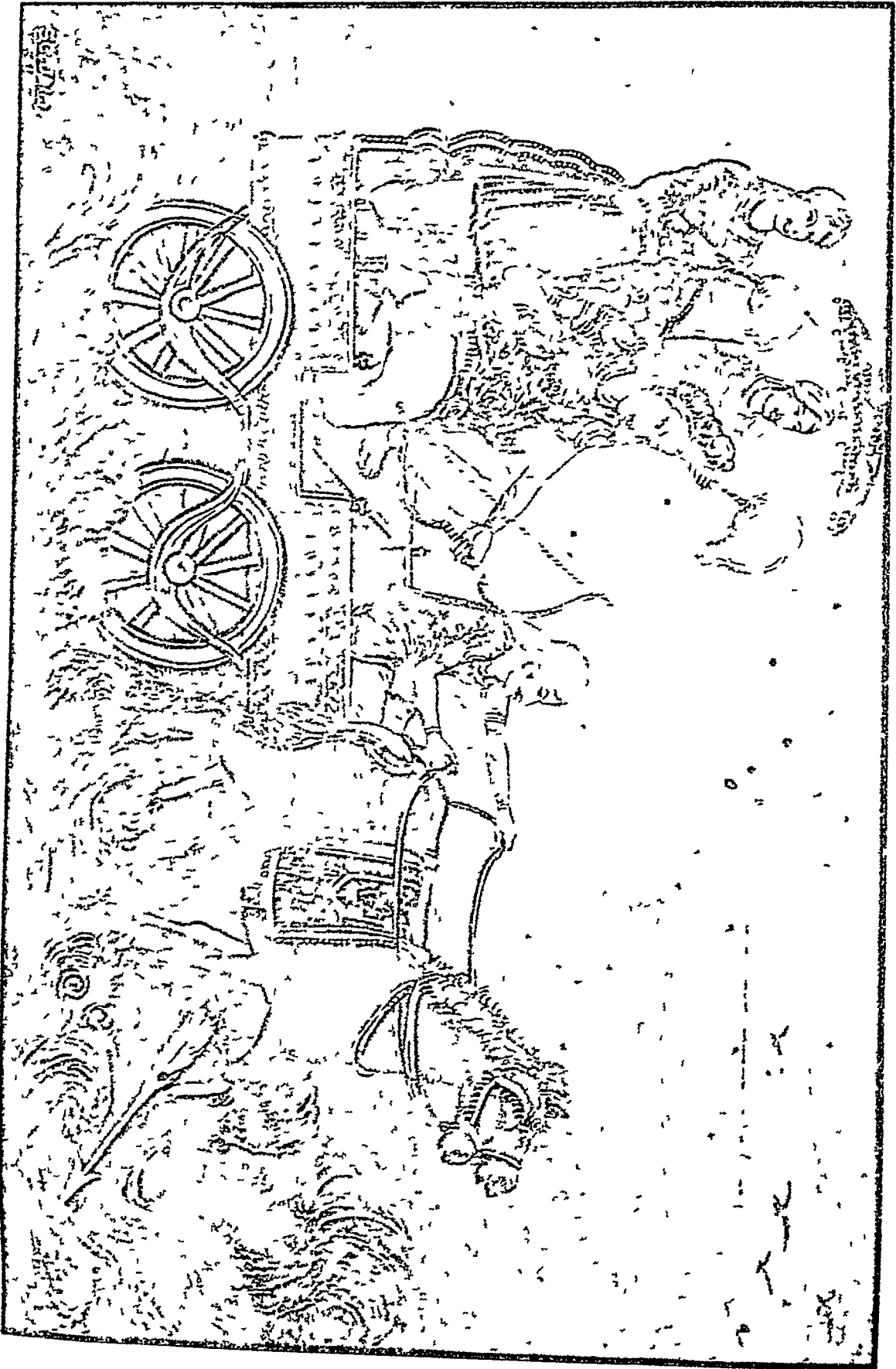
राजेश्वरीदेवी धर्मपत्नी ला० निर्मलकुमार जी जैन मु० वेलहरा जि० बाराबङ्की की ओर स छपा

जनता प्रेस, बाराबंकी

When king Bharat threw the arrow with furious sound, it so appeared as if toungue of the goddess of fire has fallen from the sky. (35)

पद्य—कटक दोळिद्दाने कुदुरे बेदरि लट । लटिसुतत्तित्त लोडिदुवु ॥
तटव नुच्चळिसितु कडलु मंतिद्दरे । घटद् मोसरु चेल्लुवंते ॥ ३६ ॥

अर्थ—उस समय सेना के हाथी, घोड़े इत्यादि भयभीत होकर इधर उधर भागने लगे। समुद्र भी अपनी मर्यादा को छोड़कर दही के घड़े के समान उफलता हुआ बाहर फैल गया ॥ ३६ ॥

At that time the elephants and horses of the army began to flee with fear The ocean also broke out of its limit like the jug full of curd (36)

पद्य—तारगेवुदिदु वु तल्लोक नरल क । मेरु वल्लाडिदुदेंब ॥
भूरिवर्णनेयेके मागधनूरिगे । नीरुक्कि नाडु कंपिसितु ॥ ३७ ॥

अर्थ—इस प्रकार तीनों लोक कंपायमान हो गया। विशेष क्या कहें मागधामर के नगर में भी समुद्र के जल ने उमड़कर लोगों को भयभीत करा दिया ॥ ३७ ॥

Thus shivered all the three lokas What more can be said, even Magdhamar's city was oveflooded with ocean (37)

पद्य—वुरु गुट्टुता बाण पोगि मागधनिद् । होर गणोलगद शालेयोळु ॥
निरिसिद कंमके तोट्टने नेट्टितु । बरसिडिलंति रार्भटिसि ॥ ३८ ॥

अर्थ—मागधामर जिस दरबार में बैठा था उस दरबार की सभा मंडप के एक खंभे में वह बाण बिजली की भाँति आकर लगा। जिसका शब्द अत्यंत भयंकर हुआ ॥ ३८ ॥

The arrow struck one of the pillers at the court of Magdhamar like lightening It produced fearful sound. (38)

पद्य—भल्लने सभे केदरितु हुलि बरे कंड । हुल्लेय हिंडिनंददोळु ॥
बल्लिद नल्लवे मागधामर निद् । नल्लि तन्नय गद्दुगेयोळु ॥ ३९ ॥

अर्थ—जिस प्रकार सिंह को देखकर साधारण प्राणियों के झुंड डर जाते हैं उसीप्रकार बाण का शब्द सुनने ही सभी दरबारी डर गये। परन्तु मागधामर अत्यंत गंभीर है वह विचारने लगा कि यह किसकी कारवाई है ॥ ३९ ॥

All the courtiers trembled with fear in the same way, as ordinary birds do to see a lion But Magdhamer is grave enough He began to think whose act it was *(39)*

पद्य—अळुकु बिट्टोडनेल्ल रोत्तिगे बंदरु । हिळ्कि नोलेय तन्निरंदा ॥
अळुकुतळुकु तोव्वनद रोत्तिद्वेयूतंद । नेळसि कोट्टनु कराणिकगे ॥ ४० ॥

अथ—सब लोगों को मागधामर समझाने लगा कि आप लोग घबड़ाइये नहीं और अपने सेवक से कहा कि वाण के साथ जो चिट्ठी लगी है, उसे ले आओ । तब सेवक डरता हुआ पत्र निकाल कर ले आया। उसे एक पत्र वाचक को वाँचने की आज्ञा हुई । तब वह वांचने लगा ॥ ४० ॥

Magdhamar consoled all his men and said to his servant, "Bring that letter fixed in the arrow to me The servant with great fear, handed the letter over to him One of the readers read the letter *(40)*

पद्य—कराणिक नोदिदनोडने श्री मन्महा । पुरु जिनेंद्र न सुकुमारा ॥
गुरु हंसनाथ मावके सोक्कि दरिराय। गिरिवज्रदंड प्रचंडा ॥ ४१ ॥
मार्मले वरिराय मेघ झंझूनिल । दुर्मुखराय जज्जारा ॥
कर्म कोळाहळ मृत्यु कोळाहळ । धर्मपालक प्रजापाला ॥ ४२ ॥
भरत चक्रेश्वर नोलविंद नम्म किं । कर मागधनिगे निरूपा ॥
सरित दोळगे नाळे बंदेम्म काणुदु । परम शासन वेंदु मुगिदा ॥ ४३ ॥

पत्र का समाचार

अर्थ—श्रीमान् महाराज आदिनाथ तीर्थंकर के प्रथम पुत्र गुरु हंसनाथ भावक, उन्मत्त राज गिरि, वज्र दंड प्रचंड, दुर्मुख राज नाशक, अरिराज, मेघ झंझानिल, कर्म कोलाहल,मृत्यु कोलाहल, धर्म पालक और प्रजा पालक श्री भरत चक्रेश्वर की ओर से मागधामर को सूचित किया जाता है कल हमारी सेवा में शीघ्राति शीघ्र उपस्थित होना । यह मेरी राजाज्ञा है । यही हमारा शासन है ॥४१-४३॥

CONTENTS OF THE LETTER

It is communicated to Magdhamar on behalf of emperor Bharat, the son of 'Adinath' Tirthankar uprooter of great mountains, Vajra and great kingdoms, enemies foe, wind for clouds, protecter of religion and people, that he

should soon present himself before king This is his royal order It is his his administration (41-42-43)

पद्य—केळत किडिकिड थागि मागधतु मैं । तूळ वेदोड्ड गच्चिदत्तु ॥
सीघ्र मीळोलेय सुड्डुगुडेदत्तु तन्न । बाळ खीळमुड्ड सुडेवंते ॥ ४४ ॥
हल्ल कडिदु करणु कॆंपरि तुंबुर । गोळ्ळिळ्ळयंतुरि ळिटिळिटिसि ॥
अल्लाडि मीसे सेरेतु नोडि नुडिदत्तु । कोल्लवंतद नोडिदव्वना ॥ ४५ ॥

अर्थ—उपरोक्त पत्र के समाचार को सुनते ही मागधामर क्रोध से रक्त वर्ण हो गया और दांतों को पीसते हुये सेवकों से कहने लगा कि इस पत्र को जलाओ। जिस प्रकार प्राणियों को मारने के लिये जाते समय यमदूत लोग बहुत क्रोध से अपनी मुखाकृति को विकृत कर देते हैं उसी प्रकार मागधामर भी बड़े क्रोध से अपनी मुखाकृति को विकृत करके मूछों को दाँतों से काटता हुआ भयंकर रूप धारण करके कहने लगा कि ॥ ४४-४५ ॥

Maghamer's face grew redish due to extreme anger, grinding his teeths he said to his servants "Burn this letter" Just as 'Yamduts'deface themselves While going to kill some body similarly, Magdhamar defacing himself and cutting his moustach with his teeth began saying (44-45)

पद्य—एल्लिय भरत गिरत निन्ननेम्मरिवि । यल्लिय भरतविळितवो ॥
चल्ल बडिवे तन्न सेनेय करेयो न । म्मेल्ल व्यंतरगिररनेंदा ॥ ४६ ॥

अर्थ—मंत्री ! यह भरत गिरत कहाँ का है ! मैं इसे नहीं जानता। हमारे समुद्र में बिना आज्ञा के यह क्यों आया ! व्यंतर सेना को जल्दी बुलाओ इसे समुद्र में डुबवाकर इसका मजा चखा दूँ ॥ ४६ ॥

"Minister ! who is this Bharat I do not know him why did he come to my ocean without my permission Send for the Vyantar army and I will drown him in this ocean " (46)

पद्य—किंकरने नातु तनगे तन्नोलै यों । द के निरुपवे ननगे ॥
बिंकद कडलोळिप्प वरोळु पोडविय । डोंकरितु सुद्दु सोक्के ॥ ४७ ॥

अर्थ—जरा देखो तो पत्र में कैसा लिखता है। क्या मैं इसका सेवक हूँ ! जो मुझे आज्ञा देने आया है। समुद्र में रहने वालों का स्वभाव यह नहीं जानता है, तभी तो ऐसा अंट संट बक रहा है ॥ ४७ ॥

"See ! How does he write in his letter ? Am I his servant ? That he is to order me He is not familiar with the nature of sea living people That is why he is talking absurdity (47)

पद्य—ओम्मार विरुदिन योक्कणे यिल्लद् । हेम्मे सल्लद् नाड पंथा ॥
नम्म मुंदिन्तु नडेवुवे भूतनाथर । सोम्म नरियनवनंदा ॥ ४८ ॥
पुरे नानु तन्न काणवनने नोडवनेंदु । भरत निळ्तिमादुवेनु ॥
वरहेळो भटर नेंदुलिदु गहगेय हो । युदुरि वुतिहनु मागधेंद्रा ॥ ४६ ॥

अर्थ—मागधामर अपने सिंहासन पर बैठकर गर्जते हुये कहने लगा कि इसको बतलाना पड़ेगा कि समुद्र में रहने वाले व्यंतर इतने डरपोक नहीं होते जो कि तुम्हारे ऐसे नादानों के डराने से डर जायें। यह भरत भूचर है और मैं जलचर हूं। भला भूत नाथों की वीरता के सामने वह कैसे ठहर सकेगा जो मेरी समता करने के लिये तुला है। व्यंतर योधाओं को बुलाकर युद्ध की तैयारी कराओ और युद्ध में इस भरत को गर्त कर डालो ॥ ४८-४६ ॥

Magdhmar, seated on his throne, roared that he shall be taught a lesson that sea living Vyantras are not so cowards that they may be afraid of fools like him. "Bharat is a resident of earth and I am that of sea How will he stand before we people, call Vyantar warriors and prepare for war, crush this Bharat in the battle field" (48-49)

पद्य—कृपरु सचिवरा समय दोळवन स । मीप दोळिद्द वरवन ॥
कोप तंपहंने तुडिदरु तंत्रक । लाप वगिदु कार्य वरिदु ॥ ५० ॥

अर्थ—मागधामर का क्रोध उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। उसके पास मंत्री सेनापति इत्यादि परिवार भी उपस्थित हैं। ये लोग सोच रहे हैं कि राजा का क्रोध किस प्रकार शान्त किया जाय ॥ ५० ॥

The anger of Magdhamar went on increasing His minister, commander in chief etc are standing beside him They are thinking as to how they should pacify the anger of Raja (50)

पद्य—देव नीवेळ्वुदु मतवल्ल कुळ्ळिरि । दाव दोड्डितु व्यंतरेंद्रा ॥
मावु निळ्ळिसुवेवा कार्यवनीनु स्व । भाव दोळोलगवागु ॥ ५१ ॥
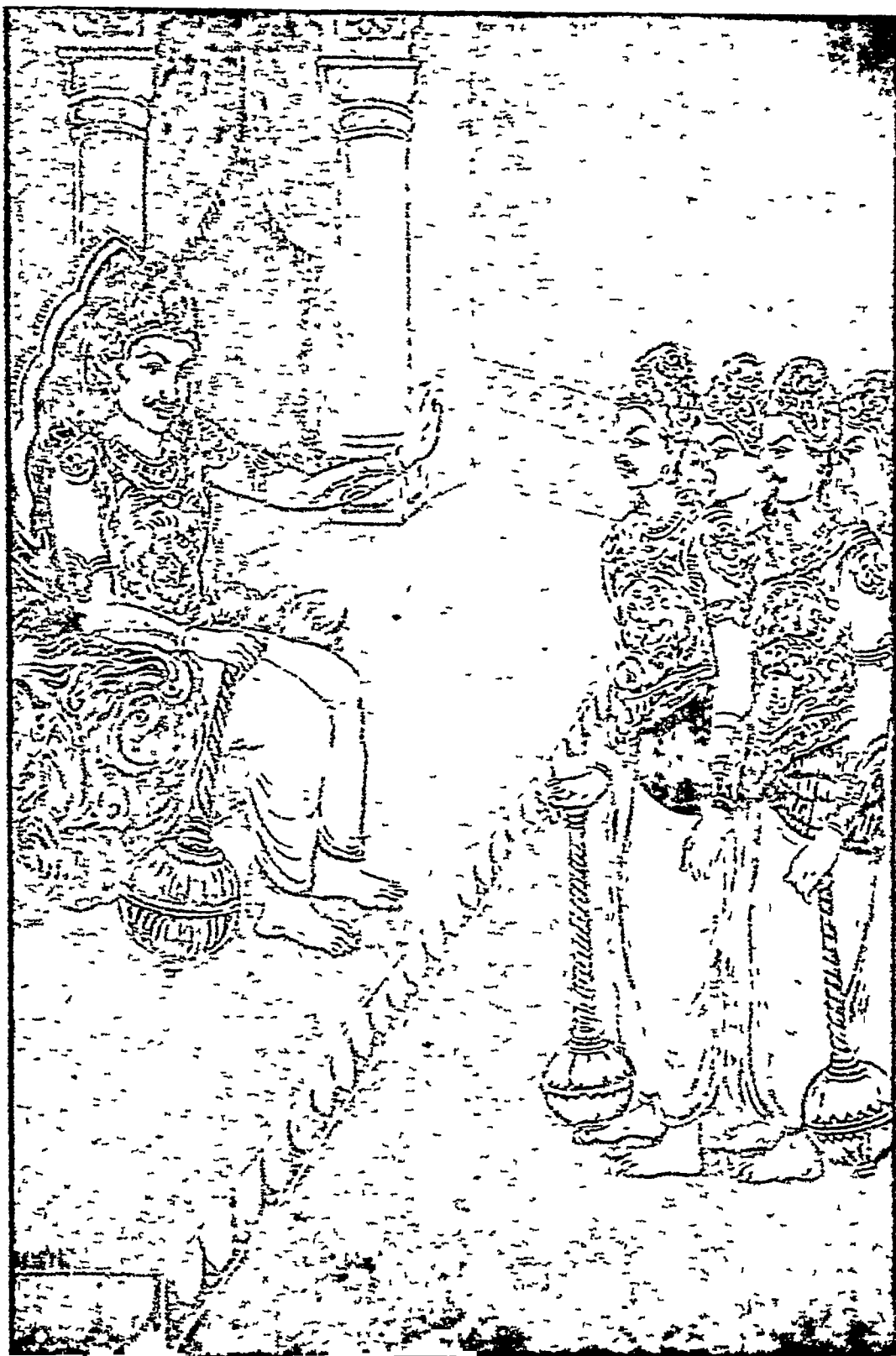
मागधामर का क्रोध बढ रहा था। उनके पास मंत्री सेनापति आदि परिवार उपस्थित थे उन लोगों ने नीति पूर्ण ने अनेकों यत्न किया जिस से कि इनका क्रोध शांत हो जाय।
सेठ नत्थूमल जैन बाराबंकी द्वारा यह चित्र प्राप्त हुआ।

अर्थ—सोचने के बाद विनम्रता पूर्वक मंत्री ने कहा कि स्वामिन्! आप के लिये क्रोध युक्त नहीं है इसलिये क्रोध मत करिये। हम लोग उसकी व्यवस्था करेंगे आप शांति पूर्वक अपने स्वभाव के अन्दर ही रहिये। आज दरबार को समाप्त करने की आज्ञा दीजिये बाद को एकान्त में इस विषय पर विचार किया जायगा ॥ ५१ ॥

After thinking a little, the minister said, "Master angei is not proper for you So do not be angry We shall manage for that kindly remain within the limits of your nature Order the court to close for today And we shall think over it in lonliness (51)

पद्य—ओलग हरियलि नवगे वेसन कोड्ड । मेलेम्म नोडॆंदरदनु ॥
लालिसि कुळितनु हरिदोलग तम्मो। ळालोचनेय माडिदरु ॥ ५२ ॥

अर्थ—इतने में दरबार समाप्त कर दिया गया। केवल प्रधान लोग रुककर इस विषय पर विचार करने लगे। और शेष सभी दरबारी अपने अपने स्थान को चले गये ॥ ५२ ॥

Meanwhile the court was closed Only chiefs began to think over it Rest of the courtiers set out for their respective places (52)

पद्य—धीरनल्लवे नीनु प्रौढ नल्लवे निन । गारिदिरदरिंदनिन्न ॥
भारिय भाग्यके तक्कंते नडे लघु। चारित्रदाटवविसुडु ॥ ५३ ॥

अर्थ—मंत्रणा करते समय मंत्री इत्यादि कहने लगे कि स्वामिन्! आप धैर्यशाली; वीर, गंभीर भाग्यवान् तथा परम नीतिज्ञ हैं। ऐसी अवस्था में अपनी पदवी के अनुकूल ही आप को चलना चाहिये। क्षुद्र प्रकृति के समान चलना ठीक नहीं है। ५३ ॥

At the time of discussion the minister said, "Master ! you are patient, brave, grave, fortunate and politician You should act according to your merit. You should not act like demented people (53)

पद्य—मुनिस विसुडु नम्म नुडिगेळु नीनर । मनेयोळगिरु नावु माळ्प ॥
घनतेय नोडु भूतळवेल्ल गेल्चि नि । न्नने कीर्तिपंते माडुवेवु ॥ ५४ ॥

अर्थ—आप मेरी बात को मानकर क्रोध को छोड़कर राज महल में रहिये। हम लोग आप को यशस्वी बनाने वाले ही कार्य को करेंगे ॥ ५४ ॥

Paying due consideration to our advice and leaving the anger, reside in your royal palace We shall do everything to reknown you (54)

पद्य—एने नसु नक्किन्नु मुनिसिल्ल पेळि नि । म्मनु मानवेनेंदु केळ्दा ॥
मनसु तंपादुदनरिदु मत्तवरु मे । ल्लने नुडिदरु कार्यदनुवा ॥ ५५ ॥

अर्थ—मंत्री की इस बात को सुनकर मागधामर ने मुस्कराते हुये कहा कि अब हम क्रोध नहीं करेंगे। मंत्री ! तुम अपना भाव व्यक्त करो। तुम्हारी हार्दिक इच्छा क्या है ! तब राजा के हृदय को प्रसन्न जानकर मंत्री सोचने लगा कि अब निर्भीक होकर बोलना चाहिये ॥ ५५ ॥

Having heard this Magdhamar replied smilingly, "I shall not be angry now Minister ! express yourself What is your desire ? "Then finding the king pleased, the minister thought to speak with courage (55)

पद्य—भरत चक्रेश्वर सामान्य नल्ल दे । वरदेव नात्मजनवन ॥
परिय महाप्रभु नींने तिळिय वेकु । मरुळ व्यंतररिदपरे ॥ ५६ ॥

अर्थ—मंत्री ने कहा कि राजन् ! भरत चक्रेश्वर सामान्य पुरुष नहीं हैं। वे देवाधिदेव आदिनाथ भगवान् के पुत्र हैं। उनके सामर्थ्य को आप ऐसे बुद्धिमान् ही जान सकते हैं। पागल व्यंतर नहीं जान सकता ॥ ५६ ॥

The minister said, "king ! emperor Bharat is not an ordinary being He is son of Lord Adinath the king of Gods Men like you can evaluate his power A mad Vyantar can not understand him (56)

पद्य—अद्भुत संपत्ति नोडेय मत्तवगे किं । चिद् भयविल्ल निश्शंका ॥
तद्भवदोळु मोक्षगामि नीनातन । चिद्भूति गंडरतिंसुवे ॥ ५७ ॥

अर्थ—श्री भरतेश्वर जी अद्भुत संपत्ति के स्वामी हैं। उनको किसीका किंचितमात्र भी डर नहीं है। वे निश्शंक हैं। और तद्भव मोक्ष गामी हैं। आप उनकी आत्मविभूति को देखकर बिना प्रसन्न हुये नहीं रह सकते ॥ ५७ ॥

Emperor Bharat is a master of wonderful wealth He is afraid of none. He is fearless and in on the path of salvation You can not check your pleasure to his greater self (57)

पद्य—भरत पट्खंडव नाळ्व पुण्यव । नेरदि कोंडात पुट्टिदनु ॥
परदिन्दु तोलगिस लार्परे फ्रोद भू । वरनल्लवे नीनु स्मरिसु ॥ ५८ ॥

अर्थ—पूर्वोपार्जित पुण्य के द्वारा श्री भरत जी का जन्म षट्खंड पृथ्वी के पालन के लिये हुआ है, तो उनके भाग्य को कौन मिटा सकता है ? आप तो परम विवेकी हैं अतः इस बात पर विचार करिये ॥ ५८ ॥

"Bharatji is born to protect and support the earth containing six parts Who can rub out the name of this great man from this earth ? You are a man of great discrimination Hence think over this problem " (58)

पद्य—मडकेय नोडेवंते वज्रकवाटव । नोडेदोय्यव नवनिन्दु मुंदे ॥
वडवने भरतेश बेट्टव नोट्टिमि । कडल दांटु वदवनवनु ॥ ५९ ॥

अर्थ—इतना ही नहीं वे भरत जी ऐसे वीर हैं कि विजयार्ध पर्वत को वज्र कपाट को मिट्टी के घड़े के समान क्षण मात्र में फोड़ेंगे । और बड़े बड़े पर्वतों से समुद्र में पुल बांधकर पार करेंगे । अर्थात् वे असाधारण चक्रवर्ती हैं ॥ ५९ ॥

Not only this Bharat is so brave that he will easily break the 'Vajra' gate of 'Vijyardh' Mount He will build bridge of great montains upon the ocean and cross it That is to say he is extra ordinary Chakravarti (59)

पद्य—जाणनल्लवे नीनु नोडत्र नेच्चोंदु । बाण नेट्टंदे कंभदल्लि ॥
कोणे योळगे मुन्नलिता व नेच्चनु । काण बहुदे कन्नडिये ॥ ६० ॥

अर्थ—जरा देखिये तो वह इतना बुद्धिमान् है कि उसका प्रयोग किया हुआ बाण सीधे स्तम्भ में आकर इस प्रकार चुभ गया कि मानों उसके लिये कोई अनुभूत ही स्थान हो । उसकी बुद्धिमता की परीक्षा के लिये इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है ? कहीं हाथ के कंगन को देखने के लिये दर्पण की आवश्यकता पड़ती है ॥ ६० ॥

See, how wise he is ! That the arrow thrown by him is pierced into the pillar in such a way, as if it is some familiar place for it What more proof can be advanced for his wisdom ? (60)

पद्य—अल्लि कंभव तागेंदु विडे कंभ । दल्लि नेट्टिडनु बाण वंदु ॥
कोल्लिसि मत्तोब्ब पगेय तागेंदेच्च । रोल्ल दोलेवुदे मंत्राखा ॥ ६१ ॥

अर्थ—वे भरत जी मंत्र से प्रयुक्त वाण को खम्भे में लगने के लिये ही छोड़ा था। तभी तो वह आकर उसमें लगा। यदि वे किसी शत्रु को लक्ष्य करके वाण छोड़ते तो वह शत्रु के प्राण लिये विना नहीं छोड़ता ॥ ६१ ॥

Emperor Bharat had thrown the arrow sharpened by *mantras*, to pierce into the pillar That is why it is pierced into it Had thrown it to kill some enemy, it would never have left the enemy without killing him *(61)*

पद्य—ओलेय कट्टि वाणवनेसे ववनुरि । मालेय वानवनिडने ॥
ज्वालेय नुगुळुव चक्रदिंदिडने स । मालोचिसेदेयोळु नृपति ॥ ६२ ॥

अर्थ—फिर भी सोचिये कि जो व्यक्ति वाण के साथ पत्र को भेज रहा है तो क्या वह वाण के साथ अग्नि की ज्वाला नहीं भेज सकता है ॥ ६२ ॥

So think can the man who is conveying letter with arrow, not rain fire with his arrows *(62)*

पद्य—नेट्ट वानव तोरि नुडिद मातुगळेदे । दट्टितु वज्रद कदवा ॥
ओट्टुगुट्टुवनेंब नुडिवेद रिसितु वा । यृविट्टाडदालिसुतिर्दं ॥ ६३ ॥

अर्थ—मंत्री ने अपने स्वामी (मागधामर) को खंभे में लगे हुये वाण को दिखाकर उपर्युक्त प्रकार से समझाया तब मागधामर को विश्वास हुआ कि भरत सचमुच वीर है। अतः वह घबड़ा कर सोचने लगा कि इनके साथ युद्ध करना युक्त नहीं है। फिर जब उसने सुना कि विजयार्ध पर्वत को मिट्टी के घड़े के समान फोड़ेंगे तो वह बहुत घबड़ाकर मुंह को खोलकर हक्का बक्का सा होकर सुनने लगा ॥ ६३ ॥

The minister, showing the arrow to his master Magdhamar explained the facts as mantioned above Then Magdhamar came to believe that Bharat is really a brave man So he being preplexed began to think that it is not proper to fight against him Still when he heard that Vijyardh mountain will be broken like a earthen jug, be being perplexed, bgan to listen *(63)*

पद्य—इदिर शक्तिय तन्न शक्तिय योचिसि । कदनव माळ्पुदु जाणमे ॥
मद मुखदोळु होगि तागि बागिदरे लो । कद हास्य कहुदु देंद रोडने ॥ ६४ ॥

पद्य—तुड्क वेकहुदु काळगवनु तनगे त । क्केडेयोळगधिक नोळ्सेणसि ॥
अडव सेरेतु नोडि तिविियिसि कोंड ना । एनुडिगेडे यागल्ड वहुदु ॥ ६५ ॥

अर्थ—मंत्री वोला कि हे राजन् ! शत्रु और अपनी शक्ति को भली भाँति देखकर युद्ध करना अच्छा होता है । जो व्यक्ति अभिमान वश होकर विना सोचे विचारे युद्ध को प्रारंभ कर देता है वह समर में पराजित होकर लोक में हास्यपद को प्राप्त होता है । मै मानता हूं कि युद्ध करना वीरो का काम है, परन्तु विना विमर्श किये अपने से वली शत्रु के साथ युद्ध ठान देना मूर्खों का काम है ॥ ६४-६५ ॥

The minister said, "O King ! It is always proper to fight after comparing his own power with that of enemy one, who begins to fight without thinking, is always mocked by the world at his defeat I understand that to wage war is the task of brave men But to wage war against a powerful enemy without thinking, is the work of fools (64-65)

पद्य—तनगे समान नोडने युद्ध सलुवुदु । तनगधिकनोळु होरिदरे ॥
तनगे तानिरिदु कोंडवहुदेंदरु । मनदट्टिता मातु मत्ते ॥ ६६ ॥

अर्थ—समान शत्रु के साथ युद्ध करना अच्छा होता है और असमान शत्रु के साथ युद्ध करना अच्छा नहीं होता ये वातें मागधामर के हृदय पर अच्छी प्रकार से जम गई । वह मन ही मन भरत की वीरता की प्रशंसा करने लगा ॥ ६६ ॥

It is proper to wage a war against an enemy of equal power and not against an unequal enemy These words were firmly fixed in Magdhamar's heart He began to praise the heroism of king Bharat (66)

पद्य—नम्मिच्चे गाडदे परर शक्ति यने म । होन्नति गैद रेन्नदिरु ॥
कन्नडियंतुळ्ळदने तोरि तुडिदेवु । वन्नवल्लदु लेसु निनगे ॥ ६७ ॥

अर्थ—मंत्री ने फिर कहा कि हे राजन् ! शायद आप यह सोचें कि तुम लोगों ने हमारे विरुद्ध हमारे सामने ही हमारे शत्रु की प्रशंसा क्यों किया ! तो इस वात को आप मत सोचें, क्यों कि लोगों ने आप के हितार्थ ही दर्पण के समान परिस्थिति के रूप का ज्यों के त्यों वर्णन किया ॥ ६७ ॥

The minister said again, "O King ! do not think why we have praised Bharat so much even before you, because we have described the situation as clear as a mirror only for your benefit" (67)

पद्य—ओडेयन कुसिगुड्डि परर हेच्चिसि नाडे । नुडिगुदधमननवहुदु ॥
कडेगे जयिसुव कार्यद कंड नुडिदेवु । केडुव कार्यव पेळ्वरल्ल ॥ ६८ ॥

अर्थ—अपने स्वामी की निन्दा करके अन्य की प्रशंसा करना सेवकों की अधम वृति है । इस लिये हम लोगों ने आप के विजय के लिये ही इन बातों को बतलाया ॥ ६८ ॥

"It is very shameful for a servant to put slus to the merits of his own master and praise others So we have said all this only for your victory "(68)

पद्य—इंदिगे कष्टवेम्मय मातु निनगदु । मुंदे लेसद कारवे नीने ॥
चंदव नुडिदेवी नुडि निन्न चित्तके । बंदरे केळ् विडल्लदिरे ॥ ६९ ॥

अर्थ—जिस प्रकार रुग्णावस्था में रोगी को आरंभकाल में औपधि कडुई लगकर बाद में फलदायक होती है उसी प्रकार हम सबों की बातें आरंभ में अप्रिय लगकर अन्त में आप को फलदायक होंगी । यदि आप को ये बात अच्छी न लगे तो जैसी आप की इच्छा हो वैसी ही बातें सोचिये ॥ ६९ ॥

"As a medicine is bitter to a patient but proves of great use later on, similarly our bitter words are to benefit you and will bear fruits in the end If you do not like this advice Kindly think out other things as may please you" (69)

पद्य—कुलवृद्ध राडिद नुडिय लालिसि चक्रि । बळ शक्ति वंतनेंदरिदु ॥
कलह जयिस देंदु कंडेदेयोळ् सोरि । तलेगुसिदनु मत्ते नुडिदा ॥ ७० ॥

अर्थ—कुलवृद्धों के हितकर वाक्यों को सुनकर मागधामर को पूर्ण विश्वास हो गया कि भरत परम बलशाली है । अतः उससे मैं जीत नहीं सकता यह सोचते हुये सिर को खुजलाते हुये बोला ॥ ७० ॥

Having heard the benefitial advice from the mouth of family elders, Magdhamar was sure that Bharat was great powerful king Then king that he may not be victorous Magdha said (70)

पद्य—एंदि रिन्नेन माड्व वेंद निद्कोल । विंदेयदि चक्रेशनडिगे ॥
वंदने माड्व वेंद 'रादीशंन । कंदनल्लवेयेंदरोड्ने ॥ ७१ ॥

अर्थ—मागधामर मंत्री इत्यादि से पूछ रहा है कि आखिर अब क्या करना चाहिये ! यह तो बतलाओ। तब मंत्री इत्यादिकों ने कहा कि अब नम्रता पूर्वक जाकर श्री भरत जी के चरणों में नमस्कार करना चाहिये, क्योंकि वे आदि तीर्थंकर के पुत्र ही तो हैं उन्हें नमस्कार करने से कुछ हानि नहीं हो सकती है ॥ ७१ ॥

Magadh asked his ministers to tell him what to do then. Then the ministers said, "Now you should go and prostrate yourself in the feet of king Bharat, because he is son of 'Adıtırthankar'. There is no harm in saluting him (71)

पद्य—वेरेवरारवनिगे पट्खंड दोळ्गे सो । तेरगद् बल्लिद्रारु ॥
कोरतेय तद्भव मोक्ष सुखिय पाद । केरगु वेवेंदरुत्तमरु ॥ ७२ ॥

अर्थ—मंत्री ने पुन• कहा कि उन (भरत) के चरणों की वन्दना करने से अपनी मर्यादा घट नहीं सकती। पट् खंड पृथ्वी में उनके साथ विरोध करके कौन रह सकता है ? विशेष क्या कहूँ। वे तद्भव मोक्षगामी हैं इसलिये उनकी वंदना करने के लिये चलिये ॥ ७२ ॥

The minister said again, "your honour can not be lessened by praying Bharatji Who can live as an opponent on this earth containing six parts. What to say more He has obtained salvation. So let us go to pray him" (72)

पद्य—भक्ति योळेरगिद् वरना नृप नाळे । शक्ति योळेरगिसि कोंबा ॥
रिक्त रागदे होगि मोद्ले काण्बुद् म्हा। युक्तियेंदाडि तोरिद्रु ॥ ७३ ॥

अर्थ—मंत्री ने कहा कि हे राजन् ! जो भक्ति से नमस्कार नहीं करता है वह शक्ति से तो करता ही है इसलिये इन दोनों प्रकार के नमस्कारों में प्रथम शैली ही युक्त है ॥ ७३ ॥

The minister said, "O king ! those who do not salute him devoutedly, must do so under force Hence to salute him devoutedly is better." (73)

पद्य—ओडवट्ट नद्के मंत्रिगळाप्तरवनोडं । बडिकेगे बंदुद कोलिट्टु ॥
पोडवट्टु कोंडाडिद्रु नीतिगेळ्व ना। डोडेयन पोगळ्दरारु ॥ ७४ ॥

अर्थ—इस वाक्य को सुनकर मागधामर ने भरत के पास चलने की स्वीकृति मंत्री को दे दी। हितैषी मंत्री ने अपने कटु शब्दों को भी स्वीकार किये हुये जानकर मागधामर की बार बार प्रशंसा की। भला नीतिज्ञ राजाओं की प्रशसा कौन नहीं कर सकता है? ॥ ७४ ॥

Having heard this sentence, Magdhamar permitted the ministers to prepare to proceed to king Bharat The well wisher minister praised him very much Who can not praise the kings who are clever politicians (74)

पद्य—नाळे वंदेरगुवुदेंदु चक्राधीश । नोळ्ळेयोळिर्दपुदरसा ॥
नाळे होगुवविंदु कडेव गलांयुतेंदु । लीलेयोळवरिद्दरत्त ॥ ७५ ॥

अर्थ—मंत्री ने फिर कहा कि स्वामिन्! चक्रवर्ती भरत ने कल आने के लिये आज्ञा दी है इसलिये कल चलियेगा। आज तो अब शाम हो गई। इस वचन को सुनकर मागधामर आनन्द में मग्न हो गया ॥ ७५ ॥

The minister said again, "O Master! Chakravarti Bharat has asked us to meet him tomorrow So let us start tomorrow Today it is evening" Magdhamar was very much pleased to listen to it. (75)

पद्य—इत्त चक्रश्वर बाणव नेच्च मे। लोत्तिन सारथि रथवा ॥
ओत्ति तिरुहि कटकके मुखमाडिस। पत्तु कैमिगे नडेसिदनु ॥ ७६ ॥

अर्थ—इधर भरत जी ने जब बाण का प्रयोग किया था तो उसके बाद ही उन्होंने जाने के लिये सेना को तैयार होने की आज्ञा दे दी और सारथी को आदेश देते हुये रथ को घुमवा लिया ॥ ७६ ॥

On the other hand king Bharat with the throwing of the arrow had already ordered the army to be ready He turned the charriot asking the driver to be ready (76)

पद्य—तूगुव घंटे पताकेय रथ मेले। सागि मंदर दंते बरळु ॥
मूगिन होळ्ळेयरळि बुरु बुरु बुसु। टागि तेजिगळु तेगेदुवु ॥ ७७ ॥

अर्थ—उस समय अनेक प्रकार की घंटियाँ बज रही थीं पताके आकाश में मँडरा रहे थे। उनकी तैयारी देखने से यह मालूम पड़ता था कि मानों सुमेरु पर्वत ही आ रहा हो। घोड़े भी लौटने के कारण बड़ी तेजी से जा रहे थे और उनके मुख से फेन निकल रहा था ॥ ७७ ॥

At that time many bells were ringing and flags were flying in the sky. On seeing their preparation, it appeared as if mount Sumeru itself is coming The horses also were speedy on the return (77)

पद्य—एरिसिड्डु दंड वज्रखंडन रथ । क्रूरि मेलन कोप्पिनळि ॥
हेरि तन्नेडगैय रथवनोरगि बिल्लु । गारनेयूदिदनु गाडियोळु ॥ ७८ ॥

अर्थ—उस रथ में एक तरफ वज्र दंड शोभा को पा रहा था । भरत जी अपने दाहिने हाथ को धनुष पर टेककर बड़ी वीरता के साथ उस रथ पर बैठे हुये थे ॥ ७८ ॥

That charriot consisted 'Vaira Dand' on one hand, king Bharat had seated himself on it bravely, taking the bow with his right hand. (78)

पद्य—वाम हस्तद पंचरत्न कट्टिन बिल्लु । कामन बिल्लिनंतेसेये ॥
कामन बिल्लु तन्नोचि नोळ्पुडिद । हेमाद्रि यंतेयुद्दुतिर्दा ॥ ७९ ॥

अर्थ—भरत जी के बायें हाथ में पंचरत्न से निर्मित धनुष था । वह देखने पर इन्द्र धनुष की भाँति प्रतीत होता था । उस समय भरत जी धनुष को हाथ में लिये हुये हिमालय सदृश गंभीरता पूर्वक बैठे थे ॥ ७९ ॥

King Bharat had the bow of 'Panch ratra' in his left hand. It looked like rainbow At that time king Bharat was sitting as gravely as Himalaya (79)

पद्य—हडपिग नीडुवेलेय कोल्लुतिक्कुव । कडुदीर्घ चमर दोग्गिनोळु ॥
एडवल निदिरत्त सुरिदु नोडुत राय । रोडेय बंदनु बिडायदोळु ॥ ८० ॥

अर्थ—भरत जी जब वापिस आ रहे थे तो उनके चारों ओर चामर ढुल रहा था तथा और भी सजावटों की शोभा अपूर्व मालूम देती थी ॥ ८० ॥

While returning, king Bharat was being fanned alround Other decorations appeared very nice at the time (80)

पद्य—तेरित्त सुखनाग लोडने कोयेंदाल्व । वीर वोब्बेय लग्गेवरेये ॥
वीर वृंदद दनिगेळुत नगे मोग । दा राज सिंहनेयूतंदा ॥ ८१ ॥

अर्थ—भरत जी के लौटने का समाचार जब सेना को मालूम हो गया तो उनके आनन्द का पारावार नहीं रह गया । अर्थात् प्रत्येक वीर परमानन्दित हो गये ॥ ८१ ॥

When the army could receive the message of the return of king Bharat They were over joyed, which knew no bounds (81)

पद्य—कटक वेल्लवु जय जययेनुता वार्धि । तटदल्लि निंदु नोड्डुतिरे ॥
नटनब नाडिदंते यूतंदुरथदिंद । स्फुटदि लंघिसिदना चक्रि ॥ ८२ ॥

अर्थ—रथ जब सेना स्थान के निकट आ गया तब भरत जी रथ से भूमि पर उतर पड़े उनके देखते ही सभी लोगों ने जय जय कार किया ॥ ८२ ॥

When the army approached the fixed position, king Bharat got down from his charriot. Slogans of 'Jai' resounded the atmosphone to see king Bharat. (82)

पद्य—रथदल्लि बिल्लनिरसि हयगळ्नु सा । रथियनु मन्निसेंदोव्व ॥
रथिकगुसुरि मुंदे नडेदना राज म । न्मथनु तन्नरमनेगागि ॥ ८३ ॥

अर्थ— उस समय भरत जी ने वज्रदंड को रथ में छोड़ दिया और सैनिकों को आज्ञा दिया कि घोड़े तथा सारथी को सन्मान पूर्वक ले आओ । ऐसी आज्ञा देकर स्वयं मन्मथ के तुल्य राज महल की ओर चल दिये ॥ ८३ ॥

King Bharat left his 'Vajra dand' in the charriot and ordered the soldiers to bring the driver and the horses respectfully Like cupid he, ordering thus prcoeed towards the royal palace (83)

पद्य—दळपति सचिव राजरु राजपुत्ररु । केळेयरु गणबद्ध रोसेदु ॥
सेळेसेळेदोदागि निवाळियिट्टेरगे भू । तळपति नोड्डुत नडेदा ॥ ८४ ॥

अथ—जिस समय भरत जी राजमहल की ओर जा रहे थे उस समय राजपुत्र, सेनापति तथा गणबद्ध सेवक भक्ति पूर्वक उनकी सेवा करते हुये जा रहे थे ॥ ८४ ॥

Princes commander of the army,chieftains were proceeding and serving king Bharat, while he was proceeding towards the royal palace (84)

पद्य—कूराळ्गळ गंडिकारक गणिकेय । रारोहकरु मावुतरु ॥
दारियोळर्गि वट्टेत्ति कैमुगिये म । हाराय नोड्डुत नडेदा ॥ ८५ ॥

अर्थ—इसी प्रकार अन्य वीर, व्यापारी, वेश्यागण, महावत तथा घोड़े के सवार इत्यादि भरत को नमस्कार कर रहे थे उन लोगों को देखते हुये राजा भरत जा रहे थे ॥ ८५ ॥

(जनता प्रेस, बाराबंकी)
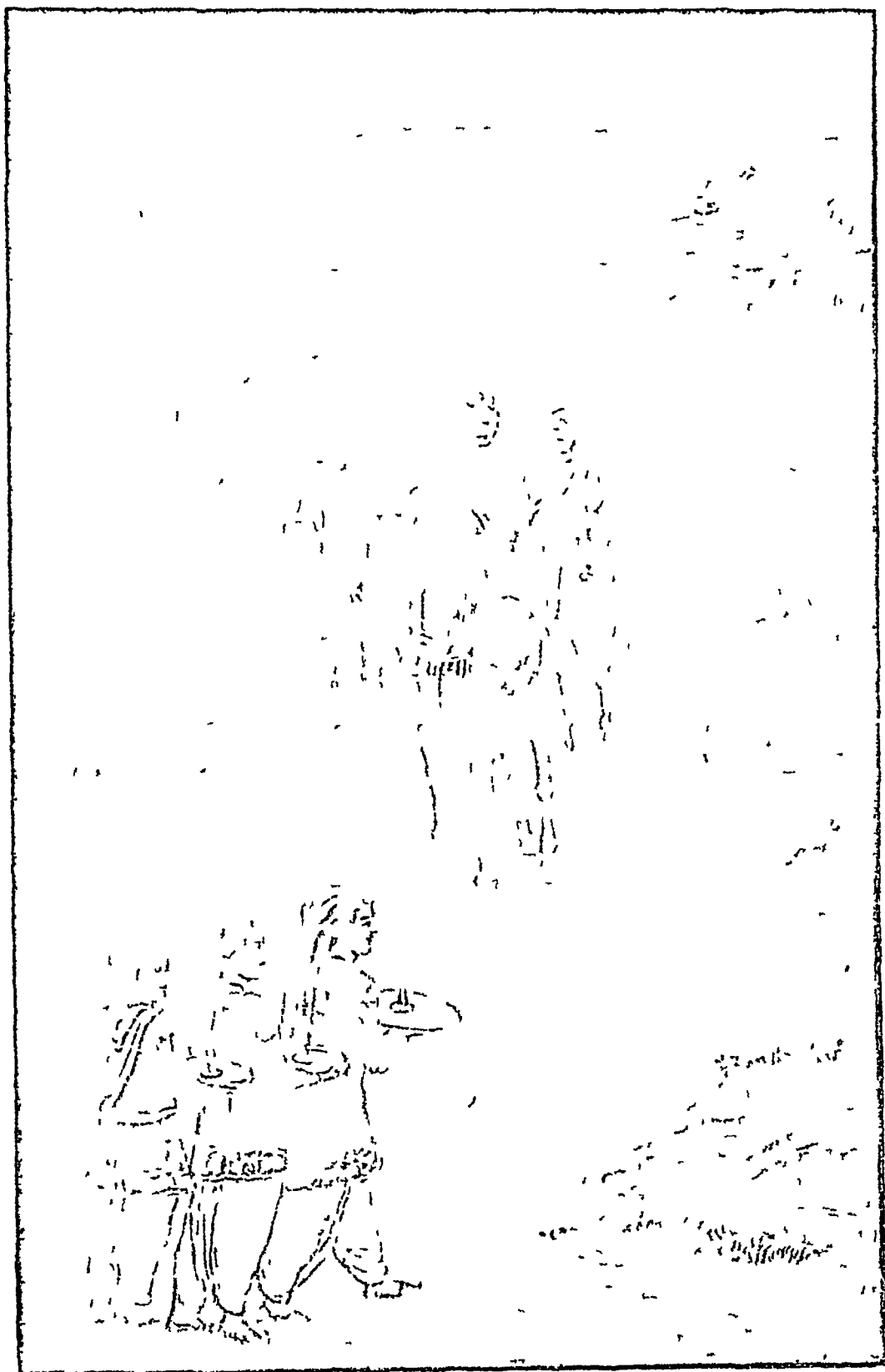
महाराज भरत समुद्र में से बाण द्वारा "मागधामर" को अपनी सूचना भेजकर वापिस लौट रहे हैं,
और उनके सभी पुत्र अर्ककीति इत्यादि स्वागत करने के लिये आ रहे है।
यह चित्र ला० कुन्थलाल जी के कनिष्ठ सुपुत्र सुविशालकुमार जी जैन गनेशपुर की ओरसे छपा

In the same way other warriors, traders, prosses, driver of the elephants and riders of horses were bowing before king Bharat, who was advancing and visiting them (85)

पद्य—कविगळु कीर्तिसे पाठक रोदेह । स्तव नेत्ति भट्टरुग्गडिसे ॥
अवधानं पाद् पराकेंब वेत्रांग । रव दोळोय्यने पज्जेयिट्टा ॥ ८६ ॥

अर्थ—एवं श्रुति पाठक स्तोत्रों द्वारा पाठ कर रहे थे यश गायक (भॉट) हाथों को ऊपर उठा कर भरत के निर्मल यश का गान करते हुये मंगल मना रहे थे तथा वेत्रधारी गण सावधानी से सुन्दर शब्द उच्चारण कर रहे थे ॥ ८६ ॥

Reciters of 'shrutis' were reciting 'stotras' Bards were singing in praise of king Bharat with their hands up wards People wearing cane dress were pronouncing beautifully the royal qualities (86)

पद्य—अल्लल्लि केलवर कैसन्ने करसन्ने । मेल्लुसुरिंद वीळ्कोट्टत ॥
मेल्लमेल्लने नडेदेल्लर कळुहि भू । वल्लभ होक्कनु गृहवा ॥ ८७ ॥

अर्थ—भरत जी यत्र-तत्र अपने निर्मल यश की प्रशंसा सुनकर सन्मान पूर्वक सभी लोगों को आशीर्वाद देकर अपने अपने महल में भेज दिये ॥ ८७ ॥

King Bharat, hearing his praises, them and sent them to their respective places with great honour (87)

पद्य—राणियरेल्ल निवाळिय निट्टुच्च । माणिक दारतियेत्ति ॥
प्राणेश नडिगेगिद रोंदु परम क । ल्याण वनेनेंबेनाग ॥ ८८ ॥

अर्थ—राजा भरत जिस समय महल में प्रवेश किया उस समय सभी रानियॉ रत्नों से अपने पति देव की आरती उतार कर उनके चरणों में परमानन्द के साथ नमस्कार किया ॥ ८८ ॥

When king Bharat entered the royal palace, all the queens worshipping their husband, saluted him with great pleasure (88)

पद्य—नाल्कु दिवस पुरुप नगलिरे युग । नाल्कागि तमगे तोरिद ॥
वीलुकोलनुळिद मन्मथ तन्न गृहव सा । रल्के संतोप वेरिदरु ॥ ८९ ॥

अर्थ—रानियों को भरत का वियोग चार दिन से हुआ था, परन्तु उन लोगों को चार युग के

समान मालूम हो रहा था। ऐसी अवस्था में पति के घर आने पर उन्हें कितना हर्ष हुआ होगा? इसका अनुमान करना कठिन सा है ॥ ८९ ॥

The queens had been berieved of king Bharat only for four days, which was spent by them as four yugas. In such a state of affairs, it is difficult to imagine their the joy, which they felt at their meeting with their husband (89)

पद्य—आसुदतिय रोडगूडि भूभुज मत्ते । होस दारोगणे माडि ॥
वासरदत्यं जिनस्तुति गैदु नि । वास दोळिर्द नर्तियोळु ॥ ९० ॥

अर्थ—अपनी स्त्रियों के साथ श्री भरत जी ने सायंकालीन भोजन किया। एवं सायंकाल में करने योग्य जिन वंदना से निवृत्त होकर बहुत लीला के साथ महल में मग्न हो गये ॥ ९० ॥

King Tharat had his evening dinner with all his queens After offering the evening prayer, he observed himself in the merry makings of the royal palace (90)

पद्य—तोयधियोळु होगि बंद कार्यवनु त । न्नाय तात्वियरोळु नुडिदु ॥
रायमत्तुचित लीले योळिर्द निन्निगे । राय सदंबेच्च संधि ॥ ९१ ॥

अर्थ—वह रात्रि प्रायः समुद्र प्रयाण की चर्चा में ही व्यतीत हुई। पति की जीत पर उन रानियों को भी अपार हर्ष हुआ। भरत ने मंत्री गणों से पूर्व में ही कहा था कि मागधामर को जीतने के लिये आप लोग चिन्ता न करें। मुझे पहले थोड़ा सा ध्यान कर लेने दो उसके बाद उसे मैं अपने पास बुलाकर आप लोगों को दिखाऊँगा। ऐसी प्रतिज्ञा को भरत ने व्यंतर को वश में करके सफल बनाया। एक ही बाण के प्रयोग से उसका गर्व जर्जरित हो गया। क्या इतना सामर्थ्य उस ध्यान में है! हाँ अवश्य है, परन्तु आत्म विश्वास होना चाहिये ॥ ९१ ॥

That night was spent in the talk about conquest upon the ocean. The queens were extremely pleased to bear this victory of the king King had already told his ministers not to be worried about conquering Magdhamar "Let me meditate a while. After that I will show him to you This promise was made fruitful by Bharat Ji by the conquest of vyantaras Their pride was shattered even by one arrow only Has that meditation such power? Yes, it has one should have self confidence, (91)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळिद्वग पाप । बीज निनांशन वह्दु ॥
नेज वह्दु पुण्य वह्दु मुंदोलिदप । राजिनेश्वरन काणुवरु ॥ ९२ ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेंगे उनका पाप, बीज नष्ट होगा। तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य बन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेंगे ॥ ९२ ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation) (92)

पद्य—प्रेमदिंदिद नोदिदरं पाळिदरं केळ्दु । रमोद् वैदुव रवरु ॥
नेमदि सुरराशि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय काण्व रतियोळु ॥ ९३ ॥

अर्थ—इस कथा को जो प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे व आमोद को प्राप्त होंगे और नियम से देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ ९३ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (93)

पद्य—उसरग दुःख वनुणिसुव कर्मद । वल्लडेयनु नोटदिंद ॥
गेल्व सामार्थ्य नन्नेंदेयोळगिरु कडु । चेल्व चिदम्बर पुरुषा ॥ ९४ ॥

अर्थ—अनेक दुःखों को स्वयं भोगते हुये तथा दूसरों को भी भोगने वाले कर्म शत्रु को केवल एक दृष्टि डालकर विजय प्राप्त करने की शक्ति आप ही में है। इसलिये हे चिदम्बर पुरुष सिद्ध भगवन् ! आप मेरे हृदय में सर्वदा बसे रहिये ॥ ९४ ॥

O Chidambar Bhagwan ! reside in my heart for ever, because only you have the power to win the enemy by only one glance even facing a lot of difficulties. (94)

॥ इति द्वितीय भाग का पांचवां सर्ग राजविनोद संधि संपूर्ण ॥

छठवां अध्याय

❀ आदि राजोदय संधि ❀

पद्य—पुण्यव कणिसि कोंडलु तघ महा । रण्यव तोत्तळदुळिव ॥
गण्या नीनेनगे सन्मति दोरु लोक श । रण्या निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—हे निरंजन सिद्ध भगवान ! आप लोकैक शरण हैं । जो भव्य जीव आप के शरण में आते हैं उनके संचित पुण्य को देखकर उनकी रक्षा करते हैं । इतना ही नहीं बल्कि पाप रूपी भयंकर जाल से मुक्त करते हैं । आप तीनों लोकों में सर्व श्रेष्ठ हैं, इसलिए मुझे भी सद्बुद्धि प्रदान करने की कृपा कीजिए ॥ १ ॥

O omnipresent Lord ! you are the only refuge of this world Those who came to you as suppliant, you protect them according to the value of their virtuous deeds Not only this, but you free them from the danger of sin You are the most revered in the three Lokas. Therefore be kind to endow me with good intelligence (1)

पद्य—उदय दोळुदद्दु जिनेंद्र पूजेय माडि । त्रिदशेंदवंते सिंगरसि ॥
मद्वदरातिदळणनुहजारव । द्रुदोळु वंदोरुगवादा ॥ २ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी प्रातःकाल उठकर नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर देवपूजा इत्यादि करके शृङ्गार किये । तदनन्तर दरबार में आकर शूर सदृश सिंहासन पर विराजमान हुये । उनकी शोभा ऐसी मालूम पड़ती थी कि मानों साक्षात् देवेन्द्र ही देवलोक से आगये हों ॥ २ ॥

King Bharat, getting up early in the morning and worshiping god after being free from daily morning work, decoarted himself After that coming to the darbar sat on the throne like a warrior. He looked so gracious at that time, it appeared as if god Indra himself had come from heaven (2)

पद्य—क्षोणीपालरु राजपुत्ररु बंदु कै । गाणि के यिक्कि कैमुगिदु ॥
माणिक गद्दुगे यित्तर विडिदु वि । न्नाणदीळेसेदु कुळितरु ॥ ३ ॥

अर्थ—आज दरबार में अनेक राजा, राजकुमार एकत्रित होकर उत्तमोत्तम बहुत से उपहारों को श्री भरतेश जी के चरणों में समर्पित करके उनके द्वारा निर्दिष्ट आसनों पर बैठ गये ॥ ३ ॥

Today many kings and princes, offering many precious presents to king Bhgrat, sat on the seats as directed by him (3)

पद्य—पडे वळ्ळ सचिवरोत्तिनोळु कुळ्ळिरे दूर । पिडिदाने कुदुरेगळाग ॥
एडवलदोळु तेरुगट्टागि निले कट्ट । कडेय हजार दोळ्दिर्दा ॥ ४ ॥

अर्थ—मन्त्री के पीछे सैनिक, सैनिकों के पीछे हाथी, घोड़े, रथ इत्यादि सेनाओं से घिरे हुये श्री भरतेश जी अनेक वैभव के साथ बैठे थे ॥ ४ ॥

King Bharat sat there surrounded by army soldiers followed by their elephants, horses, charriots etc (4)

पद्य—चेंगडेयोळु गणवद्धरु केलदल्लि । संगडिगरु गणिकेयरु ॥
मुँगडेयोळ्गे भराभरिगोट्टु दु । संगरभटर समूहा ॥ ५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के निकट विचारशील मन्त्री, प्रभावशाली सेनापति तथा मित्र वर्ग वर्ग बैठे हुए हैं। कुछ दूर पर वेश्यायें बैठी हुई हैं। सामने वीर योद्धाओं का समूह आसनस्थ है ॥ ५ ॥

Wise minister, influencial commander of the army and friends were sitting close to the king Bharat at some distence, prosses were also sitting and infront of him was the gathering of warriors (5)

पद्य—सम्मुख स्वामि पराक्र रायर देव । हम्मीर रिपुगळ गंड ॥
सुम्मान वारैकेयेने वेत्रिगरु मोडि । बिम्मेनु लोळगवादा ॥ ६ ॥

अर्थ—यश गायक गण राजा के सम्मुख आकर कह रहे थे कि हे मद मत्त राजाधिराज ! आप का यश अत्यन्त निर्मल हो, ऐसी शुभ कामना सभी लोग कर रहे थे ॥ ६ ॥

Barbs used to approach and say to the kings, " O king of kings ! may your pious deeds be more sacred." (6)

पद्य—इदिरल्लि कविगमकिगळु पाठकरु चि । त्पद गद्यपद्य वनोदो ॥
केदरुव चमरगळोग्गि नोळा राज । मदन निद्दनु विलासदोळु ॥ ७ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के चारों ओर चामर डुलाया जा रहा था कविगण त्रिन पद्य तथा गद्यों द्वारा गान कर रहे थे। उसे सुनकर भरत जी आनन्दित होरहे थे ॥ ७ ॥

The king was being fanned alround him. The poets were singing poems in his praises King Bharat was enjoying them (7)

पद्य—पाडुव प्रातःकालद रागव । पाडु गारिके योळ्ालिसुत ॥
नीडुवेलेय धळिगेय कोळ्ुतोरगुव । मूडेय नोरगि मोहिसिदा ॥ ८ ॥

अर्थ—गायक गणों के द्वारा प्रातःकालिक राग को सुनते हुए, तथा सेवकों के द्वारा दिये हुये ताम्बूल को हाथ में लेते हुए श्री भरत जी की अनुपम शोभा को देखकर सभी लोग मुग्ध हो जाते थे ॥ ८ ॥

All were spell bound to hear the morning melody of famous musicians and king Bharat taking betel in his hand from his servants- (8)

पद्य—क्षत्रिय पुत्रर नीक्षिसु तोम्मोम्मे । धात्रीपाल कर नीक्षिसुत ॥
नेत्र निमिरि दीर्घ बलव नीक्षिसुत प । वित्र गानव केळ्ुतिर्दा ॥ ६ ॥

अर्थ—ताम्बूल ग्रहण करते हुए श्री भरतेश जी की दृष्टि एक बार राजपुत्रों पर पड़ती है और एक बार भूपतियों पर इस प्रकार चारों ओर अपनी विशाल सेना को देखते हुए सुन्दर यशगान सुन रहे थे ॥ ६ ॥

While accepting the betel king Bharat glanced over the princes, king and his army all round him He was enjoying the sweet melody of the musicians (9)

पद्य—ललितेय राग चेन्नायुत दरोळगात्म । कलेय हडिदनदु चेन्नु ॥
कलेगधिनाथ नीने मेच्चवेकेंद । नोलिदनुकूल नायकनु ॥ १० ॥

अर्थ—यह राग, आत्म कला के संयोग होने से अत्याधिक प्रिय लगता था। हे आदिनाथ भगवान के पुत्र! आप इस कला के ज्ञाता हैं, इसलिए आप इसे सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। ऐसा "अनुकूल" नामक नायक ने कहा ॥ १० ॥

That melody appealed to the king very much, because of its artistic beauty- So a man named 'Anukul' said, "That is why you are extremely pleased to heart it" (10)

पद्य—अक्षर मसुळ्दक्कर पाडिनोळ्ु ध्वनि । साक्षि सुस्वरद पाडिनोळ्ु ॥
लक्षिसि पाडुतिद्दनु स्वामियेंदाग । दक्षिण नायक नुडिदा ॥ ११ ॥

अर्थ—"दक्षिण" नामक नायक बोला कि स्वामिन् ! प्रत्येक अक्षरों को भिन्न भिन्न करके तथा स्पष्ट उच्चारण के साथ गान विद्या में कुशल गायक गारहे हैं, जिससे अल्पज्ञ प्राणी भी भली भांति समझ सके ॥ ११ ॥

A servant named Dakshin said, "O master ! expert musicians are singing with clear pronunciation So that even less educated man also may understand it (11)

पद्य—पुटद सक्करेयनु तनिवलिनोळु नूमि । गुड्डिकि सुबंने संगीता ॥
नटनि सुनिद् पुदेंदु सुचिसिद्नु । कुटिल नायक नवनिपगे ॥ १२ ॥

अर्थ—तब "कुटिल" नामक नायक ने कहा कि नहीं नहीं दूध में शकर मिलाकर पीने से "जितनी मधुरता की प्राप्ति होती है", अर्थात् जितना आनन्द मिलता है उतना आनन्द इस मधुर गान के श्रवण मात्र से ही मिल रहा था ॥ १२ ॥

Then a servant named "Kutil" said, "hearing of this sweat song gives the same amount of pleasure, as we get it in drinking the milk mixed up with sugar" (12)

पद्य—ठायेय ठीचि तानद मोने पाडुव । गायक नोंदु गंभीरा ॥
रायन मेच्चिनंतिदं येंद्नुरे शठ । नायक ना समयदोळ ॥ १३ ॥

अर्थ—"पट" नायक ने कहा कि इतना ही नहीं बल्कि श्री भरतेश जी के हृदय को प्रसन्न करने के लिए तान, अलाप, तथा गान विद्या की गम्भीरता ये सभी कलायें विद्यमान हैं ॥ १३ ॥

'But' went a step further and said, "not only so much, time, sweat voice music etc are present in sound measure to please the heart of king Bharat (13)

पद्य—होगिरैं राग बोंदने वणिजसुविरलि । श्रीगुरु हंसनाथनतु ॥
कोगिलेयंने पाडिद्नेंदु नुडिद्नु । नागर नवनीश मेच्चे ॥ १४ ॥

अर्थ—इसके पश्चात् "नागर" ने कहा जाने दो जी, आप सब तो केवल एक राग की प्रशंसा इतनी उपमा उपमेय देकर कर रहे हैं, मैं तो केवल यही बताना चाहता हूँ कि "श्री गुरु हंसनाथ जी" को कोकिल के समान सुरीला राग गाकर सुनाया गया ॥ १४ ॥

After that Nagar praising it more said, you are limited only to molody only I want to tell you only this that Guru Hans Nath was pleased to listen to the melody like that of nightingale (14)

पद्य—पट्टुयागि मलहरि रागव माडि नि । ष्कुटिलात्म कलेय हाडिद्नु ॥
चटुलाच्चि चक्रिय नोडि दंताय्तेंदु । विट नुडिदळु सभेनलियं ॥ १५ ॥

अर्थ—"विट" ने कहा कि वड़ी चतुराई के साथ 'मलहरि' राग द्वारा निष्कुटिल आत्मतत्व का वर्णन इस प्रकार किया गया कि मानों साक्षात् सरस्वती देवी ने ही स्वयं आकर चक्रवर्ती भरत का दर्शन किया ॥ (१५ ॥

Vit said that spiritual self was described through 'Malhar' in such away that it so appeared as if goddess 'Sarasvati' herself had come to visit king Bharat (15)

पद्य—पाठीन जलदोळु होळेवंते होळेदु तो । पी ठादे लेसु लेसेंदु ॥
पीठ मर्दक नुडिदनु मणिमयसिंह । पीठ दोळेसेवन मुंदे ॥ १६ ॥

अर्थ—"पीठ मर्दक" ने कहा कि जिस प्रकार मछली पानी में च+कती है उसी प्रकार चमकते हुये अध्यात्म कला का गान किया गया ॥ १६ ॥

Pitth Mardak said that sacred spiritualism was revvealed in such way as if fish is shining into the water (16)

पद्य—शोपण मुखवीणेयोळ् तुंबिद ध्यात्म । दौषधरसवनु किविगे ॥
वैपयरोगिगळ्गेरेदरें दोडने वि । दूषक नुडिदु नगिसिदा ॥ १७ ॥

अर्थ—"विदूशक" ने कहा कि नहीं जी शुष्क मुख वीणा में भरा हुआ अध्यात्म रूपी औषधि जिस समय कान में प्रविष्ट होता था, उस समय ऐसा मालूम पड़ता था कि मानों किसी कर्ण रोगी को कोई औषधि देकर सच्छा किया गया हो ॥ १७ ॥

'Vidushak' said that when sweat tune from the dried pipe came out in the shape of spiritual medicine for the ears, it so appeared as if some man of defective ears is cured by some good medicine" (17)

पद्य—इंतु नुडिव केळेयर नुडिगा राय । नंतरंग दोळर्ति वडुत ॥
मुंतण गानव नालिसु तात्म वि । श्रांति योळालाड्डतिर्दा ॥ १८ ॥
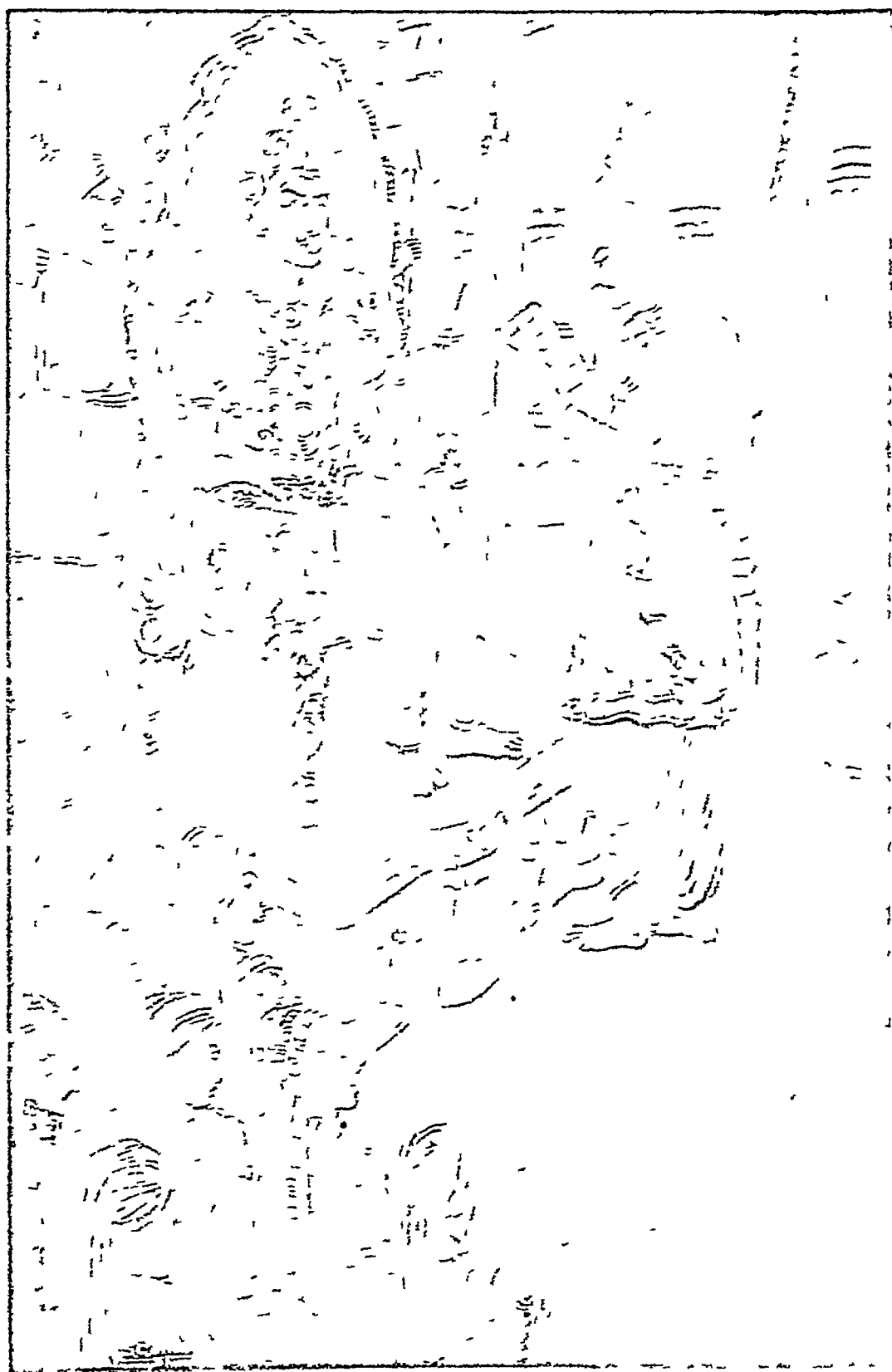
अर्थ—इस प्रकार भिन्न भिन्न वाक्यों से यश गान सुनते हुये श्री भरतेश जी मन ही मन प्रसन्न होते हुये आत्म विश्रान्ति में मग्न हो गये ॥ १८ ॥

Thus hearing his own praises in different sentences, Kin Bharat was being over joyed within himself due to sefl satisfaction. (18)

पद्य—नुडिव नुडिके मेच्चि कळेयरि गुचितव । नडि गडि गीवुत मत्ते ॥
कडु सोगसागि हाडुवरिंगे मन्नणे । गोडुत लीलांग दोळिर्दा ॥ १६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी उन लोगों के शब्दों से आनन्दित होकर बीच बीच में सेवकों तथा गायकों को पुरस्कार वितरण करते हुये अत्यन्त लीला में मग्न थे ॥ १९

King Bharat, being extremely pleased to hear his own praises from their mouth, were absorved in distributing prizes among his servants (19)

पद्य—ओंदोंदु रागके मेच्चुत परमात्म । नंदन वगेवुतिर्पाग ॥
मंदाकिनियेंब दासि कुमारन । तंदु कोट्टळु चक्रधरगे ॥ २० ॥

अर्थ—महाराजा भरत भिन्न भिन्न कलाओं से प्रसन्न होकर आनन्द पूर्वक सिंहासन पर विराजमान हैं। इतने में ही "मंदाकिनी" नामक दासी छोटे राजकुमार को लाकर राजा को दे दिया ॥ २० ॥

King Bharat being very much pleased with different artistic things, is sitting on his throne Meanwhile one of the maid servants, named Mandakini brought the younger prince and put him into the royal lap (20)

पद्य—चंडि माडिदनु सरणम्मु देवरसभा । मंडल केयिद संदणा ॥
दंडिमिदरे तंदेनेंदितु दासि मे । गोंडु निंदळु होरसारि ॥ २१ ॥

अर्थ—दासी बोली कि हे स्वामिन्! "राजकुमार" राज दरबार में आने के लिये मचल रहे थे, इसलिये इनको लेकर मैं यहाँ आई हूँ। राजकुमार के पहुँचते ही सभा का शोर बन्द हो गया और राजकुमार सौंदर्य को सभी लोग देखने लगे ॥ २१ ॥

The maid servant said, "O master prince is was pressing to come to the darbar That is why I have come here with him. As soon as the prince reached there, the noise stopped and people bean look upon the beauty of the prince. (21)

पद्य—गलभे येल्लनु निंदितेल्लरा कुवरन । चेल्लव नीदि सुतिद्राग ॥
वलद् तोडेय मेले मगन कुळ्ळिरिसि कों । डोलिदु मुद्दाडिसुतिर्दा ॥ २२ ॥

अर्थ—उस समय नभाजन प्रशान्त चित्त होकर उस बालक को देख रहे थे तब भरत सानन्द पूर्वक बच्चे को अंक में लेकर आलिंगन करने लगे ॥ २२ ॥

At that time the people there were seeing the prince quietly Then king Bharat taking child in his lap began to embrace. (22)

पद्य—मुत्तिन मणियोळु हुट्टिद् कट्टाणि । मुत्तिन मणियोयेंवंते ॥
चित्तव सोलिसुतिद्दना कुवरनु । चितजरुपनंक दोळु ॥ २३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी बच्चे को गोद में लेकर जब प्रेम करना आरंभ किया तो जिस प्रकार उत्तम रत्नों के खान से उत्पन्न रत्न उत्तम मणियों के बीच में पड़कर सुशोभित होता है, उसी प्रकार भरत के खान से उत्पन्न "पुत्र रत्न" उनकी गोद में बैठकर सुशोभित हो रहा था ॥ २३ ॥

When king Bharat was embracing the child, it appeared so beautiful in the royal lap, as if some precious jewell after being taken from the mine seems very beautiful in the company of other precious jewells. (23)

पद्य—तंदेय चेलवे तंदेय रूपे तंदेयों । दंदवे तंदेय नोटा ॥
तंदेयन्चिनोंत्ति दंतिर्दना राज । नंदन तंदेयंकदोळु ॥ २४ ॥

अर्थ—उस बालक का सौंदर्य, स्वरूप, दृष्टि तथा प्रत्येक लक्षण पिता (भरत) के समान ही था। और राज कुमार के गले में पड़ी हुई मणि मालायें उनकी शोभा को चौगुनी बढ़ा रही थीं ॥ २४ ॥

All the qualities beauty shape, eyes etc of the child were similar to that of king Bharat The jewell garland in princes neck was heightening his beauty fourtimes (24)

पद्य—अरळळे मागाथि कुँडल हस्तद । मुरि मणिमयदुडिदारा ॥
बेरळुँगुर गेज्जे यंदुगे मेरेदुवा । भरत राजेंद्र नात्मजगे ॥ २५ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार के शिरस्त्राण कुंडल, केयूर, मणिमयी कर्धनी, रत्नों की अंगूठी तथा पावों में पैजनियाँ इत्यादि आभूषण भरत पुत्र को सुशोभित कर रहे थे ॥ २५ ॥

A number of beautiful head dresses, earning, Keyur, waist ornament fingure ring of jewells, Paijamni in the feet etc were beautifying the prince (25)

पद्य—कत्तुरि बोट्ट दुरु गिगुप्पस नड्ड । मुत्तिद् बाळु नुंगोरळा ॥
हत्तिद् मणिदंडे तोळ रत्नगळु रा । जोत्तुंग नणुग गोप्पिदुवु ॥ २६ ॥

अर्थ—कस्तुरी, तिलक लगाये हुये और जर्तरी, कमीज, गुलेबन्द तथा बाजू बन्द इत्यादि वस्त्राभूषणों को धारण किये हुये राजकुमार अत्यन्त प्रकाश मान थे ॥ २६ ॥

The prince, was wearing Jartri, shirt, maffler and other ornaments looked very beautiful (26)

पद्य—तोडेय मेलिट्ट मगण नोडि मंडेय । तडहुत मुत्त कोडुवनु ॥
ओडनेत्ति कोंडेद् तुंब लप्पुवनु बो । ट्टिडुवनु पणेयोळा नृपति ॥ २७ ॥

अर्थ—पुत्र को गोद में बिठाकर श्री भरत जी उनके मुख की शोभा देखते हुये तथा कपोलों का स्पर्श करते हुये प्रेमालिंगन कर रहे थे । और मुख में ताम्बूल बार बार खिला रहे थे ॥ २७ ॥

King Bharat sealing the prince in his lap and looking upon his beautilul face, was embracing him He was feeding the prince betel (27)

पद्य—तक्किसिकोंडु तूगाडुव बायोळ । गिक्कुव गुडुक दंबुलवा ॥
चिक्क हरेयदोळु चेलुव कंदन पेत्त । चोक्कर देवनर्तियोळु ॥ २८ ॥

अर्थ—श्री भरत जी ने पुत्र को छाती से लगाकर, और झूले के समान झुलाते हुये अपने मुख का पान उनके मुख में खिला रहे थे । पुत्र की बाल्यावस्था के सौंदर्य को देखकर वे अत्यन्त प्रसन्न हो रहे थे ॥ २८ ॥

King Bharat embracing his son and spining him happily, was feeding the betel of his own mouth to him He was extremely joyous to see the innocent beauty of the prince (28)

पद्य—मैयेल्ल गुडुगट्टि तक्किसिकोंडु चे । लय्य चेन्नाणे येंदेंबा ॥
केय्य कन्नडियंने तोडेय मेलिट्ट म । चोय्यने नोडि नगुवनु ॥ २९ ॥

अर्थ—इसके बाद बच्चे को सहसा हृदय से लगाकर बार बार हिलाते हुये उसके हाथों को दर्पण के समान देखते हुये हँस रहे थे ॥ २९ ॥

Thus, he embracing it and shaking him by the hand was looking into his mind. (29)

पद्य—तंदेय कोरळनेदप्पुव किरुवेर । ळिंद कोरळ मणिगळनु ॥
ऒंदॆंदु ह्त्तेरडेंदु तप्पेणिसुव । नंदद करसुव्वि नगुवा ॥ ३० ॥

अर्थ—गोद में क्रीड़ा करता हुआ वह राजकुमार अपने पिता (भरत) के गले की मणि माला को खींचता हुआ ऐसा मालूम पड़ता था कि मानों उसकी गणना कर रहा हो। तब भरत बच्चे की इस आनन्द लीला को देखकर हँसने लगे ॥ ३० ॥

That prince playing in the lap of king Bharat, catching the garland of jewells seemed as if he was counting them. King Bharat seeing this pleasant activity of the child began to laugh (30)

पद्य—मीसेय तिद्दुव गल्लव तडहि वि । लासदि नगुवना ॥
आ सुकुमारन मोळेवल्ल कंडण्ण । लेसु लेसेंबना तंदे ॥ ३१ ॥

अर्थ—जिस समय बच्चा अपने पिता की लम्बी लम्बी मूँछों को खींचकर उनके कपोलों का स्पर्श करता हुआ किलकारी मार रहा था, उस समय राजकुमार के कौतुक को देखकर भरत के हर्ष की सीमा नहीं रह जाती थी ॥ ३१ ॥

King Bharat's joy knew no bounbs, when he saw the child catching his moustach and touching his cheek. (31)

पद्य—आदि तीर्थंकर एन्नर्ककीर्ति यें । दोदिसुवनु तन्न मगगे ॥
आदिकर नेंबना बालनदके वि । नोद दिनगुवनाचक्रि ॥ ३२ ॥

अर्थ—श्री भरत जी बच्चे को देखकर बार बार हँसते हुये तथा मुख का चुंबन करते हुये एक बार प्रेम पूर्वक पुत्र से कहा कि पुत्र ! आदि तीर्थंकर" शब्द का उच्चारण करो। तब वह पुत्र अशुद्ध "आदिकर" शब्द का उच्चारण किया। तब भरत जी बालक के विनोद को सुनकर बार बार हँसने लगे ॥ ३० ॥

King Bharat kissing the child with extreme joy said "affectionately, "son ! pronounce was the name "Adi Tirthankar." That pronounced it

wrongly as "Adinkar" King, having heared this pleasant voice of the child began to laugh (32)

पद्य—अन्न चिदुंबर पुरुप एन्नेंदाग । वरिणसि कालिसि कोडवनु ॥
चिन्न चिदंबर पूस येंबनदके होट्ट । हुएणागे नगुवना चक्रि ॥ ३३ ॥

अर्थ—श्री भरत जी आत्मा का वर्णन करते हुये कहा कि पुत्र ! "चिदंबर पुरुप" कहो तब अशुद्ध चिंबरपूस शब्द कहा, पुनः राजा ने कहा कि अरे "चिदम्बर पुरुप कहो तो दूसरी वार वार भी राजकुमार ने अशुद्ध चिंबरपूस ही कहा । तब भरत बड़े जोर से हँसने लगे ॥ ३३ ॥

King Bharat defining and describing 'Atma' said, "O son ! say Chidambar Purush Then he pronounced it as "Chidambar Pusa" Raja asked him to repeat and pronounce it correctly Second time also king pronounced it as 'Chidambas Pusha' Then Bharat laughed at the top of his voice (33)

पद्य—गुरु निरंजन सिद्ध एन्नपयेंदु भू । वर तन्न मगनिगोदिसुवा ॥
तरळनदके निंजसिद्ध येंबनु राय । मुरिद्पि नगुत चुंविसुवा ॥ ३४ ॥

अर्थ—पुन भरत ने कहा कि पुत्र ! जोर से "निरंजनसिद्ध" कहो तब कुमार ने अशुद्ध "निंजसिद्ध" कहा । उसे सुनकर राजा भरत बड़े जोर से हँस पड़े ॥ ३४ ॥

Again king Bharat asked the prince to pronounce 'Niranjan Siddha.' He pronounced it wrongly as 'Nirj Siddha' Having heard that king laughed loudly (34)

पद्य—नोडएण मुंदिद्दरारेंदु दोरेगळ । कूडे तोरुवनु बालकगे ॥
नोडुत शिशु हस्तदोळु तोरेदेडेगाल । नीडि तोरुवदु भूभुजरा ॥ ३५ ॥

अर्थ—इसके बाद भरत ने सभी राजाओं को दिखाकर बच्चे से कहा कि सामने बैठे हुये ये सब कौन हैं ? तब बच्चे ने हाथ से न बताकर बायें पैर को ही आगे बढ़ा दिया ॥ ३५ ॥

After that king Bharat showing all the kings said to the child "who are these sitting yonder" Then the prince instead of telling it with hand advanced his left leg (35)

पद्य—पाद धूळिगदवरेंदु नम्मेल्लर । पादपआदि स्वाचमिनु ॥
आदि चक्रिय सुतगदु जाति सहस वें । दा दोड्ड दोरेगळाडुवरु ॥ ३६ ॥

अर्थ—उसे देखकर सभी राजाओं ने परस्पर में कहा कि बच्चे की बुद्धि मत्ता को तो देखो। हम लोगों को अपना पाद सेवक के रूप में देख रहा है। इसी से बायें पैर को आगे कर रहा है। प्रथम चक्रवर्ती राजा के पुत्र का तो यह साधारण काम है ॥ ३६ ॥

Having seen that the kings began to say among themselves, "see, the wit of the child He is looking upon us as his servant That is why he is advancing his left leg." This is the ordinary work of the prince of chakrvarti king (36)

पद्य—एकांत गेवंते तदेय किविथोत्ति। गा कुमारक मोग विट्टा ॥
साकिन्तु नवगेके सुप्रधानिके येव। ना कालवरिदोल्दु मंत्रि ॥ ३७ ॥

अर्थ—उस समय कुमार ने भरत के कान के पास अपना मुख ले गया तो यह मालूम हुआ कि मानों पिता से पुत्र कुछ गुप्त मंत्रणा कर रहा हो ॥ ३७ ॥

At that time prince brought his mouth near the ears of the king. It appeared as if he was saying something confidential to his father." (37)

पद्य—तंदेये दोरे मग मंत्रियादनु सले। संदुदा लोचने निवगा ॥
मुंदिन्नु निवगिदिरारें बरेल्लरा। नंदि सुवंते चक्रेशा ॥ ३८ ॥

अर्थ—तब बुद्धि सगर मंत्री ने कहा कि स्वामिन्! अब मुझे मंत्री पद की आवश्यकता नहीं है। पिता राजा और पुत्र मंत्री हैं फिर आपकी समता करने वाला जगत् में कौन है! ॥ ३८ ॥

Then the minister named Buddhisagar said, "Master ! now I need not the ministership Father is king and son is minister. Now who can rival you in this world ?" (38)

पद्य—जाण रल्लवे राजरेल्ल रालोचिसि। चोणीश नोत्तिगे दंदु ॥
काणिके यिक्किदरा शिशुविगे तम्म। प्राणरक्षक नीतनेंदु ॥ ३९ ॥

अर्थ—इसके बाद बहुत से राजा उस बच्चे को नाना प्रकार के उपहारों को भेंट देने की चेष्टा से एकत्रित हुये; क्योंकि वे बुद्धिमान् राजा लोग समझते थे कि राजकुमार हम लोगों के भावी रक्षक ही तो हैं ॥ ३९ ॥

After that many kings came to offer presents to the prince, because they thought him intelligent, and future king of those rajas." (39)

राजा भरत अपने पुत्र अर्ककीर्तिकुमार से पूछने लगे कि बेटा यह सामने बैठे हुए कौन लोग हैं, तब अर्ककीर्तिकुमार ने उनकी ओर हाथ से इशारा करके अपने बायें पैर को आगे किया तब दरबार में बैठे हुए अन्य

राजागण कुमार की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहने लगे कि पैरों को आगे कर कुमार हमें सेवक के रूप में बना रहे हैं। और तब सभी राजागण आनन्द से खड़े होकर भेंट चढाने लगे।

(यह चित्र ला० बुद्लाल निर्मलकुमार तिलोकपुर की ओर से छपा)

(जनता प्रेस, बाराबंकी)

पद्य—तरळगे कैंकाएके बेडवेदनु चक्रि । धरणि पालरु वेडिकोंडु ॥
इरवेकु स्वामि नम्मय सेवेयिष्टेंदु । हरुषदि काणके यित्तिकदरु ॥ ४० ॥

अर्थ—राजा भरत ने कहा कि बालक के लिये उपहारों की क्या आवश्यकता है ! आप लोग इस झगड़े में मत पड़िये । इस प्रकार राजा भरत के रोकने पर अन्य राजागण बोले कि हम लोगों को इतनी सेवा स्वीकार कर लेना चाहिए, तब राजा की अनुमति प्राप्त करके वे लोग राजकुमार के चरणों में भेंट समर्पित किया ॥ ४० ॥

King Bharat said, "what is need of presents for a child You people should not do it Being prevented by king Bharat, those Rajas said, "our this service should be accepted" Then being permitted by the king, the Rajas offered their presents in the feet of the prince *(40)*

पद्य—अरसु मक्कळु मोदलादरेल्लरु मत्ते । हरेदेयिदु काणके यित्तिकदरु ॥
दारेय मुंदोडु चिन्नद राशियायतहो । भरत राजेंद्रन सिरिये ॥ ४१ ॥

अर्थ—इन राजाओं के भेंट चढ़ाने के अनन्तर और भी भूले भटके हुये राजकुमार व राजा गणों ने आकर उस बच्चे को इतने पदार्थों को समर्पित किया कि वहाँ पर स्वर्ण व रत्नों का ढेर पर्वत के समान दिखाई देने लगा भरत का भाग्य क्या कम है ? ॥ ४१ ॥

After those Rajas offered their presents, rest of the princes and rajas came and offered their presents It ammounted to a heap of jewells and golds which appeared huge like mountains Now what lacks Bharat's fortune *(41)*

पद्य—कुडुहरणा निनगे काणिके यित्तिक कंमुगि । देळसि निदिर्दरनेंदा ॥
तलेयाते दानेदु कयाडिसि कळुहिता । येळेगूसिगदु जातिमहजा ॥ ४२ ॥

अर्थ—जिस समय सभी राजा भेंट को समर्पण करके बालक को देख रहे थे उस समय श्री भरत जी ने कहा कि पुत्र अब लोग आज्ञा के लिये खड़े हुये हैं, अतः इन लोगों को अपने अपने स्थान को जाने की आज्ञा दो । तब बालक ने अपना सिर व हाथ हिलाया, उसे देखकर सब लोग समझ गये कि अब जाने की आज्ञा दे रहे हैं ॥ ४२ ॥

When the rajas, offering the presents were looking upon the prince, king Bharat said, "son ! now they are waiting for order of dismissal So permit them to proceed to their respective places Then the prince shook his

hand and leg Seeing that they understood that the permission was attained (42)

पद्य—अंतल्लवरण्ण वीळेयव कोट्टल्लर । संतोषदोळ् कळुहेंदा ॥
ता तेगेदवर मेलेलेय चेल्लितु शिशु । मुँतेल्ल कुळित रतियोळु ॥ ४३ ॥

अर्थ—इसके बाद भरत ने कहा कि पुत्र ! ऐसा नहीं प्रत्येक राजाओं को पान का बीड़ा देकर संतोष पूर्वक भेजो । शून्य हाथ भेजना ठीक नहीं है । पिता की आज्ञा पाकर उस बच्चे ने पान की तस्तरी अपने हाथों से उन लोगों के सामने खिसका दिया । तब सब लोग हर्ष पूर्वक पान लेकर चल दिये ॥ ४३ ॥

After that King Bharat said, "son ! return each raja satisfied and honoured by one Bira of betel sending empty handed is not proper Having heard the order of the father, the child pushed the betel pot with his hand towards the rajas Then all of them, taking the betel went away happily (43)

पद्य—ई राशि होन्ननिन्नर्गि गविवरण्ण यें । दारेयूदना पुत्रनोळगा ॥
सारे निर्दिद सुवकर तोरितु शिशु । भूगम विस्मयवट्टा ॥ ४४ ॥

अर्थ—श्री भरत जी ने फिर पूँछा बेटा ! इस स्वर्ण रासि को किसे दिया जाय ? पिता की वाणी को सुनकर उसने सामने खड़े हुये सेवकों की ओर हाथ बढ़ा दिया । तब भरत जी बच्चे की विवेक शालिनी बुद्धिमानी को देखकर आश्चर्यान्वित हो गये ॥ ४४ ॥

King Bharat again asked, "son ! whom should this heap of jewells and golds be given " Having heared the father, the prince pointed towards the yonder servants Then the king wondered at the discriminating intelegence of the child (44)

पद्य—कल्प वृक्षद सस्मि काळ्मर नप्पुदे । बलिपनोडेय निन्न कुवरा ॥
अल्पगुणगळ कैविडि वनेयेंदु स । कलिपसि पोगळ्दरु बुधरु ॥ ४५ ॥

अर्थ—सेवकों ने श्री भरतेश जी से कहा कि स्वामिन् ! क्या कल्पवृक्ष के बीज से जंगली वृक्षों की उत्पत्ति हो सकती है ॥ ४५ ॥

The servants said to king Bharat "Master ! can a wild tree grow out of "Kalp" tree ?" (45)

पद्य—नीजके विद्वद्द हीचिनोळरियंत्र । दी जगदोळगुळ्ळ गादे ॥
गज निन्नगुणनोळ्नोरि तीनने चागि । गजाग्रणियेंद्ररोसेद्दु ॥ ४६ ॥

अर्थ—क्या आप के पुत्र में अल्प गुण स्थान पा सकता है ? कभी नहीं । इस प्रकार बुद्धि मान् व विद्वान् लोगों ने वार वार भरत की प्रशंसा किया ॥ ४६ ॥

"Can lower qualities find place in your son ? Never it can never be" Thus all the learned men praised Bharat many times (46)

पद्य—बुधरिंगे सेवकारिंगे होन्न कोडिसि या । इमुथुरगोष्ठि योळोप्पुवाग ॥
ओदरिता दिक्तटवेने वाद्यरवदि मा । गधन वरत्तु तोरि तोडने ॥ ४७ ॥

अर्थ—श्री भरत जी प्रसन्नता पूर्वक अनेक विद्वान् व सेवकों को स्वर्ण दान देकर जिस समय आनन्द पूर्वक सिंहासन पर विराजमान् थे उस समय विविध प्रकार के गाजे बाजे के शब्द सुनाई दिये ॥ ४७ ॥

When king Bharat, having distributed the jewells and golds among the servants, was sitting on his throne, numerous types of musical instruments were resounding (47)

पद्य—अदे गगन दोळु विमान पताके तो । रिद्दवु व्यंतरर पौजहुदु ॥
उदधिय मुड्डेय्तन्दनिदु देंदुनो । डिट्टदु चक्रेशन सेने ॥ ४८ ॥

अर्थ—आकाश प्रदेश में ध्वजा, पताका तथा विमानादिकों के द्वारा सूचित करती हुई व्यंतरों की सेना समुद्र की ओर से आ रही थी । उसे परमानन्द के साथ अपनी सेना सहित भरत ने देखा ॥ ४८ ॥

Hoisting the flag into sky and pronouncing their arrival with curoplances, the Vyantar army was approaching from the side of the ocean King saw then together with his army. (48)

पद्य—मंदाकिनिय करेदु कुवरन कोट्टु । मंदिर कवळ वीळ्कोट्टु ॥
मंदरदंते तानोलग वादतु । मंदि पिदतु गमकदोळु ॥ ४६ ॥

अर्थ—व्यंतरों की सेना को देखकर श्री भरत जी मंदाकिनी नाम की दासी को बुलाकर पुत्र को राजमहल में ले जाने की आज्ञा देकर स्वयं मेरु के समान अचल व समुद्र के समान गंभीर होकर सिंहासन पर विराजमान हो गये ॥ ४६ ॥

Having seen the 'Vvantar' army, king Bharat sending for the maid servant named Mandakini and order her to take the prince into the royal palace, seated himself firmly on the throne (49)

पद्य—कक्रिय कटकव कंडु मागधन प । राक्रम जज्जर वायुतु ॥
वक्र सलवुदे यिवनोडनेदुं मनदोळ । नुक्रमिसुतवरुतिर्द ॥ ५० ॥

अर्थ—मागधामर आकाश मार्ग से ही भरत की सेना को देखता हुआ आरहा था। यहाँ पर आकर जब भली भाँति सेना को देखा तो इसकी विशालता से उसका पराक्रम जर्जरित हो गया और वह आश्चर्य में पड़ गया। वह मन में सोचने लगा कि इनके साथ क्रूरता करके मैं कभी नहीं विजय को प्राप्त कर सकता था ॥ ५० ॥

Magdhamar, had been approaching, to see the army of king Bharat while he was in the sky, Having come there, when he saw the vast army of Bharat, his power shattered into pieces and he was wonder struck He began to think within himself that he could never get victory over him by cruel deeds (50)

पद्य—कडल तडियोळु विमान विळिदु का । लनडेयोळु मागधराजा ॥
ओडेय नोत्तिगे वरुतिर्द नण्टरोळिव्व । केडुक हरिगणनोदुंनोवा ॥ ५१ ॥

अर्थ—मागधामर समुद्र तट पर रथ से उतरकर श्री भरतेश जी के दर्शनार्थ पैदल ही उनके दरबार में आ रहा है। भरत के पास वह पहुँच नहीं सका था कि इतने में ही एक सेवक ने उसकी चुगुली भरत जी से करने की इच्छा प्रकट किया ॥ ५१ ॥

Magdhamar, stepping down from his charriots at the sea shore comming on foot to visit king Bharat He had not reached King Bharat, one of the servants wished to say something against the Vyantar (51)

पद्य—अवनु मागधन नाडवनु चक्रिय सेवे । यवननोव्वन करे कोंडु ॥
तवे निन्न मागध चक्रिय जरे दुद । किवियोळवगे तुंबिविट्ट ॥ ५२ ॥

अर्थ—उपरोक्त सेवक मागधामर के ही नगर का निवासी था; किंतु भक्त श्री भरत जी का ही था। इस लिए मागधामर ने प्रथम दिन जो वार्तालाप किया था उन सभी बातों को भरत के किसी एक योधा से कह दिया ॥ ५२ ॥

"मागधामर" को उसके मन्त्रियों ने राजा भरत की प्रभुता को समझाया तो "मागधामर" सीधा महाराज भरत को आकर नमस्कार कर रहा है।

• यह चित्र गुणदेई धर्मपत्नी लाला कन्हैयालाल जी जैन गनेशपुर की ओर से छपा

That servant was a resident of Magdhamar's city, but was devotee of Bharat So he told everything to one of the wrrriors of king Bharat, that Magdhamar had talked about *(52)*

पद्य—कोप मसगि चक्रियूळिग द्वनु ता । ना पौजि नोळ्ु मुंदे चंदु ।।
आपेळ्दु देव्लव चक्रिय किवियोळा । लापिसि कोट्टु जारिदनु ।। ५३ ।।

अर्थ—चक्रवर्ती भरतके प्रति मागधामरने तिरस्कार युक्त बात चीत किया था इसे सुनकर योधा को बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ और वह चुपके से स्वामी (भरत) के पास जाकर सभी बातों को उनसे बताकर सेना में वापिस आया ।। ५३ ।।

Magdhamar had talked insulting things against King Bharat Having heard that, that warrior got very much angry He stole away to King Bharat and telling everything to him, came bacK to his army- *(53)*

पद्य—मोदले मागध नति कोपियें बुदनु भू । सुदतीश केळ्रिुतिहनु ।।
इदुदिवहुदेंदु मनदोळ्ु केरळि को । पदोळिर्द नुडिदु काणिसदे ।। ५४ ।।

अर्थ—मागधामर के क्रोध का वर्णन भरत जी पहले भी सुन चुके थे, किन्तु योधा के द्वारा पुनः सुनने पर उन्हे पूर्ण विश्वास हो गया कि हां यह क्रोधी अवश्य है, अतः भरत भी क्रोधित हुये ।। ५४ ।।

King Bharat had previously heard about the anger of Magdhamar But on hearing from the mouth of his own warrior, his opinion was confirmed that he was really susceptible to anger So King Bharat also got army *(54)*

पद्य—चामर छत्र मुंताद चिन्हव विट्ट । चौम वस्त्रवनुडेसुत्ति ।।
श्री महाचक्रिय संधि विग्रहि गळ । नेमदोळुवनेय्दुतिर्दा ।। ५५ ।।

अर्थ—मागधामर छत्र चामर इत्यादि वैभव के चिन्हों को छोड़कर चक्रवर्ती भरत के दर्शन के लिए आगे बढ़ रहा है ।। ५५ ।।

Magdhamar had been advancing to visit king Bharat leaving aside umbrella, fan etc the kings of luxery *(55)*

पद्य—राहु मुरवनु दोड्ड कंगळ नुदीर्घ । देहि डोळ्ळोडेले करिकनु ।।
साहसि मागध कणिमया भरणय । मोहरदोळ्ु बरुतिर्दा ।। ५६ ।।

अर्थ—वह मागधामर कृष्ण वर्णन, भयानक राहु के समान दीर्घमुखी, आयत नेत्र वाला, दीर्घकाय, साहसी, और विशाल पेट इन लक्षणों से युक्त अनेक प्रकार के भूषणों को धारण किये था ॥ ५६ ॥

Magdhamar had a man of black skin, big mouth, rectangular eyes, huge body, courageous, and of ever empty stomach (56)

पद्य—वळिवंद सर्वर निलिसि मंत्रियुतानु । वळकप्प काणिके सहित ॥
ओळ होगुतिद्दरु रत्न खचित दण्ड गळनांतरनुमतदिद ॥ ५७ ॥

अर्थ—मागधामर अपने साथियों को बाहर ही ठहराकर स्वयं मंत्री के हाथों में रत्नादि उत्त-मोत्तम उपहारों को देकर राज द्वार पर आया । यहाँ पर रत्न डंडों को लेकर अनेक द्वारपाल खड़े थे उनकी आज्ञा प्राप्त करके राजमहल में प्रवेश किया ॥ ५७ ॥

Magdhamar, stopping associates outside, giving the presents of precious jewells to the minister, came to the royal gate Here guards with gemelled stocks were standing He entered the royal palace, on receiving their permission (57)

पद्य—सेतु गट्टागि भरभरि गोट्ट प । दातिय हय गज रथ वा ॥
भूतनाथनु नोडुतेदे योळिष्ट ळुकुत । मातिल्लदेयुतुरुतिर्दा ॥ ५८ ॥

अर्थ—राज महल में प्रविष्ट होकर श्री भरत जी के रथ, घोड़े, हाथी तथा अगणित सेना को देखकर एकदम हक्का बक्का सा होकर आश्चर्य में पड़ गया । और जब श्री भरत के सामने सामने आया तो भयभीत सा होकर उनको देखा ॥ ५८ ॥

On entering the palace, and seeing the chariots, horses, elephaant, and innumerable army of king Bharat, he lost the balance of his mind When he came before kink Bharat, he began to look with fear (58)

पद्य—वळसिद देशाधिपतिगळ नडुवे मं । गल मणि पीठवनेरि ॥
कुलगिरि वळसिद मेरुविनंतिर्द । सुलभन कंड निदिरोळु ॥ ५९ ॥

अर्थ—अन्दर जाकर उसने देखा कि अगणित राजा व राजकुमार भरत की सेवा में तत्पर हैं, उनके मध्य में कुलाचल पर्वतों के बीच में मेरु पर्वत के समान श्री भरत जी नाना प्रकार के आभूषणों को धारण किये हुये स्वर्णमय सिंहासन पर गंभीरता पूर्वक विराजमान हैं ॥ ५९ ॥

Entering, he saw that innumerable kings and princes had been serving Bharat Among them, was king Bharat wearing ornaments and dresses like Kulachala and Meru mountains and seated on a golden throne (59)

पद्य—अभि नवरत्न किरीट वनांतंग । प्रभे धगिधगि सुत मत्ते ॥
उभय दिक्कि नोळु दळिप चवरद । महा विभुव कंडच्चरि वट्टा ॥ ६० ॥

अर्थ—श्री भरत जी अभिनव रत्न किरीट तथा शरीर में लगे हुए देदीप्यमान आभूषणों से इस प्रकार सुशोभित हो रहे थे कि मानों प्राची दिशा में सतेज सूर्य उदय हो रहे हों ऐसे राजा भरत को देखकर चकित हो गया ॥ ६० ॥

King Bharat, wearing jewelled crown and bright dresses and ornaments. looked so beautiful, as if bright son was rising in the east He was wonder struck to see such king (60)

पद्य—गंडु गंडिगे मोहिपंतिर्द रायन । गंडगाडियनु दूरदोळु ॥
कंडमात्र दोळवने देसोत नेंदरे । पेंडिरिन्ने देसोलदिहरे ॥ ६१ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत जी का सौंदर्य प्राणी मात्र को मोहित करने वाला था । जों भरतेश जी को देखते ही मागधामर ऐसा प्रतापी राजा मोहित हो गया उस भरतेश को यदि स्त्रियों ने देखो होगा तो उन लोगों की क्या दशा हुई होगी ? ॥ ६१ ॥

The beauty of chakravarti king Bharat was fascinating for all men seeing that, Raja like Magdhamar also was attracted what would have been the condition of ladies who had seen the beauty of such king Bharat, seeing whom even Magdhar forgot himself (61)

पद्य—अल्लल्लि निल्लुत मैयोसरिसि कुग्गु । तोल्लगोत्तिगे वरुतिहना ॥
दळ्ळिळ सुतिह कोपदिंद भूपति नोडि । सोल्लिसिदनु कठिणदोळु ॥ ६२ ॥

अर्थ—जिस गति से सेवक स्वामी के पास शनैः शनै आता है उसी गति से मागधामर भी बीच बीच में रुकता हुआ श्री राजाधिराज भरत के पास आया । चक्रवर्ती भरत ने उसे क्रोध दृष्टि से देखा ॥ ६२ ॥

Magdhar came to Bharat in the same speed, as if followed by a servant in coming before his master Chakravarti king Bharat saw him with anger (62)

पद्य—इवनो मागधनेंदु संधि विग्रहिगळ । नवनीश नोलिदु केळिदनु ॥
इवनीग स्वामि मागधनु दोड्डवनु नी । नवधरि सेंद रागवनु ॥ ६३ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् श्री भरतजी पासमें खड़े हुए संधि विग्रहादिकों से पूछा कि क्या यही मागध है ? तब उन लोगों ने कहा हां स्वामिन् यही मागध है । यह बड़ा आदमी आप ही के तुल्य इसे ध्यान पूर्वक देखिये ॥ ६३ ॥

After that king Bharat asked his worriors standing near him, if that was Magadh They said, "yes master ! he is magadh This great man is like you kindly see him attentively " (63)

पद्य—एलवो मागध निन्ने हिरिदाग पंथ व । केलदे कंडहुदो गुलामा ॥
जलधि योळिद्दनेंबा सोक्के निनगेंदु । येळे मीसे तिद्दुत नुडिदा ॥ ६४ ॥

अर्थ—तब श्री भरतेश जी ने कहा कि अरे मागध ! कल तुम बड़े जोश में आये थे न ' दास ! क्या तुम्हें समुद्र में रहने का अभिमान है ? इस प्रकार मूंछों पर ताव देते हुये राजा ने मागध से कहा ॥ ६४ ॥

King Bharat then said, "O Magadh ! yesterday you came here with much zeal slave ! are you proud of living in ocean- (64)

पद्य—गडगडनागळे नडुगिद बलद कै । येडद कोयोळ्ळु तन्न बाय ॥
बाय बडिदु कोंडनु तप्पुन प्पेन्न रक्षिते । ओडे पये न्नु तड्डगेडेदा ॥ ६५ ॥

अर्थ—इतने में मागधामर डर के मारे कांपता हुआ हाथ, पांव, नेत्र और मुख इत्यादि अंगों को विकृत करके बोला कि हे स्वामिन् ! आप मेरे अपराध को क्षमा करिये । ऐसा कहता हुआ श्री भरत के चरणों पर गिर पड़ा ॥ ६५ ॥

Meanwhile Magdhamar shivering due to fear and making his hand, feet eye mouth ugly said, "O master ! kindly excuse me " saying thus, he fell upon the feet of Bharat (65)

पद्य—नक्कनु चक्रियेल्लेळंज बेडेंद । धिक्कनेद्दव मुंदे निंदु ॥
मुक्कोडे योडेय नात्मज निन्न कंडार । सोक्कुडुगदु स्वामियेंदा ॥ ६६ ॥

अर्थ—इसके बाद भरतजी उसे दैत्याकार में देखकर हंसते हुये बोले कि उठो उठो घबड़ाओ

मन । उनकी आज्ञा पाकर खड़ा होकर बोला कि स्वामिन् ! "त्रिछत्र धारी आदिनाथ भगवान्' के पुत्र को देखकर अहंकार कैसे रहेगा ? भला त्रिलोक्य अधिपति के साथ भी किसी की शत्रुता चल सकती है ? ॥ ६६ ॥

After that King Bharat seeing him in pitiable condition lifted him asking him not to be afraid of. Being permitted, he standing up said, "O master ! How can I be proud even after seeing the son of Triechatra thari Bhagwant Adinat" Can I carry on enemity against the Lord of three lokas" (66)

पद्य—बाविियोळगे कप्पे बाळ्वंतेनावोंदु । दीवियोळिद्ववरैसे ॥
देव निन्नय तेजदेळ्गेय बल्लवे । गाविल रेंदरे नायृतु ॥ ६७ ॥

अर्थ—मागधामर ने पुनः कहा कि भगवान् ! हम लोग तो कूप मंडूक के समान एक द्वीप में रहते हैं, तो आपके तेज को किस प्रकार समझ सकते हैं ॥ ६७ ॥

Magdhamar said again, "O Lord ! we live in an is land like a frog in a well knowing nothing about outside How can I understand your glory." (67)

पद्य—कंतु निर्जित रूप निन्ननोलैपुदु । नोंतवर्गल्लदे बहुदे ॥
व्यंतररेंदरे भूतरळ्ळवे । भ्रांतरु नावेंदरेनु ॥ ६८ ॥

अर्थ—हे राजन् ! आपका सौंदर्य कामदेव से भी बढ़कर है । आपकी प्रसन्नता को देखने के लिए पूर्व जन्म के सुकृत की आवश्यकता है । भ्रांति में पड़े हुए हमारे ऐसे व्यंतर तो भूत ही हुआ करते हैं ॥ ६८ ॥

"O king ! your beauty is better than that of cupid For seeing your happiness, one must possess virtues of previous life Illus ioned Vyantars like me get Bhuta's life" (68)

पद्य—सागरवतु तोरे जरेदरे कम्मर । गूगे हंमन निंदिसिदरु ॥
मागध भरत चक्रेशन हळियै भू । भाग दोळावुदु कारते ॥ ६६ ॥

अर्थ—ऐसी अवस्था में मैं आपके महत्व को किस प्रकार जानूं ? इस जगत में एक छोटी सी नदी समुद्र की उल्लू हंस, की और मागध भरत, की निन्दा करे तो क्या बिगड़ सकता है ? ॥ ६९ ॥

"So in such a state of affairs how can I understand your importance In this world if a little river blows ocean, an owl that of swan and Mngadh says against Bharat what harm is there" (69)

पद्य—ई चल्विनी प्रायदी सुजाएमेय सर्व । भूचक्र दोडेयन मुंदे ॥
पेचाट देमगोंदु राजमोडिये सुड्ड । नाचवेडवे जाणरेंदा ॥ ७० ॥

अर्थ—अद्भुत् सौंदर्य से युक्त भरपूर योवन और आश्चर्यकारक बुद्धिमत्ता को धारण करने वाले भरत के सामने हमने जो व्यवहार किया है इसके लिए हमें धिक्कार हो। यह मेरे लिए बड़े शर्म की बात है ॥ ७० ॥

"I should be cursed for the treatment rendered by me to wonderfully beautiful, blooming youth, surprisingly intelligent king Bharat, This is a great thing of shame for me" (70)

पद्य—निन्नंते सोवगुळ्ळररसागि बाळ्बुदु । निन्नंते सोवगु कूडदिरे ॥
निन्न नोलैसि बाळ्बुदु सुख मिक्किन । बरण दरसुतनवेंदा ॥ ७१ ॥

अर्थ—फिर कहा कि हे राजन्! आपके समान सौंदर्य प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अधिक पुण्य संचय करना चाहिये। यदि वह न मिले तो आपकी प्रसन्नता को प्राप्ति करना बड़े भाग्य की बात है ॥ ७१ ॥

He again said, "O king ! to attain graces like you, one should have great virtues If that is not attained it is difficult to obtain your pleasure" (71)

पद्य—भोग योगदोळिद्दु मुक्त नागुव मोक्ष । भागिगारणे निनगेंदु ॥
मागधेंद्रनु निंदु चक्रवर्तिय भट्ट । मागधरंते कीर्तिसिदा ॥ ७२ ॥

अर्थ—भोग, योग में रहकर "मुक्त होने वाले आप ऐसे मोक्षगामी पुरुषों की" बराबरी कौन कर सकता है? इस प्रकार अनेक स्तुतियों से मागधामर ने श्रुति पाठक के समान श्री भरत जी की कीर्ति का गान किया ॥ ७२ ॥

"Who can compete you, who attaing solvation being even in the midst worldly luxury as well as yoga" Thus Mugdha praised the deeds of Bharat like a reader of 'Shrutis' (72)

पद्य—भूमि पालन राज पुत्ररद्के मेच्चि । स्वामिगुळ्ळुदनु कीर्तिसिदे ॥
स्वामि हितवनु नीनेंदु प्रेमदि माग । धामरेन्द्र न पोगळ्दिरु ॥ ७३ ॥

अर्थ—इस प्रकार मागधामर की युक्ति युक्ति वाक्यों को सुनकर राजागण, राजपुत्र कहने लगे कि शाबाश मागध स्वामी के गुणों को तुमने यथार्थ रूप से वर्णन किया । तुम सच मुच स्वामी के परम हितैषी हो । इस प्रकार सभी लोगों ने मागधामर की प्रशंसा किया ॥ ७३ ॥

Hearing the praises of king from the mouth of Magadh. the princes sitting there said, "well done Magadh, you have very well described the virtues of the master. You are really the welwisher of our Lord" Thus all the princes praised Magdhamar *(73)*

पद्य—अष्टर मेले चक्रेश्वर नवनित । भीष्ट दोळासन गोडिसि ॥
दुष्ट नल्लुत्तमने नीनु कुळ्ळिरें । दिष्टु वाक्यव नोरलु सुदिदा ॥ ७४ ॥

अर्थ—एक आसन मंगाकर बोले कि मागधामर ! तुम दुष्ट नहीं, सज्जन हो । अब तुम इस आसन पर बैठो इस प्रकार नम्रता पूर्ण आज्ञा पाकर वह आसन पर बैठ गया ॥ ७४ ॥

After that king Bharat. asking Magdhamar to sit on a mat said, "Magdhamar ! you a gentlemen and not a wicked one. Thus being permitted, he sat down on the mat very humbly. *(74)*

पद्य—बदुकिदे स्वामियेंददके सेवनवदु । तोर्दग निवाळिय निट्टा ॥
इदु कायकेरेंदु नाळेगेय नोडेदु होन्न । बुदिबुदिनडिगळ्गे सुरिदा ॥ ७५ ॥

अर्थ—मागधामर ने कहा कि, हे स्वामिन ! मैं बच गया इस प्रकार कहता हुआ साथ में लिये हुये अनेक उपहारों को भरत जी के चरणों में भेंट समर्पण करता हुआ स्वर्ण की पोटली को भी खोलकर गिरा दिया ॥ ७५ ॥

Magdhamar sad. "O Lord ! I am safe" saying thus, he poured all the presents of gold etc. in the feet of Bharat. *(75)*

पद्य—सचिवन कैयोळगिद्द महारत्न । रचिनद भूषणगळनु ॥
उचितद कप्प विट्टेंदु मुंदरिसुत । सचिव सहित मत्ते मणिदा ॥ ७६ ॥

अर्थ—मन्त्री के हाथों में से रत्न रचित महा मणि, भूषणादि अनेक उपहारों को भरत जी के चरणों में भेंट देकर सचिव के साथ नमस्कार किया ॥ ७६ ॥

Offering the jewells, Magdhamar and ornaments from the hands of the minister to in the feet of Bharat and saluted him with his minister. *(76)*

पद्य—सभेयेल्ल लेसु लेसेने मत्ते कुळितनु । विभुव दोळा मंत्रिसहित ॥
अभिमुख दोळगिर्द बुद्धिसागरनना । शुभग चक्रेश नोडिदनु ॥ ७७ ॥

अर्थ—सभा में सभी लोगों के व्याख्यान करने के पश्चात् मन्त्री सहित मागधामर निर्दिष्ट आसन पर बैठ गया । तत्पश्चात् भरत जी सामने बैठे हुये 'बुद्धिसागर' मन्त्री की ओर देखा, तब मन्त्री तुरन्त खड़ा होकर कहने लगा कि—॥ ७७ ॥

After addressing everybody in the sabha, Magdhamar sat down with his minister King Bharat then saw his minister named Buddhisagar sitting infront of him The minister then stord up and said" *(77)*

पद्य—मागधामर सुजननु स्वामि व्यंतर । भागदोळीत नग्गळनु ॥
बेगदेवर सेवेगोदग तक्कवनेंदु । रागिसि नुडिदना मंत्रि ॥ ७८ ॥

अर्थ—बुद्धिसागर मन्त्री ने योग्य युक्ति और विनय पूर्वक कहा कि हे स्वामिन् ! मागधामर सज्जन है, व्यंतरों में श्रेष्ठ वीर है और शीघ्र ही आपकी सेवा करने के योग्य है ॥ ७८ ॥

Minister Buddhisagar very humbly and properly said, "O Master ! Magdhamar is gentle and best of all the Vyantaras. He is able to render services to you" *(78)*

पद्य—देशाधि पतिगळ संसर्ग जि । नेश नात्म जन नोलैप ॥
कौशलवनु पेत्तनवने कृतार्थ नें । दा सचिवेंद्र नाडिदनु ॥ ७९ ॥

अर्थ—देशाधिपतियों के संसर्ग में जिनेन्द्र के पुत्र को प्रसन्न करने का सौभाग्य जिसे मिला वह सचमुच कृतार्थ हैं, इसलिये मागध भी धन्य है ॥ ७९ ॥

"That Magadh is good, who could please Indra of kings Bharat in in the middle of other princes He is really successful in his life" *(79)*

पद्य—बुद्धिसागर मंत्रि लेसनाडिदे निन्न । शुद्धिय केळ्दान बल्ले ॥
उद्दरिसिदे नन्ननेंदु मागधनु वि । शुद्धचित्त दोळोल्दु नुडिदा ॥ ८० ॥

अर्थ—इसके बाद मागधामर कहने लगा कि मन्त्री तुमने बहुत अच्छा कहा। तुम्हारी प्रशंसा मैं अनेक बार सुन चुका हूँ किन्तु आज यह बात सामने प्रत्यक्ष दिखाई दी सचमुच तुमने मेरा उद्धार किया ॥ ८० ॥

After Magdhamar began to say 'O minister ! you said very well. Your praised have been heard by me many times. To-day I saw them with my eyes. Really you have raised me out of ends" *(80)*

पद्य—इंदिगे मागधामरनूर्गे पोगलि। मुँदरा पयणके बरलि ॥
चंददि बीळ्कोडेंदा मंत्रि नृपतिगा। नंददि बिन्नविसिदनु ॥ ८१ ॥

अर्थ—तब मंत्री बुद्धिसागर मुस्कराते हुये भरत से कहा कि स्वामिन्! मागधामर को वापिस जाने की आज्ञा दीजिये गा और वह आगे आकर मिले यह भी कह दीजियेगा ॥ ८१ ॥

Then minister named Buddhisagar said to king Bharat smillingly, "O Lord ! permit Magdhamar to go back and kindly ask him to meet us on words in the way." *(81)*

पद्य—बारे मागधयेंदु मन्निसिदिगे गं। भीर वाक्य दोळोलदु करेदु ॥
धारिणि गुत्कृष्ट वेनिप भूषणग। ना राय तुड्गोरे चित्ता ॥ ८२ ॥

अर्थ—श्री भरत जी मंत्री के वाक्य को सुनकर उसी समय मागधामर को गंभीर वाणी से बुलाकर उसके भेंट में बहुमूल्य रत्नाभूषणों को समर्पित किये ॥ ८२ ॥

King Bharat, hearing the minister, at once calling Magdhamar near him offered him many jewells and ornaments *(82)*

पद्य—अवनु कप्पके कोट्ट हार कुंडल कड। गव नोडलधिक वेंदेनिप ॥
नवरत्न भूषण तुड्गोरे चित्तना। भुवनेश गेनदु घनवे ॥ ८३ ॥

अर्थ—मागधामर जितनी भेंट पूर्व में चढ़ा चुका था श्री भरत जी ने उससे बहु मूल्य भेंट मागधामर के उपहार में दे दिया। भला चक्रवर्ती को भी किसी बात की कमी है क्या? ॥ ८३ ॥

King Bharat returned presents to Magdhamar many presions than he had offered to the king can Chakravarti lack anything ! *(83)*

पद्य—अडिगेरगि सिकोंब तेज ओंदल्लद। नोडवेयासेये चक्रधरगे ॥
ओडनिदु नृपरेल्ल नलेदुगु बंदव। तुड्गोरे चित्तु मन्निसिदा ॥ ८४ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती राजा केवल यही अभिलाषा रखते हैं कि अन्य राज समूह आकर हमारे चरणों में मस्तक नवावें। शेष धन धान्यादि से प्रयोजन नहीं रखते। उपस्थित राजागण आश्चर्य में पड़े इस निमित्त से उन लोगों के सामने ही भरत ने यथेष्ट सत्कार मागधामर का किया॥ ८४॥

Chakravarti kings only wish that other king should go to him and low their heads in his feet They are never concerned with wealth etc. king honoured Magdhamar before the princes, who may fall in surprise at his treatment (84)

पद्य—केळिदे वै निन्न मंत्रि चोळ्ळिळद् नेंदु। हेळिद रेंदोलदु करेदु॥
मेळु दोडिगेय नातन मंत्रिगित्तु नृ। पालक वीळ्कोट्ट नोडने॥ ८५॥

अर्थ—इसके पश्चात् श्री भरत जी ने कहा कि मागधामर! मैंने सुना है कि तुम्हारा मंत्री बहुत विवेकी है, अतः उसे भी इन रत्नाभूषणों के उपहारों को दे दो। ऐसा कहकर दोनों राजा व मंत्री को जाने की आज्ञा दे दिया। ८५॥

After this king Bharat said, "Magdhamar! I have heard that your minister is very wise So offer him also these precious presents" Saying thus king ordered both prince and the minister to go back (85)

पद्य—भवनव होक्कानु बप्पे नन्नेग नाळि। नन्ननिरलेंदुमागधनु॥
ध्रुव गति येंबन करेसि काल्गेरगि। अवनीश गोप्पिसि कोट्टा॥ ८६॥

अर्थ—जाने की आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् मागधामर ने श्री भरत जी से पुनः कहा कि स्वामिन्! मैं कल ही लौटकर आप की सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा मैं अपने लौटने पर्यन्त अपने प्रति निधि" ध्रुवगति " नामक व्यंतर को आपकी सेवा में छोड़कर जारहा हूँ। यह कहकर चरणों में सादर नमस्कार करके मंत्री के सहित अपने स्थान को चला गया॥ ८६॥

After being permitted by king Bharat, Magadhamar said, "O Lord! I shall present myself tomorrow in your service I am leaving my representation Vyantar named Dhruvagati in your service Saying this and saluting him he went away to his place with his minister" (86)

पद्य—पादकेरगि मंत्रि सहित मागधनत्त। होदनु गेद्दे होयेनळु॥
आदुदु सभेगेल्ल परम संतोष भा। ग्योदय निद्दनुब्बिनोळु॥ ८७॥

अर्थ—राज सभा में बैठे हुये सभी लोग बार बार मागधामर की प्रशंसा कर रहे थे। महा राजा भरत उसकी प्रशंसा सुनकर परमानन्दित होते हुये राज सभा में विराजमान थे ॥ ८७ ॥

Every body sitting in the royal gathering was praising Magdhamar King Bharat also was very much to hear his praises in that gathering *(87)*

पद्य—जिन जिन एनेंबनष्ट रोळोञ्च मा। निनि रायन रमणे यिंद ॥
धन कुच कुणियुत नगुतोडि बंदु रा। यनिगे कैमुगिद ळुञ्चिनोळु ॥ ८८ ॥

अर्थ—हे जिन जिन ! इतने में एक दूसरी घटना यह होगई कि रनिवास से दौड़ती हुई दासी भरत के पास आई, और वह नाच नाच कर उनसे कहने लगी ॥ ८८ ॥

पद्य—चित्तैसु देव दोड्डसगे कुमारनु। त्पत्तियादिनु निवगिंदु ॥
उत्तमोत्तम नेंदरवळि गागळेमेच्चि। मुत्तिन हारव कोट्टा ॥ ८९ ॥

अर्थ—हे स्वामिन ! आप को पुत्र रत्न की प्राप्त हुई है। इस प्रकार बार बार कहती हुई भरत के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। यह वचन सुनते ही भरत जी प्रफुल्लित होकर गले से मोती का हार निकाल कर उस दासी को दे दिया ॥ ८९ ॥

"O Jin ! meanwhile, a second thing happened, that a beautiful maid servant came running to Bharat She began to say, master ! a son is born to you" Saying this happily, she stood before king with folded hands Having heard this king Bharat's joy knew no bounds. He gave his own Neclace to the maid servants *(88)*

पद्य—ओसदु मत्तवळ नोत्तिगे करेदावळु। बेसलादळेंदु केळिदनु ॥
कुसुमाजियरु सुकुमारन पडेदरें। दुसुरि दळवळु कर्णदोळु ॥ ९० ॥

अर्थ—भरत जी पुन उस दासी को पास में बुलाकर पूछा कि किस रानी के पुत्र उत्पन्न हुआ है। दासी समीप में जाकर धीरे से कानमें कह दिया कि कुसुमा रानी के पुत्र उत्पन्न हुआ है। इस शब्द को सुनकर भरत जी अत्यंत संतुष्ट हुये ॥ ९० ॥

King Bharat again, calling that maid, enquired of her which queen has

given Girth to a son The maid whispered in his ear that she was 'Kusuma, queen Having heard this king Bharat was very much satisfied. (90)

पद्य—मत्तोंदु छुळिय नवळि गोल्दु कोट्टनु । चित्तदोळा नंद वट्टा ॥
इत्तिरिद् वरेल्ल तवगोंदु परम सं । पत्तु वंदंते हेच्चिदरु ॥ ६१ ॥

अर्थ—द्वितीय बार के उत्तर को सुनकर भरत जी के प्रसन्नता की सीमा नहीं रह गई और वे फिर एक दूसरा मोती का हार उपहार में और दिया। सभा में बैठे हुये लोग यह हाल देखकर आनन्द में मग्न हो गये ॥ ९१ ॥

At the second answer king Bharat's joy knew no bounds and offered another neclace of jewel to her People sitting there were very much pleased to see this. (91)

पद्य—तोरण गट्टितु गुडियेद् कटकदि । मोरेंदु वाद्य मोळगितु ॥
धारिणि मुद्दितागळे चक्रिगिंदु कु । मार नोगेद नेंब वार्ते ॥ ६२ ॥

अर्थ—उस समय भरत जी अत्यन्त संतुष्ट हुये। प्रजा के हृदय में हर्ष उमड़ आया और अनेक प्रकार के गाजे बाजे बजकर इधर उधर से आनन्द भेरी सुनाई दी। मन्दिरों में तोरण बन्दनादि बँधे हुये उसकी शोभा को बढ़ा रहे थे। लोक में सभी लोगों को यह विदित हो गया कि महाराजा भरत जी के आज पुत्र उत्पन्न हुआ। ९२ ॥

At that time king Bharat was over joyed and subjects heart also filled of joy Many kinds of musical instruments began to be played. The temples were decorated Every body in the world knew that a son is born to king Bharat (92)

पद्य—इद्दवरेल्ल रनुचितदि बील्कोडु । तेद्दनु जिन शरणेनुत ॥
होद्दिद नोलविंद हेरुगेय मनेयनु । मुद्दिन मगन नोडिदनु ॥ ६३ ॥

अर्थ—श्री भरत जी' जिन' शब्द का उच्चारण करते हुये सिंहासन से उठ पड़े एवं दरबार को समाप्त कर रनिवास में प्रवेश कर गये और तत्क्षण प्रसूतिका गृह में जाकर नवजात बालक को देखा ॥ ९३ ॥

King Bharat pronouncing 'Jin' stood up and came into the inner apartment of the royal palace At that time, he saw the newly born son. (93)

"भरतेश वैभव" "Bhartesh Vaibhav"

कुसुमा जी को पुत्र रत्न का प्राप्त होना, महाराज भरत को दासी के द्वारा सूचना मिलना तथा भरत जी का अन्तःपुर में आकर पुत्र को आशीर्वाद देना और कुसुमा जी का लज्जित होना (यह चित्र सौभाग्यवती पियारादेवी धर्मपत्नी अनन्तदास जी जैन निलोकपुर के ओर से छपा) जनता प्रेस, बाराबंकी

पद्य—नमुनारयचु नीनिमि तन्नेवागि कुळितिर्द । कुसुमाजि योचि नोळ्सेव ॥
हसुळेय नोडि सिद्धो रक्षतेंदु सं । तसदिंद् मुगुदद् नळिद ॥ ९४ ॥

अर्थ—श्री भरत जी के निकट रानी कुसुमा जी शर्म के मारे मुख नीचे किये हुवे बैठी हैं। बालक अत्यन्त तेजस्वी है उसे देखकर भरत ने 'सिद्धो रक्षन' इस प्रकार का आशीर्वाद देकर प्रसन्नता पूर्वक हँसते हुये लौट आये ॥ ९४ ॥

Queen 'Kusuma' is sitting near Bharat with her eye down cast The child is very bright Seeing him, king Bharat blessed him saying 'Siddho rakshat' and smiling happily returned. (94)

पद्य—अरसियरेल्लरु नलिदाडु नेयृतंदु । पुरुप नंत्रितमेले त्रिद ॥
वरसुत नाद् नंदु लिवुतोप्पि दरोडु । परम संभ्रमवनेनेंवे ॥ ९५ ॥

अर्थ—कुसुमा रानी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है इस समाचार से महल में सर्वत्र हर्ष ही हर्ष है। सभी रानियों को अपार हर्ष हुआ और वे सभी भरत जी के पास आकर उनके चरणों में मस्तक नवाकर अपने आनन्द को व्यक्त किया ॥ ९५ ॥

The whole palace is extremely happy, as a son is born to the queen named 'Kusuma' All the queens were overjoyed all of them coming to Bharat and bowing before him showed their happiness (95)

पद्य—दानाभिषेक पूजेगळ नाडोळगे प्र । धान मूचिसि नडेसिदनु ॥
सेनेयोळगे सेनापतियु नडेसिदने । ना नृपनेसिरि वडवे ॥ ९६ ॥

अर्थ—बुद्धि सागर मंत्री ने सभी देशों में दान, पूजा और अभिषेकादि करके विविध भाँति के पुण्य कार्यों को किया। इधर सेना में सेनापति ने भी अनेक प्रकार के मांगलिक कार्य कराये। चक्रवर्ती भरत की संपत्ति क्या कम है? ॥ ९६ ॥

The minister named Buddhisagar celebrated this birth of a child by alms giving, worship and by performing other virtious deeds (96)

पद्य—मय रचसिद् व्रमदिगळोळ् नृपरु पा । ळेय दोळ्स गिद् रचनेया ॥
जय जयवेने पूजे नडेदु दुर्गियोळु च । क्रिय तनुजोत्सवियल्लि ॥ ९७ ॥

अर्थ—व्यन्तरों द्वारा निर्मित मन्दिरों में राजगण राजपुत्र, प्रजाजन और सेना के योधा बहुत

भक्ति के साथ,, जिनेन्द्र भगवान्" की पूजा किया, जिसे देखकर सभी लोग जय जयकार करने लगे ॥ ९७ ॥

Many kings, princes, people, warriors of the army worshipped 'Jinendra Bhagwan in the temples prepared by Vyantras. Seeing this people began to raise the slogans of 'Jai' 'Jai' (97)

पद्य—आ दिनदोळु जातकर्मव माडिसि । द्वादश दिनदोळु नृपति ॥
आदि जिनन पेसरव नादि राजनें । दादर मिगे नाम विट्टा ॥ ९८ ॥

अर्थ—उस दिन जात संस्कार और बारहवें दिन नाम करण संस्कार किया । भरत की इच्छा से बालक का नाम आदिराज रक्खा गया ॥ ९८ ॥

On that day birth ceremoney, and on the 12th day naming ceremoney was celebrated On the desire of king Bharat the child was named as Adiraj(. 98)

पद्य—नाम कर्मद दिनदोळु मागधनु तन्न । सीमेय संपत्तु गूडि ॥
स्तोम दुळपेगूडि संभ्रमदोळु वंदु । भूमि पतिय कंडनोसेदु ॥ ९९ ॥

अर्थ—नाम करण संस्कार के दिन मागधामर ने बहुत सी उत्तम संपत्तियों को लेकर सेना सहित दरबार में जाकर राजा का दर्शन किया ॥ ९९ ॥

Magdhamar on the day of naming ceremoney came to visit the king with his army and many precious presents. (99)

पद्य—मुँदन पयनके बहनेंदु होगि नो । हिंदिह्नि गिव नोदगिदनु ॥
एंदेंदिगेमगे मागधने महाहित । नेंदु नुडिदना चक्रेशा ॥ १०० ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत ने मागधामर के आने के संबंध में हर्ष प्रकट कहते हुये कहा कि मागध को तो आगे के मुकाम पर आने के लिये कहा गया था; किन्तु वह जल्दी आगया इससे मालूम होता है कि यह हमारे लिये सर्वदा हितैषी बना रहेगा ॥ १०० ॥

Chakravarti king Bharat displaying his pleasure at the arrival of Magadh said that Magadh was asked to come later on the other occasion. But he came earlier This shows that he shall always prove a welwisher to me (100)

पद्य—कन्नुह्ििनि कडलोत्ति नोळ्कु केळ्दे । मले कुमारगे दयोन्मववा ॥
उत्तुपे सहित बहेनंदूगे होदेना । गळे मगुळ्दे नेयेंदनवन्नु ॥ १०१ ॥

अर्थ—इस वाक्य को सुनकर मागधामर को बड़ा हर्ष हुआ और उसने कहा कि स्वामिन्! मैं आप से आज्ञा लेकर गया था परन्तु जब समुद्र तट पर ही मुझे पता चला कि आपको पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई तो मेरा विचार वहीं से लौटने को हो गया था, फिर भी आपकी सेवा में कुछ थोड़ी सी भेंट लाने के विचार से राज्य में चला गया। और वहाँ से पुष्पवत् थोड़ी सी भेंट लेकर आया ॥ १०१ ॥

Magdnamar was very much pleased to hear this sentence. He said, "O Master ! I had gone with your permission, When I reached the sea shore, I came to know about the birth of royal son I wished to come back from the very place But I went to my state in order to bring some presents for your service From there I have come with some of these light presents " (101)

पद्य—वेट्टनागिरे निन्न नुडिडे नं मरेयेंदु । मुट्टि भूपति लेम नुडिदा ॥
कुट्टि मद्‌बुद्धि गलितिगिंदे नन्नोडेयारे । दट्टि हाम दोळ्व मणिदा ॥ १०२ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत ने कहा कि मागध ! सभा में मैंने तुम्हारा बड़ा तिरस्कार किया था इसलिये तुम्हारे मन को कष्ट हुआ होगा उसे तुम भूल जाओ। तब मागध ने कहा कि स्वामिन्! इससे हमारा क्या बिगड़ गया! आप ने मुझे दबाकर सद्‌बुद्धि दिया। आप तो मेरे परम हितैषी स्वामी हैं इस प्रकार कहते हुये चक्रवर्ती के पैरों पर अपना मस्तक झुका दिया ॥ १०२ ॥

Chakravarti king Bharat said, "Magadh ! I had very much insulted you in the sabha You must have been troubled you should forget that." Then Magadh said, "master ! what harm is done to me by this ? You have given me wisdom by force You are my welwisher master." Saying thus, he bowes his head on the feet of the king (102)

पद्य—होगु निन्नय नाळिनवन कनेदु कोंडु । सागर दोळगे नेप्पिगरु ॥
आगने संदिनेन्नोनग इंदनु । मागधेंद्रगे राय मेच्चि ॥ १०३ ॥

अर्थ—भरत जी मागधामर पर संतुष्ट होकर कहने लगे कि मागध जाओ अनेक राजाओं को वश में करके आनन्द पूर्वक रहो। मेरा कार्य तो उसी दिन होगया। अब तुम स्वतंत्र होकर रह सकते हो ॥ १०३ ॥

King Bharat being very much satisfied with Magadh began to say, "Magadh ! go getting victory over many kings live happily. My work was done on the very day. You can now live freely." *(103)*

पद्य—सुड्ड सुड्ड नडिनोळेनुंड्ड सिरि निन्न । पडेयोप्पिुदे भाग्य वेनगे ॥
बिड्ड निन्नु निन्नडिगळ नेंडनवनारु। बिड्डवरा सोवगन कंड्ड ॥ १०४ ॥

अर्थ -मागधामर ने कहा कि स्वामिन् ! उन राजाओं को वश में करके रहने से धिक्कार है उस राज्य में क्या है ? आपकी सेना मे रहकर चरणों की सेवा करना ही मेरे लिये परम सौभाग्य है। अब आपके चरणों को छोड़कर मैं नहीं जा सकता, सचमुच में जो लोग भरत को एक बार देख लेते थे वे फिर उन्हे छोड़ने की इच्छा नहीं करते थे ॥ १०४ ॥

Magadh said, "master ! It is curse to win those earthly kings What is there in that state ? It is my good luck to remain here and serve thee. Now I can not go leaving aside your service Indeed those who see Bharat once, never wish to leave him again" *(104)*

पद्य—हुट्टिद शिशुविष्टु बलियवेकेंदु सं । घट्टिसि दंड्ड तेरळदे ॥
बिट्ट नोळारु तिंगाळिद्दु होस । पट्टण दोळगिप्प तेरदि ॥ १०५ ॥

अर्थ—नवजात बालक कुछ बढ़ जाय इस विचार से भरत जी ने छः तक उसी जगह पर मुकाम किया। उनका दिन वहाँ पर बहुत आनन्द के साथ व्यतीत हो रहा है। साहित्य व संगीत कला से प्रति दिन अपनी तृप्ति कर लेते थे अर्थात् किसी प्रकार की चिन्ता उन्हें नहीं थीं ॥ १०५ ॥

ng Bharat stayed at that place for six months, so that newly born child may grow a little bigger. His time is spent there quite happily So is to pacify himself with literature and music daily That is to say that there was no anxiety with him. *(105)*

पद्य—ओदुव पाडुवाडुव लीलेयोळु सर्व । मेदिनीपति गळोग्गिनोळु ॥
काडुव कट्ट व नेनहिल्ल दिर्द नि । दादि राजोदय संधि ॥ १०६ ॥

अर्थ—सैन रक्षा करना अथवा उनको ठहराना शत्रुओं को पकड़ना या दंडदेना अथवा उसके लिये फिकर करना इत्यादि चिन्ताओं से रहित होना राजा भरत अपने पढ़ना पढ़ाना अनेक संगीत

शृङ्गार इत्यादि अनेक लीला विनोद में अपने समय को बिताते हुये लीला विनोद पूर्वक अपनी रानियों के साथ बिता रहे हैं ॥ १०६ ॥

पद्य—ई जिन कथेयनु केळ्दवर पाप । बीज निर्नाशन वह्दु ॥
तेज वड्दु पुण्य वह्दु मुँदोलिद्य । राजितेश्वरन काणुवरु ॥ १०७ ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेंगे उनका पाप, बीज नष्ट होगा । तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य बन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेंगे ॥ १०७ ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with devotion will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation). (107)

पद्य—प्रेमदिंदिद् नोदिदरे पाडिदरे केळ्द । रामोद वैदुवरवरु ॥
नेमदि सुरराणि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय कांबरर्तियोळ् ॥ १०८ ॥

अर्थ—इस कथा को जो प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे वे आमोद को प्राप्त होंगे और नियम से देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्धरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ १०८ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (108)

पद्य—निंदल्लि नडेदल्लि कुळितल्लि सर्वत्र । कुंददे कुशल लीलेयनु ॥
संदिसुव मत्र नन्नेदेयोळगिरु चिदा । नंद चिदम्बर पुरुषा ॥ १०६ ॥

अर्थ—हे परमात्मन् ! तुम जहाँ बैठने में, चलने में और सोने में सब जगह अपनी कुशल लीला बतलाते हो इसलिये हे भगवन् ! मेरे हृदय में बराबर कुशल लीला पूर्वक बने रहिये जिससे मुझे सर्वदा आनन्द मिलता रहे ॥ १०९ ॥

"O Lord of Lords ! wherever you sit walk, sleep, you show your glory everywhere. So O Lord ! kindly reside in my heart for ever with your glory, So that I may always be happy." (109)

। इति द्वितीय भाग का छठवां अध्याय आदि राजोदय संधि संपूर्ण ॥

सातवां अध्याय

❀ वरतनु साध्य संधि ❀

पद्य—नडेवाग नुडिवाग नेनहि नोळगे तोरि । नडेदत्त साध्य व माळ्प ॥
नडेदाटकांगसन्मतिदोरु रन्न ग । न्नडिये निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—हे सिद्धात्मन् ! जो प्राणी चलते, बोलते, उठते और बैठते समय स्मरण पथ में विराजमान रहते हैं उनके सर्व कल्याण होते है और उनके समस्त कार्य सिद्धि होते हैं । इसलिए हे निरंजन भगवन् ! आप रत्न दर्पण के समान मेरे हृदय में सर्वदा रहकर मुझे सद्बुद्धि प्रदान करिये ॥ १ ॥

"O Siddhatman ! Those beings who remember thee everywhere walking talking rising, sitting all the time, are always benefited and successful in their work Therefore O maliceless Lord ! living in my heart like mirror, inculcate in me right type of mind" *(1)*

पद्य—आरु तिगळ मेले दंडेद् दळिंद । चीरिट्टु भेरि स्वळसे ॥
तोर लेत्तिदुवु पताके टिक्केयु वान । केरितु पडेय काल्दूळु ॥ २ ॥

अर्थ—छः माह बीत जाने के पश्चात् श्री भरत जी ने सेना को आगे बढ़ाने के लिए सेनापति से कहा । उनकी आज्ञा पाते ही वह सेना सहित प्रस्थान कर दिया । उस समय सर्वत्र भेरी व अनेक प्रकार के वाद्यों के शब्द सुनाई दिये तथा धूल से आकाश आच्छादित होगया ॥ २ ॥

After six months elapsed, king Bharat ordered the commander of the army to march forward Being ordered by him, he at once set out with his army. At that time musical notes were being heard everywhere The whole sky was covered with dust *(2)*

पद्य—मुखर मागधन मूडन वाधियोलु गेल्दु । निखिळ सेनेय कूडिकोंडु ॥
सुखिगळोडेय कडलोत्तुविडिदु तेंक । मुखवागि दंडेत्ति नडेदा ॥ ३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी पूर्व दिशा के समुद्र मे रहने वाले मागध को जीतकर अपनी अखिल सेना के साथ सुख विलास करते हुए समुद्र के किनारे किनारे दक्षिण तरफ जारहे हैं ॥ ३ ॥

King Bharat, overcoming Magadh the king of eastern seashore, is marching happily along the seashore towards duccan (3)

पद्य—ओंदु रथदोळु किरिय कुवरन तोट्टि । लोंदु रथदोळु दोड्डणुगा ॥
मंदाकिनिय तोडेय मेलेरि वरे वंदु । दंदर्क कीतिय पोड्यु ॥ ४ ॥

अर्थ—एक रथ में अर्ककीर्ति कुमार का झूला है और दूसरे रथ में मंदाकिनी नाम की दासी अपने गोद में छोटे राजकुमार के झूले को लिये हुये बैठी है। इसप्रकार आनन्द पूर्वक सभी लोग जारहे हैं ॥ ४ ॥

One of the charriots has Jhula of 'Arkirtikumar' on the other charriots, Mandakini, the maid servant is sitting with the younger prince Thus joyfully people are advancing (4)

पद्य—नडि विडि दोय्यने तंपिनोळा सेने । नडेवुदुमदुवेयंददोळु ॥
कडुविसि लागदे तेरपनुळ्ळडेयोळु । विडिडुत्तुदल्लल्लि विंकदोळु ॥ ५ ॥

अर्थ—जिस प्रकार बारात कड़ी धूप की आशंका से बीच बीच में ठहरती हुई चली जाती है उसी प्रकार श्री भरत जी की सेना बीच बीच में मुकाम करती हुई डंडक में चली जारही थी ॥५॥

As a marriage party advance staying here and there for shelter from sun, in the same way, King Bharat's army was advancing in the cold water halting of places (5)

पद्य—तेरु ममगुवंते मचेत्ति नडेवुदु । वीर वृंदद रभसदोळु ॥
आरयूदु मत्ति विनेडेगंडु निल्वुदि । ता राय पडेयेयूदुतिहुदु ॥ ६ ॥

अर्थ—जिस समय बड़े बड़े रथ, योधा वीरता पूर्वक जारहे थे उस समय सभी सवारियाँ तथा सैनिकगण धूल से ढक गये ॥ ६ ॥

When great charriots warriors were going gravely, all the conveyance and army soldiers were covered with dust at that time (6)

पद्य—पल्लक्कि येरि भृभुज नोंदु पयणव । सल्लीलेयिंद सागुवनु ॥
उल्लास दिंदोंदु पयणव दंडिगे । यल्लि सागुव नोजेविडिदु ॥ ७ ॥

अर्थ—श्री भरत जी कभी पालकी, कभी हाथी और कभी रथ में ही बैठकर स्वेच्छा पूर्वक जारहे थे ॥ ७ ॥

King Bharat went sometimes in palanquins, other times on elephant and on charriots as he liked (7)

पद्य—चवर बोंगाळव नडदोंडु पयनव । दिविजेंद्रनंते सागुवनु ॥
दिविज विमान दंतेसेव पुष्पकदोळु । सुविलास दिंदोम्मे वहनु ॥ ८ ॥

अर्थ—जिस प्रकार पुष्पक विमान पर बैठकर यात्रा काल में देवेन्द्र की शोभा मालूम पड़ती है उसी प्रकार अनेक रथ, पालकी इत्यादि के मध्य में छत्र, चामर धारण किये हुये भरत की शोभा प्रतीत हो रही थी ॥ ८ ॥

Just as Indra looks very beautiful, when he travels in 'Pushpak Viman' in the sky, simillarly king Bharat looks beautiful in the midst of umbrella fans, charriots, palanquins etc (8)

पद्य—आनेय मेलोम्मे पयनव बंदु न । वीनरथ दोळोम्मे वहनु ॥
एनेंबे मरुत मावुगळेरि कुणिसुत । तानोंदु पयणवेयदुवनु ॥ ६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी वार वार हाथी, घोड़े तथा नूतन रथों पर बैठकर उन्हें नचाते हुए आनन्द के साथ जारहे हैं ॥ ६ ॥

King Bharat, sitting many times on the elephant, horse and new charriots, is going happily (9)

पद्य—अश्वकुलोत्तम गळोळोम्मे वहनु त । नश्वरत्न दोळोम्मे वहनु ॥
विश्वविलास दोळेयदु तिददु भर । तेश्वर पयण गतियोळु ॥ १० ॥

अर्थ—श्री भरत जी कभी अश्वकुलोत्तम घोड़े पर बैठते हैं और कभी अपने रथ में बैठते हैं इस प्रकार विश्व विलासी भरत प्रयाण करते हुए जा रहे हैं ॥ १० ॥

King Bharat sometimes sits on "Ashvakulottam," and other times in his own charriot Thus luxurious king Bharat is advancing (10)

पद्य—मगिय बेसगेयनु मळेगालव । नीगुतल्लल्लि विश्रामिसि ॥
सागिहलनु पयसद मेले तेंकण । सागरवनु बंदु कंडा ॥ ११ ॥

अर्थ—गर्मी सर्दी और वर्षा ऋतु में किसी सैनिक या सेवक को कष्ट न हो जाय इस विचार से बीच बीच में मुकाम छोड़ते हुए भरत जी कई दिनों पश्चात् दक्षिणी सागर पर पहुँच गये ॥ ११ ॥

King Bharat reached Duccan ocean, halting in the way for rest, so that his soldiers might not, fall in difficulties in summery, winter and rainy seasons. (11)

पद्य—पाळ्य बिट्टितु कडलोत्ति मुन्न । पेळिदप्ट गलदुद दोळु ॥
माळु मनेनु मुन्निन नेग्दोळु गृह । जाल निर्मिसितु सर्वरिगे ॥ १२ ॥

अर्थ—वहां पर पहुँचकर विश्वकर्मा ने पहले की भांति सब लोगों के लिए निवास स्थान, शयन-गृह इत्यादि की समुचित व्यवस्था कर दिया था उसमें प्रविष्ट होकर सब लोग आनन्द पूर्वक रहने लगे ॥ १२ ॥

Vishuakarma had already managed for palaces to live in. On reaching there, they began to live comfortably (12)

पद्य—करेयोळु निंदु गजेंद्र मागधनेळि । करेयोवेनद मोदलवंदु ॥
करव मुगिदु मुंदे मागध निदनु । भरतेश नुडिद निंतेदु ॥ १३ ॥

अर्थ—श्री भरत जी ने समुद्र तट पर खड़े होकर मागध को बुलाने की इच्छा किया कि इतने में वह स्वयं भरत के सामने आकर हाथ जोड़कर खड़ा होगया । तब राजा ने कहा ॥१३॥

King Bharat wished to call Magadh from the sea shore. Meanwhile he himself stood up with folded hands before the king Then the king said (13)

पद्य—एन मागध वरतनुव्यंतर । नी नीर नडुकुळव दोळु ॥
तानुकु रुवरंते बेरतु कोंडिहनलें । नीनवनोळग बल्लेयलें ॥ १४ ॥

अर्थ—मागध ! इस समुद्र में मेढ़ के समान मनवाला 'वरतनु' नामक कोई व्यंतर रहता है उसे तुम जानते हो न ? ॥ १४ ॥

"Magadh ! does some Vyantar named 'Vartanu' who is like sheep, live in this ocean ? Do you know him ? ' (14)

पद्य—सुम्मने बंदेम्म काणवणो बारदे । हम्मेयोळिप्पनो अवन ॥
सोम्मेनु हेळेंदरवनु चक्रेशन । सम्मुख दोळगितु नुडिदा ॥ १५ ॥

अर्थ—वह चुपचाप आकर मेरी सेवा में उपस्थित होगा या अभिमान पूर्वक वहीं बैठा रहेगा ? बतलाओ उसका स्वभाव कैसा है ? इस वचन को सुनकर मागध ने भरत से कहा ॥१५॥

"Will he present himself in my service quitely or sit there vainly? Tell me, how is his nature? Having heard this Magadh said to king Bharat." (15)

पद्य—देवनिनगे वेरे वेगगळिविळे योळि । ल्ला वरतनु तानु सुमुखा ॥
सेवेगे नाळे नानोडगोंडु बप्पेनि । दाव गहन स्वामियेंदा ॥ १६ ॥

अर्थ—हे स्वामिन्! जगत् में आपके सामने कौन अभिमान कर सकता है अथवा किसका अभिमान चल सकता है? इसके अतिरिक्त "वरतनु" सज्जन, विवेकी और नीतिज्ञ है मैं उसे साथ में लेकर कल ही आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा ॥ १६ ॥

"O master! who can dare to be proud before you in this world? Or whose pride may be successful? Besides this 'Vartanu' is gentle, wise and politician I will present him in your service tomorrow.' (16)

पद्य—आदरोळिळतु पोगु नाळे बारेंदु नि । वेदिसि वीळकोट्टनवना ॥
आदरदिंदुळिदवर वीळ्कोट्टु अ । मोद होक्कनु राजग्रहवा ॥ १७ ॥

अर्थ—राजा भरत मागध के वाक्य को सुनते ही प्रसन्न होकर कहने लगे कि तब तो ठीक है, तुम अभी वहां जाओ और कल उसे लेकर अवश्य आओ ऐसा कहकर उसे भेज दिया और बाहरी लोगों को भी जाने की आज्ञा देकर स्वयं राजमहल में प्रवेश किया ॥ १७ ॥

King Bharat being very much pleased to hear the words of Magadh and began saying, "Then it is quite all right You must go there immediately and come with him tomorrow" Saying thus, king sent him away Asking others to go, he himself entered the palace (17)

पद्य—स्नान देवार्चन भोजन शयन ली । लानु वर्तनदोळा दिनवा ॥
मीन लोचने यरमेळ दोळरसन । नून वेंदेने नूँकि कळेदा ॥ १८ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी वहां जाकर स्नान, देवपूजा, भोजन तथा स्त्रियों की लीला के साथ शयनादि क्रियाओं से एक दिन बिताया, दूसरे दिन पुनः प्रात काल उठकर समस्त क्रियाओ से निवृत होकर दरबार में आकर विराजमान होगये ॥ १८ ॥

King Bharat spent his one day in playing with his queens, on taking his food On the second day, getting earlier, and getting rid of all the morning functions, he came to the royal court (18)

पद्य—वेळगागे नित्यकर्मंत्र तीर्चि वंदु म । ललित दोळोलगवाद ॥
इळियर सुगळु कागकेयनित्कि कंडु मु । देळिसि कुळितर्द रोप्पदोळु ॥ १९ ॥

अर्थ—समस्त राजा कुटुम्बियों के साथ आकर आनन्द के साथ क्रमशः श्री भरत जी का भेंट चढ़ाकर बैठ गये । राजागण भरत जी के दर्शन करने से अपने को धन्य समझते थे ॥ १९ ॥

All the princes, presenting there presents before Bharat, sat down with their families at their respective places The Rajas censidered it their luck to visit king Bharat (19)

पद्य—तर तरविडिदु कळेयरु गागिकेयर । क्करिगरु पुण्यगायकरु ॥
अरसु मक्कळु दळपति मचिवरु सर्व । परिवार विद्र दळ्ळिरि ॥ २० ॥

अर्थ—वहां पर अनेक प्रकार के गायक, सेवक, वेश्या, पुण्यगायक, दलपति, सेनापति और राजकुमार ये सब अपने परिवारों के साथ उपस्थित थे ॥ २० ॥

Musician, servants, prosses, bords, troup commanders commander of the royal army and princes of many kinds were sitting with their families (20)

पद्य—मंगल कौशिकवेंब रागदोळु म । न्मंगल समय वेळेयोळु ॥
मगल शरण लोकोत्तम हंस गु । गंगळ नलिसुतिर्दा ॥ २१ ॥

अर्थ—उत्तम मंगल समय में मंगल कौशिक नामक राग में मंगल शरण लोकोत्तम शरण ऐसे हंसनाथ (आत्मस्वरूप) गान को श्री भरत जी आनन्द पूर्वक सुन रहे थे ॥ २१ ॥

King Bharat was very patiently listening to the 'Hansnath' music, the best in the world and atmost appropriate time (21)

पद्य—नारागि सौराष्ट्र गुज्जरि रागोळु सं । चारिसि पाडे गायकरु ॥
कारण कार्य विचार वनात्म त । त्वा गम नलिसुतिर्दा ॥ २२ ॥

अर्थ—अनेकों गायक क्रमशः नारानी, सौराष्ट्री और गुर्जरी इत्यादि रागों में आत्मा व कर्म कार्य कारण संबंध को वर्णन करते हुए गान कर रहे थे । उसको सुन कर श्री भरत जी अत्यन्त प्रसन्न हो रहे थे ॥ २२ ॥

Many musicians Narain, Saurahtri Gurojar were singing the songs relating to the relation between soul and action King Bharat was very much pleased to listen that (22)

पद्य—पुण्यगाणव केळुतात्मन परम ला । वण्य वनोळगे भाविसुत ॥
पुण्यव बगेवुत राजधिराजाग्र । गण्यनिद्दनु सुगोष्टियोळु ॥ २३ ॥

अर्थ—राजाधिराजाग्रगण्य श्री भरत जी पुण्यमय वातावरण में बाहरसे पुण्यमय गान को सुनते हुये अन्दर से परम लावण्य परमात्म स्वरूप का चिंतन करते हुए विराजमान हैं ॥ २३ ॥

h leader of kings king Bharat is sitting there in a pious atmosphere, listening sacred songs and meditating in wardly the beautiful self of the Lord (23)

पद्य—दोड्ड भूभुजर नीचिसुत गायकतति । गेड्ड वागिरे मेच्चु गोडुत ॥
ओड्डोलग गोट्टु कडेय हजार दो । ळोड्डु दोरिर्दना नृपति ॥ २४ ॥

अर्थ—अनेक गायक भरत जी की ओर देखकर गान कर रहे हैं । भरत जी अपनी शोभा से उन सबों को मोहित करते हुए आसनस्थ हैं ॥ २४ ॥

Many musicians seeing Bharat Ji are singing. King is sitting there fascinating them (24)

पद्य—आदि जिनन नेनेयुत हंस नाथन । भेदिसि बगेवुतिर्पाग ॥
आदि राजननोब्ब गंध माधवि येंब । दादि तंदित्तळा नृपगे ॥ २५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी आदिनाथ भगवान को स्मरण करते हुए भेद विचार से परमात्म स्वरूप का भी मनन कर रहे हैं कि इतने ही में 'गंधमाधवी' नाम की दासी ने आदिराज कुमार को लाकर उन्हें दे दिया । इसके पश्चात् महाराज आनन्दपूर्वक बालक को अंक में लेकर प्रेमालाप करना प्रारम्भ किया ॥ २५ ॥

King Bharat is remembering Lord Adinath, is meditating upon the shape of the supreme Lord Meanwhile Gandhavati, a maid servant dropped prince Adinath in the royal lap. After that king began to bill the child in his lap (25

पद्य—रजताद्रि योडेयेनें दप्पाजि । विजयंगेद नेंदोसेदु ॥
निज तनुजन नीसिकोंडु भूपति तन्न । भुज तुंबल मर्दप्पिकोंडा ॥ २६ ॥

अर्थ—भरत जी हंसते हुये उस बच्चे से विनोद के साथ पूछ रहे हैं कि आप कहां से पधारे हैं ? कैलाश पर्वत से आये हुए आदिनाथ भगवान तो नहीं हैं ? मेरू के आगे खड़े हुये

मुझको करुणापूर्ण नेत्रों से देखने वाले आदिराज तो नहीं हैं ? ऐसे अनेक शब्दों को वार वार कहते हुए बच्चे को छाती से लगाकर चुम्बन लेने लगे ॥ २६ ॥

King Bharat is asking smilingly to that child with pleasure, "From where did you come ? Are you Lord Adinath descended from Kailash Mount ? If you are Adinath seeing me pitiably standing before the 'Mesa'." Saying thus repeated king kissing the child embraced it (26)

पद्य—गल्लव चुंबिसुवनु मुत्त कोडुव म । चल्लाडुतप्पुत नगुवा ॥
एल्लिद विजयंगैदिरि स्वामियें । दुल्लास दोळु वेसगोंबा ॥ २७ ॥

अर्थ—भरत जी पुत्र के कपोलों का स्पर्श कर चुम्बन लेते समय मुख पर मुख रखकर हर्ष पूर्वक पूछ रहे हैं कि आपका शुभागमन मेरु पर्वत से हुआ है क्या ? ॥ २७ ॥

King Bharat kissing the beautiful cheeks of the child and putting his mouth upon child's cheeks is asking, "Have you descended from Meru mountain ?" (27)

पद्य—ताराद्रियिंद चित्तैसिदु दल्लिदु । मेरु विन अ्रदोळ्निंदु ॥
कारुण्य दिंदेन्न नोडवेकेंदादि । पुरुप एयूदिदेयेंदा ॥ २८ ॥

अर्थ—क्या मेरु पर्वत के अग्रभाग में खड़े होकर देखने वाले यही आदिनाथ भगवान हैं ? ऐसा कहते हुए छाती से बच्चे को लगा लिया ॥ २८ ॥

Are you that Adinath who stands at the front portion of Meru and sees ? Saying thus he embraced the child (28)

पद्य—मुद्दिसि मुँडाडु तोलेदरळ्ळेलेयनु । तिद्दुव कोरळ दंडेयनु ॥
होद्दिगे माळ्पनु मागाय मुद्दुत । मुद्दाडुतिर्दना मगना ॥ २९ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी इस प्रकार वार वार कहते हुये सिर को स्पर्श कर प्रेम पूर्वक आलिंगन कर रहे हैं ॥ २९ ॥

King Bharat saying thus repeatedly and touching the head, is embrac ing many times with great affection. (29)

पद्य—ओलेतंदेय मोगनोळ्पना बालक । मोळेवल्ल मिसुगि नगुवनु ॥
एळे मीसेतिद्दुव नय्यन बाय तं । बुलके वायिविट्टोयद्दु कोंबा ॥ ३० ॥

अर्थ—वालक हंसते हुए पिता के मुख की ओर देखकर अपने दोनों हाथों से उनके कोमल मूँछों को खींचने लगा, तब भरत जी ने अपने मुख के ताम्बूल को उसके मुख में हर्षपूर्वक खिला दिया ॥ ३० ॥

The child seeing its father smilingly began to hold his moustach by his hands. Then king Bharat put the betel of his mouth into the child's mouth *(30)*

पद्य—तोळरक्षगळ तंदेगे तोरि तंदेय । तोळ तायुजव बेडुवनु ॥
कालंदुगेय तोरि पेंडेयवनु बेडि । वालक नर्ति माडुवनु ॥ ३१ ॥

पद्य—सैरिस पेंडेयकेनुतमबुजकेनु । भूरिभूषण व नित्तपेनु ॥
नेरदोळगे बेग प्रायवार्गेदु कु । मारन मुद्दाडु तिहनु ॥ ३२ ॥

अर्थ—श्री भरत जी के हाथ में बँधी हुई स्वर्ण रक्षा को देखकर वालक हठ करने लगा कि यह मुझे मिलना चाहिये । इस बात को सुनकर राजा बोले कि पुत्र ? इस रक्षा की क्या बात है कुछ बड़े हो जाओ तो तुम्हारे लिये ढेर के ढेर रत्न जटित आभूषणों को बनवा दूगा । इस प्रकार बार बार कहते हुये आलिंगन कर रहे है ॥ ३१-३२ ॥

The child, seeing a golden 'Raksha' tied in wrist of the king began to insist on taking it King said, "O Son ! who to say of this 'Raksha' *(thread)* I will get a number of golden ornaments and jewellary built for you, when you grow young" Saying thus many times, he is embracing his child *(31-32)*

पद्य—तोडेय मेलादि राजन निट्टुकोंडु मै । दडहुत नृपति नोडुतिरे ॥
सडगरदिंदर्क कीर्ति सिंगरिसि का । लुनडेयोळेयुत रुतिर्दनाग ॥ ३३ ॥

अर्थ—भरत जी अपने गोद में आदिराज को बिठाकर प्रेम पूर्वक पुत्र के अंगों पर हाथ फेर रहे हैं कि इतने में ही शृङ्गार किये हुये अर्ककीर्ति कुमार को प्रसन्नता पूर्वक आते हुये देखा ॥ ३३ ॥

King Bharat, seating Adinath in his lap, is brushing his hands upon him very affectionately Mean while well decorated prince Ark Kirti arrived *(33)*

पद्य—काले चल्लण नडुविन मणणजवडाडे । मामाळ्ळ झुल्लयि तिलका ॥
पूनिद् गंध नावुज कुडुकिनोळ्ळु नो । र्व्यामुत बन्तिदनाग ॥ ३४ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति कुमार पायजामा, पेटी, कमीज इत्यादि वस्त्रों को पहने हुये, मस्तकमें केशर व कस्तूरी का चंदन लगाये हुये, अङ्ग में सुगंधित द्रव्यों को मले हुये तथा हाथों में अनेक प्रकारकी भुजकीर्तियों को बाँधे हुये और मोतियों का हार गले में लटकाये हुये आ गये ॥ ३४ ॥

Prince Arkhirti, wearing payajama, peti shirt etc, putting chandan of keshar and kasturi on his forehead, rubbing his body with scented things and putting on many precious things in his arms, is coming. (34)

पद्य—कागुत गय नरिदनितु विनद के । गणिय निट्टु दवेंदु ॥
दृग्गिमि तानेम्म नोनेम लेव वि । नाग वेंदोतिमुनिदा ॥ ३५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी अर्ककीर्ति कुमार को सामने आते देखकर सोचने लगे कि रानियों ने विनोद करने के लिये उन्हें शृङ्गार करके भेजा है। ऐसा जानकर आनन्द पूर्वक निर्निमेष दृष्टि से बच्चे को देखने लगे ॥ ३५ ॥

King Bharat, having seen prince Arkkirti coming yonder, began to think that the queens have sent him decorated only for pleasure. Thinking thus, he began to see the prince with unmoved eye. (35)

पद्य—हिंद मंदाकिनि नडेमि मेल्लने बरे । नुँदिद पिनन नीतिमुन ॥
मंदगिमिद नृपरेडेयाळ्ळु मरियाने । यंदोळेयुन कनिदा ॥ ३६ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति कुमार के पीछे मन्दाकिनी नाम की दासी भी धीरे धीरे आरही थी। उस समय कुमार की शोभा ऐसी मालूम दे रही थी कि मानों हाथी का छोटा बच्चा आरहा हो ॥ ३६ ॥

Mandakini, the maid servant is also coming slowly behind prince Arkkirti At that time he was looking so beautiful as if little son of elephant is coming (36)

पद्य—जयराज मंत्रि भूपालक कागुत । नि योळेद निंदु कैमुगिये ॥
नयनदोळ् कैमल्लेयिंद कुळ्ळिरि। नियमि मुनेयुतनितिदा ॥ ३७ ॥

अर्थ—जिस समय अर्ककीर्ति कुमार दरबार में पहुँच गये उस समय सभी दरबारी, राजा,

राजकुमार, मंत्री और सेनापति उठकर खड़े होकर नमस्कार किया। राजकुमार उन दरवारियों को वैठने के लिये हाथ से संकेत करते हुये पिता (राजाभरत) की ओर बढ़ गये, बच्चे को देख कर भरतजी को अपार हर्ष हुआ ॥ ३७ ॥

When prince Arkkırtı reached the royal court, every body all the court man, kings, princes, ministers, commander-in-chief stood up and saluted him. The prince asking them to sit down is going towards his father. Bharat also was over joyed to see the child. (37)

पद्य—अणाजि ब्रहाग कुळितिर लागदे । ळणायेंदनु चिक्क मगना ॥
पोणना मगनेद् नोडने कैमुगियेंदु । वणिसि कोडल्लु कैमुगिदा ॥ ३८ ॥

अर्थ—और गोद में वैठे हुये आदिराज पुत्र से कहने लगे कि बेटा! तुम्हारे वड़े भाई आरहे हैं अतः खड़े होकर इनका स्वागत करो। यह सुनते ही बालक खड़ा होगया और जब पिता ने पुनः हाथ जोड़ने को कहा तो आदिराज ने हाथों को जोड़ लिया ॥ ३८ ॥

King began to say to Adiraj of his lap, "Son ! your elder brother is coming So welcome him by standing Hearing this, child stood up, and folded his hands, when father asked for it (38)

पद्य—किरिये कैमुगिये कैसन्ने योळ्निलिसुत । मेरेव सिंहासन व नेरि ॥
किरु रत्न वोंद् काणकेयनिक्कि कैमुगि । दुरे तंदेयोत्ति नोळ्निंदा ॥ ३९ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति कुमार छोटे भाई को हाथ जोड़े हुये खड़े देखकर हाथ से वैठने का इशारा किया और स्वयं अपने पिता (भरत) के चरणों में एक रत्न समर्पित करके नमस्कार किया और सिंहासन के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ॥ ३९ ॥

When Arkkirti to see his brother standing with folded hands, asked him to sit down, and himself lowed down into the feet of his father by offering one jewell. He stood up before the throne with folded hands. (39)

पद्य—एलेगे मंदाकिनी अर्क कीर्ति गदेन । कलिसि कोट्टिरि हेळिरेंदा ॥
कलिसि कोट्टवरिल्ल ताने तंदेय सेवे । गेळसिद नेंदळा सुरसे ॥ ४० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी बच्चे की वृत्ति देखकर आश्चर्यान्वित हो गये और पूछने लगे कि हे मन्दाकिने! अर्ककीर्ति कुमार को यह शिक्षा किसने दिया है कि पिता की सेवा इस प्रकार करनी
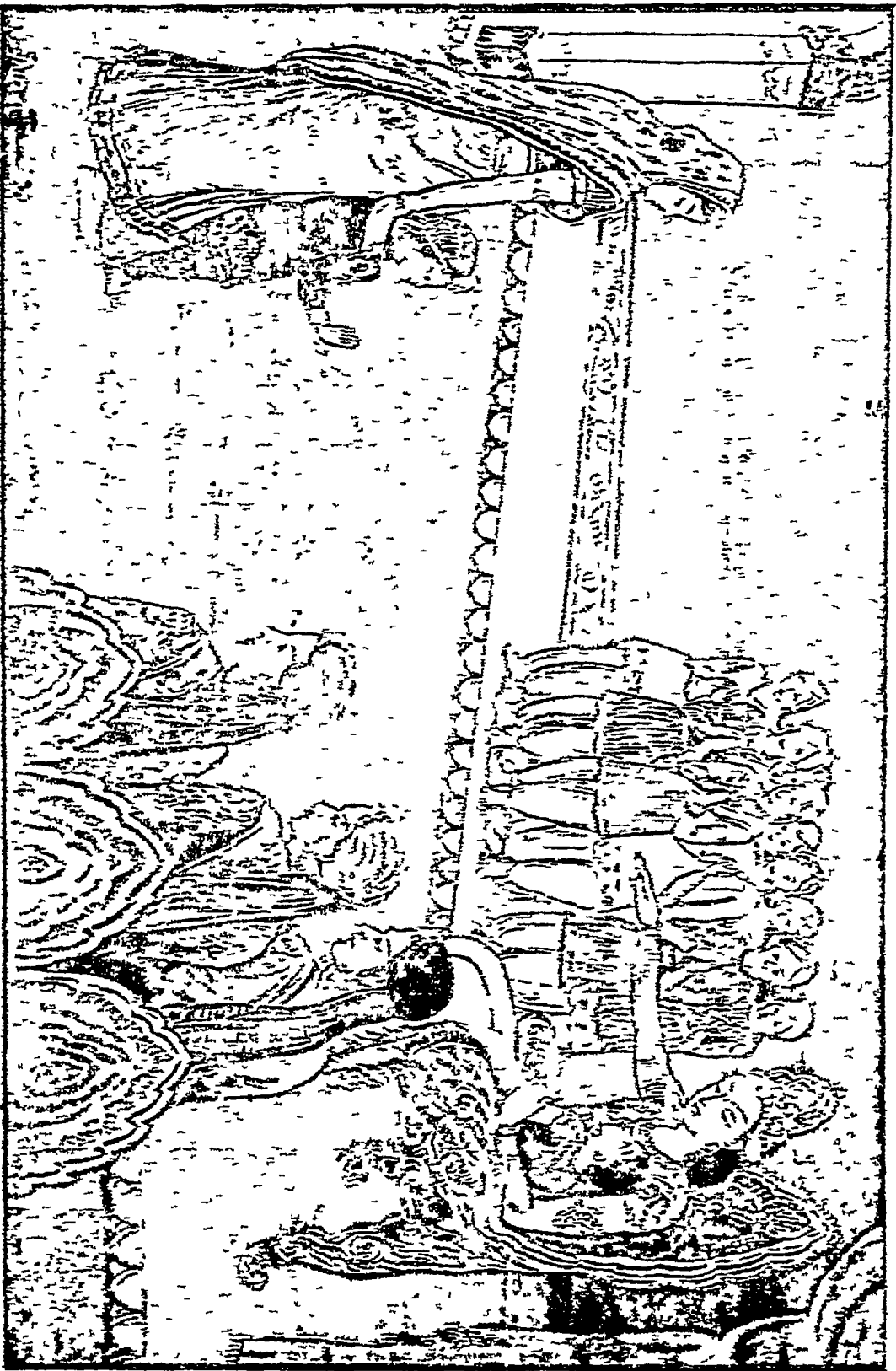
भरतेश्वर की गोद में कुमार आदिराज बहुत आनन्द के साथ बैठे हुए थे। इतने में अर्ककीर्तिकुमार वस्त्राभूषण से सुसज्जित होकर राज दरबार में आये, उनके पीछे २ मन्दाकिनी नाम की दासी भी थी। अर्ककीर्तिकुमार के दरबार में प्रवेश करते ही दरबारी लोग उठकर कुमार को नमस्कार किया, तब अर्ककीर्तिकुमार ने सबको हाथ से बैठने का इशारा कर महाराजा भरत की ओर बढ़ गये, "भरतेश्वर" कुमार को आते देखकर बहुत हर्षित हुए और गोद में बैठे हुए कुमार आदिराज से कहा कि बेटा उठकर खड़े हो और अपने बड़े भाई का स्वागत करो।

(यह चित्र ला० गजमल कल्याणचन्द जी जैन सिलोकपुर की ओर से छपा)   अजन्ता प्रेस, बाराबंकी।

चाहिये ! यह सुनकर मंदाकिनी बोली कि स्वामिन् ! इन्हें कौन सिखा सकता है ! ये स्वयं आकर आपकी सेवा में उपस्थित हुये हैं ॥ ४० ॥

King Bharat wondered of the discipline of Arkkirti and asked, "O mandakini !who has trained the prince in such a way that father should be served thus To hear this, Mandakini said, "O master ! who can teach him ? He himself has come aud presented himself in your service *(40)*

पद्य—पालु मक्करेय नारोगि सुतिरुतिर्द । सालवे तितनोडवेयतु ॥
ओलैसि तिद्ववेडवे राजगुतनेंदु । बालनेयूदिद नेंदळवळ्ळु ॥ ४१ ॥

अर्थ—मंदाकिनी कहने लगी कि राजन् ! अपरिमित दूध व शक्कर का सेवन करके भी पुत्र माता पिता का ऋणी क्यों रहे ? अर्थात् सेवा करके पितरों के ऋण से मुक्त होना चाहिये ॥ ४१ ॥

Mandakini went on saying, "O king how can a child remain in parental debt even on using unlimited milk and sugar ? That is to say, and should be free from the parental debts by serving them *(41)*

पद्य—अप्पु कें दंडेयोळेडद् दिक्किनोळु निं । द्प्पाजियतु निरीक्षिसुत ॥
तप्पगे मक्कळाटके होद्द् वनिदों । द् प्पके मेच्चितास्थाना ॥ ४२ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति कुमार दोनों हाथों में शोभने वाले दो रत्न दंडों को लेकर पिता की ओर एक किनारे खड़े होगये । पुत्र की ऐसी सेवा को देखकर सभी सभाजन प्रसन्न होरहे हैं ॥ ४२ ॥

Prince Arkkirti, taking the jewelled scepter by his both hands stood up by the side of his father All the courtemen are very much pleased to see the service of the prince *(42)*

पद्य—अर्क कीर्तिय काणुतादिराजनु कूडे । मार्कोडु सेवेगिच्छैसि ॥
बेर्के गंदोडने कुप्पसव बीसाडि स । मर्के योळा यतवादा ॥ ४३ ॥
तोनेदन्न निड्डु कुल्लायि चल्लन कासे । यनु जव दाडेय नोडि ॥
तनगंतु बेर्केंडु नडव मंडेय मुट्टि । जनकगे तोरि काडिदनु ॥ ४४ ॥

अर्थ—गंभीरता पूर्वक अर्ककीर्ति कुमार को सिंहासन के पास खड़े हुये देखकर आदिराज कुमार की इच्छा हुई कि मैं भी बड़े भाई के समान पिता की सेवा करूं यह सोचकर सर्व प्रथम पहने हुये अपने वस्त्राभूषणों को उतार कर फेंक दिया और रो रोकर कहने लगा कि बड़े भय्या के

समान पायजामा, पेटी, कमीज और रत्न जटित टोपी तथा और भी जितने आभूषण उनके पास हैं वे सभी हमारे लिये मँगा दीजिये ॥ ४३-४४ ॥

Seeing his brother standing by his father gravely, prince Adinath also thought that he too shouldserve his father Thinking this first he put away all his ornaments and precious dresses and began to sob and say, "Bring Payajama, belt, cap, shirt etc like the elder brother for me also *(43-44)*

पद्य—एनर्क कीर्तियल्लवेयवनोलैसे । नीनोडं बडवहुदरणा ॥
नीनादि राज नन्नाप्पाजि यल्लवे । नानंजुवेनु कुळ्ळिरेंदा ॥ ४५ ॥

अर्थ—बच्चे के हठ को देखकर भरत जी समझाने लगे कि तुम्हारे भय्या सेवा कर चुके तो तुम्हें प्रसन्नता मनानी चाहिये, तुम दोनों तो एक ही हो । और आप तो आदिराज हमारे पिता हैं इसलिये सेवा के लिये आप क्यों उद्यत हो रहे हैं ? आप को तो राज गद्दी पर बैठना है ॥ ४५ ॥

King Bharat began to persuade him that he should feel pleasure at the service of his elder brother Both of you are the same You are Adiraj, my father Why do you prepare yourself for my service ! you have to sit on the throne *(45)*

पद्य—अदनव केळनळुवनु चंडिय माळ्प । नदकोव्व गणबद्धगरसु ॥
पदेदु ष्ठचिसलव सिगरि सिदनु वे । गदोळर्क कीर्तियंददोळ ॥ ४६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने बच्चे को बहुत समझाया पर उसने नहीं माना तो इस हठको देख कर एक गण बुद्धदेव 'विक्रिया' शक्ति से अर्ककीर्ति के समान शृङ्गार कर दिया ॥-४६ ॥

King Bharat tried his best to persuade the child but he did not heed to what the king said, seeing this one of the princes named Buddha Deva dressed him like Arkkirti. *(46)*

पद्य—बलददिक्किनोळु तानरण नंद दोळु निं । दोलविंद पितननीक्षिसुत ॥
ओलेय दुलिवदे गभीर दोळिरे नोडि । तलेदूगिदरु सर्व नृपरु ॥ ४७ ॥

अर्थ—शृङ्गार हो जाने के बाद राजकुमार 'आदिराज' संतुष्ट होकर हाथमें रत्न दंड ले लिया और पिता की दायीं तरफ जाकर उन्हें देखते हुये अर्ककीर्ति के समान गंभीरता पूर्वक खड़े होगये । उनकी इस विचित्र गंभीरता को देखकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे ॥ ४७ ॥

Being well dressed prince Adiraj being satisfied, stood up on the left side of his father like Arkkirti Seeing his wonderful graveness, people began to praise him very much (47)

पद्य—एळे नेसरेडवल दोळ गेरहिरे मध्य । डोळु तोर हेमाद्रियंते ॥
कळभगळेरडर नडुवन गजदंते । होळेदप्पिदनु रायनाग ॥ ४८ ॥

अर्थ—हिमालय पर्वत के दोनों तरफ बाल सूर्य के उदय होने से अथवा दो हाथियों के मध्य में एक सुन्दर हाथी की जो शोभा होती है उसी प्रकार उन दोनों राजकुमारों के मध्य श्री भरत जी की शोभा अपार मालूम होरही थी ॥ ४८ ॥

King Bharat, sitting in the midst of both the princes, looked as beautilul as a rising sun on both the sides of the Himalya, or a beautiful elephant in the middle of two elephants look (48)

पद्य—बालक रेडवलडोळु मुंदे नृपन यं । डोलेसे गणबद्धराग ॥
लोल राजेंद्र नोलग विद दुमरेंद्र । नोलगवात पाडेनिसि ॥ ४९ ॥

अर्थ—दोनों बालक भरत जी के सामने जिस समय खड़े थे उस समय गणबद्ध श्री भरत जी की सभा इस प्रकार शोभा दे रही थी कि मानों सौधर्मेन्द्र ही की सभा है ॥ ४९ ॥

When the two princes were standing infront of Bharat, than the sabha of king Bharat appeared as beautiful as that of Saudharmendra. (49)

पद्य—कुळ्ळिरे बालक रिन्नेरडरके नी । वेळ्ळ रेद्दरिंदु नृपर्ग ॥
सल्लाप दोरिदनी महाभाग्यय । नेल्लि कंडेपेवेंदरवरु ॥ ५० ॥

अर्थ—खड़े हुये लोगों को देखकर भरत जी ने कहा कि तुम लोग बैठ जाओ किन्तु वे सब खड़े के खड़े ही रह गये । उनकी इस आतुरता को देखकर राजा ने कहा कि यह तो बालक है इसलिये खड़ा है: पर आप लोग श्रेष्ठ होकर भी क्यों खड़े हुये हैं ? बैठ जाओ ॥ ५० ॥

King Bharat, seeing people standing asked them to sit down, but they remained standing King seeing their anxiety said, "He is only a child. That is why he is standing you are elders, why should you keep standing please sit down" ((50)

पद्य—अरेरे निन्नय सुकुमार करिवरेनु । सुकुमार करैसे स्वामी ॥
परलोकद्वरे यिदेम्म कंगळ जाड्य । हरिदु देंदरु भूपरोसेदु ॥ ५१ ॥

अर्थ—तब वे लोग कहने लगे कि हे राजन् आप का पुत्र सुकुमार न होकर शूर कुमार है, यह देव लोक का है देखने वाले की आँख की थकावट को दूर करने वाला है इस प्रकार सभी राजा लोग हर्ष पूर्वक कह रहे हैं ॥ ५१ ॥

Then they began saying, "O king ! your son is brave one instead of tender He belongs to heaven, he removes the fatigue of those who have a look upon him" (51)

पद्य—निंद् गमक नोडु वोजे मक्कळु तन । दंदव बिड्ड गंभीरा ॥
संदुदिवरु वालकरो चेष्टेयोळु वाळ्व । मंद भूभुजरु वालकरो ॥ ५२ ॥

अर्थ—राजा लोग परस्पर में बात चीत कर रहे हैं कि इस बालक की चेष्टा, गंभीरता तथा उठने बैठने की शैली को देखकर यह मालूम होता है कि यह बालक ही राजा है और हम सब इसके सामने बालक हैं, क्योंकि ये राजकुमार इसी अवस्था में सर्व गुण सपन्न दिखाई दे रहे हैं ॥ ५२ ॥

The Rajas began to take among themselves that it can easily be inferred from his attempts, gravity and manner of sitting and standing that he is the king. We all are like children before him, as they seen to have been endowed with all the qualities event this early age (52)

पद्य—निन्न गंभीरव वेस गोळलेकिग । निन्न वालकर गंभीरा ॥
मन्नेयरिगे गलिसुतिद् पुदु सा । किन्नेके वयल विडाया ॥ ५३ ॥

अर्थ—इनकी अपेक्षा हम लोग अत्यन्त अज्ञानी हैं । हे राजन् ! पहले तो केवल आपका ही गुण वर्णन करना कठिन मालूम होता था पर अब इस बालक के अपार गुणों का वर्णन हम सब कैसे कर सकेंगे ? इनके गुण तो हम लोगों को शिक्षा दे रहे हैं ॥ ५३ ॥

"In comparison to them we are very ignorent. O king ! farmerly it was difficult to state your qualities, but how shall we describe the un limited qualities of this boy ? Their qualities are teaching us (53)

पद्य—राजावतंस निन्नय गुण निन्न त । नूज रिग हुददु सहजा ॥
बीजदंतंकुर वहुदेंव नुडियदु । माजिद् दिंदु काणिसितु ॥ ५४ ॥

अर्थ—हे राजन् ! इस पुत्र में आप के समान ही गुण आगये हैं । ऐसा क्यों न हो ! लोक में बीज के समान ही तो अंकुर की उत्पत्ति होती है यह कथन परम्परा से आरहा है ॥ ५४ ॥

"O king ! This son has intered your qualities Why should it not be ? It is traditional that plants are born out of seed." (54)

पद्य—पिरिदु वणिणमि लरियेवु दृष्टिपातवा । वरिसुवुद दरिंद निन्न ॥
वर सुकुमार रोलगवनु निलिसेंदु । करव मुगिदरु भूमिपरु ॥ ५५ ॥

अर्थ—विशेष क्या कहें ! इनके गुण देखने से प्रत्यक्ष व्यक्त हो गये । इन गुणों को वर्णन करने में हम लोग सर्वथा असमर्थ हैं । हम लोग उन्हें देखते देखते थक गये किन्तु वे बहुत देर से खड़े के खड़े ही हैं । अब उन्हें बैठने की आज्ञा दीजिये ऐसा कहकर सभी लोगों ने उनको नमस्कार किया ॥ ५५ ॥

What more should we say ! their qualities are clear only on seeing We are always unable to describe these qualities we are tired to see them, but they standing for a long duration of time Kindly ask them to sit down Saying thus, they saluted king Bharat (55)

पद्य—ओंदु घळिगे निंदु नम्मनोलैसिंद । गिदिवर्गेनु संबळवे ॥
अंद वरिदु दळपति पेळु मंत्रि पे । ळेंदु राजेंद्र केळिदनु ॥ ५६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी मंत्री सेनापति से पूछने लगे कि ये दोनों राजकुमार एक घंटे से खड़े होकर हमारी सेवा कर रहे हैं तो इस परिश्रम के लिये इन्हें क्या वेतन दिया जाय ! ॥ ५६ ॥

King Bharat asked his minister and commander-in-chief, "These two princes have been serving me for an hour What should they be paid as their pay" (56)

पद्य—घळिगेगें कोटि वित्तव हिरियारसिगे । सलिम बेकेंदना मंत्रि ॥
ओलिदरे कोटिय चिक्करसिगे कोड । सळुवु देंदनु दंडनाथ ॥ ५७ ॥

अर्थ—इस प्रश्न को सुनकर बुद्धिसागर मंत्री ने खड़े होकर कहा कि स्वामिन् ! बड़े राज

कुमार को एक घंटे का वेतन एक करोड़ स्वर्ण मुद्रा देना चाहिये और छोटे राजकुमार को घंटे का अर्ध करोड़ स्वर्ण मुद्रा देना चाहिये ऐसा सेनापति ने कहा ॥ ५७ ॥

Having heard this question the minister named Buddhi Sagar said, "O master ! one karor golden coins for an hour to the elder prince and commander in chief advise half karor to the younger son. (57)

पद्य—आगलि घळिगे गोंदुवरे कोटिय । नीग नीविवरिगे सलिसि ॥
ई गणित दोळे मुंदोलैसिदाग ले । सागिवुदेंदुनेमिसिदा ॥ ५८ ॥

अर्थ—तब भरत जी बोले कि तथास्तु इन लोगों को डेढ़ करोड़ स्वर्ण मुद्रा देने की व्यवस्था कर दो और आगे जब कभी हमारी सेवा करेंगे तो इसी हिसाब से वेतन दिया जाय ॥ ५८ ॥

Then king Bharat ordered 'Tathaustu' to give one and half golden coins to these princes Whenever they will serve me they will be paid at the same rate (58)

पद्य—साकिन्नु बन्निरं जाति वीररिरयें । दा कुमार कर निव्वरनु ॥
भूकांत नेरडु तोळ्दिदप्पि कोंडति । योकुळि याडिद् नोडने ॥ ५९ ॥

अर्थ—इसके बाद भरत जी कहने लगे कि हे जातीय वीर बैठ जाओ ऐसा कहकर दोनों हाथों से दोनों लड़कों को पकड़ कर छाती से लगा लिया और प्रेम पूर्वक चुंबन लेने लगे ॥ ५९ ॥

After that king, Bharat said, "O racial warriors" sit down. Having said be catching holding two sons embraced them (59)

पद्य—तवतव्रगेल्ल निगाळिय निट्टु मा । नवपतिगळु नमिसिदरु ॥
अवरिव रेन्नदेल्लरु काणकेयिक्कि म । चवनतरादरतियोळु ॥ ६० ॥

अर्थ—तब सभी राजा लोग उन बालकों को भेंट चढ़ा कर नमस्कार किया और उसके बाद अपने अपने स्थानों पर विराजमान हो गये ॥ ६० ॥

Then all the rajas offered presents to those princes and saluted them and they seated themselves on their respective places. (60)

पद्य—मोरेव वाद्य दोळाग कडलोळु वरतनु । बरुतिप्प भरतु काणिमितु ॥
करेदादि राजन गंध माधविय कै। गरस नित्तनोडने चीळ्कोट्टा ॥ ६१ ॥

हिरिय कुवरन मंदाकिनि गोप्पिसु । तरमनेयत्त चीळ्कोट्टा ॥
दोरगळोड्डिड नोळ्पदोळु मांडि मिगे मत्ते । भरतेश नोलगवादा ॥ ६२ ॥

अर्थ—इतने में मालूम हुआ कि समुद्र के किनारे अनेक गाजे बाजे के साथ वरतनु नामक व्यन्तर अपने परिवारों को लिये हुये आरहा है। यह समाचार पाते ही भरत जी 'आदिराजकुमार' को 'गंधमाधवी' नामकी दासी और 'अर्ककीर्ति' कुमार को 'मंदाकिनी' नाम की दासी को समर्पित कर स्वयं गंभीरता पूर्वक सिंहासन पर विराजमान हो गये ॥ ६१ ६२ ॥

Mean while it was reported that 'Vartanu' the vyantar is coming with his family in the middle of great pomp and show Having heard this king Bharat, giving Adiraj to Gandhmadhavi and Arkkirti to Mandakini, sat down on his throne in a grave mood (61 62)

पद्य—जलनिधि योत्तिगे बंदु विमानदिं । दिळिदु मागधनंते तानु ॥
तळे चवरव माणदु वरतनु काल्नडे । योळु बरुतिह नोजेयोळु ॥ ६३ ॥

अर्थ—'वरतनु' समुद्र तट तक तो विमान पर बैठकर आया और वहाँ से राजसी चिन्हों को छोड़कर श्री भरत जी के दर्शनार्थ पैदल ही आरहा है ॥ ६३ ॥

Varatanu came to the sea shore on the aeroplane Giving up all his royal robes, he is coming to see king Bharat on foot (63)

पद्य—दरहसि तागन तेळ्विन देह मिं । गर दोप्प होंबण्णवेसेये ॥
वरतनु बेंबुदिवगे सल्लुदेंबंते । बरुतिहना व्यंतरेंद्रा ॥ ६४ ॥

अर्थ—उसका आकार स्वर्ण सदृश, प्रसन्न मुख और दीर्घकाय था। इस तरह गंभीरता पूर्वक प्रेम के साथ आता हुआ 'वरतनु' अपने नाम को सार्थक कर रहा था ॥ ६४ ॥

His bodily built up was strong He was of golden colour, cheerful mood and huge personality Varatanu coming so gravely as well as affectionately was proving the merit of his name (64)

पद्य—दुगुलद नुडिसुत्ति कप्प कार्णिकेय व । स्तुगळांतु निजमंत्रि सहित ॥
मिगे मागधेंद्रन हिंदे राजेंद्र नो । लगवोळ होगतिद् नवनु ॥ ६५ ॥

अर्थ—आते समय मागधामर आगे है और उसके पीछे वरतनु कंधों पर दुपट्टा रक्खे हुये हाथों में उत्तमोत्तम अनेक उपहारों को लेकर मंत्री के सहित दरबार में प्रवेश किया ॥ ६५ ॥

At the time of approach Magdhamar was leading and Varatanu, having a dupatta on his shoulders and valuable presents in his hands, entered the royal court with his minister (65)

पद्य—छलदंक मल्ल सोक्किद् पगेरायर । वल दुर्ग निर्धूम धामा ॥
तलेवागिद् रिरायरक्षक नेंबेंदु । गलभेकेळुत वरुतिर्दा ॥ ६६ ॥

अर्थ—दरबार में वेत्रधारी गण अनेक प्रकार के शब्दों को करते हुये कह रहे हैं कि युद्धभूमि में वीर; मदमत्त शत्रुओं के मान खंडन करने में तत्पर तथा शरणागतों के रक्षक हे राजन्! वरतनु आ रहे हैं ॥ ६६ ॥

The princes present in the court one saying, "O king the warrior in the battle field, crusher of the pride of enemies and protector of suppliants! Varatanu is coming". (66)

पद्य—कट्टिदिरोळु चक्रधरन दिव्यांगव । तोट्टने वरतनु कंडु ॥
हुट्ट वेडवे नृपरिंतेंदु तानतिं । वट्ट सन्निधि गेय्दुतिर्दा ॥ ६७ ॥

अर्थ—वरतनु इन कोलाहलों को सुनते हुये दूर से ही श्री भरत जी को देखकर अपने मन में कहने लगा कि यदि राजा हो तो ऐसा ही हो। ऐसा विचार करते हुये दोनों भरत की ओर आये ॥ ६७ ॥

Varatanu, hearing this noise and seeing king Bharat from a distance said to himself, "If there is a king, he should belike him" Thinking thus both approached Bharat (67)

पद्य—इत्तर विडिवा राजर नडुवनीश । नोत्तिगोय्यार दोळेयुदे ॥
चित्तैसु वरतनुविवनीग स्वामियें । देत्ति कैमुगिद मागधनु ॥ ६८ ॥

अर्थ—दरबार में दोनों ओर राजाओं के बीच में सिंहासन पर भरत जी विराजमान हैं। उनके सामने आकर हाथ जोड़ हुये मागध ने कहा कि स्वामिन्! वरतनु आया है ॥ ६८ ॥

Ring Bharat is present on the throne, surrounded by princes in the court Magdhamar coming to him said with folded hands, "O Master ! Vartanu has come" *(68)*

पद्य—भरत राजेंद्र चित्तैसिद्धनंदानु । विरचिसला चण तनगे ॥
परम सौभाग्य वेयिदिवेंदु देंदुब्बि । वरतनु वंदनुवींशा ॥ ६९ ॥

अर्थ—मागधामर श्री भरतेश जी से कह रहे हैं कि हे राजन् ! जब मैं वरतनु के पास जाकर कहा कि तुम्हारे समुद्र तट पर राजा भरत जी पधारे हुये हैं तो वह इतना सुनते ही अत्यन्त हर्ष प्रकट किया और बार बार अपने सौभाग्य की प्रशंसा करते हुये उसी समय मेरे साथ चल दिया ॥ ६९ ॥

Magdhamar is saying to king Bharat, "O king ! when I went to Varatanu and said that king Bharat has come on his shore, he was very much pleased to hear that repeatedly praising his lot, he accomfained me at once" *(69)*

पद्य—काण वेडवे पुरुजिनन कुमारन । श्रीणात्म योग भासुरना ॥
जाण रोडेय ननेंदयुत नंदय । काणिसि कडेमारि निंदा ॥ ७० ॥

अर्थ—वरतनु कहने लगा कि स्वामिन् ! भगवान् आदिनाथ स्वामी के पुत्र का दर्शन कौन नहीं करेगा ? आत्मज्ञानी के दर्शन से कौन वंचित रहेगा ! इस प्रकार कहते हुये बुद्धिमान् वरतनु आपकी सेवा में उपस्थित होगया ॥ ७० ॥

Varatanu began to say, "O Master ! who will not visit the son of Lord Adinath ? Who will avoide the visit of self realised person Saying thus, learned Varatanu presented himself in your service" *(70)*

पद्य—भक्तियोळ् वरतनु पोसनिवाळियनिट्टु । मात्ति कंगळ हस्ततुंबि ॥
शक्त राजेंद्रन पाद पद्मगळिगे । युक्तियोळभिषेक गेंदा ॥ ७१ ॥

अर्थ—समुद्राधिपति वरतनु व्यंतर ने मुक्ताओं से अंजली भरकर भक्ति पूर्वक व युक्ति के साथ श्री भरतेश जी को भेंट समर्पित किया ॥ ७१ ॥

Varatanu, the lord of ocean, filling up the handful of Jewells, presented them to king Bharat *(71)*

पद्य—ओप्पुव कडग चूडारत्न कवत्त मे । लप्प कंठाभरणगळा ॥
कप्पवेंदिरिसि साष्टांगवेरगि मैय । नोप्पिसिदनु मंत्रिसहित ॥ ७२ ॥

अर्थ—बाद में चूड़ारत्न, कंठा, रत्नहार और स्वर्ण कड़ा इत्यादि मंत्री के सहित भेंट चढ़ा कर साष्टांग नमस्कार किया ॥ ७२ ॥

After that offering chuda jewell necklace, golden hand ring, he saluted the king with his minister. (72)

पद्य—दृष्टिगळ् फलवादुवु निम्ननीक्षिसि । तुष्टिवट्टुदु चित्तवेनगे ॥
इष्टरिंदधिक वेनुटेले स्वामियें । दष्टांग वेरंगिदंतिर्दा ॥ ७३ ॥

अर्थ—और कहने लगा कि हे स्वामिन् ! आप के दर्शन से हमारा मन प्रसन्न होगया । इस से अधिक हमें किस वस्तु की आवश्यकता है ! ऐसा कहकर पुनः साष्टांग नमस्कार किया ॥ ७३ ॥

And he began to say, "O Master ! my heart is filled with joy due to your darshan What more do I need ! Saying this he again prostrated himself before the king. (73)

पद्य—शक्रेशनरिदनी वरतनु सुमुखनु । चक्रियल्लेंदु मेच्चिदनु ॥
सुक्रम वायूतु नी बंदु देळेळेंदु । पक्रम वाक्य दोरिदनु ॥ ७४ ॥

अर्थ—भरतेश्वर मन ही मन प्रसन्न होते हुये सोच रहे हैं कि वरतनु अत्यंत सज्जन है। और प्रकट में प्रसन्न होकर कहने लगे कि वरतनु ! तुम आये तो बहुत अच्छा हुआ अब खड़े हो जाओ ॥ ७४ ॥

King Bharat is thinking within himself with great happiness, that Varatanu is extremely gentle. King showing himself pleased, began to say, O Vartanu ! stand up now You have come here quite well" (74)

पद्य—धिगिल नेद्दनु मंत्रिसहित राजेंद्रन । मोगव नोडुत मुंदे निंदा ॥
जगदोळेल्लर कण्णहब्बव माड लो । सुग जनिसिदे स्वामियेंदा ॥ ७५ ॥

अर्थ—यह सुनकर वरतनु उठकर खड़ा हो कर राजा की तरफ देखते हुये कहने लगा कि लोक में सभी आँखों को तृप्त करने के लिये आप का जन्म हुआ है ॥ ७५ ॥

Having heard this, Vartanu stood up and seeing towards the king began saying, "You are born to satisfy the eyes of all in this world". (75)

पद्य—सालदे निन्न रूपी रायमोडि ते । जोलंब नेत्र शृंगारा ॥
ई लेसु निमगिरलेमगे निन्नने विड । दोलैसु वेसि रियिरह्लि ॥ ७६ ॥

अर्थ—हे राजन् ! आप का रूप, वैभव, श्रृङ्गार व नेत्र श्रृङ्गार तथा आप का तेज अन्य राजाओं में दुर्लभ है, इसलिये ये श्रृङ्गार आप ही को अत्यधिक सुशोभित होते हैं हम लोगों के लिये तो आप की सेवा ही सबसे बड़ी शोभा है ॥ ७६ ॥

"O King ! your beauty, glory, decoration and brightness can not be found in other kings So this decoration is very well sitted to you For us your service is the greatest thing" (76)

पद्य—कूपद मीनंते कडलोळिप्पेम्मय । पापव लोपिसि लेंदु ॥
कृपतनदोळिह्लिगेयिद्दे स्वामि म । हा पवित्र गळादेवेंदा ॥ ७७ ॥

अर्थ— स्वामिन् ! हम लोग कूप मण्डूक व मत्स्य के समान इस समुद्र में रहते हैं इसलिये हम लोगों के पापों को नाश करने के लिये दयार्द्र होकर आप पधारे हैं। हम लोग आपके दर्शन से परम पवित्र हो गये। हम लोगों के प्रति आपने बहुत बड़ी कृपा की ॥ ७७ ॥

"O Master ! we live in this ocean like frogs of well and fishes So you have kindly come here to remove our sins We are now pure by your visit. You have done great kindness to us" (77)

पद्य—नसुनगुतवनिगे कुळ्ळिर गोडिसि सं । तसिगळे नी कुळ्ळिरेंदा ॥
वसुधेंद्ररुरे मेच्चि वरतनु कुळितनु । ल्लसदि तन्नय मंत्रिसहित ॥ ७८ ॥

अर्थ—इस प्रकार प्रार्थना करने से भरत प्रसन्न होकर हंसते हुये उसके बैठने के लिये आसन दिलवाया। वरतनु भी राजा की आज्ञा पाकर मंत्री सहित निर्दिष्ट आसन पर बैठ गया ॥ ७८ ॥

King Bharat was very much pleased with him Praying thus and gave a seat for him to sit on Vartanu, getting the permission of the king sat down with his minister upon his fired seat (78)

पद्य—मागधांकन कुळ्ळिरेंदु भूपति बुद्धि । सागरांकन नोडलवनु ॥
भोगदेवेंद्र केळ् वरतनुसुर निन्न । भोगकोप्पुव भृत्यनेंदा ॥ ७९ ॥

पद्य—मृदु चित्तनहुदु सुमार्गियहुदु निन्न । पद पद्महित नडुदिवना ॥
पदुळदि मागधामर तंद सेवे दो । ड्डदु स्वामि परिभाविसि ॥ ८० ॥

अर्थ—भरतेश जी वरतनु को आसन दिलाने के पश्चात् मागधामर के लिये भी आसन मँगवाकर बैठने की आज्ञा दिया और उसी समय मंत्री बुद्धिसागर की ओर दृष्टि पात किया। दृष्टि पात करते ही बुद्धिसागर मंत्री ने राजा के अभिप्राय को समझकर कहने लगा कि स्वामिन्! यह वरतनु व्यंतर आप के भोग के लिये योग्य सेवक है। यह परम विनीत व सज्जन होकर आपके चरण कमलों का हितकारी है। और मागधामर ने सेवा रूप में जो भेंट लाया है वह भी बहुत बड़ी बात है ॥ ७९-८० ॥

After seating Vartanu, king Bharat seated Magdhamar also and saw at that time towards his minister named Budhisagar Minister Buddhisagar having understood king Bharat's indication, began to say, "O Master ! Vartanu vyantar is a suitable person for yonr service. He is very humble and gentle and is benifical to you Magadhamar, who has brought this present for you, has done great service to you" (79 80)

पद्य—निन्नसेवेयनेरडिल्लदे माळ्प सं । पन्न रिवरु नीनेबल्ले ॥
चेन्नागि पोरेयबेकि वर निब्बरनेंदु । बिन्नविसिद नोल्दुमंत्रि ॥ ८१ ॥

अर्थ—मंत्री ने युक्ति के साथ भरत जी से पुनः कहा कि हे राजन्! ये दोनों (मागध व वरतनु) आप की सेवा अभेद रूप से करेंगे अतः इन लोगों की रक्षा अच्छी तरह से होनी चाहिये ॥ ८१ ॥

The minister said to king Bharat again, "O King ! both of them shall serve you contineously So they should be ensured their protection". (81)

पद्य—नावु माडुव सेवेयेनुंटु स्वामिगे । सेवक रल्पने मंत्रि ॥
ई वाक्य वेंब मन्नणेयित्ते नीनेंदु । ताविब्ब रोसेदु नुडिदरु ॥ ८२ ॥

अर्थ—इन वाक्यों को सुनकर विनम्र होकर वरतनु ने कहा कि मंत्री! मैं अल्पज्ञ आपकी सेवा क्या कर सकता हूँ? आप लोगों की सेवा योग्य मेरे पास कौन सी वस्तु है? आपकी सेवा के लिये तो यों ही अनेक विशेषज्ञ सेवक हैं। मेरे साथ जो कुछ थोड़ी सी वस्तु आप देख रहे हैं यह तो उपहार मात्र है ॥ ८२ ॥

Having heared it, Vartanu very humbly soid, "Minister ! what service may I render to you ? What thing is with me to serve you ? There are a number of able men to serve you Whatever you are seeing with me, is only present" (82)

पद्य—वरतनु सुरनिंदु तन्नूरो पोगलि । वरलि मुँदिन वीडिनेडेगे ॥
हरुपदि वील्कोडें दोयगे वुद्धिसा । गर मंत्रि विन्नविसिदनु ॥ ८३ ॥

अर्थ—वुद्धिसागर मंत्री ने कहा कि हे राजन् ! वरतनु को अपने राज्य में सुख पूर्वक रहने की आज्ञा देकर छुट्टी दे दीजिये । और यदि आप की इच्छा हो तो आगे के मुकाम पर वुला लीजिये ॥ ८३ ॥

Buddhisagar, the minister said, "O King ! kindly set Varatanu free to live in his own state happily. If you want him, ask him to come on the next halt" (83)

पद्य—इत्त वारै वरतनु नाम येंदु त । ञोत्तिगे राजेंद्र करेदु ॥
इत्तना भरण दिव्यांवर गळ नोल्प । मोत्तद नृपरतिं माडे ॥ ८४ ॥

अर्थ—भरत जी वरतनु को प्रेम पूर्वक अपने पास वुला लिया और अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों को पारितोषिक रूप में देकर उनका सन्मान किया ॥ ८४ ॥

King Bharat called Varatanu to him very affectionately and honoured him by giving many kinds of precious jewells and dresses (84)

पद्य—अवन सचिव गुडगोरे यित्तु वरतनु । भवनव होक्कु वारेंदा ॥
तवक दोळव नाळिनवन करेसिद नो । प्पुव सुरकीर्ति येंववना ॥ ८५ ॥

अर्थ—तत्पचात् वरतनु के मंत्री को भी वुलाकर अनेक प्रकारके वस्त्राभूषणों को पारितोषिक रूप में दे दिया तव वरतनु अपने मंत्री के साथ भरत के चरणों में नमस्कार करके 'सुरकीर्ति' नामक व्यंतर को वुलाकर कहा कि तुम महाराज भरत की सेवा में रहो ॥ ८५ ॥

King Bharat, after that calling the minister of Vartanu also, awarded him with precious things Varatanu, calling Surkirti, a vyantar said, "Live in the service of the king" (85)

पद्य—चरण केरगिसि देवरहत्ति रिवनिवरु । तिरलि नानेयूतप्पेनेंद्रा ॥
भरतेशगेरगि सचिव गूडि गोडना । वरतनु लेसु लेसेनलु ॥ ८६ ॥

अर्थ—वरतनु उसे भरत की सेवा में समर्पित करके कहा कि स्वामिन् ! अब मैं आप की आज्ञानुसार अपने राज्य को जा रहा हूँ और वहाँ से शीघ्र ही लौट आऊँगा । हमारे आने पर्यन्त मेरे प्रतिनिधि 'सुरकीर्ति' व्यंतर आप की सेवा में है । यह कहकर अपने मंत्री को साथ में लेकर वहाँ से प्रस्थान कर दिया ॥ ८६ ॥

Varatanu, offering him into the service of king Bharat said, "Master ! now I am going to my state according to your permission and will return soon Till I come back, my representative Surkirti will remain in your service''. Having said, he s-t out with his minister. (86)

पद्य—निंद मात्रवे निन्ने मागधांकित हो । गेंद ट्टिदेवु होदनहुदु ॥
चंदगाणिसिदनु कार्यव वळलिद । नेंदोळ्प नुडिदना नृपति ॥ ८७ ॥

अर्थ—वरतनु के जाने के बाद भरत ने मंत्री से कहा कि यह मागधामर अत्यधिक विश्वास पात्र है; क्योंकि कल मागधामर सेना में ही मुकाम किया था इतने में वह वरतनु के यहाँ जाकर उसे लाया फिर भी विश्रान्ति नहीं लिया । अतः अब वह बहुत थका होगा ॥ ८७ ॥

After Varatanu was gone, Bharat said to his minister, "Magadhamar is extremely reliable, because yesterday he halted in the army even, today he brought brought Varatanu here, still he did not take rest. So he might be very much tired" (87)

पद्य—आ वचनके मंत्रि योसेदु नी माडिद । सेवेय नरियद दोरेये ॥
पाव नादना मागधामर नेंदु । भूवरगेदेदट्टिसिदनु ॥ ८८ ॥

अर्थ—भरत के इस वचन को सुनकर बुद्धिसागर कहने लगा कि राजन् ! यह बड़ा विवेकी है आपकी सेवा को भली भाँति जानता है और उसका उपयोग करके परम पुनीत होगया ॥ ८८ ॥

Buddhisagar said to hear Bharat's wish, "King ! he is very discriminating and knows your service quite well and has become quite pious to use that." (88)

पद्य—निन्न सेवेगे मलवागि वर्तिसुवुदु । मुन्न माडिद पुण्यवेनगे ॥
निन्नडियाने वळल्के यिल्लदव । तन्न विश्वास व मेरेदा ॥ ८९ ॥

अर्थ--इसी समय मागध ने कहा कि स्वामिन् ! आपकी सेवा करने का जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है मन्मुख में यह मेरे पूर्वोपार्जित पुण्यों का फल है । आप के चरणों की साक्षी देकर मैं कहता हूँ कि मुझे कोई थकावट नहीं है । मेरी हार्दिक इच्छा यही है कि प्रतिक्षण आप की सेवा में अनवरत लगा रहूँ ॥ ८९ ॥

At the same time Magadhamar said, "Master ! the opportunity of serving you is really as a result of my previous good deeds I swear by your honour that I am not tired My desire is that I should always remain in your service" *(89)*

पद्य—आगलै हीगे बारेंदु तन्नोत्तिगे । मागधांक ननोलदु करेदु ॥
रागिसि मंडेदडहि नन्न भूत से । नागण करमु नीनेंदा ॥ ९० ॥
व्यंतर मुख्यरिगाळु वंद्य निन्न । पिंतोलग सलवुदवर्गे ॥
मुंतन तेज मन्नणे निन्न देंदु भू । कांत नुडिद नेन्नरोसेये ॥ ९१ ॥

अर्थ—भरतेश्वर ने अस्तु ! इधर आवो ! ऐसा बुलाकर उसकी पीठ ठोंकते हुये कहा कि मागध ? तुमसे मैं प्रसन्न होगया हूं । आज से मैं अपनी व्यंतर सेना का अधिपति तुम्हें बनाता हूँ । आज से जितने भी व्यंतराधिपति हमारे आधीन होंगे, उनको तुम्हारे दरबार में उपस्थिति करेंगे । सर्व प्रथम मान सन्मान तुम्हारे लिए किया जायगा । तत्पश्चात् वरतनु को दिया जायगा ॥९०-९१॥

King Bharat called him nearer and putting his hands upon his back said, "O Magadh ! I am much pleased with you From today I appoint you the commander of my vyantar army From today all the vyantar nobles shall be under me and they will be presented in your court First of all, you will be honoured and after Varatanu *(90-91)*

पद्य—कडलोळ गिर्द व्यंतररिगे नीनेन । कोडहेळ्दुद नोलदु कोडुवे ॥
तडेयेंदरद तडेवेनु निन्न नुडियाना । नेडहेनु मन्निपेनेंदा ॥ ९२ ॥

अर्थ—समुद्र में रहनेवाले व्यंतरों को जो कुछ भी देने के लिये तुम कहोगे वही दे दिया जायगा । जहाँ तुम उस सम्बन्ध में रोकने के लिये कहोगे हम भी रोक देंगे । अर्थात् तुम्हारी सलाह के अनुसार सब कार्य करेंगे ॥ ९२ ॥

"Whatever you will desire to give to sea living vyantars, that will be given Where ever you will desire to check, there it will be stopped. That is to say I will work according to your advice" (92)

पद्य—एरविल्ल दिंदु मागध नीनु सेवे मा । ळ्पिरविगे नानंदु निन्ना ॥
दोरेगेडे नुडिदुद नेनेदेदे नोवुदु । गुरु हंस नाथाणे येंदा ॥ ६३ ॥

अर्थ—हे मागध ! सचमुच में तुम अभिन्न हृदय से मेरी सेवा कर रहे हो, ऐसी अवस्था में भी उस दिन राजाओं के सामने तुम्हारे लिये जो कठोर शब्द मैंने बोल दिया था, परमात्मा की शपथ है कि मेरे हृदय में उसके लिये पश्चाताप हो रहा है ॥ ९३ ॥

"O Magadh ! you are really serving me whole heartedly. By God I am repenting upon, what I rebuked you on that day in the meeting before other princes" (93)

पद्य—नीनेन नुडिदे नन्नोडेये ना निन्नन । ज्ञानदि जरेदिद्दे नंदु ॥
आ नोवु ननगिल्ल नीनद मरेयेंदु । तानंघ्रियोळु मंडेयिट्टा ॥ ६४ ॥

अर्थ—इस भरतेश्वर के वचन को सुनकर मागधामर कहने लगा कि स्वामिन् ! आपने ऐसे कौन से कठोर वचन बोले हैं ? मैने ही अपराध किया था । मैं पहले दिन मूर्खता वश आपके प्रति तिरस्कार युक्त अनेक वचन कहा था, उसके लिये आपने मुझे प्रायश्चित दिया था । इसमें क्या दोष है ? स्वामिन् ! उसका मुझे जरा भी दुःख नहीं । आप भी उसे भूल जाइये । इस प्रकार कहते हुये मागधामर ने भरतेश्वर के चरणों पर मस्तक रक्खा ॥ ६४

Magadhamar, to hear these words of king Bharat began to say, "O Master ! what harsh words did you use ? It was I who was at fault I had spoken many insulting words agains thee on the previous day, due to my folly For you had given me repentence Where is your fault ? My Lord ! I am not troubled in the least for that. Kindly forget that" Saying thus Magadhamar bowed his head into the feet of king Bharat (94)

पद्य—आ नृप तानिट्ट हारव कोट्टन । नून भूषणव बेरित्ता ॥
एन कोडनु चक्रि व्यंत राग्रणियेंदुदु । विपीन रुद कोट्ट नोडने ॥ ६५ ॥

अर्थ—उसी समय अपने कंठ से एक रत्नहार को निकालकर मागधामर को सम्राट ने दे दिया और सर्वजन साक्षी से उसे 'व्यंतराग्रेश्वर' इस उपाधि से अलंकृत किया ॥ ९५ ॥

King, at the very moment, gave a jewell to Magadhamar, from his neck Then he offered him the title of "Vyantargreshvar" (king of vyantaras) (95)

पद्य—बळ्ळ बिरुदिद व्यंतराग्रणियेंबुदु । सळ्ळुदातगे देव निन्न ॥
ओलिदव नोलैसिदा फलवीगळे । फलसितेंदरु सर्वरोसेदु ॥ ९६ ॥

अर्थ—तब दरबार के सब लोग कहने लगे कि स्वामिन् ! यह बहुत बड़ी उपाधि है, इसके लिये यह मागधामर सर्वथा योग्य है। उसने आपकी हृदय से जो सेवा की है, वह आज सार्थक हो गई है। ऐसा कहकर सभी लोग मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा किया ॥ ९६ ॥

Then the courtmen began to say, "Master ! it is a great title and Magadhamar is a proper person for it He has served thee whole heartedly That bore fruits today " Saying thus all of them began to praise Magadhamar (96)

पद्य—बीडिगे होगु विश्रामि सेंदु विनयव । नाडिद नोडने मागधगे ॥
कूडे पादके मणिदनु पुरेयडि नलि । दाडुतेयिद दनवनत्त ॥ ९७ ॥
मत्तुळिदवर नुचितदि बीळ्कोट्टु । चित्त दोळरु हन नेनेदु ॥
मुत्तिन गद्दुगेयिंदद्दु होक्कना । चित्त जोपमनु मंदिरवा ॥ ९८ ॥

अर्थ—इसके बाद सम्राट ने मागध को आज्ञा दी कि मागध ! जाओ ! अपने महल में जाकर विश्रान्ति लो। मागध उनकी आज्ञा पाकर उन्हें नमस्कार करके अपने महल की ओर चला गया। बाकी सब दरबारियों को भी समुचित रूप से विदाकर सम्राट मोती के निर्मित सिंहासन से उठकर अपने महल में प्रवेश कर गये ॥ ९७-९८ ॥

The king ordered Magadh, "O Magadh ! go and take rest in your palace " Magdh, being permitted by him, saluted him and proceeded towards his home The king, then seeing off got up from his precious throne and proceeded to his palace (97-98)

पद्य—अंतःपुरद पेंगळुगूडि तन्नय । संतान गूडि भोगिसुत ॥
चिंते यिल्लदं केलदिवस वल्लिद नो। रंतात्म भावने वेरिसि ॥ ९९ ॥

अर्थ—इस प्रकार सम्राट ने अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ व अपनी संतानों के साथ भोग व विलास से युक्त होकर कुछ दिन बहुत आनन्द के साथ वहीं व्यतीत किया ॥ ९९ ॥

Thus the king spent there many days of his life in enjoying his family life with his children and queens. (99)

पद्य—बेळ्देदुद् नरिदर्क कीर्ति राजगे राज । कुल मेच्चलोंदु दिनदोळ्‌ ॥
सुललित यज्ञोपवीत कल्याणव । निळे पुरे यिड लेसगिदनु ॥ १०० ॥
ओदु सादनेय सुज्जगिसुत नीनिन्नु । बोधग्रह दोळिहुदेंदु ॥
दादि गवनिगू बेर्मनेमाडि कोडिसि नि। वेदिसिदनु नरनाथा ॥ १०१ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति अब बड़ा होगया। इसलिये राजकुल के लिये अनुकूल मुहूर्त देखकर यज्ञोपवीत संस्कार कराया। उत्सव की शोभा को देखकर सब लोग जयजयकार करने लगे। तदनंतर अर्ककीर्ति के लिये अध्ययनशाला की व्यवस्था की गई। और उसको आज्ञा दी गई कि अब तुम अपना निवास बोधगृह में करो और परिश्रम पूर्वक विद्याध्ययन करो। साथ ही अर्ककीर्ति व उसकी दासी के लिये अलग निवास स्थान का भी निर्माण कराया गया ॥१००-१०१॥

Thinking that 'Arkkirti' had grown up, so he at a proper time performed the thread ceremoney of the prince Seeing the decorations and glory of the ceremoney people produced the slogans of 'Jai'. After that a school was managed for Arkkirti. He was asked to live in the school hostel and study earnestly. Besides that residence for Arkkirti and his maid was prepared separately. (100-101)

पद्य—बंदर्क कीतिय पौजेंब नुडियद् । दिदिदु माण्दुदु कूडे ॥
मुंदादिराजन पौजेंदु सतियरे । संदोह कायुतोंदु वार्ते ॥ १०२ ॥

अर्थ—इसके पूर्व अन्तःपुर की सर्व स्त्रियां अर्ककीर्ति की सेना कहलाती थीं। अब अर्ककीर्ति स्नातक हुआ है विद्याध्ययन कर रहा है। इसलिये वह सेना अब आदिराज की सेना कहलायेगी ॥ १०२ ॥

Before that all the maidens of inner apartment of the royal palace were known as the army of Arkkirti Now Arkkirti is a student He is studying and is in persuence of knowledge. Hence that army will be that of prince 'AdiRaj' (102)

पद्य—पुरुहूतदिक्किन दक्षिण दिक्किन । शरधि पालर गेल्दु नृपति ॥
वरुण दिक्किगे होगलेळ्‌ सिद्धनिळिगे। वरतनु साध्यद संधि ॥ १०३ ॥

अर्थ—इस प्रकार बहुत आनन्द व विनोद के साथ भरतेश्वर का समय व्यतीत हो रहा है। पूर्व व दक्षिण के अधिपतियों को वश करने के पश्चात् अब सम्राट पश्चिम दिशा की ओर जाने का विचार करने लगे ॥ १०३ ॥

Thus very happily, the time of king Bharat is beeing spent. After getting victory over the kings of East and South, the king thought to proceed towards western side (103)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळ्दिवर पाप। बीज निर्नाशन बहुदु ॥
तेज बहुदु पुण्य बहुदु मुँदोलिदप। राजितेश्वरन काणुवरु ॥ १०४ ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेंगे उनका पाप, बीज नष्ट होगा। तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य बन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेंगे ॥ १०४ ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation) (104)

पद्य—प्रेमदिंदिद नोदिदरे पाडिदरे केळ्द। रामोद वैदुवरवरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंदर। स्वामिय कांबरतिंयोळु ॥ १०५ ॥

अर्थ—इस कथा को जो प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे वे आमोद को प्राप्त होंगे और नियम से देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ १०५ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (105)

पद्य—ईरैदु दिक्कनु मूरुलोकव नोंदे। वारि तुंबुव गन महिमा ॥
आरु बल्लरु निन्न घनव नन्नोळगिरु। धीर चिदम्बर पुरुषा ॥ १०६ ॥

अर्थ—भव्य जीवों को यह उत्कंठा होनी होगी कि भरतेश्वर को सर्वत्र विजय क्यो प्राप्त होती है ? पूर्वसमुद्र में गये वहाँ से मागधामर को सेवक बना लिया। दक्षिण समुद्र में जाकर वरतनु को सेवक बना लिया। इस प्रकार हर जगह विजय का कारण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर यही है कि पूर्वोपार्जित पुण्य का प्रभाव है। उस जन्म में भरत जी अनेक प्रकार की शुभ क्रियाओं के द्वारा अपनी आत्माको निर्मल किया था। इस जन्म में आत्मा व शरीरको भिन्न समझ कर रात दिन परमात्मा का चिंतन करते हैं। इस प्रकार भव्य जीवों से देशभूषण मुनि कहते हैं कि

आप लोग भी पुण्य संचय करने के लिये निम्न लिखित भावना करें। हे परमात्मन्! आप में अचित्य शक्ति है। दश दिशाओं व तीनों लोकों में एक साथ हो व्याप्त होने का सामर्थ्य आप धारण करते हैं। आप की अपार महिमा को जगत् में विरले ही प्राणी जानते हैं। इस लिये हे चिदंबर पुरुष सिद्ध भगवान्! आप मेरे हृदय में सर्वदा बने रहिये। इस प्रकार की भावना करने से आप लोग ऐहि लौकिक व पारलौकिक सुख को भोग कर के अन्त में शाश्वत् परम पद (मोक्ष) की प्राप्ति कर सकेंगे ॥ १०६ ॥

People might be thinking why king Bharat is always victorious? He made Magadh in the Eastern ocean. His own subordinate and varatance ot Southern ocean was also put down Thus every where he was victorious Why is it so?

The answer to this question is that his is the influence of good actions of his previous life. In that life, king Bharat had very well sanctified his soul with innumberable deeds

Now in this life also, he broods over the problem of God, not attaching any more inportance to his body and considering it separate from soul

Thus Deshblushan hermit says to the people of this world to follow the following ideas, te be sacred.

"O Lord ! you possess powers beyond human mind. Thou art possesser of power to be omnipresent through out all the ten directions and three lokas Only few people understand your glory in this world. So O Lord ! Thou reside in my heart for ever."

By thinking thus, you will enjoy all the worldly as well as world beyond pleasures and will attain salvation in the end. (106)

॥ इति द्वितीय भाग का सातवां अध्याय वरतनु साध्य संधि संपूर्ण ॥

आठवां अध्याय

❀ प्रभा सागर संधि ❀

पद्य—कमलषट्कगळैवत्तरोळ्गेसे । दमलिनाक्षरगळैवत्ता ॥
कमदोळीक्षिसुव सन्मतिद्योह लोक वि । कमने निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—हे सिद्धात्मन् ! षट् कमलों के पचास दलों पर अंकित पचास शुभ वर्णों का ध्यान करके जो प्राणी आत्म साक्षात्कार करते हैं वे ही आप के दर्शन को प्राप्त करते हैं। इसलिये हे निरंजन सिद्ध भगवन् ! मुझे क्रम से सद्बुद्धि प्रदान कीजिये, जिससे मैं आपका दर्शन कर सकूं ॥ १ ॥

"O Lord Siddhatman ! Those human beings, who realise their ownselves by meditating fifty beautiful words printed on a six lotus flowers containing fifty petales, realy attain oneness with you. Hence O Lord Niranjan Siddh ! thou bestow upon me right type of intelligence, so that I may have your darshan" (1)

पद्य—पोडविवागल* नादमय वाद्यवंनेत्ति । वडिदु वलुमेरिद्वळेसे ॥
पडुवन दिक्किगे मुखवागि दंडेचि । नडेदना+ राज मार्तंडा ॥ २ ॥

अर्थ—प्रस्थान काल में भेरी तथा अनेक वाद्यों के बजने से इतना घोर शब्द हुआ कि वह शब्द तीनों लोकों तथा दशों दिशाओं में व्याप्त होगया ॥ २ ॥

At the time of departure, bheris and other musical instruments produced so loud sounds that it resounded all the three lokas and ten directions. (2)

पद्य—किरिय कुमारन पोजु हिंदेयुतरे । नेरद कुमारतनोडने ॥
मिरुप पल्लक्कि योळेयुतरे दोरे मोडि । मेरेये नेरळ्दिना चक्रि ॥ ३ ॥

अर्थ—सम्राट सेना पश्चिम दिशा की ओर प्रयाण की। राजसूर्य भरत पालकी पर चढ़कर आनन्द के साथ जारहे हैं ॥ ३ ॥

---

* वाद्य　　　+ हलयुग सिंहा

At the same moment the army set out in the east King Bharat like a sun is proceeding on chariot with great joy. (3)

पद्य—नवतेज वडेदुब्बि नोळु मागधामर । ध्रु व गति सुरकीर्ति वेरसि ॥
लवल विकेयोळु मुट्टोलैसि वरेनोडु । तवनीश रोडेय नेय्दिदनु ॥ ४ ॥

अर्थ—राजकुमार आदिराज की सेना पीछे से आरही है । श्री भरतेश जी के साथ मागध, ध्रु वगति तथा सुरकीर्ति ये सब शीघ्रता पूर्वक जारहे हैं ॥ ४ ॥

The army of son of prince 'Adinath' is following Magadh, Dhruvgati and Surkirti all are accompanying king Bharat (4)

पद्य—मगधन नोडुत कांबोज नोडनिष्टु । नगुत माळ्वन विन्नहके ॥
मिगे सलेय ळुगुत वरुतिर्द नोय्यगो । य्यगे राज ठीवि राजिसलु ॥ ५ ॥

अर्थ—जिस समय भरत जी मागध, काम्बोज तथा माढ़व देशीय राजाओं के मध्य में सबको देखकर हँसते हुये जारहे थे उस समय की शोभा अपार थी ॥ ५ ॥

It looked extremely beautiful, when Bharatji was passing through the chieftains of Magadh Kamboj and Madav with a bright smiling face. (5)

पद्य—चेर चोळर नुडिगेळुत नडेदह । म्मीर न पडेय निट्टिसुत ॥
केरळ कीर्तिसे मेच्चुत राज मं । दार वंदनु गमकदोळु ॥ ६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी चेर, चोर तथा केरल देशीय राजाओं के द्वारा किये हुये स्तुति को सुनते हुये तथा मेरु पर्वत के समान गंभीरता को धारण किये हुये अत्यन्त गौरव के साथ जा रहे हैं ॥ ६ ॥

King Bharat, listening to the prayers offered by the chieftains of cher, chora, and kerala, and possessing the graveness like Merumount, is going in glorified way. (6)

पद्य—अंग देशाव्य न नीक्षिसुतोम्मे क । ळिंग भूवरन निट्टिसुत ॥
वंगाळपतिय नोडुत लीलेयिंद रा । जांग लक्षण नेय्दुतिर्दा ॥ ७ ॥

अर्थ—श्री भरत जी राजांग लक्षणों से युक्त होकर अंग और वंग देशीय राजाओं को देखते हुये प्रेम पूर्वक जारहे हैं ॥ ७ ॥

King Bharat combined with the signs of royal peosonage, is passing through the chieftains of Anga and Vanga (7)

पद्य—विडिसुव नल्लि वीडनेल्लर नोव । विडिसुवंतादळाधिपनु ॥
वोडोचि नडेसुव नेल्लरानंदद व । नडेसुवंतेड्य मेच्चुवळु ॥ ८ ॥

अर्थ—सभी सैनिकों को सुख शान्ति की प्राप्ति हो इस अभिप्राय से सेनापति सेना को बीच बीच में रोकते हुये आनन्द पूवक ले जा रहे हैं ॥ ८ ॥

The commander of the army is advancing with the army, halting at places in the way to comfort the soldiers (8)

पद्य—तंपिनोळगे नडेसुवनु सेनेयनु ते । रंप नरिदु विडिसुवनु ॥
इंपिंद हलनु मक्कळ तायि नडेसुवं । तें पडेवळल नोळ्ळिदनो ॥ ९ ॥

अर्थ—जिस प्रकार पिता अपने अनेक पुत्रों पर बराबर प्रेम रखता है उसी प्रकार सेनापति जयकुमार अपनी सारी सेना पर सम भाव रखकर धूप में उसे विश्रान्ति दिलाते हुये ठंडे में ही सेना को ले जारहे हैं ॥ ९ ॥

Jaikumar, the commander of the army is taking the army ahead very affectionately, halting them in the same way as a father treats his sons affectionately (9)

पद्य—हिंदे बंदादि राजन दळवनु नडु । होदि वप्प रसन पौजा ॥
अंदंदिगार युतुतोय्यने दळपति । मुंदेयुदु तिद नोप्पदोळु ॥ १० ॥

अर्थ—पीछे से आदिराज की सेना आ रही है । भरत जी सेना के बीच में आनन्द पूर्वक आ रहे हैं । सेनापति दोनों सेनाओं की रक्षा करते हुये सावधानी पूर्वक सेना को ले जारहे हैं ॥ १० ॥

The army of Adiraj is following behind king Bharat is in the mid of the army The commander is marching with both the armies very carefully (10)

पद्य—हयगज रथ भटरनु नोयदंते रू । दिय भूप रासरदंते ॥
जयराज नडेसिद नवनेनु चक्रव । र्तिय सेनापति रत्नवरते ॥ ११ ॥

अर्थ—इतना ही क्यों ? जयकुमार सेनापति सेना के हाथी, घोड़े तथा अन्य पशुओं तक की

चिन्ता में रातों दिन लगा रहकर किसी प्रकार का कष्ट किसी को नहीं होने देता था। तभी तो उसका नाम सेनापति रत्न था ॥ ११ ॥

Why only this! Jaikumar, the commander is busy through out the day and night in looking after the comferts of even elephants, horses and other animals. That is why his name is 'Senapali Ratna" (11)

पद्य—ठावरि दल्लल्लि विडुतेय्दु बागोंदु । पावन मप्प तानदोळ् ॥
भूवराग्रणिय पेंडिरोळोर्व चंद्रिका । देवि पेत्तळु वरसुतना ॥ १२ ॥

अर्थ—इस तरह बीच बीच में सुख पूर्वक मुकाम करती हुई श्री भरतेश जी की सेना जब आगे बढ़ रही थी तो एक मुकाम में इनकी रानी चन्द्रिका देवी को मार्ग में ही पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई ॥ १२ ॥

Thus halting at places in the way when the army of king Bharat was marching ahead, a son was born to the queen named Chandrika Devi (12)

पद्य—एसगितागळे गुडितोरण वल्लल्लि । मसगितु वाद्य निनादा ॥
देशेतुंबि विडु सेनेयोळ् कुमारना । दोसगे हब्बितु चक्रधरन॥ १३ ॥

अर्थ—इस प्रसन्नता के उपलक्षण में जिन मंदिर में तोरणादि से सजावट करके हर्ष को सूचित करने वाले अनेक वाद्य वजने लगे। सर्वत्र भरत के पुत्रोत्पत्ति का शुभसमाचार फैल गया ॥ १३ ॥

In connection with this revelory, innumerable musical instruments began to be played in the Jin temple decorated with toran etc. The news of the borth of the son of king Bharat spread out (13)

पद्य—वरतनु वंदाग चक्रिय कंडेन्न । पुरद सन्निधियिंद मुंदे ॥
तेरळि देडेयोळु स्वामिगे सुतनादनु । करनाने निभाग्यनेंदा ॥ १४ ॥

अर्थ—वरतनु उस समय बहुत हर्ष के साथ राजा भरत के सामने आकर कहने लगा कि स्वामिन्! हमारे नगरके पास पुत्र का जन्म न होकर अन्यत्र हुआ है। इसलिये मैं बहुत भाग्य शून्य दिखाई देरहा हूं ॥ १४ ॥

With great pleasure, Varatanu came before the king and began saying, "O master ! the son is born elsewhere and not near my city. So I am very unlucky." (14)
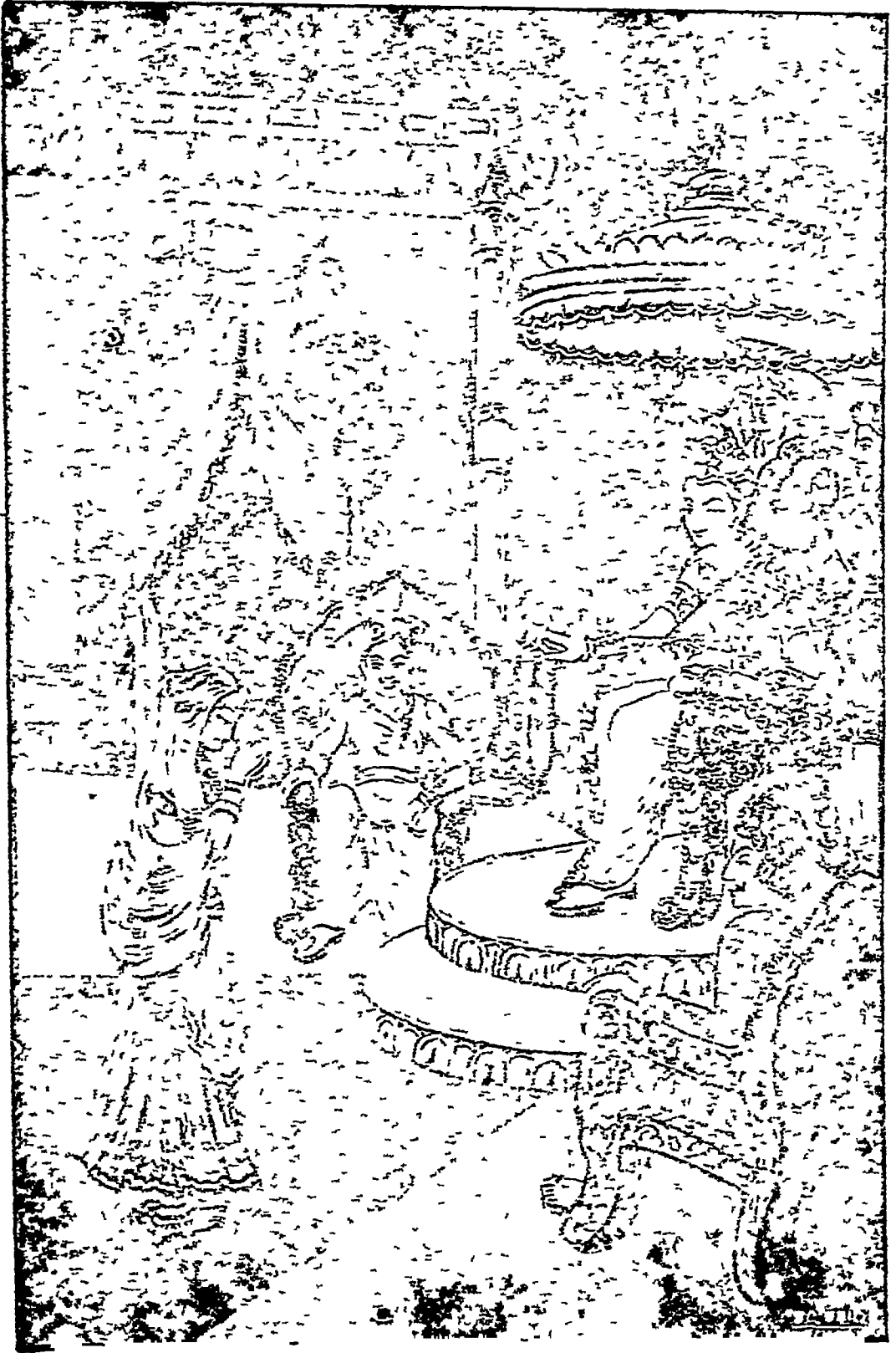
पुत्र रत्न की उत्पत्ति की सूचना दासी के द्वारा राजा भरत को मिलते ही दासी को अपने गले से रत्न हार उतार कर खुशी में दे रहे हैं।

श्रीमती रामकली जैन धर्मपत्नी बा० धर्मचन्द जैन बाराबंकी द्वारा प्राप्त हुआ।

पद्य—स्वामिगे सुतनाद् रुछपे सहित नन्न । भूमिकितेत्ति वंदोसेदु ॥
आ महाविभुवय कारव रानुरे मागा । धामं रन्नंतेनोंतवने ॥ १५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी को पुत्र रत्न प्राप्त सुनकर अनेक देशीय राजा दरबार में आकर आनन्द मना रहे हैं। उन सभी वैभवों को देखने का सौभाग्य मागधामर को प्राप्त हुआ है क्योंकि उसने पूर्व जन्म में बहुत पुण्य संचित कर लिया था ॥ १५ ॥

Chieftains of different kindoms had deen celebrating the birth of son to king Bharat "Magadhamar has been fortunate enough to witness all those glories, because he has gathered virtues of previous life" *(15)*

पद्य—तेगेयिद् केनूर्गे कशकेयूदि सारव । स्तु गळंतु वहनेंदु नमिसि ॥
मगुळ्दाग वरतनु होगदिरेन्नागो । सोगसि केळेंदना चक्रि ॥ १६ ॥

अर्थ—वरतनु इस प्रकार कहकर पुनः राजा से प्रार्थना करने लगा कि स्वामिन् ! मैं शीघ्र ही अपने नगर में जाकर जातकर्म उपहारों को लेकर आप की सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। इस वचन को सुनकर राजा ने कहा कि उपहारो की आवश्यकता नहीं है तुम यहीं रहो ॥ १६ ॥

Varatanu saying thus requested the king again, "O Lord I shall soon present myself with the presents of 'Jatkarm' when I return from home to your service The king hearing this said, presents are not needed, you should remain here" *(16)*

पद्य—उळपे येनधिकवै वरतनु मुंदिन्तु । वळकज्ज वुंटदरिंद ॥
तोलग देन्मोत्ति नोळिरु साकुनिन्नना । इळपे येल्लवु संदुदेंदा ॥ १७ ॥

अर्थ— श्री भरतेश जी वरतनु से कह रहे हैं कि आगे अधिक कार्य है। उसको संपन्न करने के लिये तुम्हारी परमावश्यकता है। अतः तुम यहीं रहो ॥ १७ ॥

King Bharat is saying to Vartanu, "There is a lot of work afterwards in completion of which you are badly needed So you please remain here" *(17)*

पद्य—नवनिधि गोडेय चतुर्दश रत्न गौ । रवने केळ् निनगदु पिरिदे ॥
नवगिण्डु भक्ति तोरितु संदु दिन्नवें । दवनाडि निंदनु मत्ते ॥ १८ ॥

अर्थ—वरतनु राजा भरत से कह रहा है कि स्वामिन् ! आप नवविधि के अधिपति हैं तथा आप के पास चौदह रत्न मौजूद हैं। यद्यपि आप को किसी वस्तु की आवश्कता नहीं है, पर मेरी भक्ति किस प्रकार पूरी हो ? मुझे तो आप की सेवा करनी चाहिये ॥ १८ ॥

Varatanu is saying to king Bharat" "my Lord ! you are master of Navabiddhi and have fourteen jewells, Though you need nothing, yet how should my devotion be satisfied" (18)

पद्य—भूमीश जातकर्मव नेसगिसिसत्ते । नाम कर्मद दिवसदोळु ॥
प्रेमदि पेसरिट्ट निवनु वृषभ सेन । नाम वृषभ राजनेंदु ॥ १९ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी आनन्द पूर्वक जातकर्म संस्कार को पूर्ण करके नाम करण संस्कार के दिन बहुत उत्सव करके पुत्र का नाम वृषभसेन, वृषभ राज इत्यादि रख दिया ॥ १९ ॥

King Bharat, after the performance of 'Jatkarm' ceremoney, named his son as Vrishabhsen or Vrishabh Raj very happily on the day of naming ceremoney (19)

पद्य—पौजेळ दरुदिंगळल्लि तडेदनादि । राज गोल्दु पयनवनु ॥
योजिसिदनु वेरे मनेगट्टि कोट्टरण । नोजेयोळिरिसि दनवना ॥ २० ॥

अर्थ—६ मास तक सेना वहाँ पर रुक गई। उसके बाद भरत जी आदिराज का विधिवत् उपनयन संस्कार कराकर विद्याध्ययन के लिये उन्हें गुरुकुल में प्रवेश करा दिया ॥ २० ॥

The army halted there for six months Then king Bharat, after performing the thread ceremoney of Adiraj, sent him to 'Gurukul' for study (20)

पद्य—सुतरिब्ब रोदु सादनेय नुज्जुगिसुत । पित नाज्ञेयोळु निदरत्त ॥
सतियर्गे वृषभ राजन दळवेंबोंदु । व्रत वार्तेयाय् तोळगित्त ॥ २१ ॥

अर्थ—भरत जी दोनों राजकुमारों के अध्ययन की समुचित व्यवस्था कर दिया। तत्पश्चात् दोनों पुत्र गुरुकुल में प्रविष्ट होकर विद्याध्ययन करने लगे ॥ २१ ॥

King Bharat managed well for the education of both the princes Then both the sons began to study in 'Gurukul' (21)

पद्य—आरु दिंगळिन मेले दंडेद् दल्लिंद । विरुदेद् भेरि स्रुळैसे ॥
हेरे देगेयदे नूँकि नडेदुदु कटक व । ल्देरपि नोळगे जात्रेयंते ॥ २२ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति व आदिराज ये दोनों छात्र वेष में अपने गुरु के साथ जारहे हैं। आदिराज की जो सेना थी वह अब वृषभकुमार की होकर इन्हीं के नामसे विख्यात होगई। छ माह बीत जाने के पश्चात् सेना अनेक गाजे बाजे के साथ इस प्रकार आगे बढ़ने लगी कि मानों बाढ़ आ जाने से नदी का पानी वेग के साथ बढ़ रहा हो॥ २२॥

Arkkirti and Adiraj, both the princes are going with the guru in their student gate The army of Adiraj is now known as that of Vrishabh Kumar. After six months were elapsed, the army marched forward, as if the water of a river in spate is advancing (22)

पद्य—वृषभराजन पौंजु हिंदियुदं नेरंदे पौं। रूपद कुवररिव्व रोडने॥
सुपिनगगदं शिविके योळेयुदे दृप्पम। सुपम कालाग्र नेयुदिदनु॥ २३॥

अर्थ—पीछे से वृषभराज की सेना आरही है और आगे श्री भरतेश जी श्वेत पालकी पर बैठकर आनन्द पूर्वक प्रयाण कर रहे हैं॥ ३॥

The army of Vrishabhraj is following King Bharat seated in white pealanguin is advancing. (23)

पद्य—खड्गव जडिदु नेजिय चारिवरिसुत। कडुपिनोळोलैसि वप्प॥
कडु पेंपिनरसु नरसुमक्कळु नोडुता चक्रि। तडेयदे मुंदेय दुतिर्दा॥ २४॥

अर्थ—बहुत से राजा तथा राज पुत्र अनेक घोड़ों पर बैठकर उसे नचाते हुये जा रहे हैं। उन सबों को देखते हुये श्री भरतेश जी आनन्द पूर्वक जारहे हैं॥ २४॥

Many kings and princes are riding on horseback, which were dancing King Bharat is happily proceeding looking them (24)

पद्य—हरिवंश दुग्र वंशद नाथ वंशद। कुरुवंशदरसुमक्कळनु॥
हरुषदि नोडुत बरुतिह निक्ष्वाकु। वरवंशदरसु मक्कळनु॥ २५॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत इक्ष्वाकु वंशीय हैं और उनके साथ जाने वाले सभी राजपुत्र इक्ष्वाकु वंशीय न होकर क्रमश: नाथ, हरिवंश, उग्र तथा कुरु वंशों में से हैं। इन लोगों को देखकर भरत जी अनेक प्रकार का विचार अपने मन में कर रहे हैं॥ २५॥

Chakravarti king Bharat belongs to the line of king Ichhavaku. The

princes accompanying him long to Nath, Harivansh, ugna, and kuru line in place of Ichhavaku King Bharat is thinking with in himself variously. (25)

पद्य—इवनुग्र वंश कुत्तम निव हरिवंश । कवतसनिव कुरुकुलके ॥
प्रवरनु नाथ वंशके पूज्य निवनेनु । तवर योचिसुतेयुदुतिर्दा ॥ २६ ॥
गंभीर निवनु पराक्रमि यिवनु गु । णांभोधियिव निवनेदु ॥
डंभरहित राजपुत्रर वगेवुत । जंभारियंतेय् दुतिर्दा ॥ २७ ॥

अर्थ – भरत जी अपने मन में सोच रहे हैं कि ये सब हरिवंश कुल के तिलक होकर कुवंश तथा नाथ वंश के भूषण हैं । ये पराक्रमी, सज्जन तथा निरभिमानी है ॥ २६-२७ ॥

King Bharat is thinking within himself, They being tilak of Harivansh Kula is an ornament of Kubansh as well as nathvansh He is glorious, gentle and vainless (26-27)

पद्य—तरणिय कंड तावरेयंतु चंद्रन । सिरिय कंडुत्पलदंते ॥
भरत राजन नोडि हिग्गुत राज पु । त्ररु बरुतिद्द रोलैसे ॥ २८ ॥

अर्थ—जिस प्रकार सूर्य के दर्शन से कमल तथा चन्द्रमा के दर्शन से कुमुदिनी प्रसन्न होकर विकसित हो जाती है उसी प्रकार श्री भरत जी के दर्शन मात्र से ही समस्त राजा व राजपुत्र परमानन्दित हो रहे हैं ॥ २८ ॥

Just as lotus is blossomed to see the sun and Kumudini to see the moon, similarly all the chieftains and princes are extremely pleased to see king Bharat (28)

पद्य—अहळ वाक्यवनाड राशेदोररु तम्मो । ळहित चेष्टेगळ काणिसरु ॥
महिम नोत्ति नोळ्ळोजेयोळु क्षत्रियर्कळु । त्राह दोळेयुतरु तिर्दराग ॥ २९ ॥

अर्थ—उत्तम वंश में उत्पन्न हुये ये सभी राजा भरत से अधिक बात-चीत एवं अहित चेष्टा नहीं करते हैं । अर्थात् शान्ति पूर्वक भरत जी के साथ प्रसन्न चित्त से जारहे हैं ॥ २९ ॥

These princes born is noble family do not think ill of king Bharat That is to say they are marching with him quitely. (29)

पद्य—हितवरवरु कोळकोडेगे चक्रिगे तवक । सुतवंश जाति क्षत्रियरु ॥
क्षितिप नष्टैसिरियिन्न वंशदिसम । युतरेयदुतिर्द रोप्पदोळु ॥ ३० ॥

अर्थ—इतना ही क्यों ? ये सभी राजा भरत जी के साथ रोटी-बेटी के व्यवहार के लिये योग्य क्षत्री हैं। अंतर केवल इतना ही है कि भरत के समान संपत्तिशाली नहीं हैं शेष किसी बात में कम नहीं हैं ॥ ३० ॥

Why only this ! all these princes are able kshattriya worthy of having matrimanial or dining relations with the king (30)

पद्य—विड्डतल्लिगल्लि दंडेत्ति नडेवुत पे। वंडेगूडि क्रमदोळु गमिसि ॥
कडेनूकि हलवु पयण दोळोय्यने वंदु। पडुवन वार्धिय कंडा ॥ ३१ ॥

अर्थ—बीच बीच में सेना को रोकते हुये आनन्द के साथ चलकर श्री भरत जी पश्चिम समुद्र तट पर पहुँच गये ॥ ३१ ॥

Halting his army at places in the way and enjoying the occasion, king Bharat reached the western sea shore (31)

पद्य—मागधांकन करे वरतनु वरलेंद। नागवंदु कैमुगिये ॥
सागर तीर दोळ्निंद वरिवंगों। दागि भूपतियितु नुडिदा॥ ३२ ॥

अर्थ—भरत जी वहाँ पहुँचते ही मागध व वरतनु को बुलवाया। इनके बुलाते ही दोनों सामने जाकर नमस्कार करके हाथ जोड़कर खड़े हो गये। तब राजा ने पूछा कि मागध! इस समुद्र में रहने वाला प्रभास देव कैसा है ? ॥ ३२ ॥

Bharatji sent for Magadh and varatanu as he reached there Both went there and stood with folded hands Then the king asked, " Magadh how is Prabhas Dev living in ocean (32)

पद्य—ई समुद्रद कुरुवदोळु बाळ्व नलै प्र। भास नेंदेनिप व्यंतरनु ॥
मासदेयुतंदेम्म कारवनो कडेयोळु। मीसि वप्पनो हेळिरेंदा ॥ ३३ ॥

अर्थ—वह सरलता से हमारे वश में हो जायगा या ढोंग रचकर बाद में वश में होगा ॥ ३३ ॥

"Will he be easily overcome or after great trouble" (33)

पद्य—उत्तम नवनु प्रभास देवनु निन्न। चित्तव नोलिस तक्कवनु ॥
सुत्तिन नुडियनु नाविन्न रेयदि नि। नोत्तिगेतहेवेंदरवरु ॥ ३४ ॥

पद्य—नीवेयुद् वेड निम्मय नाळिनवरोंदु । सेवेय माडलि नवगे ॥
नाववरनु नोडवेडवे येंदु स । द्भावदि नुडिदना चक्रि ॥ ३५ ॥

अर्थ—इस वाक्य को सुनकर मागध बोला कि स्वामिन् ! प्रभास देव सज्जन है । वह आप के साथ विरोध नहीं कर सकता । हम दोनों जाकर उसे आप की सेवा में उपस्थित करेंगे । ऐसा कहकर जाने की आज्ञा माँगने लगे । तब सद्भाव पूर्वक भरत जी कहने लगे कि इस कार्य के लिये तुम लोग मत जाओ । हमारे साथ जो तुम लोगों के प्रतिनिधि हैं अब की बार उन्हे भेजकर उन लोगों की परीक्षा कर लेनी चाहिये ॥३४-३५ ॥

Having heard this sentence Magadh spoke "master ! Prabhas Deva is gentle He can not oppose you Both of us shall go and present him back in your service, saying so they desired for the permission to set out The king Bharat began saying with great sincerity, "you should not go there Send your representatives and thus test him" (34-35)

पद्य—प्रभवगति वा सुरकीर्तिं वा होगि नी । वचन निल्लिगे तहुदेंदु ॥
सुविनय दिंद बील्कोट्टना सेवेगु । त्सविसुने यूदिदरवरित्त ॥ ३६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी उसी समय प्रभास व सुरकीर्ति को बुलाकर आज्ञा दिया कि तुम दोनों जाकर प्रभास देव को ले आओ । राजा के वचन को सुनते ही वे दोनों उनकी आज्ञा शिरो धार्य करके वहाँ से चल दिये ॥ ३६ ॥

King Bharat sent for Prabhas and surkirti and ordered them to bring Prabhas Deva with them Having heard the order they set out in obedience of it. (36)

पद्य—एल्लर बील्कोट्टु कुवररिब्बर मुद्दु । लल्ले योळ्बीडिगे कळुहि ॥
पल्लक्कियिळिद् रमनेय होक्कनु कब्बु । बिल्लन रूप नुब्बिनोळु ॥ ३७ ॥

अर्थ—निष्कलंक भरत जी सबको भेज दिया और अपने पुत्रों को आलिंगन करते हुये पालकी से उतर कर अन्दर प्रवेश किया ॥ ३७ ॥

Blamless king Bharat sent away every body and getting down from his palanguin and embracing his sons, entered the inner appartment of the palace. (37)

पद्य—एळे वेंगळोडगूडि जळकमुताद् नि । मल भोग योग लीलेयोळु ॥
कळेदना हगलिरळनु मरुदिवासद । वेळगि नोळोलग वादा ॥ ३८ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी राजमहल में जाकर अपनी रानियों के साथ स्नान तथा भोजनादि क्रिया से निवृत्त होकर भोग व योग्य के साथ आनन्द पूर्वक उस दिन को व्यतीत किये । दूसरे दिन प्रातः काल नित्य क्रिया को समाप्त करके दरबार में जाकर सिंहासन पर विराजमान हुये ॥३८ ॥

Reaching the inner appartment, king Bharat, having dined and bathed with his queens spent that night happily The next day he having finished his morning calls went to the darbar and sat on the throne (38)

पद्य—कडेय चावडियल्लि दोरेगळोग्गिनोळु पे । र्वडेय वळसिनोळा चक्रि ॥
कडे कट्टु रंजिसलोलग गोट्टिपु । वडेद् गानव केळुतिर्दा ॥ ३९ ॥

अर्थ—जिस प्रकार ताराओं के बीच में चन्द्रमा की शोभा बहुत अच्छी मालूम पड़ती है उसी प्रकार अनेक राजाओं के बीच में भरत जी सुशोभित होते हुये गायकों के संगीत को प्रेम से सुन रहे हैं ॥ ३९ ॥

Just as a moon looks very beautiful amidist innumerable twinkling stars similarly king Bharat, sitting in the middle of other chieftains, was listening to sweat music (39)

पद्य—लेसु लेसेंबंते परमात्म कळेय ध । न्यासि भैरवियोळु पाडे ॥
वीसुव चामरगळ वळसिनोळु वि । ळास दोळालिसुतिर्दा ॥ ४० ॥

अर्थ—गायकों का संगीत परमात्म कला से परिपूर्ण था ! अनेक गायक धनवासी, भैरवी इत्यादि रागों में गान कर रहे हैं । चक्रवर्ती भरत छत्र व चामर के बीच में आनन्द पूर्वक बैठे हुये आत्मकला को सुन रहे हैं ॥ ४७ ॥

The music of the musicians was full of complete art A number of musicians were singing Bharavi and Dhanvasi, Chakravarti Bharat was happily listening to Atmakala (40)

पद्य—होरगेळे विसिलेसे वंतोळ गात्मन । मिरुगुव प्रभेतोरु तिद्दु ॥
तुरुवेवे मुच्चदे नेनहिनोळगे नोडु । तोरग नोरगि केळुतिर्दा ॥ ४१ ॥

अर्थ—जिस प्रकार हम लोग चमकते हुये प्रातःकालीन सूर्य की किरणों को देखते हैं उसी प्रकार श्री भरत जी संगीत को सुनते ही देदीप्यमान आत्म प्रकाश को देख रहे हैं। राजा कर्ण को संगीत तथा मन को आत्मा में लगाकर गान सुन रहे हैं ॥ ४१ ॥

Just as we look upon the glow of the morning sun, similarly Bharat ji is enjoying his inner light to hear the sweat music The king is enjoying the music with his ear and meditating upon his own self *(41)*

पद्य—चर्म दृष्टियोळु लोकव नोडुतिद्दनं । तर्महाज्ञान दृष्टियोळु ॥
निर्मलात्मन नोडुतिर्द नवन मनो । धर्मव बल्लवरारु ॥ ४२ ॥

अर्थ—श्री भरत जी चर्म दृष्टि (नेत्र) से देखकर और निर्मल दृष्टि (ज्ञान दृष्टि) से आत्म प्रकाश देख रहे हैं। आत्मज्ञानी के विचित्र मनोधर्म को कौन जान सकता है ? ॥ ४२ ॥

King Bharat is looking towards the court with his external eyes and AtmaPraksh with his inner eyes, who can understand the mind of 'Atmagyani' *(42)*

पद्य—केसरोळिर्द्दब्जके रविय मेलेल्लदा । केसरिन मेलासे यहुदु ॥
असम भोग दोळिर्दोडात्मन मेलल्ल । देखे वुदे ममते भव्यरिगे ॥ ४३ ॥

अर्थ—जिस प्रकार सूर्य का प्रेम पंक जन्य पंकज से ही रहता है पंक से नहीं उसी प्रकार आत्म प्रकाश का प्रेम इस अपवित्र शरीर के अन्दर रहने वाले आत्म से ही रहना है शरीर से नहीं भव्यों का प्रधान लक्षण यह है कि वे अखंड भोगोपभोगों के मध्य में भी रहते हुये अपने चित को आत्मा की ओर लगाये रहते हैं, भोगों की ओर नहीं ॥ ४३ ॥

Just as sun loves mud born lotus flower only and not the mud , similarly "Atma Prakash' loves only soul living in this dirty body and not the body itself Blessed are they, that living even in the midist of worldy pleasure, keep their mind flashed upon soul and not upon pleasures *(43)*

पद्य—रागं रचनेयागि हाडव परमात्म । योगव केळुत वरिगे ॥
चागगोडुत हंसनाथ लीले योळिंद । ना गुण रत्न भूषणनु ॥ ४४ ॥

अर्थ—गुण रत्नभूषणराजा भरत आत्म कला में रत रहते हुये विशेष प्रकार की रचनाओं से गाये जाते हुये गीतों को सुनकर सन्तुष्ट हो रहे थे और उन गायकों को अनेक प्रकार का पुरस्कार देरहे थे ॥ ४४ ॥

Meritorious king Bharat, absorved in self realisation, was listening to nicely composed poems. He was awarding presents to those musicians. (44)

पद्य—उत्तुंग विभव दोळोलग गोड्डाग । मत्तोंदु सिरि यंदु देनिसि ॥
चित्तानुमतियेंब दादि भूवरगे तं । दित्तळु वृषभ राजनतु ॥ ४५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी योग व भोग के साथ दरबार में विराजमान हैं। इतने में ही, बहुत बड़े माणिक्य के टुकड़े की भांति, वृषभ राजकुमार को लाकर "चित्तानुमति" दासी ने राजा को दे दिया ॥ ४५ ॥

King Bharat seated in his darbar with all his luxeries and spritual riches, Meanwhile Chittaunmati, one of the royal maids, gave prince Vrishabh Kumar to the king. (45)

पद्य—श्रीजिन विजयंगदने भरतन । प्पाजि येयूतंद नेयंदु ॥
आ जनपतेि नम्र कुवरननीसिकों । डोजेयोळ मर्दप्पिकोंडा ॥ ४६ ॥

अर्थ—पुत्र को गोद में लेकर राजा ने कहा कि बेटा ! क्या हमारे पिता वृषभनाथ ही साक्षात् आये हैं ? नहीं नहीं यह तो वृषभराज हैं। इस प्रकार कहते हुये भरत जी पुत्र को छाती से लगाकर आनन्द पूर्वक आलिंगन कर रहे हैं ॥ ४६ ॥

Taking the prince in his lap, the king said, "son ! has my father, Vrish. abhnath himself has come in your form No. he is really Vrishbhraj. Saying thus king Bharat embraced his son." (46)

पद्य—दोड्ड माणिक बोंबे चिक्क माणिक बोंबे । यड्डेसि तक्किसिदंते ॥
दोड्ड सोवगराय चिक्क सोवगिन त । न्नेड्ड मगन नप्पिकोंडा ॥ ४७ ॥

अर्थ—जिस समय भरत पुत्र को छाती से लगा कर प्रेम कर रहे थे उस समय यह मालूम होता था कि मानों रत्न निर्मित किसी छोटे पुतले को ही छाती से लगा रहे हों। पिता, पुत्र परस्पर में एक दूसरे के मुख को देखते हुये हँस रहे हैं। इसी प्रकार भरत जी बार बार आलिंगन करते हुये आनन्द क्रीड़ा कर रहे हैं ॥ ४७ ॥

When Bharat was embracing his son, it so appeared as if some image shidded with jewells is being embraced. Thus father and son both are sporting with pleasure looking to each other. Thus king Bharat being overjoyed is embracing his son many lines.(47)

पद्य—मुत्तित्त मोगनोडि नोसलोळु नोसल निट्टु । मत्ते होक्कुळ नलुगिसिदा ॥
हेत्त तंदेय नोडि मोळेवल्ल मिनुगि । संपगागि नक्कना तरळा ॥ ४८ ॥

अर्थ—भरत जी पुत्र को कंदुक के समान उठाकर, मुख में मुख डालकर तथा नाभि में मुख लगाकर जिस समय चुंबन ले रहे थे उस समय बच्चे का संपूर्णाङ्ग हिल रहा था और वह हँस रहा था ॥ ४८ ॥

Bharat ji is loving his child by lifting him like ball, rubing his mouth with that of his child and kissing him At that time the body of the child was spoking He was laughing (48)

पद्य—अंगैय निमिगिसि लक्षणगळ नोळ्प । नंगालु चिडिदु नोडुवनु ॥
मंगलमयद रेखेय नोडि लोकैक । मंगल येंदु चुंबिसुवा ॥ ४६ ॥

अर्थ—भरत जी पुत्र के हाथ की रेखाओं, मस्तक, पावों तथा समस्त अंगों के शुभ लक्षणों को देखकर उसके फल का विचार करते हुये चुंबन ले रहे हैं ॥ ४६

King Bharat looking the hand, forehead, feet, and other organs of the body, was kissing the prince (49)

पद्य—तंदे तनय कैय नोडिदंता शिशु । तंदेय कैय नोडुवदु ॥
तंदेय काल नोडुवुदप्पि कोंडुदु । मंद हासव माडुतिहुदु ॥ ५० ॥

अर्थ—जिस प्रकार पिता जी पुत्र की हस्त रेखा को देख रहे है उसी प्रकार हँसते हुये पुत्र ने भी पिता की हस्त रेखा को देखना प्रारंभ किया ॥ ५० ॥

When father was looking into the lines of his son's hand, the son was also looking to the father's hand (50)

पद्य—निन्न लक्षण ना नोडिद रोडने नी । नेन्न लक्षणव नोडिदेय ॥
निन्नंते नानु नन्नंते नीनै येंदु । तन्न कंदन कूडे नुडिदा ॥ ५१ ॥

अर्थ—भरत जी पुत्र से कहने लगे कि बेटा ! मैंने तुम्हारे शुभ लक्षणों को देखा है। क्या इसी लिये तुम भी मेरे शुभ लक्षणों को देख रहे हो ! मैं तेरे समान व तुम मेरे समान हो इस में देखना क्या है ? ॥ ५१ ॥

King Bharat began to address his son, "son ! I have seen your auspicious signs Is that the fact that you are also seeing mine I like you and you are just like me, What is to be seen in it" (51)

पद्य—श्रोव्व मगनिल्लि मुद्दिसुतिरलोड । निब्बरु नेरेद कुवररु ॥
उब्बिन दैयूत रुतिर्दरु तंदेय । सव्ववादोलग कंदु ॥ ५२ ॥

तंदेय दृष्टि संदेमद मोदर्ले येरि । दंदळ विळिदु जोक्रेयोळु ॥
मुंदण्ण इंदे तम्मनु काळु नडेयोळा । नददि बरुतिर्द राग ॥ ५३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी दरबार में जब एक पुत्र के साथ प्रेम कर रहे थे तो उसीसमय अन्य दो पुत्र अर्ककीर्ति व आदिराज कुमार प्रवेश किया । ये दोनों विनयी, सद्गुणी तथा पिता की ओर दृष्टि डालने वाले हैं ॥ ५२-५३ ॥

While Bharatji was loving his son, two more sons named Arkkirti and Adiraj arrived there both of them are serene, meritorious, and looking towards their father. (52 53)

पद्य—बळिक किरिदु दूरदोळु छत्र चवररु । तोलगिसि हावुगेवुळ्दिदु ॥
बळमिदूळिग दर निलसि ताविर्वरे । बोळ होगुतिंद रोजेयोळु ॥ ५४ ॥

देवांग वस्त्रवनुडे सुत्ति रत्नद । तावड कोल कैविडिदु ॥
तीविदाभरण कांते योळेयुद तिर्दरु । देवकुमाररंददोळु ॥ ५५ ॥

— अर्थ—ये दोनों दरबार में प्रवेश करने के पहिले अपने सेवकों को बाहर ही खड़े होने की आज्ञा देकर अपने छत्र व चामर को भी वहीं रख दिये थे । जिस समय दोनों राजकुमार सुगंधित लेपनों का लेप किये हुये, तिलक लगाये हुये और रत्न निर्मित आभरणों को धारण किये हुये आरहे थे, उस समय यह मालूम पड़ता था कि मानों स्वर्ग से उतर कर दो देव कुमार ही आरहे हों ॥ ५४-५५ ॥

Both of them, before entering the darbar, had ordered their servants to stay at the gate with umbrella and fanning, when both these princes, decorated with jewellers and other scented things, were coming, it so appeared as if two gods are getting down from the paradise (54-55)

पद्य—सिरिदुरुविगे तक्क चिम्मुरि चुंगु क । त्तरि वोट्ट श्रीगंधलेपा ॥
भरत राजन मक्कळ्ळवे अवर सिं । गर वनेनेंवे नेय्दिद्रु ॥ ५६ ॥

अर्थ—वे भरत पुत्र, बालों को विखरे हुये तथा लेपनादि इतने अधिक सुगंधित द्रव्यों की सुगन्धि को फैलाते हुये आ रहे थे जिसका वर्णन करना कठिन है ।। ५६ ॥

Those sons of king Bharat, with seattered hair, and scented bady, were coming It is really difficult to put that beauty into words. (56)

पद्य—तंदेयोलग वेंव मंद्याळतनविल्ल । हौंदिद भय भक्तियिंद ॥
मंदगति योळोय्य नोसरिसुत वप्प । चंदके नृपरु मेच्चिद्रु ॥ ५७ ॥

अर्थ—वे दोनों पुत्र पिता के दरबार रूपी समुद्र में निर्भीक होकर भक्ति के साथ मन्द गति से प्रवेश किया ॥ ५७ ॥

Both of those princes entered the darbar very slowly and gently with great devotion for their father. (57)

पद्य—मुट्टलोत्तिगे वरे नृपरेल्ल रोल्दर्ति । वट्ट कैमुगिदरवरनु ॥
निट्टिसि कुळ्ळिरि येनुत कैसन्नेयो। ळोट्ट सुतेय्दिद्रवरु ॥ ५८ ॥

अर्थ—जिस समय वह दोनों राजकुमार दरवार में प्रवेश हो रहे थे उस समय सभी दरबारी गण प्रसन्नता पूर्वक खड़े होकर उनका स्वागत किया । राजकुमार उन सबों को हाथ के इशारे से बैठने का संकेत करते हुये पिता की ओर आगे बढ़ते गये ॥ ५८ ॥

When they entered the hall all the courtiers stood up with extreme pleasure and thus welcomed them. The princes advanced towards their father asking the courtiers to sit down (58)

पद्य—मार्तंड गिम्मडि मार्तंड नंवर्क । कीर्ति राजन नोडु स्वामि ॥
सार्तंद नादि राजनु पराकेयेंद्रु। कूर्तु कट्टिगे काराग ॥ ५९ ॥

अर्थ—वेत्रधारी गण उच्च स्वर से राजा को सूचना दे रहे हैं कि स्वामिन् ! सूर्य सदृश द्विगुण प्रकाश को धारण किये हुये आदिराज को साथ लेकर अर्ककीर्ति कुमार आ रहे हैं ॥ ५९ ॥

Vetradharis are informing the king budhy "my Lord ! Prince Arkkiti, bright like the sun is coming with his brother Adiraj." (59)

पद्य—घळिगेगे कोटि वित्तव कोंड वीरर । तलेवरिगळ परांबरिसु ॥
मरेवरि राय दल्लनर चिंतेसु हो । गलभे निल्लिसिरेंद रोडने ॥ ६० ॥

अर्थ—वेत्रधारी गण राजा भरत से कह रहे हैं कि स्वामिन् ! एक घटिका का एक करोड़ स्वर्ण मुद्रा वेतन है ऐसे राजकुमार आ रहे हैं। देखो तो सही ऐसा कहते हुये वे सब अपने अपने शोर को बन्द करके उन कुमारों की ओर देख रहे हैं ॥ ६० ॥

The chieftains began to say, "O Master ! the prince, whose remuneration for an hour is one carror, is coming "Saying thus they stopped their noise and began to look towards the prince (60)

पद्य—सौजन्य विनय विवेक विडाय ढो । ळोजे योळ्णेव होगद ॥
राज कुमाराग्र गण्यर नोडल्ले । राजाधि राजाग्रगण्या ॥ ६१ ॥

अर्थ—सेवक गण पुन कह रहे हैं कि हे राजाधिराज सौजन्य, विनय और विवेक में जिन की समता करने में कोई भी समर्थ नहीं है, ऐसे राजकुमार आ रहे हैं। इनको ज़रा देखो तो सही ॥ ६१ ॥

Those servants are saying, "O king of kings ! the prince who can never be rivaled in respect of gentleness, humbleness, and discrimination, is coming See him for a while " (61)

पद्य—हुंडाव सर्पिंयादिवपट्खंड । मंडलेशाद्रियोळ्गेद ॥
चंडांशु चंद्रर नोडु विस्मयवेंदु । दंडधररु सूचिसिदरु ॥ ६२ ॥

अर्थ—दण्डधारी गण आश्चर्य पूर्वक राजा से कह रहे हैं कि राजन् ! हुंडा तथा सर्पिणी आदि के युग में पट्-खंड मंडलेश्वर रूपी पर्वत से उत्पन्न हुये सूर्य व चन्द्रमा के समान दोनों पुत्रों को देखिये ॥ ६२ ॥

The chieftains are saying to the king with surprise, "O Rajan ! kindly see the princes like the moon and the sun born out of Mount Mandaleshvar in the time of 'Kunda' and 'Sarpini' yuga (62)

पद्य—नगुत कट्टिगे काररिगे राय कैमुट्टि । दुगुल वनिट्टु नर्तियोळु ॥
नगुत नगुत जनकन सार्के गोय्य गो । य्यगे कुवररु गमिसिदरु ॥ ६३ ॥

अथ—श्री भरतेश जी उपरोक्त शब्दों को सुनते ही प्रसन्न होकर वेत्रधारियों को अपने पास बुलवाया और उन्हें बहुत से वस्त्राभूषणों को पुरस्कार में दे दिया। उस समय दोनों (अर्ककीर्ति आदिराज) राजकुमार पिता के निकट आगये ॥ ६३ ॥

Hearing these words, king Bharat being very much pleased sent very for the "Vetradharis and offared them many kinds of dresses and ornaments. At that time both the princes Arkakirti and arrived close to their father. (63)

पद्य—एळरण अन्नाजियरु वरुतिंद्दारें। देळिमिदनु चिक्क मगना॥
मेले कैमुगियेंद रोडने कैमुगिदना। वालक तंद्दे पेळ्दंते॥ ६४॥

अर्थ—भरत जी आते हुये दोनों राजकुमारों को देखकर अङ्क में वैठे हुये पुत्र से कहने लगे कि वेटा! देखो तुम्हारे बड़े भाई आगये। हाथ जोड़कर इनको नमस्कार करो। पिता की आज्ञा पाते ही अङ्क में वैठे हुये छोटे राजकुमार ने खड़े होकर अपने दोनों भाइयों को प्रणाम किया॥६४॥

Seeing those princes coming, king Bharat said to the son in his lap, "son ! see your elder brothers have come Salute them wit folded hands" Hearing the direction of the father, the younger prince stood up and saluted his both the brothers. (64)

पद्य—नवगवनेके कैमुगिं वुदु स्वामियें। दवनतनाद दोड्डनुगा॥
अवनीश पुत्रर लक्षण वेंयेंदु। कुवरन कूडे नुडिदनु॥ ६५॥

अर्थ—अर्ककीर्ति, आदिराज पिता जी से कहने लगे कि स्वामिन! मुझको प्रणाम करने की क्या आवश्यकता है? तब राजा बोले कि पुत्र! यह राजपुत्रों का लक्षण है॥ ६५॥

Princes Arkakirti and Adiraj began to say to his father, "master ! How was a salute needed ?" Then the king said, "son ! this is the princely sign." (65)

पद्य—ओडनिर्व रय्यगे काणकेय नीडि ता। वडद कोलेत्ति कैमुगिदु॥
एडवल विडिदु गद्दुगेय केळगे निंद। रोडेयननोलैपरंते॥ ६६॥

अर्थ—अर्ककीर्ति व आदिराज ये दोनों राजकुमार पिता जी को बहुत सी भेंट समर्पित किया और उन्हें प्रणाम करके दायें व वायें खड़े होगये॥ ६६॥

Both the princes (Arkakirti and Adiraj) offered many presents to their father and saluting him stood up by his both the sides (66)

पद्य—तोडेय मेलोव्व कुमारनु केळगिव्व । रुडेसुत्ति निंद कुवररु ॥
गडगुड दोरेगळु मुंदे निंदिरे गाय । रोडेय नोलग विराजिमितु ॥ ६७ ॥

अर्थ—जिस समय भरतेशजी दोनों पुत्रों को दायें व बायें किये हुये एक पुत्र को गोद में लिये हुये बैठे थे उस समय सभी दरबारी खड़े होकर उनकी अपार शोभा को देखने लगे और उनकी प्रशंसा करने लगे ॥ ६७ ॥

All the courtiers began to enjoy the extreme beauty of king Bharat and praised him highly at that time when the king had been sitting with his both the sons in his lap (67)

पद्य—दोरे गळेल्लर नोडि कुळ्ळिरियेंदना । भरतेशनवरु कुळ्ळिरु ॥
हिरियराण नो पेळ्दवरनु कुळ्ळिरिसेंदु । वरतनूजगे सूचिसिदनु ॥ ६८ ॥

अर्थ—उन दरबारियों को खड़े देखकर राजा ने उन्हें बैठने की आज्ञा दिया, पर कोई नहीं बैठा । तब भरत ने अपने बड़े पुत्र अर्ककीर्ति से कहा कि बेटा ! तुम सबको बिठलाओ, परन्तु इनके कहने पर भी सभी लोग खड़े होकर पुत्र को ही देखते रह गये ॥ ६८ ॥

The king ordered the courtiers to sit down, but none sat down Then Bharatji said to his eldest son, "son ! get all of than seated " But all remained standing and seeing the princes (68)

पद्य—तेप्पगे कुळ्ळिरे दोप विल्लेंदरे । ओप्पदे निंदिर्दरवरु ॥
अप्पाजियाणे कुळ्ळिरियेंद कुवरन । नेप्पु गोंडवरु नोडिदरु ॥ ६९ ॥
हिरिय कुमारनाज्ञेय हारि निंदरे । दरिदना नृपति तन्नोळगे ॥
किरियराण कुळ्ळिरवेळु नीनवरनें । दरु हिकोट्टनु चिक्कमगगे ॥ ७० ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति कुमार ने पुन दरबारियों से कहा कि तुम लोगों को पिता जी की सौगन्ध है, इसलिये बैठ जाओ । यदि नहीं बैठोगे तो आज्ञा उलंघन पाप के भागी होगे । इतना कहने पर भी सभी लोग पुत्रों के सौंदर्य को देखने में ही मग्न रह गये । तब राजा ने आदिराज से कहा कि बेटा तुम्हीं सबको बैठने की आज्ञा दो ॥ ६९-७० ॥

Prince Arkakirti said to the courtiers again, "by my father's name, please take your seats If you do not sit, you will earn the sin of disobedience." On saying so also, all of them remained absorved in enjoying the beauty of the princes Then the king said to Adiraja, "son, you yourself ask them to sit down." (69 70)

पद्य—तन्नगे कुळ्ळिरें दोर विन्नैदरे । नयणदि निंदिर्द्रबर ॥
अग्णजि याणे कुळ्ळिरियेंदनवरेंद । हएणागि कुळित रोप्पदोळु ॥ ७१ ॥

अर्थ—पिता की आज्ञा पाकर आदिराज ने कहा कि प्यारे भाइयो ! आप लोग अभी बैठ जाइये; परन्तु वे सब जैसे के तैसे खड़े ही रह गये। तब आदिराज ने पुनः कहा कि यदि नहीं बैठियेगा तो आप लोगों को मेरे बड़े भाई अर्ककीर्त्ति की सौगन्ध है। इतना सुनते ही सभी लोग अपने अपने आसन पर शान्ति पूर्वक बैठ गये ॥ ७१ ॥

Being directed so by the father, prince Adiraj said, "Dear brothers ! kindly set down. But they remained motionless as they were. If you do not sit, you will have the curse of my brother Arkkirti " Then all of them sat down quitely. (71)

पद्य—केलसविल्लादि राजगे स्वामि यिदिरोळु । सल्लुवुदे येग्णाणे येदा ॥
सल्ले स्वामि निनगोडेयनु नोने नजय । तलेगोडेयनु सल्लुदेदा ॥ ७२ ॥

अर्थ—अर्ककीर्त्ति अपने छोटे भाई आदिराज से पूछने लगे कि पिता के सामने हमारी सौगंध खाने की क्या आवश्यकता थी ? तब आदिराज कहने लगे कि भ्राता जी ! पिताजी आप के लिये स्वामी हैं। अतः इसमें क्या बिगड़ गया ? ॥ ७२ ॥

Arkakirti asked his younger drother "why was he named before them when father was present." Then Adirai said, " brother's father is master for you, but for me, you are my Lord. So where is the harm ?" (72)

पद्य—राजेंद्र नदके मेच्चिदनु तनय मक्क । ळोजेगे तानर्तिवड्डा ॥
ई जाति विनय यागुदु वेच्चि स । भाजनवेल्ल कीर्तिसितु ॥ ७३ ॥

अर्थ—भरतजी अपने पुत्रों के विनय व्यवहार से बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। दरबारी लोग भी उनके विनम्र व्यवहार को देखकर प्रसन्न होते हुये कह रहे हैं कि इनके सदृश विनय व्यवहार अन्य प्राणियों में मिलना दुर्लभ है ॥ ७३ ॥

King Bharat is very much pleased to see the humble treatment of his sons The courtiers are also very much pleased to see that such humble treatment is not possible among other beings." (73)

पद्य—ऒंदिनिसर मेले दळपति सचिवर । मंदहासदिराय करेदु ॥
अंदानु पेळ्दंते कुवरर संबळ । संदु बहुदे हेळिरेंदा ॥ ७४ ॥

अर्थ—श्रीभरतेश जी ने सेनापति से पूछा कि, क्या उस दिन से मेरी आज्ञा के अनुसार इन्हें बराबर वेतन दिया जाता है ? ॥ ७४ ॥

Shri Bharatesh asked his military commander, "are they getting salary from that day in accordance with my order ?" (74)

पद्य—खंडने माडि नोप्पिसिदेवु तावे । भंडार दोळगिरिगिसिदरु ॥
चंडवीर रिगार तडेहेंदु नृपनर्ति । गंडु तावोरेद रतियन्नु ॥ ७५ ॥

अर्थ—सेनापति ने कहा कि हाँ स्वामिन् ! हमेशा दिया जाता है । राजा की आज्ञा के अनुसार तत्क्षण राजकुमारों को वेतन दिया गया: पर वे लोग धन को स्वयं न लेकर उसे कोष में ही रखने की आज्ञा दिया ॥ ७५ ॥

The commander applied, "yes my Lord ? It is always given In accordance with the royal order, the princes were paid salaries at the very moment But they insteading of taking for themselves have asked us to deposit it in the central treasury" (75)

पद्य—इन्तु कुळ्ळिरियेंदु कुवररिव्वरिगे ता । नुन्न तासनव कोडसिदा ॥
इन्नोंदु सेवेय माळ्पति यॆंटेंदु । सन्नद्ध रादरंदरवरु ॥ ७६ ॥

अर्थ—श्रीभरतेश जी ने दोनों पुत्रों के बैठने के लिये आसन मँगवाकर बैठने की आज्ञा दिया: परंतु वे लोग खड़े ही रहकर पिता की एक दूसरी सेवा करने की तैयारी किया ॥ ७६ ॥

Getting seats, Bharteshji asked the princes to sit down. But remaining standing they intended to rander some other service (76)

पद्य—अय्यगेलेय कोडुतिर्द तंबुलिगन । कैय तबक नर्ककीर्ति ॥
ओय्यने सेळेंकोंडु यंदेगेलेय तन्न । कैयारे कोडतोडगिदनु ॥ ७७ ॥

अर्थ—पास में खड़े हुये एक अनुचर ने भरत जी को तांबूल देना चाहा, कि उसके हाथ से अर्ककीर्ति कुमार ने तस्तरी छीनकर स्वयं तांबूल देने को उद्यत हुये ॥ ७७ ॥

One of the servents wanted to offer beatle to the king. Prince Arkakirti taking the plate himself was ready to offer the beatle. (77)

पद्य—अनित रोळोव्वन कैयचमर व भों । कने सेळेकोंडादिराजा ॥
जनकगे चवरव ढाळिसुतिद्दना । विनदव नेनेन्नवहुदु ॥ ७८ ॥

अर्थ—इतने में आदिराज भी चमर डुलाने वालों के हाथों से चमरों को छीनकर स्वयं डुलाने लगे। उस समय सेवा मे संलग्न दोनों पुत्रों की शोभा अपार थी ॥ ७८ ॥

Meanwhile Adiraj taking the' chamar' from the servant's hand, began to fan the king himself absorved in paternal service (78)

पद्य—मक्कळ पडेदु मत्सरदल्लि वेंदेक्क । सक्कदे वाळ्वर वदुका ॥
धिक्करि सुत तंदे गूळिगगैदरा । चिक्क कुमार रतियोळु ॥ ७९ ॥

अर्थ—उन दोनों पुत्रों की सेवा को देखते हुये दरबार के समस्त सज्जन ऐसा विचार करने लगे कि लोक में पुत्रों की प्राप्ति हो तो इसी प्रकार हो, नहीं तो पिता से ही सेवा कराने वाले तथा कभी कभी उनका घातक बन जाने वाले विवेक शून्य पुत्रों का प्राप्ति न हो ॥ ७९ ॥

Seeing the service of these princes, people began to wish that if there be sons, they should be like them, otherwise there should be no sons, as they get their father to serve them and on certain occasions deceive their parents (79)

पद्य—वीळेय देलेपूर्ण वादुदेनगे कुळि । तोलगिसिन्नु नीनेंदा ॥
केळि तवक नोडि पितन तोडेयोळिद्द । बालन तानेत्ति कोंडा ॥ ८० ॥

अर्थ—पान देने के पश्चात् अर्ककीर्ति कुमार ने पिता की गोद से वृषभराज को लेकर स्वयं खिलाने लगे ॥ ८० ॥

- Prince Arkakirti, after offering the beatle and taking prince Vrishbhraj from his fathers lap began to lull him (80)

पद्य—एनरण्ण तरळन नीनेत्ति कोंडेयें । दा नरनाथ केळिदनु ॥
वेनेयन्नवे देवरोळु दोडेगेंदग्र । सन्नु नुडिद नय्य नोडने ॥ ८१ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने कहा कि बेटा ! वृषभराज को तुमने क्यों उठा लिया ? तब वह बोला कि स्वामिन् ! बहुत देर से आप की गोद में बैठा है जिससे आपको कष्ट हुआ होगा । अतः कुछ देर के लिए मैंने अपने छोटे भाई को उठा लिया ॥ ८१ ॥

Shri Bharatesh ji said, "son ! why did you take Vrishabhraja " Then he replied, "master ! he is in your lap for a longer time, you might be tired So I have taken my younger brother for a while *(81)*

पद्य—घनवेळे यादुदु वृषभ राजन देव । रनु नयदिंद ताळ्दिदिरि ॥
अनुजन नानिप्डु धरिसुवेनेंदना । विनय करस चोद्यवट्टा ॥ ८२ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी सोच रहे हैं कि मैंने जिस बच्चे को पहले उठाया था उसे यह अब उठा रहा है, इसी प्रकार जिस षट्खण्ड भू-भाग को मैं धारण कर रहा हूं उसे भी यह भविष्य काल में अवश्य धारण करेगा । यह इस कार्य के लिये पूर्ण समर्थ है । इस प्रकार उपस्थित बड़े बड़े राजा, प्रजा तथा देवगणों ने अपने अपने मन में विचार किया ॥ ८२ ॥

Shri Bharateshji is thinking, "the child, whom I had taken formerly, he is taking him now similarly the six partearth, which I am commanding now, will be commanded by him He is worthy of all such functions Thus other Rajas, subjects and gods etc thought with in themselves " *(82)*

पद्य—इवनीग मुंदातु धरसिद राज्य भा । व ताळ्व सामर्थ्य नेंदु ॥
अवधरिसिर्द ना चक्रेशनंते मा । नव सुरेन्द्र नेनेदरु ॥ ८३ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति ने पिता जी से पुनः कहा कि स्वामिन् ! पहली बात यह है कि आप इसे बहुत देर से गोद में लिये हुए थे और दूसरी बात यह है कि हमारी इच्छा हुई कि मैं भी अपने भाई को अङ्क में लेकर प्यार करूँ ॥ ८३ ॥

Arkakirti said to his father again, "Lord ! firstly that you had him for a longer time, secondly I also wished well my brother affectionately in my lap " *(83)*

पद्य—मत्ते नोविल्ल नन्नाणे तारेंदु ना । नोत्ति मगन नेत्तिकोंडु ॥
हत्तरे कुळ्ळिरि नन्नाणे येनलिव्य । रुत्तमसुत्तरु कुळ्ळितरु ॥ ८४ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने कहा कि बेटा ! मुझे कुछ कष्ट नहीं है अतः बच्चे को हमें दे दो ऐसा कहकर वृष राज को पुनः गोद लेकर दोनों पुत्रों को पास में बिठा लिया ॥ ८४ ॥

King Bharat then said, son, I have no trouble So give me the child ?" Saying so he took Vrishabhraja in his lap and seated both the princes along his sides (84)

पद्य—ओम्मे तंदेय नोड्डतोळु तुडि तुडिवुत । सम्मुख दवर नीव्विगुत ॥
दिम्मि तुनेडे गोम्मे तोडेगळ तट्टुत । सुम्मान दोळगिद्दरवरु ॥ ८५ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत जी दोनों पुत्रों से वार्तालाप कर रहे हैं और दोनों परस्पर में एक दूसरे के साथ प्रेम कर रहे हैं ॥ ८५ ॥

Chakravarti Bharat is talking to his both the sons They are talking together affectionately (85)

पद्य—नुडिगुत कुवर निब्बरनोय्य नोम्मे मै । दडहुत ताने हूंकोळुत ॥
हडपिगरिंद वीळ्यव कोडि मुतर्ति । वड्डतिर्दना पेत्त तंदे ॥ ८६ ॥

अर्थ—राजा दोनों बच्चों को आनन्द के साथ अपने पास बुलाकर पान देते हुए हाथ फेर कर आलिंगन कर रहे हैं ॥ ८६ ॥

The king offering beatles to both the sons and putting his hands affectionately upon them, is caressing them (86)

पद्य—ओदु सादने निमगेंतिहुवर्ण वि । वाद वो हर्षवो येंदा ॥
आ दोड्ड सुख वनेनेंबाड वहुदु वि । नोदवागि हुदेंदरवरु ॥ ८७ ॥
पद्य—साधनेयेंबुदु जाड्य हरण ज्ञान । साधन वल्लवे शास्त्रा ॥
भूदव कुलकदु सुखवलते येंदु सु । बोधन मक्कळाडिदरु ॥ ८८ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने अर्ककीर्ति कुमार से पूछा कि बेटा ! तुम लोगों को विद्या पढ़ने में दुःख मालूम होरहा है कि सुख ? तब उसने कहा कि स्वामिन् ! विद्योपार्जन के समान दूसरा सुख नहीं है । यह अभ्यास अध्यवसाय आदि आलस्य को दूर करने के लिए प्रधान साधन है । शास्त्राभ्यास ज्ञा[illegible] का साधन है और राजकुल में उत्पन्न हुए वीरों के लिए भूषण है । इसलिए इसके अनन्त सुख का वर्णन करने में मैं सर्वथा असमर्थ हूँ ॥ ८८ ॥

Shri Bharatesh asked prince Arkakirti, "son! Are you getting pleasure out of your study or pain ?" Then he replied, "my Lord! there is no joy better than the earning of knowledge, This is a means to remove laziness etc The practice of 'shastras is a means to the attainment of knowledge and is like an ornament for those born in the royal family So I am unable to describe its infinite pleasures! (87-88)

पद्य—प्रारंभ दोळगिप्टु श्रमगगिहुदु म । त्तोरंते सोगसुदोरुवुदु ॥
धीररि गोदु माधने माध्यवेंदु कु । माररि गोरंदता चार्के ॥ ८९ ॥

अर्थ—भरत जी ने पुत्र से कहा कि बेटा ! आरम्भकाल में विद्योपार्जन करना कुछ कठिन मालूम पड़ता है; पर आगे चलकर सरल मालूम पड़ने लगता है। विद्या धीर, वीर और साहसियों के लिए असाध्य है। इस लिये कठिनाइयों से निर्भीक होकर विद्याध्ययन करना चाहिए और भयभीतों के लिये असाध्य है ॥ ८९ ॥

Bharatji said to the son, "to study seems somewhat difficult at the elementary stage Afterwards it becomes easier Knowledge is easy for patient. brave and courageous people but, difficult for cowards So one should study without being afraid of difficulties (89)

पद्य—नवगवु श्रमद दोल्वदिल्ल रा । गवने हेच्चिगु निर्पुवचना ॥
अवगर गोळ्ळ दोग्योग्यने कलिवेवे । दवरु तुडिदरव्यनोडने ॥ ९० ॥

अर्थ—दोनों राजकुमारों ने कहा कि पिता जी ! अध्ययन में हम लोगों को लेश मात्र भी कष्ट न होकर उत्तरोत्तर आनन्द ही मिल रहा है ॥ ९० ॥

Both the princes said, "father ! we have been getting pleasure in study with increased amount day by day We are troubled not in the best" (90)

पद्य—उदयदि साधने हिंबगलोदु न । स दोग्गेदिदोदिन चिंते ॥
मृदु मृदुवागि नडेवुदं मगदरिंद । पदुळ वगिहुवेंदरवरु ॥ ९१ ॥

अर्थ—पिता जी ! हम लोग सुख पूर्वक शनैः शनैः (धीरे धीरे) विद्या का साधन कर रहे हैं। हम लोगों को उषाकाल में अभ्यास, मध्याह्नकाल में पठन और रात्रि के समय में पठित ग्रन्थ का चिन्तन नित्य का कार्य है। हम सब मृदु मार्ग से व्यवस्थित रूप से जा रहे हैं, तो कष्ट क्यों होगा ॥ ९१ ॥

"Father ! we are attaining our education by and by. We practice in the morning, stdy in the noon and brood over the studied book in the night. We are treading the sweat path why shall we be troubled ?" (91)

पद्य—आदिराजन बुद्धियेंबुदु दिन दिन । कोदिनोळगे साधनयोळु ॥
आदरुशवनोरडु वेळगि दंतदेयेंद । नादरदिंदर्क कीर्ति ॥ ९२ ॥
मरेदोदु साधनेगळ मगऌदोम्मेये । च्चरुदोरि नेनेयवहंते ॥
मेरेवु तिद्दपुदुतम्मन मतियेंदय्य । गरिके माडिदनग्रजाता ॥ ९३ ॥

अर्थ—अर्ककीर्तिकुमार भरत जी से कह रहे हैं कि पिता जी ! आदिराज की अकथनीय बुद्धि का वर्णन मैं कहां तक करूं ? ग्रन्थों के पठन व अभ्यास में वह आदर्श रूप है । जिस प्रकार कोई प्राणी अभ्यस्त पुरातन विषयों का अभ्यास भूल जाने पर शीघ्र ही कर लेता है, उसी प्रकार आदिराज अनभ्यस्त नूतन ग्रन्थों का अभ्यास सहज में ही कर लेता है ॥ ९२-९३ ॥

Prince Arkakirti is saying to Bharatji "Eather ! how should I describe the short intelligence of Adiraja ? He is an ideal in studying the books and practising them Just as a person learns uery easily the forgotten thing after a little parctice, stmilarly Adiraja learns new text even after a little practice. That is to say he learns texts very easily " (92-93)

पद्य—देवर देवन हेसरिट्ट रल्लवे । देवर वाक्य तप्पुवुदे ॥
भाविसलव नादिराज नल्लवे मध्य । भाव्र दंत्यद राजनल्ल ॥ ९४ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति पुनः बोले कि स्वामिन् ! आपने उसका नामकरण करते समय जो भगवान आदिनाथ नाम रक्खा है वह वास्तविक मे बहुत ही युक्त है । विचार करने पर असल में ये आदि-राज राज ही हैं । अर्थात् मध्यराज व अंतराज नहीं हैं । इस प्रकार इन्हों ने प्रशंसा किया ॥ ९४ ॥

Arkakirti again said, "master ! you have given a very proper name of Lord Adinath to him. He is really Adiraja. That is he is neither 'Madhyaraja' nor 'Antaraj' Thus he praised him (94)

पद्य—अहुदे निन्नय चित्तकर्त्ति यादुदे । सहसिये किरियण्ण नेंदा ॥
बहुवचन व नरियेनु नम्म वंशकु । त्सह कारियेंद नय्यनोळु ॥ ९५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी प्रसन्न होकर अर्ककीर्तिकुमार से कहने लगे कि बेटा? सचमुच में तुम्हारा भाई साहसी, वीर व बुद्धिमान है। तुमको उससे संतोष मिला है? तब अर्ककीर्तिकुमार ने पुन: कहा कि पिता जी! विशेष क्या कहूँ? अपने वंश के लिये वह भूषण है ॥ ९५ ॥

Being highly pleased, Shri Bharatesh said to prince Arkakirti, "son! really your brother is courageous, brave and intelligent He is satisfied with you" Then prince Arkakirti said, "father! what to say more he is a jewell for his family." (95)

पद्य—हिरियरु किरियर नंतु बणिणसुवरे। अरसु मक्कळिगिदु नडेये ॥
परिकिम लेनगिन्दु गुणवुंटे येंदना। हिरियरण नोडनादिराजा ॥ ९६ ॥

अर्थ—आदिराज अर्ककीर्ति के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर कहने लगा कि भाई! क्या बड़े लोग छोटों की प्रशंसा करते हैं? क्या राजपुत्र के लिये यह योग्य है? आप व्यर्थ में मेरी प्रशंसा क्यों कर रहे हैं ॥ ९६ ॥

Having heard his princes from the mouth of Arkakirti, Adiraja said, "Do the elder praise the youngers? Is it proper for a prince? Why are you praising me?" (96)

पद्य—दोषविल्लादि देवरु सैरिसणण सं। तोषदि नुडिदने निन्ना ॥
भूषण रल्लवे नीविब्बरेंदु मं। भाषणे गेंदना तंदे ॥ ९७ ॥

अर्थ—श्रीभरतेशजी बच्चोंकी बातोंको सुनकर समझाते हुए कहा कि पुत्र! बड़े भाईने तुम्हारे गुण से संतुष्ट होकर यथार्थ रूप से वर्णन किया है, तो कोई बुरी बात नहीं है। वास्तव में तुम दोनों भूषण स्वरूप हो। इस लिये प्रशान्त रहो ॥ ९७ ॥

Hearing the conversation between the princes, King Bharat said, "son! your elder brother, being highly pleased with you, has praised you. There is nothing wrong in it Really both of you are like ornaments. So be satisfied" (97)

पद्य—ओलग विंदिगे साकिन्तु निम्म रा। जालय केयदि नीदु ॥
ललिताभरण तुँबिद करडगेगळ। लोलपुत्ररिगे नीडिदनु ॥ ९८ ॥

अर्थ—इसके बाद सम्राट ने दरबार को समाप्त करके लोगों से कहा कि अब आप लोग

अपने अपने निवास स्थान को पधारिये । ऐसी आज्ञा देकर रत्नों के आभरणों से भरी हुई दो पेटी लाकर दोनों पुत्रों को दे दिया ॥ ९८ ॥

After that the king dismissed the court and said, "Now you people should retire to your respective places" Directing thus, he brought jewellary box and put it before the princes (98)

पद्य—उडुगोरे येकेभगीगळाभरणके । कडिमे यिल्लेनुतिर्द रवरु ॥
कडुरम्यगेलसदाभरण गळिवनोम्मे । कोडवेकु हिडिरेयेंदा ॥ ९९ ॥
अवरिंदि गोळ्ळेवेंदरु कोट्टरोल्लिरे । नवनिगिन्तु नीवु काणिकेया ॥
सुविधान दिंदित्तरा नोल्लेनेंदना । कुवरर कूडे चक्रेशा ॥ १०० ॥

अर्थ—दोनों लड़कों ने आभूषणों को इनकार करते हुये कहा कि पिता जी ! हम लोगों के पास पर्याप्त आभूषण हैं, इस लिए आभूषणों की कोई आवश्यकता नहीं है। राजा ने लेने के लिए उन दोनों से बहुत आग्रह किया, परन्तु वे परस्तुत नहीं हुए। तब राजा ने पुनः कहा कि बेटा ! आज तुम लोग बहुत उत्तम कार्य कर चुके हो, इस लिए बिना कुछ दिये मैं रह नहीं सकता। आज यदि तुम लोग इसे नहीं लेते तो मैं भी तुम लोगों के हाथों से भेंट नहीं ग्रहण कर सकता। भरत विनोद पूर्वक अपने राजकुमारों से इस प्रकार कह रहे हैं ॥ ९९-१०० ॥

Both the princes rejecting the offer of jewells said, "father ! we have enough ornaments and jewells, so the ornaments are not needed The king pressed upon them to accept it but they did not agree Tnen the king said again, "dear sons ! you have done a nice deed today, I also shall never accept presents from your hands" Thus Bharat is talking to his sons cheerfully (99-100)

पद्य—दोड्ड कुवर मोदल्लडुगोरे विडिये के । योड्डुव किरिय नंदरेदु ॥
एड्ड तुडियोळु दोड्डवन करेवनव । नड्ड मोरेय निक्कुतिहनु ॥ १०१ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने सोचा कि यदि छोटे लड़के ने नहीं लिया तो बड़ा लड़का लेगा ही। इसलिये अर्ककीर्ति के सामने हाथ बढ़ाया, पर उन्होंने भी लेने से इन्कार करते हुये अपना मुख फेर लिया ॥ १०१ ॥

Shri Bharatesh thonght that if it is not accepted by the younger son, it must be taken by the elder one. So he advanced it before Arkakirti, who turned his face and refused to accept it (101)

पद्य—हेळादिराज निएणन्न निन्नय मात। केळु वनेंदना तंदे ॥
तोळेंच्च स्वामि पालिसि कोळ्ळवेकेंदु। हेळुतएणनिगे कैमुगिदा॥ १०२ ॥
एंदरा करडगेगळ वृषभएणन। मुँदे देवरु सुम्मनिरिसि ॥
चेंदळिगैयिद नवगव कोडुवोंदु। चंदव नोडवेकेंदा ॥ १०३ ॥

अर्थ—भरत जी आदिराज से कह रहे हैं कि बेटा ! तुम अपने बड़े भाई से लेनेके लिये कहो पिता की आज्ञा पाकर आदिराज अपने भाई अर्ककीर्ति से उपहार लेने के लिये प्रार्थना करने लगे। अर्ककीर्तिकुमार अपने छोटे भाई के विशेष आग्रह से प्रेम पाश में फँसकर कहने लगे कि पिता जी हम इस उपहार को लेंगे, परन्तु वृषभराज के हाथों से ही हमें उपहारों को दिलवाइये। इस वचन को सुनकर श्री भरतेश जी स्वयं बच्चे की चतुराई देखने की इच्छा से दोनों पेटियों को लाकर वृषभराज कुमार के सामने रखवा दिया॥ १०२-१०३ ॥

King Bharat said to Adiraja, "son ! request your elder brother to accept it, being directed so by his father, prince Adiraj began to request his brother Arkakirti to accept it. Arkakirti being entanged into the affection of his younger brother began to say, "father ! I will accept this offer, but let it be offered from the hands of Vrishabhraja.' Hearing this Bharatji got both the boys put before prince 'Vrishabharaja' in order to see the cleaverness of the boy. (102-103)

पद्य—अदु कार्यवहुदेंदु करडगळ कंद। निदिरोळ्ा नृपनिरिसिदनु ॥
पदेदु नीनेमगुडु गोरेय कोडेंदु बे। डिदरु कैयोड्डि तम्मननु ॥ १०४ ॥

अर्थ—"वृषभराज" कुमार के सामने दोनों पेटियां रक्खी हुई हैं और "अर्ककीर्ति" व व "आदिराज" दोनों हाथों को फैल कर मांग रहे हैं॥ १०४ ॥

Both the boys are put before Vrishbharaja. Arkakirti and Adiraja are demanding it with their hands spead. (104)

पद्य—करडगेगळ् मेले कैयेडनव नीवे। करदि तेगेदु कोंवुदेंदु ॥
करद सन्नेय तोर्पनएणाजि यरिगेत्ति। करव मुगिव नेननेंवे ॥ १०५ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् वृषभराज दोनों पेटियों को हाथों से आगे को बढ़ाते हुये कह रहे हैं कि आप लोग कृपया इसे स्वीकार कर लीजिये। ऐसा कह कर दोनों हाथों को जोड़ लिये॥ १०५ ॥

After that Vrishbharaja, pushing forward the boxes with his hands, is saying "kindly accept it ?" Saying thus he folded his both the hands (105)

पद्य—अज्जन पेसरेंसे नीनीवुदिदु लेसि । नुज्जगवेंदु बेडिदरु ॥
अज्जरंतव तजेगोडहि कैमुगिदनु । पज्जेतप्पुवने चत्रियनु ॥ १०६ ॥
किरियरु पिरियगें काएकेयिक्कुवु दोडे । वेरतुड गोरे गोडरेंव ॥
तेरननी बालकनेल्लि कलितनेंदु । वेरगागि नोडितास्थाना ॥ १०७ ॥

अर्थ—छोटा भाई बड़े भाई को विनम्रता पूर्वक इनाम दे रहा है। इस नवीन पद्धति को देखकर सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये। दोनों राजकुमार वृषभराज से कह रहे हैं कि आप हमारे बाबाके नाम राशि वाले हैं, इसलिये हमलोग आपके हाथसे ही उपहार लेना चाहते हैं ॥१०६-१०७॥

The younger brother is awarding his elder brother, Every body was surprised to see this new custom Both the princes are saying to 'Vrishabha raja' "you are named after grand-father's name So we want to take the pre. sents from your hands" (106-107)

पद्य—मोक्षगामिय पुत्ररवरु तद्भवदोळे । मोक्षव पडेवरवरिगे ॥
अक्षुएण बुद्धि चोद्यवे मरुगके गंध । लक्षण मोळेयोळ गिरदे ॥ १०८ ॥

अर्थ—तद्भव मोक्षगामी श्री भरत जी के पुत्र वृषभराज भी तद्भव मोक्षगामी हैं। ये अनंत बुद्धिमान् है, इसलिये व्यवहार को कैसे भूल सकते हैं। जिस प्रकार काटने पर भी चन्दन वृक्ष अपनी सुगन्ध को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार बाल्यावस्था होने पर भी ये भरत पुत्र भूल कभी नहीं कर सकते हैं ॥ १०८ ॥

Shri Bharatji, the treader of the pathe of salvation, has a son named Vrishbharaja, who also is a traveller on the path of salvation He is infinitely wise Just as sandal tree does not leave its fragrance even if it is cut, similarly these sons of Bharat can commit no faults even in their childhood (108)

पद्य—कोडु वृषभराण नीनवरिगेनुत मंडे । दडहला तंदेय कैया ॥
पिडिदु कोंडा करडगेय मुद्रिसि मुंद । कोडने नूंकित शिशुनगुत ॥ १०९ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने कहा कि बेटा वृषभराज ! इन पेटियों को इन लोगों को दे दो। ऐसा कहकर उनके मस्तक पर हाथ रक्खा तो उसने उन लोगों को दे दिया ॥ १०९ ॥

Shri Bharatesh ji said, Vrishbharaja ! offer these boxes to them " Saying thus, he put his hands upon his head Then he gave those boxes to them. (109)

पद्य—नभय्य नल्लवे अन तप्पि नडेवने । इन्नु नीवानिरै येंदु ॥
तन्न कैमुट्टि कुमार रिव्बुरिगञ्च । रत्नदाभरणव नित्ता ॥ ११० ॥
तंदे कोट्टु गोरेगळ कोंडरोल्बव्व । रोंदोदु हारव तेगेदु ॥
चंददि वृषभ राजनिगिक्कि मिक्कव । नंदु मडिल्लोल्डि रोसेदु ॥ १११ ॥

अर्थ—श्री भरत जी ने प्रेम विनोद करते हुए कहा कि ये हमारे पिता हैं तो व्यवहार को कैसे भूलेंगे ? देखो अपने हाथों से तुम लोगों को समर्पित कर दिये । यह सुनते ही दोनों राजकुमार ने अपने अपने गले से एक एक हार निकाल कर वृषभराज को पहना दिया ॥ ११०-१११ ॥

Shri Bharat ji said joyfully, "he is my father. How could you forget the treatment see ! he has offered them to you with his own hands, hearing this, both the princes put one garland of jewells in the neck of Vrisha. bhraja (110 111)

पद्य—अरेरे यिन्नोंदु विनदवएण मडिलोळु । करड गेयिरिसि कोंवाग ॥
अरमने मुट्टातु तंदीवेनेंदाग । कर व नीडिदनादिराजा ॥ ११२ ॥

अर्थ—इतने में एक विनोद की घटना यह हुई कि जब बड़े भाई अर्ककीर्ति कुमार पेटी को बगल में दबाकर जाने लगे तो छोटे भाई आदिराज ने कहा कि इस पेटी को आप के महल तक मैं पहुँचा दूंगा, आप क्यों कष्ट कर रहे हैं ॥ ११२ ॥

The second pleasant event was this that when the elder brother Arkakirti went out with box in his side, his younger brother Adiraja said, "let me carry this box to your palace Why are taking the trouble " (112)

पद्य—निल्लादिराजु नीनप्पाजि यिदिरोळु । सल्लद नडेये नडेसुवे ॥
एल्ल तेजव नम्म मनेयोळु माडेन । गिल्लि सल्लदु सैरिसेंदा ॥ ११३ ॥

अर्थ—यह सुनकर अर्ककीर्ति कुमार कहने लगे कि पिता जी के सामने व्यर्थ की बातें मत करो । जो कुछ विनय व्यवहार दिखलाना हो वह हमारे महल में दिखलाओ ॥ ११३ ॥

Hearing this prince Arkakirti said, "do not talk uselessly before the father, whatever humility your want to show, do it in my palace (113)

पद्य—एके सल्लदु तंदेयिदिरोळु पुंडर । पोकर नडेयो गौरववो ॥
तूकदि नीवु चित्तैसवेकेनगे से । वाकृत्यगळ हेळबेकु ॥ ११४ ॥
अप्पाजियर केळवारदे नानेंदु । दप्पुदो आगदोयेंदु ॥
तप्पल्ल पालिसेंदण्णन करडगे । गोप्पदि कैय नीडिदनु ॥ ११५ ॥

अर्थ—इसके बाद आदिराज कहने लगे कि पिता जी के सामने ऐसा व्यवहार उचित क्यों नहीं है ? यह दुर्जनों का आचरण है या सज्जनों का ? क्या मैं कोई दुष्कर्म कर रहा हूँ जिससे पिता जी के सामने संकोच करूँ ? आप अपनी प्रतिष्ठा के समान ही चलकर मुझे सेवा करने की आज्ञा दीजिए। मैं उचित और अनुचित के निर्णय को पिता जी से पूछ कर करूँगा। पर विशेष कोई हर्ज नहीं है, ऐसा कहकर अपने हाथों को पेटी लेने के लिए आगे बढ़ाया ॥ ११४-११५ ॥

After that Adiraja said, "why it is not proper before father ? Is it the conduct of wicked or gentlemen ? Am I committing something wrong, for which I should be ashamed of before the father kindly allow me to serve thee in the same position I will do good or bad after due consultation with the father but there is no harm in it" Saying so, he advanced his hands to take the boxes (114-115)

पद्य—कोडदे तम्मण कैयनण्ण नूँकुवनद । बिडेनेंदु हिडिदना तम्म ॥
मिडुकदे सभे बेरगागिदुदवर्गे सं । गड सिद विनयद कंडु ॥ ११६ ॥

अर्थ—आदिराज कहनेलगा कि अब मैं इसे छोड़ नहीं सकता यह कहते हुए अपने बड़े भाई से पेटी को छीनने लगा। दोनों राजकुमारों के विनय विनोद युद्ध को देखकर सभी दरबारी आश्चर्य चकित होगये ॥ ११६ ॥

Adiraj said, 'I can not give it up" Saying thus he began to snatch the box from his elder brother All the courtiers were surprised to see pleasant trifle among both the princes (116)

पद्य—नडे नोडि राजेंद्र मन हिग्गि दोड्डण्ण । कोडु कोडै सललर्ति येंदा ॥
जडिदादिराज तानद नोयूदु कोंडाग । मडिलोळिट्टनु विलासदोळु ॥ ११७ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत जी इस विषय को देखकर मन ही मन प्रसन्न होते हुए अर्ककीर्ति से बोले कि बेटा ! पेटी छोटे भाई को दे दो जिससे इसकी इच्छा की पूर्ति हो जाय। इस बात से

कुछ सहयोग पाकर आदिराज ने बड़े भाई से पेटी को छीन लिया और अपनी बगल में दबा लिया ॥ ११७ ॥

Chakravarti Bharat being highly pleased within himself, said to Arkakirti, "O son ! give the box to your younger brother, so that he may be satisfied Being encouraged thus, Adiraja snatched away the box from his brother anb kept in his side (117)

पद्य—तावड कोलेत्ति तंडेगे कैमुगि । दोवि मुंदप्पण हिंदत्तुजा ॥
भावशुद्धदोळत्त सागिदग्नित म । हा विभु लीलेयोळिर्द्दा ॥ ११८ ॥

अर्थ—इसके बाद दोनों लड़के भरत जी को भक्ति पूर्वक नमस्कार करके क्रमशः अपने महल की ओर जा रहे हैं । ११८ ॥

After that both the princes, saluting their father, went to their resepctive palaces (118)

पद्य—तित्तेर गाळे तंबटदि प्रभासांक । नित्त लेयुत रुतिर्द्दनाग ॥
चित्तानुमतिगे कंदवनित्तु निजग्रह । दत्त बीळ्कोट्ट ना रायाा ॥ ११९ ॥

अर्थ—इधर श्री भरत जी आनन्द के साथ सभा में विराजमान हुए कि इतने ही से आकाश में विविध गाजे बाजे के शब्दों से मालूम हुआ कि "प्रभासागर" आरहा है । तब 'चित्तानुमति' नाम की दासी को बुलवाया और छोटे राजकुमार को सौंप कर उसे महल में भेज दिया ॥ ११९ ॥

Bharatji is seated on his throne, meanwhile 'Prabhasagar' is coming through the sky with various types of musical instruments being played Then the king sent for the maid named 'Chittanumati' and sent the little prince to the palace with her (119)

पद्य—रामणीयकवाद सभेय मध्य दोळमि । रामवेरिर्द्दना चक्रि ॥
व्योमदोळ बनेयुदे बरुतिर्द्द निडु प्रभा । सामर चिन्हद संधि ॥ १२० ॥

अर्थ—उस समय रमणीक सभा में श्री भरत जी गौरव के साथ सिंहासन पर बैठे थे और उसी समय आकाश मार्ग से प्रभासागर आ रहा था ॥ १२० ॥

The time when, Bharat, ji was seated gloriously on his throne, 'Prabhasagar' was coming in the sky (120)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळिदवर पाप । बीज निर्नाशन बहुदु ॥
तेज वड्डु पुण्य वहुदु मुँदोलिदप । राजितेश्वरन काणुवरु ॥ १२१ ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेंगे उनका पाप, बीज नष्ट होगा । तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य वन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेंगे ॥ १२१ ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation) (121)

पद्य—प्रेमदिंदिद नोदिदरे पाडिदरे केळ्द । रामोद बैदुवरवरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय कांववरतिंयोळ् ॥ १२२ ॥

अर्थ—इस कथा को जो प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे वे आमोद को प्राप्त होंगे और नियम से देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ १२ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra (122)

पद्य—ओसगेय मेलोसेगेयनित्तु सतत भा । विसुवर पालिप महिमा ॥
नसुमास देन्नेदे योळगिरु निच्च सं । तसने चिदम्बर पुरुषा ॥ १२३ ॥

अर्थ—हे सिद्ध परमात्मन् ! जो आप के चरणों में निष्कपट हृदय से प्रेम रखते हैं, उन्हें आप रात दिन आनन्द देकर उनकी रक्षा करते हैं । आप नित्यानन्द मय हैं । इसलिए हे चिदम्बर पुरुष सिद्ध भगवन् ! आप हमारे हृदय में अनवरत बसे रहिये ॥ १२३ ॥

O 'Siddh Parmatman' ! those who are devoted to thy feet with open heart, are always happy under thy mercy Thou art full of immortal joy So O Lord Chidambar ! reside in our hearts for ever (123)

॥ इति द्वितीय भाग का आठवाँ अध्याय प्रभा सामर संधि संपूर्ण ॥

नवां अध्याय

❀ विजयार्ध दर्शन संधि ❀

पद्य—उसरेंब करगसदिंद देहात्मर । बेसुगेय त्रिडिसि नोडिदरे ॥
मसुळदे तोर्प महात्म नीनेनगोल्प । नेसगु निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—हे सिद्ध परमात्मन् ! आप अपने रूप को लोक में प्रत्यक्ष नहीं करते । जो लोग ध्यान पूर्वक आत्मा व शरीर को भिन्न जानते हैं, उनके लिये आप प्रत्यक्ष में दिखलाई देते हैं । आप प्रकाश मान होकर दृष्टिगोचर होते हैं । इसलिये हे निरञ्जन सिद्ध भगवान ! मेरे हृदय में सर्वदा स्थिर रहकर मुझे अपना दर्शन देते रहिये ॥ १ ॥

O Lord Siddh ! thu art not cog[illegible]zable by sight in this world, and art visible only to those, who have realised the separate existance of soul and body Thy appearance is luminous one So O Lord Niranjan Siddh ! kindly reside for ever on the corner of my heart and give thy pious appearance to me (1)

पद्य—बलगूडि बंदु समुद्र दोत्तिनोळाप्त । बलव निल्लिसि व्यंतरेंद्रा ॥
ललित विमानदिंदिळिदु चक्रेशन । बलिगैदुतिर्द नतिंयोळु ॥ २ ॥

अर्थ—प्रभासामर व्यन्तरेन्द्र अपने विमान से उतरकर अपनी सेना तथा ऐश्वर्यादि चिन्हों को समुद्र तट पर ही छोड़कर भरत चक्रवर्ती के पास सानन्द आरहा है ॥ २ ॥

पद्य—प्रतिभासनेंब तन्नय नाळिनवनु त । न्नतुळमंत्रियु तन्न हिंदे ॥
हितगेय्द सुरकीर्ति ध्रुवगतिगळु मुंदे । गतिगेय्ये गमिसिदनवनु ॥ ३ ॥

अर्थ—प्रतिभास नामक प्रतिनिधि व मंत्री उसके साथ है । साथ ही साथ उसके हितैषी सुरकीर्ति व ध्रुव गति भी उपस्थित हैं । दोनो आगे आगे चलते हुये धीरे धीरे आ रहे हैं ॥ ३ ॥

पद्य—नेरिदनोप्पच्चिय तोरिद निक्किद । भूरि भूषणकांति केदरे ॥
गौर वर्णनु प्रभासामर बरुतिर्द । ना राजकटकव होक्कु ॥ ४ ॥

अर्थ—प्रभासामर बहुत सुन्दर है । अनेक रत्न निर्मित दिव्य वस्त्राभूषणों के धारण करने से और भी सुन्दर मालूम होता है गौर वर्ण है । इतना ही नहीं उसका मन भी शुभ है । भय व भक्ति युक्त होकर प्रभासामर सम्राट के पास आरहा है ॥ ४ ॥

पद्य—कप्प काणिकेय वस्तुव मंत्रि युवराज । रोप्पदि ताळ्दोड नेय्द ॥
दुप्पटि युडेसुत्ति भयभक्ति यिंदोजे । तत्प देय्द रुतिर्दनवनु ॥ ५ ॥

अर्थ—वह हाथ मे धोती दुपट्टा तथा अनेक प्रकार की भेंट वस्तुयें लेकर आनन्द पूर्वक भरत जी के पास आरहा है ॥ ५ ॥

पद्य—इडि क्रिगिद्दिद्दाने कुदुरे तेराळ्गळ । निडुरत्न मय दंडधरर ॥
एडबल दोळ् नोडु तोय्यनोय्यने पज्जे । यिडुतिर्दन व्यंतरेंद्रा ॥ ६ ॥

अर्थ—प्रभासामर के इधर उधर हाथी घोड़े तथा अनेक सैनिक स्वर्ण तथा रत्न जटित दण्ड धारण किये हुये खड़े है। प्रभासामर अपनी दायीं व बायीं ओर दृष्टि पात किया तो चक्रवर्ती की अपार सेना को देखकर आश्चर्य चकित हो गया। इन सभी बातों को विचारते हुये धीरे धीरे प्रभासामर भरत जी के सम्मुख आरहा है ॥ ६ ॥

पद्य—तोलगु कुळ्ळिरु ध्वनिमाड दिरोचदि । रेले महासभे यल्लतेयेंदु ॥
कलिगळ देव चक्रधरदेव जयचांगु । भलयेने केळ्तेयिद्ददनु ॥ ७ ॥

अर्थ—उस विशाल सभा में वेत्रधारी गण 'रास्ता छोड़ो, बैठो, हल्ला मत करो" आदि शब्दोच्चारण करते हुये व्यवस्था कर रहे है ॥ ७ ॥

पद्य—इदिरोळु चक्रिय रूप कंडिवनेनु । त्रिदशपतियो नरपतियो ॥
मदननो चंद्रनो सूर्यनोयेंदु त । न्नेदेयोळे णिसुते यद्दुतिर्दा ॥ ८ ॥

अर्थ—प्रभासामर ने सभा में पहुँचकर सिंहासन पर विराजमान चक्रवर्ती के विशद रूप को जिस समय देखा उस समय अपने मन में अनेक प्रकार की कल्पना करते हुये वह कहने लगा कि क्या यह चक्रवर्ती है ? देवेन्द्र है ? या कामदेव है ? चन्द्र है ? या सूर्य है ? ॥ ८ ॥

पद्य—सरितदोळोत्तिगे सार्दिवनीगव । धरिसु प्रभासेंद्र नेंदु ॥
सुरकीर्ति ध्रुवगतिगळु चक्रधर गेत्ति । करव मुगिदु काणिसिदरु ॥ ९ ॥

अर्थ—ध्रुव गति तथा सुरकीर्ति ने राजा भरत के समीप जाकर सादर नमस्कार किया और नम्रता पूर्वक कहने लगा कि स्वामिन् ! प्रभासामर यही है ॥ ९ ॥

पद्य—स्वामि समुद्र तीर दोळिद्द नेंदावु । नाम मात्रव पेळ्लोडने ॥
भूमिगे ताने कृतार्थ नेंदुरे प्रभा । सामर नरिदनु नृपति ॥ १० ॥

अर्थ—हे स्वामिन् ! जब हमने इसे यह समाचार बतलाया कि राजा भरत समुद्र तट पर विराजमान हैं, तब वह मन ही मन प्रसन्न होकर कहने लगा कि आज मैं कृतार्थ हो गया और हमारा जीवन सफल होगया ! कहाँ तक कहूँ ? आप के आगमन समाचार प्राप्त करके वह बहुत प्रसन्न हुआ ॥ १० ॥

Prabhasamar, the king of all the 'vyantras' leaving all his army and other royal symbals on the seashore proceeding towards the emperor Bharat pleasantly. His minister named Pratibhas was accompanying him Sukirti and Dhruva were also with him Pratibhasmar was extremely beautiful His beauty has all the more increased due to his precious dresses and ornaments His colour was fair Not only this his heart was also fair He was full of awe and devotion for the emperor He had 'dhoti' 'dupatta' and other presents in his hand. Innumerable soldiers of elephantry, and horses surrounded him with their sticks studded with jewells Prabhasamar saw the royal army of his right and left and was wonder struck. The volunteers in that huge gathering of emperor Bharat, were setting every thing right and asking the people to keep silence. On reaching before the throne on which the emperor was sitting, Prabhasamar saw the huge and gracious personality of the emperor He thought within himself if he was the Chakravarti or Indra himself He further guessed him to be the cupid, moon or the sun. Dhruvagati and Surkirti saluted the emperor and entreated respectfully that Prabhrsagar was present before his lordship They further informed tne royal personage of Prabhasagar's eagerness to meet him and thus make his life successful (2-10)

पद्य—मुन्न मागध सुर व रतनु गळ्नोल्दु । मन्निमि घन्यर माडि ॥
नन्न नुद्धरिसल्लेय्तदने रायर । रन्न नेंदर्त्ति माडिदनु ॥ ११ ॥

अर्थ—इससे पहिले जिसने मागधामर, वरतनु इत्यादि को पवित्र किया है ऐसे स्वामी मेरे उद्धार के लिये पधारे हैं मेरा परम भाग्य है इत्यादि अनेक प्रकार की बातों को कहकर प्रभासामर ने हर्ष प्रकट किया ॥ ११ ॥

पद्य—मोदल वंनुत्त वंतिरलिदु स्वामिय । म्युदय वार्तेय तंदिरेंदु ॥
ओदविद प्रीतियोळ मर्दप्पि कोंडेम । गुदित्त सत्कार माडिदनु ॥ १२ ॥

अर्थ—इतना ही नहीं, स्वामिन् ! विशेष क्या ? जब हम लोग आप का समाचार लेकर वहाँ पहुँचे तब प्रभासामर ने कहा कि बंधुवर ! पहिले का बंधत्व तो अपने साथ है ही, फिर भी आज आप लोग स्वामी के अभ्युदय समाचार को लेकर आये हैं। इसलिये आप लोगों से अधिक हितैषी हमारे और कौन होंगे ? ऐसा संबोधन करते हुये हम लोगों का प्रेम से आलिंगन किया तथा हमारा यथेष्ट आदर सत्कार किया ॥ १२ ॥

पद्य—नाडमातेनु स्वामिय काणवेनेंदर्ति । माडियेय्तंद नेंदुसुरि ॥
जोडिसि ताविर्वररस नोत्तिनोळु मा। ताडदे निंदरु मत्ते ॥ १३ ॥

अर्थ—स्वामिन् ! अधिक कहने से क्या प्रयोजन है ! आप के दर्शन करने की उत्सुकता से वह यहाँ पर आया है। आप के सामने खड़ा है। इस प्रकार कहकर दोनों देव चुपचाप एक ओर खड़े हो गये ॥ १३ ॥

पद्य—सेळेदु निवाळियनिट्टु प्रभासांक । बळिकोडेयन पादगळिगे ॥
पळ पळ नपरंजियरल वेळ्ळिय हूव। मळेगरेदनु काणकेयेंदु ॥ १४ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् प्रभासेन्द्र ने मान पूर्वक राजा के चरण कमलों में नमस्कार किया, अनेक प्रकार के स्वर्ण, मोती तथा रत्नादि आभूषणों को समर्पित किया एवं अनेक प्रकार की पुष्प वृष्टि करते हुये भरत जी की सुन्दर स्तुति किया ॥ १४ ॥

पद्य—हेममुक्तालि संतानव वसुमाणि । स्तोमव कप्पवेंदिरिसि ॥
आ मंत्रियुवराज वेरसि साष्टांगाभि। रामदोळेरगिद नोडने ॥ १५ ॥

अर्थ—प्रभासामर हेम, मुक्तामणि, तथा रत्नादि आभूषणों को भरत जी के चरणों में समर्पित करके साष्टांग नमस्कार किया तथा वार वार उनकी स्तुति करने लगा ॥ १५ ॥

After that Prabhasamar showed his happiness by saying ·

"The master, who has delivered men like Magdhamar and Vartanu, is pleased to come here to deliver me also from all sorts of troubles I am very fortunate."

They further said, "not only this much Prabhasamar told us that we had brotherhood with him previously, but now we became more intimate because we brought the news of the arrival from his magesty emperor Bharat Addressing so he embraced us very affectionately and respected us in all possible manner My Lord ! what to say more of him. He has come here

only for your pious visit He is standing before you." Saying thus both of them stood aside silently

After that Praphasendra bowed down in the lotus like royal feet and saluted him Then he offered innumeable presents of gold, pearls, jewells etc and prayed him by showering flowers upon him Prabhasamar, offering 'hema' jewells, pearls and other precious ornaments, prostrated himself before the emperor and prayed him repeatedly (11-15)

पद्य—आदि तीर्थेशाग्र सुकुमार जय जय । आदि चक्रेशमां पहि ॥
ओ देव धन्योस्मि येंदरगिद्ना । मोदर्दिंडा व्यंतरेंद्रा ॥ १६ ॥

अर्थ—प्रभासमागर-हे आदि तीर्थेश्वर अग्र सुकुमार ! आप की जय हो । आदि चक्रेश ! माम् पाहि अर्थात् मेरी रक्षा करो । हे देव ! धन्योऽस्मि अर्थात् मैं धन्य हूँ । इसी तरह अनेक प्रकार की प्रथंना करते हुये सम्राट को प्रणाम किया ॥ १६ ॥

पद्य—करुणदि नोडि चक्रेशन नेळेंब । निरदेद्द निर्वरु सहित ॥
हरिपीठद ळगेसेवरम निदिरोळु नि । दररे कीति सिदनेनेंबे ॥ १७ ॥

अर्थ—इस के बाद भरत जी करुणा पूर्ण दृष्टि से प्रभासामर की ओर देखकर उसे उठने के लिये आज्ञा प्रदान किया । स्वामी की आज्ञा पाकर सिंहासन के सामने खड़ा होकर प्रभासामर ने इस प्रकार की स्तुति किया कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ १७ ॥

पद्य—एवेयिक्कु मिद्र कुंदद चद्र हिमिविडु । रवि तनुवांत मनोजा ॥
अवनीश वेष दोळेय्दिदें जगद ला । ड्यव तोळेदै स्वामिदेदा ॥ १८ ॥

अर्थ—प्रभासामर-हे निमिष लोचनेन्द्र ! निष्कलंक चन्द्र ! उष्ण रहित सूर्य ! सशरीर काम देव ! आप राजा के रूप में जगत् की जड़ता को मिटाने तथा संपूर्ण विश्व को सुख देने के लिये उत्पन्न हुये हैं ॥ १८ ॥

पद्य—साकेत पुरदोळिद्दरे कडलोळगिद्द । नेक व्यंतररु मै मरेदु ॥
काकप्प रेंदेम्म रक्षिमलेयुदि दे । लोकैक मंगल येंदा ॥ १९ ॥

अर्थ—हे स्वामिन् ! अयोध्यानगरी में रहने पर समुद्र के अनेक व्यन्तर उनमत्त होकर दुर्मार्ग गामी बनेंगे, इसलिये हम लोगों को उद्धार करने के लिये आप यहाँ पधारे हुये हैं । स्वामिन् ! हम लोगों की रक्षा कीजिये । इस प्रकार अनेक तरह की विनम्र वाणी द्वारा सम्राट की स्तुति किया ॥ १९ ॥

पद्य—परम हंसाराम तद्भव मोक्ष भा । सुरने केळ् निन्नय सेवे ॥
धरेयोळ्ळेल्लरिगेके बहुदेम्म पुण्यके । सरियुंटे स्वामि हेळ्ळेंदा ॥ २० ॥

अर्थ—हे स्वामिन् ! आप परमात्मा को प्रसन्न कर चुके हैं, इसलिये इसी भव से मोक्ष को जाने वाले हैं । हे सुमुख ! आप की सेवा करने का सौभाग्य लोक में क्या सबको मिल सकता है ? कभी नहीं । हम लोग सचमुच में परम भाग्यशाली हैं क्योंकि हमें आप की सेवा करने का शुभ अवसर प्राप्त हो गया ॥ २० ॥

Prabhasamar hailed emperor Bharat as 'Tirtheshwar' 'Agra Sukumar' 'Adichakreshvar' and 'Deva' and saluted him most devoutedly He requested the emperor for his own protection. Bharat ji saw him with an eye full of the milk of human kindness and asked him te get up Prabhasamar, being permitted by his Lord, stood before the royal throne and prayed him highly He addressed the emperor as the spotless moon, the sun without heat, cupid in his physical self born in this world to remove the ignorance from this world and provide comforts to all. He went on praising the emperor that the royal personage was pleased to go there only for the deliverance of the vyantras He requested him in humble words to extend to them his protection He further addressed the emperor as the attainer of salvation, the possessor of gracious face and state that only few can catch the opportunity of serving him. He considered all the vyantaras very fortunate in this way. (16-20)

पद्य—सुमुखनै बळलिदे कुळ्ळिळरेंदवन भू । रमन कुळ्ळिळर गोडसिदनु ॥
समते योळव मंत्रि प्रति भासरोडगूडि । गमक दोळोल्दु कुळ्ळितनु ॥ २१ ॥

अर्थ—इतने में भरत जी ने प्रभासामर से कहा कि हे सुमुख ! तुम बहुत थक गये होगे, अब बैठ जाओ । ऐसा कहकर एक आसन की ओर संकेत किया । स्वामी की आज्ञा पाकर प्रभासामर मंत्री के साथ निर्दिष्ट आसन पर बैठ गया ॥ २१ ॥

पद्य—सुरकीर्ति भ्रुवगति कुळ्ळिळरिरैयेंदु । भरतेश बुद्धिसागरना ॥
तिरुगि निट्टिसिदना सचिव कालोचित । दिर वरिदितु नुडिदना ॥ २२ ॥
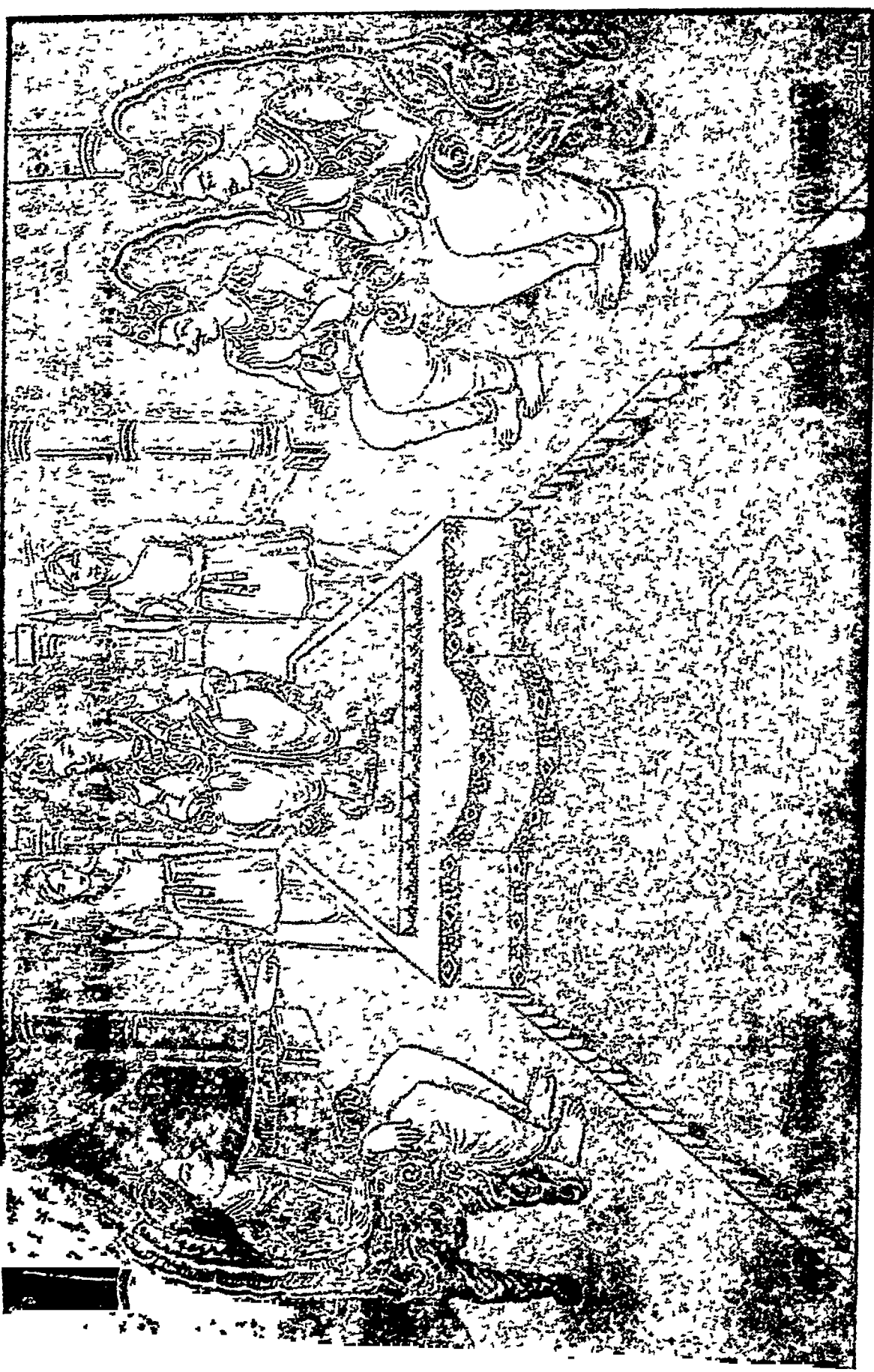
सुरकीर्ति व भू,,वगति को बैठने की आज्ञा देकर चक्रवर्ती ने मन्त्री की ओर देखा तत्पश्चात् चक्रवर्ती के अभिप्राय को समझकर मन्त्री ने उन दोनों को बैठाकर कहा कि स्वामिन् ये दोनों बहुत बड़े विवेकी हैं।

यह चित्र कृष्णादेवी जैन धर्मपत्नी ला० कुञ्जविहारीलाल जैन लहरपुर द्वारा प्राप्त हुआ।

पद्य—राय प्रभास देवनु सुविवेकि नि । र्म्माय निम्मय पाद् प्रीता ॥
श्रेयनु भव्यसेवेय पडेद्नु दोड्ड । श्रीयावुद्व निगिन्नेंदा ॥ २३ ॥

अर्थ—सुरकीर्ति व ध्रुवगति को भी बैठने के लिये आज्ञा देकर सम्राट ने बुद्धिसागर मंत्री की ओर दृष्टि पात किया। मंत्री सम्राट के आशय को समझ कर कहने लगा कि स्वामिन्! प्रभासदेव परम विवेकी है, माया रहित है तथा आप का अत्यन्त भक्त होकर आप की सेवा में अत्यन्त स्नेह रखता है। वह भव्य है, महा यशस्वी है तथा बड़े सौभाग्य से आप की सेवा को प्राप्त हुआ है॥ २२-२३ ॥

पद्य—मागधामर वरतनु गळिव्वरे पुण्य । भागिगळा गिद्दरंदु ॥
ईग प्रभासेंद्र गूडि मूवरु पुण्य । भागिगळा दरेंदोरेदा ॥ २४ ॥

अर्थ—मंत्री-स्वामिन्! पहिले वरतनु, मागध पुण्यशाली गिने जाते थे, पर अब प्रभास भी महान् पुण्यशाली है ॥ २४ ॥

पद्य—कर लेस नाडिदे मंत्रि येंददके मू । वरु महानंद वेय्दिदरु ॥
परिकिसु ध्रुवगति सुरकीर्तिगळ सेवे। सुरस वाय्तेंदना मंत्रि ॥ २५ ॥

अर्थ—मंत्री के उपरोक्त वचन को सुनकर तीनों बहुत प्रसन्न होकर शांति पूर्वक बैठ गये मंत्री ने पुनः निवेदन किया कि आज ध्रुवगति व सुरकीर्ति ने जो सेवा किया है वह भी बहुत स्तुत्य है ॥ २५ ॥

Meanwhile Bharatji addressed Prabhasamar as 'Sumukji' and asked him affectionately to sit down on one of the seats there Prabhasamar did accordingly along with his minister The emperor directing Surkirti and Dhruvagati to sit down, turned towards Buddhisagar, his own minister, who understanding the royal purpose fully told his master that Prabhas Deo was very wise, unillusioned and extremely devoted to his lordship, and willingly eager to offer his services is gracious, prosperous one and is fortunately inclined your service Previously only varatanu and Magadh were counted as pious ones, but now Prabhas also is one of them Listening to the minister's wards of praises, all the three were highly pleased and took their respective seats peacefully The minister further praised Dhruvagati and Surkirti for their valuable services (21-25)

पद्य—मनेगे होगलि प्रभासामर निंदु मे । ल्लने नावु मुंदे बिट्ट डेगे ॥
अनुगमिसलि देव कल्हह चित्तैसेंदु । विनय दोळोरेदना सचिवा ॥ २६ ॥

अर्थ—मंत्री ने विनम्रता पूर्वक पुनः कहा कि स्वामिन्! यदि प्रभासेन्द्र अपने मुकाम पर जाना चाहे तो उसे जाने की अनुमति दीजिये और आगे जिस स्थान पर मुकाम करें वहाँ आने की आज्ञा दे दीजिये ॥ २६ ॥

पद्य—करेदु प्रभास देवगे प्रतिभासांक । गेर विल्लदचर सचिवगे ॥
हिरिदुडुगरेयित्त नोलग दोळगिर्द । दोरेगळेल्लर्तिं माल्पंने ॥ २७ ॥

अर्थ—भरतेश्वर ने भी मंत्री सहित प्रभासामर को बुलाकर अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण व रत्नों को भेंट में दिये । साथ ही साथ सुरकीर्ति व ध्रुवगति को भी यथोचित भेंट देकर उनका सत्कार किया । भरत जी सभी राजाओं के सामने अत्यधिक सम्मान इसलिये करते थे कि जिससे उनकी कीर्ति बढ़े ॥ २७ ॥

पद्य—अवर्गे मन्नणेयित्त सुरकीर्ति बारेले । ध्रुवगति बारेंदु करेदु ॥
नवरत्न भूपण वित्तु नीवेमगे त । क्कव सर दाट्गळे संदा ॥ २८ ॥

अडिगेरगिद ध्रुवगति सुरकीर्ति यो । ळोडने कुळ्ळिरियेंदु नुडिदु ॥
नडे प्रभामांक निन्नूरि गेंदवन बी । ळ्कोडुवष्टरोळ्गोंदु चोद्या ॥ २९ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती ने ध्रुवगति व सुरकीर्ति को अपने पास पुनः बुला कर नव रत्नाभरणों को भेंट में देकर कहने लगे कि तुम हमारी सेवा करने के लिये बहुत कुशल हो; क्योंकि आज तुमने बहुत परिश्रम किया । ऐसा कहकर अपने चरणों में झुके हुये इन दोनों को उठने की आज्ञा देकर प्रभासामर को भी अपने घर जाने की आज्ञा दे दिया ॥ २८-२९ ॥

पद्य—ओसगे ओसगेर्येव गलभे हुट्टिदुदुता । मसमाडि पोपे नानेंदु ॥
वसुधाधिपतिय मुंदवनोल्दु कुळितनि । त्तोसगेयेनेंबे नच्चरिय ॥ ३० ॥

पद्य—संचय सभेयल्लि नृपनिन्तालिरलत्त । मिंचुवेत्तर मनेयोळगे ॥
रंच कांतियरु पेत्तरु पंचपुत्रर । पंचरत्नव पडदंते ॥ ३१ ॥

अर्थ—इतने में एक और संतोष की घटना यह हुई कि राज दरबार में जिस समय प्रभास देव के मिलाप में हर्षालाप हो रहा था उस समय राज महल में पाँच रानियों ने पाँच पुत्र रत्नों को प्रसव किया ॥ ३०-३१ ॥

पद्य—श्रीमाले वनमाले गुणदेवि मणिदेवि । हेमाजियेंब कांतेयरु ॥
नेम दोळैवरु पुत्रर पडेदरु । काम नैसरल नगुवरा ॥ ३२ ॥

अर्थ—श्रीमाला, वनमाला, गुणदेवी मणिदेवी तथा हेमाजी नामक पाँच रानियों ने इतने सुन्दर पुत्रों को उत्पन्न किया कि जिसकी शोभा कामदेव के पंच बाणों को भी तिरस्कृत कर रही थी ॥ ३२ ॥

पद्य—राणिय रनिवदृटोळेगेये नृपनिद् । तानके कळहुदोंदु ॥
जाननवर नेन नेवेनवरु नेरे । जान नर्धांगिय नलते ॥ ३३ ॥

अर्थ—अंत पुर से पाँच पुत्रोत्पत्ति समाचार लेकर जो दासियाँ आई हैं वे बहुत चातुर्य के साथ आरही हैं क्योंकि दासियों को भेजने वाली रानियाँ भी कम बुद्धिमती नहीं थीं ॥ ३३ ॥

पद्य—कदबोद बागि हेगदु होगि नृपगे हे । ळिढोडएग तम्म निर्तेदु ॥
मोदलु कडेयोल्दु हुट्टिदनरियवार । ददके योचिसि कळुहिदळु ॥ ३४ ॥

अर्थ—रानियों ने सोचा कि यदि दासियाँ क्रम से अर्थात् आगे पीछे जाकर पुत्रोत्पत्ति समाचार कहेंगी तो अमुक रानी का पुत्र छोटा या बड़ा है, और पहिले या पीछे जन्म हुआ है इत्यादि बातें व्यक्त हो जायेंगी इस लिये सभी दासियों को एक पंक्ति में जाकर एक साथ ही कहने के लिये आज्ञा दी थी ॥ ३४ ॥

पद्य—आ स्थानदोळ् मतियरनाम मल्लंद । तस्थदोळ् पतिकेळ्लेके ॥
ई स्थिति गवर हेगुरु हि नवरनहि । स्वस्थ वेंदणि मिदरवरु ॥ ३५ ॥

अर्थ—इस कारण सभी दासियाँ एक साथ ही पंक्ति बद्ध होकर भरत जी के दरबार में हर्ष पूर्वक आरही हैं ॥ ३५ ॥

पद्य—बालगेळोब्बर हिंदोगेदने श्री । माले मुंताद नारियर ॥
ऊळिग वेंगळैवर नोंदु गृडदं । सालागि कळुहिद राग ॥ ३६ ॥

ओब्बोब्बरेडेगे नाल्केंटु मागघ्द वि । ट्टोब्बु ळियोंद सालागि ॥
उब्बि नोळ्ळेडि बप्पर कंडु सुतगद । कोब्बेंदु तिळिदना चक्रि ॥ ३७ ॥

अर्थ—भरत जी ने श्रीमाला आदि पाँचों दासियों के गति चातुर्य को दूर से देखते ही जान लिया कि ये दासियाँ पुत्रोत्पत्ति समाचार को लारही हैं । और कोई बात नहीं है ॥ ३६-३७ ॥

पद्य—श्री माले यूळिग दवळेयूदि नगुतेले । स्वामि नम्मम्माजियिंदु ॥
कोमल सुतन पडेदरेन लोंदु मु । क्ता माले यित्तनवळिगे ॥ ३८ ॥

अर्थ—पाँचों दासियाँ एक साथ ही भरत जी के निकट पहुँच कर हँसती हुई पुत्रोत्पत्ति समाचार को सुनाने लगीं । भरत जी पुत्र रत्न की प्राप्ति का समाचार सुनते ही प्रसन्न होकर "श्रीमाला" रानी की दासी को एक मोती की माला अपने कंठ से निकाल कर दे दिया ॥ ३८ ॥

पद्य—वनमाले यूळिग दवळेयूदि स्वामि चे । ल्वे निस लेम्मम्माजियिदु ॥
तनुजन पडेंद रेंदेन लोदनोंदु मु । त्तिन सर वित्तनवळिगे ॥ ३९ ॥

अर्थ—इस के बाद "वनमाला" रानी की दासी ने कहा कि स्वामिन् ! हमारी राजमाता ने आज बहुत सुन्दर एवं उत्तम पुत्र रत्न को उत्पन्न किया है । इस शुभ सूचक शब्द को सुनकर भरत जी उसे भी एक मोती माला गले से निकाल कर दे दिया । ३९ ॥

पद्य—गुणदेवि यूळिग दवळेयूदि मुद चतु । गुणिसे नम्मम्माजियिंदु ॥
गुणरत्नसुतन पडेदरन लोडने नोंदु । गुणयुक्त हारव नित्ता ॥ ४० ॥

अर्थ—इसके बाद "गुणदेवी" रानी की दासी ने कहा कि स्वामिन् ! आज हमारी राजमाता ने उत्तम गुणी पुत्र रत्न को उत्पन्न किया । इस हर्ष समाचार को सुनकर इसे भी एक मोती की माला कंठ से निकालकर दे दिया ॥ ४० ॥

पद्य—मणिदेवि यूळिग दवळेयूदि चक्रिगे । मणिदु नम्मम्माजिगिंदु ॥
मणि बोंबेयंदद मगनाद नेन लोंदु । मणिहार वित्तनवळिगे ॥ ४१ ॥

अर्थ—"मणिदेवी" रानी की दासी ने कहा कि स्वामिन् ! आज हमारी राजमाता ने उत्तम माणिक्य के समान पुत्र रत्न को उत्पन्न किया है । भरत जी प्रसन्न होकर इसे भी एक मोती की माला कंठ से निकालकर दे दिया ॥ ४१ ॥

पद्य—वदु हेमाजि यूळिग दवळम्माजि । कुँदजवोंबे यंतेसेव ॥
कंदन पडेदरें देनलवळिगे नलि । दोंदु मुत्तिन सरवित्ता ॥ ४२ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् "हेमादेवी" रानी की दासी ने कहा कि स्वामिन् ! आज हमारी राजमाता ने प्रभायुक्त कुन्दन के समान पुत्र रत्न को उत्पन्न किया है । इस हर्ष समाचारको सुनकर इस दासी को भी एक मोती की माला कंठ से निकाल उपहार में दे दिया ॥ ४२ ॥

पद्य—परि विडियिंदोळ्व रोळ्वरि गोंदोंदु । सरव समान दोळीये ॥
भरत चक्रेश निक्किर्द कोरळ पंच। सर सरियादुदैवरिगे ॥ ४३ ॥

अर्थ—भरत जी अपने कंठ में से पाँचों दासियों के लिये एक एक माला निकालकर दे दिया पर उनके कंठ में इतनी अधिक मालायें थीं कि उनका गला रिक्त नहीं हुआ। अर्थात् उनका कंठ चमक रहा था ॥ ४३ ॥

पद्य—पंचकुमार रोसेगेय पेळ्दवरिगे । पंचसरव नीसेदित्तु ॥
पंचमुखासनदोळु लीलेयेंदिद । पंचास्त्र निर्जित रूपा ॥ ४४ ॥

अर्थ—पंच पुत्रोत्पत्ति समाचार जो लोग सुनाये थे उन सबको भरत जी पंच रत्न माला देकर स्वयं पंच मुख सिंहासन पर पंचास्त्र धारण किये हुये आनन्द के साथ बैठे थे ॥ ४४ ॥

पद्य—अरमनानंदव नंतिंतुटेंबुदं । तिरलि महास्थानदल्लि ॥
नेरादेद्देरेल्लरु तवेग चक्रेशन । सिरे सारिदंते हेच्चिदरु ॥ ४५ ॥

अर्थ—भरत जी के हृदय में तो अपार हर्ष था ही साथ ही साथ मंत्री व अन्य राजाओं को ऐसा मालूम पड़ रहा था कि मानो चक्रवर्ती का संपूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त हो गया हो ॥ ४५ ॥

The minister further requested the emperor kindly to let Prabhasendra return to his own place if he desires so and also inform him of his neat encampment. Bharateshvar awaided innumerable precious garments, ornaments and jewells to Prabhasamar and his minister also Surkirti and Dhruvagati with proper gifts This the emperor did publically only to spread his glory The 'chakravarti' praised Surkirti as well as Dhruvagati very much for their services on that day After this he ordered Prabhasamar to return to his own territory In the meantime, a more important incident took place. While the meeting of Prabhasamar with the emperor was being rejoiced, five queens gave birth to five princesses Shrimala, Bauamala, Gundevi, Manidevi and Hema all the five queens bore such princes, whose beauty was unrivalled and left the five arrowed cupid far behind in this aspect. The maid servants sent out from the inner palace bearing this news were extremely clever like their queens The queens arranged the maid to go in a line and inform the emperor at the same moment, so that no queen may complain of the juniority

of her son, Hence the maids set out for the royal court in a line. Bharatji guessed the content of the message from the manner of walking of the maids. All the five maids, approaching the royal father at the same time began to reveal the message of the birth of five princes, his own in a pleasant manner. Bharatji awarded necklace of pearls to the maid of the queen Shrimala After that the maid servant of queen Bauamala was also awarded a necklace of pearls from his own neck Similar precious gifts were awarded to the maid of queens Gundevi, Manidevi and Hemadevi by the royal father, at the receipt of the message of the birth of princes Although five necklaces were taken out yet the royal neck was not bereft of necklace His neck was still shining with the necklace He was sitting on the royal throne with excessive joy in his heart Along with the emperor, the minister and other chieftains grew so much happy as if they got the possession of all the property of 'Chakravarti' Bharatji (26-45)

पद्य—ई विस्वतोत्साहवनु नोडदेयूदि न । न्यावासदोळु कारवुदेनु ॥
देव नानिल्लिप्पेनेंदु प्रभासांक । ना वेळेयोळु पोरदु नुडिदा ॥ ४६ ॥

अर्थ—उसी समय प्रभासांक कहने लगा कि स्वामिन् ! मैं अपने राज्य में जाकर क्या कर सकता हूँ ? यहाँ रहने से ये सब महोत्सव तो देखने के लिये मिलेंगे । मैं बड़ा भाग्य शाली हूँ ॥ ४६ ॥

पद्य—प्रतिभास देवन मंत्रिय करेदु नी । वतिवेग दिंदूरि गेयूदं ॥
मितविल्ल दुळपे सहित वहुदेंदु स । म्मत प्रभासांक वीळ्कोट्टा ॥ ४७ ॥

अर्थ—उसी समय प्रभासांक ने अपने मंत्री को बुलाकर आज्ञा दिया कि तुम शीघ्र ही राज्य में जाकर अगणित रथ इत्यादि को भेंट में लाओ । अपने स्वामी की आज्ञा पाकर मन्त्री ने वहां से प्रस्थान कर दियो ॥ ४७ ॥

पद्य—परिवृत रेल्लर नुचतदि वीळ्कोट्टु । गुरु निरंजन सिद्ध येंदु ॥
धरणीशनास्थान दिंदेद्दु राज मं । दिर व होक्कनु विलासदोळु ॥ ४८ ॥

अर्थ—भरत जी अपने दरबार में से सब को विदा करके निरञ्जन सिद्ध उच्चारण करते हुए हर्ष पूर्वक अपने महल में प्रवेश किया ॥ ४८ ॥

पद्य—तनयरेवर मुख दर्शन गैदु ले । सेने जातकर्कव रचिसि ॥
मनुः शभूषण नामकर्मद पुण्य । दिन दोळोप्पुव पेसरिट्टा ॥ ४९ ॥

अर्थ—महल के अन्दर जाकर सबसे पहिले पांच पुत्रों के मुख को देखा और यथोचित जातकर्म संस्कार किया । तत्पश्चात् समय आने पर नाम करण संस्कार को भी संपन्न किया ॥ ४९ ॥

पद्य—हंसराजनु निरंजन सिद्धराज म । हांसु राजनु रत्नराजा ॥
मनुस नेंदैवर पेसरिट्ट । हंसनाथन नेनहिनोळु ॥ ५० ॥

अर्थ—नाम करण संस्कार में पुत्रों का नाम क्रमशः इस प्रकार रक्खा गया कि पहिले का नाम हंसराज दूसरे का निरञ्जन सिद्धराज तीसरे का महांशुराज चौथे का रत्नराज तथा पांचवे का नाम संतुस्वराज रक्खा गया । भरत जी को परमात्मा अति प्रिय है इसलिए अपने पुत्रों के नामकरण में भी परमात्मा का ध्यान रक्खा ॥ ५० ॥

पद्य—विनत सुवरनु गळुपेवेरमि यंदु । सुत नायकरण दिनदोळु ॥
प्रतिभास देवनु चक्रिय कंडव । नतनागि सळुगे यडेदनु ॥ ५१ ॥

अर्थ—इस नामकरण संस्कार के हर्षोपलक्ष में भरत जी के अधीनस्थ सभी राजाओं ने अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों को भेंट में समर्पित किया । इसी प्रकार प्रभास देव भी मंत्री के द्वारा लाये हुये उपहारों को देकर हर्ष व भक्ति प्रकट किया ॥ ५१ ॥

पद्य—पणमास तडेद नल्लिंद दडेळ्दे । पणमास तुंबिद मेले ॥
पोरिम महाभेरी मूळ्गेस लल्लिंद । जाणमे योळ्देदना चक्रि ॥ ५२ ॥

अर्थ—उस स्थान पर भरत जी ने छः महीने तक मुकाम किया । तत्पश्चात् अपनी सेना को लेकर गाजे बाजे के साथ आगे प्रस्थान किया ॥ ५२ ॥

पद्य—हिमगिरियोळ् पुट्टि गंगे योललेकंला । क्रमिसि मत्तपरसागरवा ॥
निमिरि कूडितु सिंधुवेंब महानदि । गमिसिदरद रोत्तविडिदु ॥ ५३ ॥
पडुवल वाधिय तडेयिद दंडेत्ति । गडखिसि मूड मुंतागि ॥
नडेदुदु कटकवा सिंधुनदिय तेंक । विडिदु महालीलेयिंदा ॥ ५४ ॥

अर्थ—हिमवन् पर्वत से गंगा के समान उत्पन्न होकर दक्षिण की ओर बहती हुई पश्चिम समुद्र में मिलने वाली सिंधु नामक महानदी मौजूद है । उसके दक्षिण तट का अनुसरण करती हुई भरत जी की सेना जारही है ॥ ५३-५४ ॥

पद्य—इच्छेयादेडे योळु त्रिडुतेतो नडेवुत । सुच्छाया जलद् तंपिनोळु ॥
अच्छिन्न कीर्ति मुंदेयुतरुतिर्दनु । म्लेच्छर मेले दडेयि ॥ ५५ ॥
पयणदोळल्लल्लि पडेद् मक्कळ्गि । नयन मुंताद क्षत्रियर ॥
क्रियेगळ माडिसुतेयुतर्ततिर्दन । तिं योळ गणित पुण्य भागि ॥ ५६ ॥

अर्थ—जहां इच्छा होती है वहाँ मुकाम करते हैं। पुनः आगे चलते हैं बीच बीच में, जहां तहां पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई है या हो रही है, उनको योग्य वय में आने के बाद उपनयनादि क्षत्रियोचित संस्कारों को कराते हुए जारहे हैं। कड़ी धूप में चलने पर सेना को कष्ट होगा। इस लिए प्रातःकाल ही स्वतन्त्रता पूर्वक सेना प्रयाण कर रही है ॥ ५५-५६ ॥

Prabhasank requested the emperor at that time that he would be doing nothing by returning to his own state There in the royal encampment be would catch the lucky opportunity of witnessing and enjoying the great rejoicings He ordered his own minister to bring innumerable chariots etc for presents to the royal service, The minister obeyed his master accordingly Bharatji very pleasantly, dismissing his courtiers and chanting the name of Lord Niranjan Siddh, entered the royal palace. First of all he saw the gracious faces of five newly born princes, and performed the 'Jatakarm' ceremoney, after which followed the performance of naming ceremoney. His five princes were named as Hausraj, Niranjan Siddharaj, Maharshuraj, Ratnaraj and Sausukuraja respectively in order of birth Supereme Lord is very dear to Bharatji That was why he brought his name in the name of all his sons The chieftains of Bharatji, offered many precious garments and jewells in honour of this ceremoney. Prabhas Deo also presented to the emperor the precious things brought by his minister and thus showed his devotion. Bharatji stayed there for six months, after which ordered his army to march His army followed the duccan bank of river Indus rising from the Mountain Himvan like river Ganga and flowing to the southerly direction. Wherever they desired to stay, stayed and then proceeded further The birth of royal princes were rejoiced, wherever it occasioned Their thread ceremoney etc were being performed The army marched only in the foremoon, best they would be troubled from heat of the sun (46-56)

पद्य—तग्गु तेवरु तरुगिरिय दंडायुध । नुग्गोत्ति नडेवुदु मुँदे ॥
हेग्गुड्ड संद भूमियोळेय्दुवोलु हिंदे । लग्गेयोळ् नडेवुदु सेने ॥ ५७ ॥
इड्ड कुरु डोंगर वट्ट्वेट्टद सिक्कु । तडेकेट्टु समतळ्वागे ॥
कुडिद नीरिळ्ळाडदुगुरुम्वदायास । वडदेय्दुत्तिदुंदु कडका ॥ ५८ ॥
सेनेगोड्डिद गिरिगळ नोडेवाग नि । धान रत्नगळु सिक्किदरे ॥
सेनाधि पतिगेंदु नेमिसि नडेदत्तु । भूनाथ गेनदु घनवे ॥ ५९ ॥

अर्थ—कभी पर्वतों पर चढ़कर जाना पड़ता है, कभी मैदान से जाते हैं, कभी उतरते हैं। इस प्रकार बहुत आनन्द के साथ जा रहे हैं। कहीं कहीं मार्ग न होने के कारण पर्वतों को तोड़ते मार्ग बनाते जाते हैं। पर्वतों को तोड़ते समय उसमें से अनेक स्वर्ण तथा रत्न वगैरह भी निकल रहे हैं। उन सबके अधिकारी सेनापति ही हैं। सेना में किसी को कोई प्रकार का कष्ट नहीं है। इतना ही नहीं प्रयाण के समय किसी भी मनुष्य के पेट का पानी भी नहीं हिल रहा है। किसी भी प्राणी के पैर में कांटा तक भी नहीं लगते हैं इतने सुख से प्रयाण होरहा है ॥ ५७-५८-५९ ॥

पद्य—मूड मुँनागि इलवु पयणदि वंदु । कूडे वडग सुखवागि ॥
नोडुत सिंधुनदिय सोबगनु नलमे । गूडि चक्रेश नेय्दिदनु ॥ ६० ॥

अर्थ—भरत जी इस प्रकार सेना को रोकते हुए पूर्व दिशा की ओर आकर सिंधु नदी की शोभा देखते हुए आ रहे हैं ॥ ६० ॥

The way followed by the royal army was uneven one. They marched very happily going up and down. Sometimes they had to make their way through the mountain. Many precious jewells as well as golds were found while breaking the mountain. The commander of the army took possession of them No one in the army had any complain. Not only this even the water of the stomach of the people was not even shaken at the time of marches. No body met even a thorn in the way. So jocund and comfortable was the journey. Bhartji thus following the course of river Indus and halting the army at places was marching ahead. He was also enjoying the beautiful scenery presented by the river. (57-60)

पद्य—बिट्टल्लिबिडदे दंडेत्ति नडेदु रिपु । रट्टडि कार नेय्तंदु ॥
दिट्टगळिगे रम्यवेनिसुव वेळ्ळिय । वेट्टव कंडनिदिरोळु ॥ ६१ ॥

अर्थ—भरत जी इस प्रकार परम सुख के साथ अनेक मुकामों को समाप्त करके एक ऐसे पर्वत पर आये जो कि चांदी के समान शुभ्र (स्वच्छ) था वह कोई सामान्य पर्वत नहीं है, यह विजयार्ध पर्वत है ॥ ६१ ॥

पद्य—नानाडिगिरियल्ल विजियार्ध्द गिरियदु । नीडि मेघद मुट्ट् तिहुदु ॥
मूडन पडवनध्यिय मुट्टि बेळ्ळिय । गोडेयंतेसेवु देनेंने ॥ ६२ ॥

अर्थ—विजयार्ध पर्वत आकाश को स्पर्श करने के समान बहुत ऊँचा है। पूर्व दिशा से लेकर पश्चिम दिशा तक व्याप्त होकर वह चांदी की दीवाल के समान अत्याधिक सुन्दर मालूम होता है ॥ ६२ ॥

पद्य—बिळियाने गळ बट्ट रांजके यंतेड । बळदोळा गिरिय तलपदोळु ॥
सले नूरहत्तु पट्टण वेसेदिहुवव । रोळगे विद्याधररिहरु ॥ ६३ ॥

अर्थ—उस पर्वत के दक्षिण तरफ चांदी के बने हुए हाथी अलग अलग खड़े हुए हैं। पर्वत के दायें व बायें तरफ एक सौ दश नगर हैं, जिसमें विद्याधरों का आवास है ॥ ६३ ॥

पद्य—पुरगळोळ् गगन बल्लभपुर रथनू । पुर चक्रवाळवेंवेरडु ॥
पुरगळग्गळ वल्लि नमिराज विनमिरा । जरु बाळुतिहरु सोदररु ॥ ६४ ॥

अर्थ—उन नगरों में गगन वल्लभपुर व रत्नपुर चक्रवालपुर नामक दो नगर अत्यन्त प्रसिद्ध व श्रेष्ठ हैं। वहां पर क्रम से "नमिराज, विनमिराज" नामक दो भाई राज्य पालन कर रहे हैं ॥६४॥

पद्य—अवरु शुभूजन सोदरद मावंदिर । कुवररु खचर रेल्लरनु ॥
अवतन गेय्सि कोंडुरे तम्मोळधिराज । युवराज पदवियोळिहरु ॥ ६५ ॥

अर्थ—"नमिराज, विनमिराज" दोनों भरत जी के निकटस्थ बन्धु हैं। ये दोनों भरतेश्वर की माता यशस्वती देवी के भाई श्री कच्छ और महाकच्छ राजा के पुत्र हैं। अर्थात् भरतेश्वर के मामा के पुत्र हैं। ये दोनों अत्यंत प्रभावशाली होने के कारण सभी विद्याधरों को अपने अधीन करके लोक का राज्य पालन कर रहे हैं ॥ ६५ ॥

Emperor, marching with his army reached a mountain which shone white like silver It was the mountain Tijayardha and not an ordinary one. It was a sky touching mountain extending from east to west like a wall of a silver It looked extremely beautiful The silver elephants stood at left and right of this mountain. There were one hundred and ten cities situated on

tha left and right side of this mountain Only 'Vidyadhars' lived in those cities Gagan Ballhapur, Ratnapur Chakravalpur are the two most famous cities Two brothers named Namiraja and Binamniraja ruled there Both are close brothers of Bharatji Both are the sons of kings Shri Kachha and Maha Kachha, the brothers of Yashaswati, the mother of Bharatji. Or we may say they were sons of the maternal uncle of Bharatji Being extrsmely influential, they ruled over the 'Vidyadharaj' and were administering their kingdom *(61-65)*

पद्य—गिरियेरडु बदिय वोले सेव तप्पलोळु खे। चगरिहरदर तुदियोळु ॥
　　वर विजियार्थ कुमार नेंबरसु कि। न्नर सिद्धयचाद्यरिहरु ॥ ६६ ॥

अर्थ—विजयार्ध पर्वत के दक्षिणोत्तर भाग में विद्याधरों का निवास है उस (गिरि के) शिखर पर 'विजयार्ध' देव नामक राजा राज्य पालन कर रहा है। इसके अतिरिक्त किन्नर, यक्ष आदि देव भी वहाँ पर रहते हैं ॥ ६६ ॥

पद्य—गगेय विजियार्थ गिरिय मध्यद् वसु। धांगण तानोंदु खंडा ॥
　　संगत सिंधु नदिय विजियार्ध म। ध्यांग भूतळवोंदु खंडा ॥ ६७ ॥
　　आ खडं वेरडवु म्लोच्छ खंडगळु म। त्ता खंडगळ तेंकलेसेव ॥
　　आ खडं लवनाब्धि कडेयागि मेरेवुदा। र्या खंड वेंव नामदोळु ॥ ६८ ॥

अर्थ—इस प्रकार गंगा नदी व विजयाध के मध्य में एक खंड है और सिंधु नदी व विजयार्ध के मध्य में एक खंड है। ये दोनों मलेच्छ खंड कहलाते हैं। विजयार्ध गिरि के दक्षिण गंगा व सिंधु के बीच का भाग आर्यखंड कहलाता है ॥ ६७-६८ ॥

पद्य—इवु मूरु खंडगळा विजियार्ध्द सा। नुविगे दक्षिण दोळोप्पुवुवु ॥
　　विवरिसे मूरु खंड गळिन्तु वडगलुं। टवकेवु मरेयंदेनलु ॥ ६९ ॥
　　आ गिरि गुत्तर दिक्कि नोळदके मी। टागि पूर्वापराब्धिगळा ॥
　　तागि मत्तोंदडु गोडे येंबंते पें। पागिरु तिहुदु हेमाद्रि ॥ ७० ॥

अर्थ—ये तीनों खंड विजयार्ध गिरि के दक्षिण भाग में सुशोभित हैं। इसी तरह उत्तर भाग में भी तीन खंड सुशोभित हो रहे हैं जिनके उत्तर दिशा में हिमवान् नामक पर्वत पूर्व से पश्चिम समुद्र तक व्याप्त होकर सीमा का काम कर रहा है ॥ ६९-७० ॥

Vidyadharaj lived in the north south of mount Vijyardha, on the top of which ruled a king named Vijayardha Deva. Besides them there lived 'Yekshas', 'Kinnars,' and 'Devas' also. Thus the first tract laid between river Ganga and mountain Vijayardha and the second tract laid between river Indus and Vijayardh Both of these parts were known as 'Aryakhanda' All the three parts were situated to the south of mountain Vijayardh Giri similarly other three parts were situated in the north of the Vijayardh It is working as boundary line from east to west the Vijryarth mount (66-70)

पद्य—एरडु बेट्टगळ नडुवे मूड पडुव नी । ळ्दिरे मूरुखंड राजिपुवु ॥
भरत षट्खंडव नाळुव दक्षना । भरत चक्रेशनेनेंबे ॥ ७१ ॥

अर्थ—दोनों पर्वत, दो समुद्र और दो महानदियों के बीच में छह खंड का विभाग है । इन छहों खंड के अधिपति भरत जी हैं इसी कारण यह भरत क्षेत्र कहलाता है ॥ ७१ ॥

पद्य—कोटे यंदद विजियार्धके वज्र क । वाट मुट्टि हुदद नोडेदु ॥
दाटिस बेकाचे गखिळ सेनेयनद । राटव मुंदे हेळुवेनु ॥ ७२ ॥

अर्थ—षट् खंड पृथ्वी को भरत जी अपने पराक्रम से पालन करते हैं । चक्रवर्ती विजयार्ध पर्वत तक आये । यहां आकर सोचने लगे कि अब विद्याधर लोक को वश करना है, विजयार्ध पर्वत को पार करके उत्तर खंड के म्लेच्छ खंड को भी वश करना है और विजयार्ध पर्वत में एक बड़ा भारी अत्यन्त मजबूत वज्र द्वार है, जो हजारों क्या, लाखों वर्षों से बन्द है । उसे भी अपने दण्ड से फोड़ कर उन्हें आगे बढ़ना है ॥ ७२ ॥

पद्य—योचिसि मुंदण कार्यन्न नृपति से । नाचक्र मुख्यन करेदु ॥
खेचर गिरि गीचे रवियोजन दोळ् सं । कोंच दगळ तेगेसेंदा ॥ ७३ ॥

अर्थ—भरतेश्वर ने आगे के कार्य को सोचकर सेना नायक को बुलाकर आज्ञा दिया कि चार योजन प्रमाण में एक लम्बी खाई तैयार करो ॥ ७३ ॥

पद्य—इंदु बीडिनोळिरु नाळे निन्ननुजर । मंदिर रक्षणेगिरिसि ॥
वृंद वेंतर सेनेगूडि तेरळि दंड । दिंद खातिय तेगेसेंद ॥ ७४ ॥

अर्थ—साथ ही सेनापति से यह भी कहा कि आज तुम लोग यहीं पर विश्रान्ति लो और कल अपनी सेना व महल को रक्षण के लिए अपने भाइयों को नियुक्त करके तुम व्यन्तर वीर व आवश्यक सेनाओं को लेकर जाओ । फिर खाई निकालने का प्रयत्न करो ॥ ७४ ॥

पद्य—मुच्चिद पडिय मुँदोडे नाग लोळगिर्द । किच्चु पन्नेरडु गावुदक्के ॥
उच्चळि सुवुददु मुँदोत्ति यारदं । तेच्चत्तु गैस वेकेंदा ॥ ७५ ॥
बडगुंपु वेत्तोंद् हगद वायदेरेवाग । पोडवियोळ् सेकेयहुदरिय ॥
कडुदीर्घ गुहे बहुकाल मुच्चिद वा । युमिडुवाग वेंकि दिकिवदे ॥ ७६ ॥

अर्थ—विजयार्ध पर्वत का कपाट (द्वार) हजारों वर्षों से वन्द है। उसे एक दम तोड़ने से उसमें से अग्नि निकल कर वारह कोस तक आगे उछल कर आयेगी ॥ ७५-७६ ॥

पद्य—गुँडिद वडगुँडि नोंद् तटिमलडु । कंडत्त किडिगेदरुतदे ॥
दंडरत्नदि वज्रबंधन तारिसे । केंडमुगुवु दान चोद्या ॥ ७७ ॥

अर्थ—आगे आकर अग्नि बाधा न दे सके इस कारण होशियारी से खाई का निर्माण करो। लोक में सब एक सामान्य लोहे से दूसरे लोहे पर कूटने से अग्नि निकलती है, तब दंड रत्न से वज्रकपाट को कूटने पर अग्नि निकलने में क्या आश्चर्य है ? ॥ ७७ ॥

पद्य—कट्टिगे योंद नोंदोर मलेडे योळग्नि । हुट्टि काडेल्ल वेयुतदे ॥
वेट्टन दंडरत्न दोळोडेवागळि । हुट्टदिहुदे प्रळयाग्नि ॥ ७८ ॥

अर्थ—परस्पर में दो लकड़ियों के संघर्ष (रगड़) से वनाग्नि उत्पन्न होकर जब समस्त वन जल जाता है, तो दंड रत्न से वज्रकपाट कूटने पर अग्नि उत्पन्न होने में कोई बड़ी बात नहीं है ॥ ७८ ॥

पद्य—लौकीक दृष्टांतवित्तु गुहेयोळग्नि । व्याकीर्ण सुवुददु सहजा ॥
आ कष्ट शिखिगे मुंगट्टि नीरगळागळाग । वेकेंदु पेळ्दना फौजा ॥ ७९ ॥

अर्थ—यह सब लौकिक दृष्टान्त है। गुफा में अग्नि का भरा रहना सहज ही है। इसलिए उसकी शाँति के लिए जल की खाई का निर्माण करना परमावश्यक है। इस प्रकार भरत जी ने सेना नायक से कहा ॥ ७९ ॥

पद्य—काळ्वे तेगेयदिद्दरे किच्चु मुँदोत्ति । ज्वालेय केदरुत केडडु ॥
पाळेयवेद्दोड वेकहुददनरि । दी लेक्क दोरिदं नेंदा ॥ ८० ॥

अर्थ—यदि खाई की समुचित व्यवस्था नहीं की गई तो भीषण अग्नि उत्पन्न होकर सेना को जलाती हुई पीछे हटा देगी। अर्थात् सेना भयभीत होकर पीछे हट जायेगी ॥ ८० ॥

There were six parts between both the mountains and both the seas as well as Mahanadis Bharatji was the master of all the six parts and that is why it is known as Bharat, which was ruled by the glory of the emperor 'Chakravarti' Bharat came near mountain Vijayardha and thought of winning the 'Vidyadhraj' as well as 'Mlechh Khanda' Mountain Vijayardho had a gate closed from the lacs of years He had to break it and advance further Bharteshwar sent for the commander and ordered him to get a trench four yoganes long ready He further directed him to rest there for the night and to go to protect the royal palace and the army with some soldiers after appointing their brothers at their duties The gate of the Viajyardh mountain had been shut from many thousand years Fire was expected to come out of it and cover an area of almost twenty four miles There is no wonder about it Hence the trench was to be prepared very carefully When the rubbing two words produce, fire in the forest, there is no wonder in fire coming out of the two Vajra door leaves cames are often full of fire Hence to put it out, a deep trench was essential So Bharatji informed the commander that a ferocious fire would come out and push the army back in case a proper trench is not dug (71-80)

पद्य—बण्प वेंकिय नम्म कटक वेल्लवु नाड । सोप्पिद बडेदरु केडदु ॥
सोप्पु दोटके नीर होयूदंने होयूदरु । तप्पि होगदु नूंकि बहुदु ॥ ८१ ॥

अर्थ—अग्नि प्रज्वलित हो जाने पर यदि सभी लोग मिलकर उसे बुझाने का प्रयत्न करेंगे तो वह निष्फल ही होगा। रोकने से वह और वेग पूर्वक सेनाभिमुख बढ़ेगी ॥ ८१ ॥

पद्य—एकिप्डु प्रयास काडुवे तेगेदरं । ता किच्चु ता निलुदावे ॥
व्याकुल बिल्लदाबिर बहुदेंदु वि । वेकि गळरस नुडिदनु ॥ ८२ ॥
इंदु नम्म कडेगग्नि बारद बगे सिंधु । नदियिंद पडुव हत्तिदरे ॥
अदु प्रळयाग्नि यंतिळिय सुडुवदु नी । नदकू काडुवे गैसेंदा ॥ ८३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी विवेक एवं युक्तिपूर्वक सैनिकों को समझाते हुए कहने लगे कि ऐसी अवस्था में इन सब कष्टों का सामना करने से क्या प्रयोजन है ? इस लिये पहिले से ही एक जल

की खाई बनवा लेने से सभी कष्ट दूर हो सकते हैं। अग्नि खाई के कारण इधर नहीं आ सकेगी। यह अपनी ओर आने वाली अग्नि को रोकने का उपाय है इसी प्रकार यदि सिंधु नदी के पश्चिम भाग में भी अग्नि व्याप्त हो गई तो प्रलयाग्नि के समान उस भूमि को जला देगी। उस समय प्रजा को बहुत दुःख होगा। इस लिये वहां पर भी एक खाई का निर्माण करो ८२-८३

पद्य—बडग बेट्टवे साकु तेंक सिंधुविनेर। ल्तडि मुट्टि काळुवेदेगेसि ॥
पडुव मूडेयिदि्सि नीर्तुवला नीर। बडग बेट्टव मुट्टिसेंदा ॥ ८४ ॥

अर्थ—उत्तर दिशा में पर्वत है। वह अग्नि को रोक सकेगा। दक्षिण में सिंधु नदी के दोनों तटों तक खाई होने से उसमें पानी भर आवेगा। वह पानी उत्तर भाग तक पहुँचाने वाली अग्नि से सबकी रक्षा करेगा। इस प्रकार की व्यवस्था विचार करके करो ॥ ८४ ॥

पद्य—व्यंतराग्रणिय प्रभासांक वरतनु। मुंताद वरनाग करेसि ॥
एंतीत पेळ्दनंने सगुत्तुदेंदु नि। रिंचत नेमिसि विट्टनवरा ॥ ८५ ॥

अर्थ—भरत जी सेनापति को आज्ञा देते हुये उसी समय वरतनु, प्रभासांक आदि व्यन्तर राजाओं को भी बुलाकर आज्ञा दिया कि इस कार्य में आपलोग भी सेनानायक की इच्छानुसार सहायता देवे। चक्रवर्ती की आज्ञा को सभी राजाओं ने पुष्प के समान शिरोधार्य किया ॥ ८५ ॥

पद्य—सार वल्लदे दूरवल्लदे विजियार्ध। धारिणी धरदिदिरि नोळु ॥
आरैके गोंडु दुमान व होयि्सिद। ना राजसिंह तुब्विनोळु ॥ ८६ ॥

पद्य—अगल दोळगे सेने विट्टितु मनेगळु। नेल्लरिगे तक्कंते ॥
जगद जंजडद राजांगवे होसतोंदु। नगरियायूता क्षणदल्लि ॥ ८७ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् सेना का मुकाम विजयार्ध पर्वत के पास करने के लिए आज्ञा भेरी बजाई गई। क्षण भर में ही सब व्यवस्था हो गई। सभी लोगों के लिए मकान, महल, मंदिर वगैरह की व्यवस्था देखते देखते हो गई। विशेष क्या? एक विशाल राज्य की ही वहां पर स्थापना हो गई ॥ ८६-८७ ॥

पद्य—सुजनोक्तियिंद सर्वर तरवीर दोल्दु। निज निज निळयके कळुहि ॥
भुजबलाग्रणि राज गृहहोक्क निल्लिगे। विजियार्ध दर्शन संधि ॥ ८८ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी ने सभी राजा व प्रजाओं को योग्य उपचार पूर्ण वचनों से संतुष्ट करके अपने अपने स्थान पर भेज दिया और स्वयं अपने लिए निर्मित सुन्दर महल में प्रवेश कर गये ॥ ८८ ॥

Commander and emperor Bharat explained to his soldiers "It will be absolutely useless to try to check the fire, if once blazed. Even all of us would not be able to prevent it It will surely go against the army Only a trench filled with water will remove all over troubles The ames of the fire will not cross the trench and we shall be on the safer side Thus the fire blazed even in the western part of the river Indus, it will burn the earth there, like the fire of the final destruction of the universe. The people will suffer greatly. So get a trench dug there. The mountain in the northern direction will prevent the fire. The trench extending to the banks of river Indus, will be filled with water, which will save us even from the fire reaching the northern end"

All the other chieftains present there, being directed by the empe or to help the commander of the army in that task, gladly accepted the order. Then the royal personage announced the place of next encampment of the army near mountain Vijyardha and all sorts of arrangement were made in a moment's time. All were provided comfertable houses, palaces, temples etc. Awarding proper gifts to all the chieftains and people and pacifying them well the emperor sent them to their respective places and himself entered the palace built very magnificiently *(81-88)*

पद्य—ई जिन कथेयनु केळ्दवर पाप । बीज निर्नाशन वहुदु ॥
तेज वड्डु पुण्य वहुदु मुंदोलिदप । राजिनेश्वरन काणुवरु ॥ ८६ ॥

अर्थ—इस जिनेश्वर की कथा को जो सुनेंगे उनका पाप, बीज नष्ट होगा । तेज की वृद्धि होगी एवम् पुण्य बन्ध होकर अन्त में अपराजित पद को पावेंगे ॥ ८९ ॥

Those person who will hear this glory of Raja Bharat with rapt attention will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position *(liberation)* *(89)*

पद्य—प्रेमदिंदिद नोदिदरे पाडिदरे केळ्द । रामोद वैदुवरवरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय कांबरतिंयोळ् ॥ ६० ॥

अर्थ—इस कथा को जो प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे वे आमोद को प्राप्त होंगे और नियम से देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्दरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ ९० ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Simandhara Swami in Videha Kshetra *(90)*

पद्य—अक्षुण्ण सामर्थ्य अनुपम लावण्य । मोक्षाग्र गण्य वरेण्या ॥
साक्षात्तागि नन्नेदेयोळ् निरु लोक । रक्षा चिदम्बर पुरुषा ॥ ९१ ॥

अर्थ—भरतेश्वर का कितना अद्भुत् सामर्थ्य है ? जहां जाते हैं वहां अलौकिक वैभव को प्राप्त करते हैं । कैसा भी भयंकर से भयंकर संकट क्यों न हो उसे बहुत दूर दर्शिता पूर्वक हटा देते हैं । अपनी प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट न हो इसकी उन्हें सतत चिंता बनी रहती है ! उसके लिये वे शीघ्र ही सुव्यवस्था करते हैं । उन्हें हर प्रकार की अनुकूलता भी मिलती है । इन सब बातों का कारण क्या है ? इसका एक मात्र उत्तर यह है कि यह पूर्वो पार्जित पुण्य का फल है । वे रात्रि दिन इस प्रकार की भावना करते थे कि हे सिद्धात्मन् ! आप अक्षय सामार्थ्य को धारण करने वाले हैं· अनुपम लावण्य की आप मूर्ति हैं, मोक्ष मार्ग में आप अग्रगण्य हैं तथा आपके द्वारा ही विश्व की रक्षा होती है । इस लिये हे चिदम्बर पुरुष सिद्ध भगवान् ! आप साक्षात् होकर हमारे हृदय मे सर्वदा बने रहिये । इस प्रकार की भावना करने से ही भरत जी अक्षय संपत्तिशाली व तद्भव मोक्ष गामी हुये हैं ॥ ९१ ॥

भव्य जीवों के आत्म कल्याणार्थ देशभूषण मुनि महाराज सम्बोधित करके कहते हैं कि हे प्राणियों । यदि आपलोग शरीर व आत्मा को भिन्न जानकर भगवान का ध्यान करेंगे तो आपलोग भी भरत जी के समान अतुल संपत्ति प्राप्त करके मोक्ष पद प्राप्त कर सकेंगे ।

What a wonderful power Bharatu had ? Where ever he went, obtained wonderful glory He ousted even the most terrible calamites very judiciously. He always thought of the welfare of his people. He always managed for the welfare of the subjects It is all the result of virtues earned in the previous life He always thought of the supreme Lord in these terms

"O Lord Siddhatman ! thou art the possessor of the inexhaustible power and art the idol of extreme beauty, the leader to the way of solvation and the protector of the whole univrse. So O Lord chidambar ! kindly reside in my heart for ever."

Only due to such purity of thought Bharat obtained the inexhaustible wealth and realized solvation.

Shri Deshbhusan Munirajji addressed the gracious beings for their welfare that if they too, thinking soul and body separate things. meditated upon the supreme Lord like emperor Bharat, they also, possessing inexhaustible wealth, shall obtain solvation. *(91)*

॥ इति द्वितीय भाग का आठवाँ अध्याय प्रभा सागर संधि संपूर्ण ॥

दसवां अध्याय

❀ कवाट विस्फोटन संधि ❀

पद्य—धारणेयेंदेंब दंडरत्नदोळु क । ठोर कर्मव नोडे ह्रोय्व ॥
धीरोदात्त सन्मतिदोरु दुःख ज । ज्जरा निरंजन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ—धारणा रूपी दंडों से मिथ्या रूपी कठोर कर्मों को भेदने वाले तथा दुःख रूपी संसार को जर्जरित करने वाले धीर और उदार हे निरञ्जन सिद्ध भगवान ! मुझे शीघ्रातिशीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करने की कृपा कीजिए ॥ १ ॥

"O Lord Niranjan, Siddh, the remover of false actions, the destroyer of the world of misery, patent and magnamious by nature ! bestow upon me right type of mind" *(1)*

पद्य—अ गळ तेगेदु नीर तुंबियेंट नेय रा । त्रेगे बंदु स्वामीय कार्या ॥
मुगिदु देंदोडेयगे जयराज करवेत्ति । मुगिदत्तु वेंतर वेंरसि ॥ २ ॥

अर्थ—आठ दिन के बाद "जयकुमार" व्यन्तरों सहित भरत जी की सेवा में उपस्थित हुआ और हाथ जोड़कर कहने लगा कि स्वामिन् ! आप की आज्ञानुसार जल पूरित खाई का निर्माण हो चुका है । मैं आपको इस बात की सूचना देने आया हूँ ॥ २ ॥

After a period of eight days, Jaikumar presented himself together with the Vyantars in the service of emperor Bharat and began saying, "My Lord ! The pit full of water is ready in accordance with your excellency's order I have come here to inform you about the same *(2)*

पद्य—अदुदें लेसु लेसंदव निगु माग । धादिव्यंतर विभु गळिगु ॥
होद व्यंतररि गोल्दुड्ड गोरे गोट्ट ु ग्र । मोददि वीळ्कोट्टनंदु ॥ ३ ॥

अर्थ—भरत जी उसके वचनों को सुनकर बहुत प्रभावित हुए और इस कार्य को करने के लिए जिन्होंने सहयोग दिया था उन सभी व्यन्तरेन्द्रों तथा जयकुमार (सेनापति) का समुचित सत्कार किया ॥ ३ ॥

The emperor was highly impressed to hear his words and respected all the 'Vyantrendras' and Jaikumar, the commander in chief with great hospitality (3)

पद्य—दळपति सचिवर मरुदिन तन्नय । निळयके करेसि राजेंद्रा ॥
कळधौत गिरिय कवाट व नोडेहोयुव । कळेय तुडिद नत्वमाडि ॥ ४ ॥

अर्थ—दूसरे दिन भरतजी मन्त्री तथा सेनापति को अपने महल में बुलाकर वज्रकपाट तोड़ने के सम्बन्ध में वार्तालाप करते हुए कहा ॥ ४ ॥

The next day, Bharatji sending for the minister and the commander in chief discussed with them the question of breaking the 'Vajrakapat' (4)

पद्य—केळले मंत्रि केळ्पडेवळ्ळ विजियार्ध । शैलदोळिक्किद पडिया ॥
नाळे होळ्माडि बिडुवे नोणगिद मर । हाळेय न डेय होयुवंते ॥ ५ ॥

अर्थ—हे मन्त्री तथा सेनापति ! सुनो विजयार्ध गिरि में जो 'वज्रकपाट' है उसे मैं बहुत दिनों से सूखी व दीमक लगी हुई झाड़ी की भांति कल ही टुकड़े टुकड़े करके तोड़ डालूंगा ॥ ५ ॥

He addressed his minister and the commander in chief and informed them that he himself would break the 'Vajrakapat' at Vijayardh Gisi in to to pieces only tomorrow (5)

पद्य—द्वार बंधवनोडे होयुवेनेंदेनेगोंदु । वीर वल्लदु तोरवल्ल ॥
आरु मीरुवरु पूर्वाजित पुण्यद । प्रेरणे इद्दुदंतेंदा ॥ ६ ॥

अर्थ—मुझे उस वज्रकपाट को तोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी, परन्तु पूर्वोपार्जित पुण्य का उल्लंघन कौन कर सकता है ? उसके फल को तो भोगना ही पड़ेगा ॥ ६ ॥

"I had no need of breaking the 'Vajrakapat,' but who can neglect the virtues earned in the previous life ? Its consequences must be suffered. (6)

पद्य—कौशलि योळु नानु जनिस बेकेंत्ति वं । दी शैलवनु दांटि मुंदे ॥
देशाधि पतिगळ नाळ बेकेंबुदा । देशवल्लवे गेलवरारु ॥ ७ ॥

अर्थ—भरत जी ने कहा कि मेरा जन्म अयोध्यापुरी में ही हो और सभी राजाओं पर आधिपत्य स्थापित कर मैं, इस पर्वत को पारकर उधर के राजाओं को भी वश में करूँ । हमारे भाग्य को कौन मिटा सकता है ! इसलिए चिन्ता करने को आवश्यकता नहीं है ॥ ७ ॥

Bharatji wished to be born in the city of Ayodhya in the life to come After winning all the king, and crossing this mountain, he may overcome the kings on the other side also Who can ruin this fortune of mine So your need not worry *(7)*

पद्य—श्री हंसनाथन नेनेदुत नडेयागु । न्माळवल्लडे च्छितेयिल्ल ॥
साहस सावु दल्लदे भीति मारदु । महात्म्यविद नविरेंदा ॥ ८ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी अपने अनुयाइयों से कह रहे हैं कि गुरु हंस परमात्मा की भावना स्मरण करते हुये तदनुकूल चलने वालों को उत्साह बढ़ाना है और जो कार्य करते हैं वह निर्विघ्नता पूर्वक पूर्ण होता है। ऐसी अवस्था में निराश नहीं होना चाहिये ॥ ८ ॥

EmPeror Bharat said to his followers "by chanting the name of 'Gugs Hans Parmatma,' or by practising his commanments, are is greatly encouraged and is always successful in his work So one should not be disappointed '*(8)*

पद्य—हंसनाथन नोडि कर्मव नोडेवुदु । अंशुवज्रद कवाटवनु ॥
ध्वंस नगेवुदु निनगहु दुळ्ळिदर्गे । दें सदरवेयेंदखळ ॥ ९ ॥

अर्थ—राजा के वचन को सुनकर बुद्धिसागर मंत्री के कहा कि हे स्वामिन्! केवल परमात्मा का स्मरण कर अथवा दर्शन करके आप कर्म रूपी पर्वत को फोड़ सकते हैं। इस साधारण पर्वत को तोड़ने में आपके लिए क्या कठिनाई है? आपके लिए सभी बातें साध्य हैं इस में मुझे संदेह नहीं है ॥ ९ ।

Hearing the royal words the minister Buddhisagar said, "O Lord ! you can break the mountaineus actions only by remembring the Lord only or by having his 'darshan' What difficulty is there in breaking it? In my opinion every thing is easy for you" *(9)*

पद्य—आनेकेसरि गाडिनंति हुदाडिगे । वानदष्टुद वागिद्दु ॥
नीनद सदर वागिरे कंडे मिक्किन । मानवेंद्ररि गळ्वहुदे ॥ १० ॥

अर्थ—मन्त्री स्वामिन् जो वज्रकपाट हाथी व सिंह के समान भयंकर तथा आकाश के समान उन्नत है उसे फोड़ने में सरलता आपको ही हो सकती है, क्योंकि आप मानवेन्द्र हैं।

अन्य प्राणी उसके निकट नहीं जा सकते। इन सभी बातों को कहते हुए मन्त्री व सेनापति भूरि भूरि राजा की प्रशंसा कर रहे हैं ॥ १० ॥

The minister further said, "master ! only you can easily break the 'Vajrakapat' fierce like elephant or lion and as high as the sky, because uou are Indra among men other being cannot approach it Saying thus the minister and the 'senapati' praised the emperor (10)

पद्य—एनलव रिवंरि गुडुगोरे यिचु मे। दनिपति बीडिगे कळुहि ॥
जिनपूजेगैदु हत्तनेय दिनद बेळ। गिन होत्तिनोळु पोरमोट्टा ॥ ११ ॥

अर्थ—भरत जी इन दोनों का समुचित सत्कार करके अपने अपने स्थान को जाने की आज्ञा दे दिया और स्वयं अपने निवास स्थान को चले गये। तत्पश्चात् दशवें दिन प्रातःकाल जिनेन्द्र भगवान की पूजा करके विजयार्ध पर्वत की ओर जाने के लिए तैयार हुये ॥ ११ ॥

Bharatji respecting them with proper hospitality, advised them to depart and himself went to the royal residence After that tenth day, the emperor worshipping Lord Jinendra, became ready to advance towards the mount Vijyardh (11)

पद्य—जगुळे गंटिक्किद् बिगुहिन कुल्लायि। मृगमदले पवोंरगळु ॥
बिगिदुठ्ठ कासे चल्लणदि रावुत ठीवि। सोगमले यूतेंदनाराया ॥ १२ ॥

अर्थ—भरत जी पेटी, कवच तथा टोप इत्यादि वीरोचित आभूषणों से आभूषित होकर जिस समय बाहर आये उस समय यह मालूम पड़ता था कि मानों प्रत्यक्ष राहु ही आ रहा हो ॥ १२ ॥

When Bharatji wearing armour and iron cap etc came out, it appeared as if Rahu himself was approaching (12)

पद्य—कुंकुम तिलक पेंडेय नडुविनोळु चे। ल्वंके गोंडेसेव होंजुरिगे ॥
कंकन तावुज दोळ् वीरलक्ष्मिय। बिंकद् नल्लनेय्तंदा ॥ १३ ॥

अर्थ—वे कुंकुम का तिलक लगाये हुये गोंड (गुच्छे) इत्यादि से भली भांति सजकर स्वर्ण कंकन तथा यन्त्र को धारण करके जिस समय निकले उस समय यह मालूम पड़ता था कि मानों वीर लक्ष्मी का पति वीर लक्ष्मी को वश करने के लिए जा रहा हो ॥ १३ ॥

Emperor Bharat, decorated with Gaunda, golden 'kinkin' and 'Taliza' and having 'kunkum Tilak' on his forehead marched on It seemed as if husband of goddess Lakshmi was going to overcome 'Mahalakshmi' (13)

पद्य—नडुव बळसि बंद् दुवटदोळिन । न्नेडद् तोळोळ् मुचि तिमिरे ॥
देडसिद गंधिय गोळुन ह्रावुगे मेट्टि । नडनंदना मोडिकारा ॥ १४ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी कमर में दुपट्टा बांधे हुए उपवस्त्र (अंगोछा) को दोनों कन्धों पर लटकाये हुए और सुगन्धित द्रव्यों से युक्त ताम्बूल को खाते हुए बहुत शृङ्गार के साथ स्वर्ण खड़ाऊँ पहन कर बाहर आये ॥ १४ ॥

Emperor Bharatji having wrapped his 'dupatta' all round his waist and taken well scented betel, wearing golden 'kharaun' in his feet came out (14)

पद्य—सिंगरिसिद पवनजंनय वाजिय । मुंगडेयोळ् नोगि पिडिये ॥
मंगल निर्घ्न चांगु भलायेने । बेंगडे गोडने लंघिसिदा ॥ १५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी की सवारी के लिये अनेक अलंकारों से अलंकृत किया हुआ पवनंजय नामक घोड़ा पहले से ही तैयार था। वहां पर अनेक यशगायक (भाट) इनके यश का गान कर रहे थे उसे सुनते हुए भरत जी घोड़े पर चढ़ गये ॥ १५ ॥

'Pavananjai' horse was ready with all the decorations for emperor Bharat. There innumerable bards were singing songs in the royal praise Hearing them Bharatji rode on the horse (15)

पद्य—दुवट गिल्केगरनु तोडेगळिगे सी । लावाम मुँदळिविट्टु ॥
पावडगळ मेट्टि वायेगे कै नीडि । गवुन गेडेय नोग्पिदनु ॥ १६ ॥

अर्थ—श्री भरत जी पैरों में बहुमूल्य जूतों को पहिने हुए हाथ में लगाम व चाबुक लेकर वीरतापूर्वक घोड़े पर आरूढ़ हुये ॥ १६ ॥

Shri Bharatji wearing precious shoes in his feet and taking whip in his his hand was seated on the horse back very heroically. (16)

पद्य—वाजिय नवरत्न मयद् संजोग प । ळच्चनोप्पुव तेजयेरि ॥
उच्चैः श्रववंत्र हय वेरिद नरेंद्र । नोच्चयवेसेय लोप्पिदनु ॥ १७ ॥

अर्थ—जिस समय भरत जी घोड़े पर बैठे हुए थे उस समय रत्नों से अलंकृत घोड़े की प्रभा तारागणों के समान चमक रही थी और चक्रवर्ती की शोभा ऐसी मालूम पड़ती थी कि मानों इन्द्र देव ही आकाश मार्ग से पधार रहे हों ॥ १७ ॥

Chakravarti Bharatji seated on a horse ornamented with all kinds of precious jewells, shining like a host of stars, appeared as if Lord Indra was approaching by the heavenly course (17)

पद्य—विदित लक्षण शुद्ध पच्चवर्णद तेजि । यदु मुँजने निपुदुवियोळु ॥
मदन हेग्गार न नेरिदंता राय । कुदुरेयनेरि मोहिसिदा ॥ १८ ॥

अर्थ—वह घोड़ा हरे रत्नों से आभूषित किया हुआ ऐसा मालूम पड़ता था कि मानों प्रभात काल में ओस की बूंदें पड़ी हुई हैं ॥ १८ ॥

The horse decorated with jewells appeared like the beautiful morning dew drops (18)

पद्य—एळुतेजिगळेंदु कविगळु कलिपसि । हेळुवरु दयभास्करगे ॥
एळरोळोंदे तेजेय नायदु कोंडेरि । बालार्क निंदंते कुंचवनु ॥ १९ ॥

अर्थ—कविगण वर्णन करते हैं कि सूर्य सात घोड़ों के रथ पर चलते हैं, परन्तु एक ही घोड़े के रथ पर बैठे हुये भरत जी की कान्ति बालार्क के समान मालूम पड़ती थी ॥ १९ ॥

The poets assume that the sum rides on charriots with seven horses, but the beauty of emperor Bharat riding on only one horse appeared just like that of 'Balark' (19)

पद्य—यज्ञसूत्रव नेत्ति कोरळिगे सुत्तिस । वेज्ञन नेनेंदु कुँचवनु ॥
विज्ञानि वलगैयोळेत्ति मुँदश्वव । प्राज्ञरुलिये नडेसिदनु ॥ २० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी बड़ी बुद्धिमानी के साथ अपने यज्ञोपवीत (जनेऊ) को सम्हालते हुए बायें हाथ में लगाम लेकर घोड़े को आगे बढाने का संकेत किया ॥ २० ॥

Shri Bhareteshji then taking care of his 'Ygyopavit' and holding the girdle in his left hand directed the horse to march on. (20)

पद्य—सुविटन तोडे गोंकिदुत्तम गणिकेगे । तवक तत्तीरसुतेळवंते ॥
अवनीश रत्नन तोडे सोंक लोडनेवा । रत्नमणि नलिदु कुणिदुदु ॥ २१ ॥

अर्थ—जिस प्रकार विट पुरुष अपनी दोनों जंघाओं से गणिका को कसकर दबाता है उसी प्रकार भरत जी दोनों जंघाओं से घोड़े को दवाये हुये जारहे हैं ॥ २१ ॥

Just as wise men press the 'Ganikas' between their thighs, similarly Bharat ji was marching upon the horse pressed him between his thighs (21)

पद्य—पाळेयदोत्त विट्टोंदु दिक्किन निड्ड । माळ्के तेजिय तेगेदु ॥
लीले योळोंदेरळ् बीदिय नेरि नृ । पाल रावुतिके दोरिदनु ॥ २२ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् सेना के बीच में से धीरे धीरे घोड़े को बाहर लाये और उसे आगे पीछे चलाकर उसकी परीक्षा कर रहे हैं ॥ २२ ॥

After that be brought the horse out of the army and tested him by making him to march back wards and forward (52)

पद्य—लय धारे गति जव भ्रामक वेंदेंब । हयदैदु पद्धति यरिदु ॥
डुय विलंबन गूडि सप्त वेहाळि सं । चयव काणिसिदनेनेंबे ॥ २३ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी लय, धारा, गति, यव और भ्रामक इन पांच पद्धतियों के द्वारा घोड़े की परीक्षा इस ध्येय से कर रहे हैं कि एक बार या दो बार के उड़ान में कितनी ऊँचाई तक उड़ेगा उस समय घोड़ा बहुत दूर तक उड़कर लय पुराय को बतला रहा है, परन्तु भरत जी निर्भीक हो कर निश्चल स्वभाव से उस पर बैठे हैं ॥ २३ ॥

Bharatji tested the horse with Lata, Dhara, Gati, Yava and Bharamak all the five traditional tests with a view to know the speed of horse in one or two flight The horse at that time jumped very high, but Bharatji remained seated fearlessly (23)

पद्य—तेगेदनु मोदलोम्मे नृपनड्ड तरदोळं । भ्रिगळ नरमड सन्नेदोरि ॥
गगरा दोळगे मिंचु डोंकागि हरिवंते । सुगमाश्व हरिदु दुर्वियोळु ॥ २४ ॥

अर्थ—जिस समय अश्व ने बड़ी तेजी से छलांग मारा तो सम्पूर्ण पृथ्वी व आकाश में घूम कर बिजली के समान पृथ्वी पर चमकने लगा ॥ २४ ॥

The horse took a long jump and making a round of the sky flashed upon the earth like the electricty (24)

पद्य—मुगुचुव भरकेडवल कोलेदा तेजि । मोगगोड्डु हरिवाग हयके ॥
मोग गळेरडो नाल्कोयेंटो हो अगणित । मोग योयेंदेने विराजिसितु ॥ २५ ॥

अर्थ—जिस समय घोड़ा विजली के समान चमकता हुआ आकाश में उड़ रहा था उस समय चमचमाहट के कारण उसके अनेक मुख मालूम पड़ते थे ॥ २५ ॥

When the horse was flying in the sky like electricity, he seemed to have many month due to excessive brightness (25)

पद्य—कूडे वेढेयेके तेगेदनु मनदर्नि । गूडि वंदितु वट्टिताग ॥
नोडु निन्नय चक्र विंतिहुदेंदु का । लादि रुपिंद तोपंत ॥ २६ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी अपनी जंघा से जिधर घोड़े को संकेत करते थे उधर ही वह चक्र के समान घूमकर ऐसा मालूम पड़ता था कि मानो चक्रवर्ती भरत के पुण्य के प्रताप को वतला रहा हो ॥ २६ ॥

Wheneever the emperor directed to go be went there taking a round lke a wheel It appeared as if he was proclaiming the glory of king Bharat (26)

पद्य—भुग भुगनोदगि सुत्तिदुदश्व मणि तेगे । वोगरि यंतवनीश नेंव ॥
पोगलोडेयन परिमंडल दंते दि । क्किगे रम्यवागे नोटकर ॥ २७ ॥

अर्थ—जिस समय 'पवनंजय' घोड़ा आकाश मे भ्रमर के समान उड़ता हुआ जारहा था उस समय ऐसा मालूम पड़ता था कि मानों भगवान आदिनाथ के प्रभामण्डल का प्रकाश ही हो ।।२७।।

When the horse 'Pavananjai' was going through ths sky like a bee, it seemed as if it was the flash of the glorioushght of Lord 'Adinath' (27)

पद्य—झाडिसि मदन निच्चाणिगे तेगेय सि । गाडिय बिल्लागुवंते ॥
नीडि तेगेयलेड चारिगे वलचारि । गीडाडि वंदुदा तेजि ॥ २८ ॥

अर्थ—जिस समय राजा घोड़े को दवाते थे उस समय वह आकाश में जाकर इन्द्र धनुप के समान चमकता हुआ दायें व वायें घूमकर पुनः सेना के सामने आ जा ा था ॥ ८ ॥

When the emperor used to aress the horse, he at once went into sky shining like a rainbow and moving left and right sides he appeared before the army (28)

पद्य—ओलिदव ळोपनोळ्प सु ग्रुनिदेड चारि । वलचारि योळु नोडुवंते ॥
वलदेडदेरडु कदव कोट्ट नृपन कं । डोलेवुत सुळिदुदा तेजि ॥ २९ ॥

अर्थ—जिस समय घोड़ा दायें व बायें घूमकर सामने खड़ा हो जाता था उस समय यह मालूम पड़ता था कि जैसे कोई स्त्री कटाक्ष मारती हुई अपने पति के सामने आकर खड़ी हो जाती हो ॥ २९ ॥

Just as some maiden with her sharp eyes comes and stands before her husband, similarly the horse stood before the royal personage (29)

पद्य—गोण सक्कोचिसि यडवल कोलेवाग । गोण निमिरि हरिवाग ॥
मेणद कुदुरे योयेंवंते नृपन सां । त्राणि कंगेसेदुदे नेंवे ॥ ३० ॥

अर्थ—वह घोड़ा जिस समय अपने सिर को सिकोड़ कर दायें व बायें चक्र लगाता था उस समय दर्शकों को वह मोम की भांति अति कोमल मालूम पड़ता था ॥ ३० ॥

When the horse made rounds with his head drawn downwards, it appeared like canllestick (30)

पद्य—लयव भ्रामकव नेरडु तोरु तोडनिन्तु । त्रय पद्धतिय तोर्पनेंदु ॥
हयव नेरेद वीदि गोय्यने तेगेदना । नयकारनेन वखिणपेतु ॥ ३१ ॥

अर्थ—भरत जी ने अभी तक घोड़े को लय तथा भ्रामक इन्हीं दोनों गतियों (चालों) को सिखलाया था पर अब तीसरी पद्धति को सिखलाने के अभिप्राय से उसे घोड़ों के समुदाय में बड़ी चतुराई के साथ लेगये ॥ ३१ ॥

Bharatji had trained the horse only in Late and Bhramak the two types of speed Now he took him into the gathering of horses to train him in the third traditional speed (31)

पद्य—हदिनेंटु कोटि सांत्राणि गळ्वलदल्लि । मददाने रथ गळेडदोळु ॥
मेदेगट्टि सालागि निंदिरलवर म । ध्यदोळ श्ववेरि तोरिदनु ॥ ३२ ॥

अर्थ--अठारह करोड़ घोड़ों तथा अनेक हाथियों के मध्य में श्री भरतेश जी घोड़े पर बैठ कर उसकी कला को दिखलाने लगे ॥ ३२ ॥

Bharatji sitting on the horse back in amidst eighteen caiors of horses and a number of elephants, began to desplay horses skill. (32)

पद्य—मुकुर व बलिदु बाधेय नेत्ति मडसन्ने । यरिसुत विभु नडेसिदनु ॥
कुरु वज्जेगळ फण फण निट्टु बोरोंदु । मुरुकादि नडेदुदा तुरुगा ॥ ३३ ॥

अर्थ—वह घोड़ा बीच बीच में टेढ़े मेढ़े चलकर घुंघुरू के झनकारों से झनकार करता हुआ ऊपर नीचे उड़ने लगा ॥ ३३ ॥

That horse running in a zigzag manner and producing musical sounds by his feet ornaments, began to fly up and down (33)

पद्य—तोडेय तट्टु वरंते तटपुट नोदगि का । लिड्डुवुदु तेगेदत्त मत्ते ॥
जडनिल्ल दोसेदु नडेवुदद बिनदके । सुडगुड नाडुंद दोळु ॥ ३४ ॥

अर्थ—एक जंघा दूसरी जंघा के संयोग से जिस प्रकार शब्दायमान होती है, उसी प्रकार घोड़ा जमीन में टेककर पुनः वेग से आकाश में उड़कर पादध्वनि कर रहा था और भरत जी उसकी कला को दर्शकों को दिखला रहे थे ॥ ३४ ॥

Just as one thig clashing against the other produces sounds, similarly the horse also while flying from the earth to the sky produced innumerable sounds Bharatji was displaying his horses skill (34)

पद्य—वाद्यद गतियोळु कुणिदुदु होस तोंदु । चोद्यद पात्र वेबंते ॥
विद्याधरण विमान दंतवगदु । वेद्यवागि हुदेननें वे ॥ ३५ ॥

अर्थ—विद्याधर के विमान के घोड़ों के समान उन घोड़ों की गति ऐसी मालूम पड़ती थी कि मानों वाद्य की ध्वनि के अनुकूल नूतन नूतन नर्तकियाँ आश्चर्य कारक नवीन कला को बतलाती हुई नृत्य कर रहीं हों ॥ ३५ ॥

The speed of the horse, like the horses harnessed in the charriot of Vidyadhar appeared as if newer dancing girls were dancing with their newer skills, in perfect harmony with the musical instruments (35)

पद्य—ओप्पच्चिच सडलिसि किरिदि नोळगे बीदि । गप्पिसि मत्ते नूँकिदनु ॥
कुप्पि कुणिदु तेजि हरिदुदतिगे हारु । गुप्पेय नाडुवंददोळु ॥ ३६ ॥

अर्थ—भरत जी उस घोड़े को मार्ग पर सीधे खड़ा करके दूसरी विचित्र कला को बतलाते हुये एकाएक पतंग के समान उड़ाने लगे ॥ ३६ ॥

Bharat ji, having kept the horse standing on the main path, flew him in the sky in order to desplay the second wonderful skill (36)

पद्य—विस्गाळियंते हुग्गिदळि गळिगे । मगि हुल्लेयते हाल्वुदु ॥
कुरिन मेट्टिनोळ् निगिगि होळेदाडि हौं । मरियंत मोगदोरितश्वा ॥ ३७ ॥

अर्थ—बड़े जोर की आँधी आने पर जैसे घास फूस उड़ने लगते हैं उसी प्रकार घोड़े बड़े वेग से उड़ते हुये पृथ्वी पर आकर मृग के शावक के समान उड़ान करते हुये सेना की ओर मुख करके खड़े हो गये ॥ ३७ ॥

Just as the hay fly when the wind blows furiously, similarly the flying horses coming down to the ground and galloping like dears stood up before the army, (37)

पद्य—बेन्नागि मडलिसि मत्त बीडियोळ् डा । येन्नद मुन्नश्वरत्ना ॥
उन्नत वाड सेनेय मीरि होद्दु । होन्नेय नेच्चंते जणके ॥ ३८ ॥

पद्य—अल्लि निंदोडनित्त मुखमाडि दायेय । मेल्लि नोळ्दिर्दु दीचेयोळु ॥
इल्लि निंदोडनत्त मुख माडलाक्षण । दल्लि होगिदु दीचेयोळु ॥ ३९ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी जिस समय घोड़े की रास को ढीला किये उस समय वह स्वतंत्रता पूर्वक एक क्षण में ही बहुत दूर निकल गया, पुन जब उसके मुंह को इधर घुमाये तब वह वेग पूर्वक उड़ता हुआ सेना में आकर खड़ा हो गया। जिस समय घोड़ा आकाश मार्ग से उड़ता हुआ आ रहा था उस समय तेजी के कारण घोड़े के पैर हिलते पर भी न हिलने के समान ही दर्शकों को मालूम होते थे ॥ ३८-३९ ॥

As soon as Bhartesh ji loosened the girdle of the horse, he fled away in a moment s time When he turned him, he at once ran to the army. When he horse was flying through the sky, the on-lookers could not recognise the movements of his legs (38-39)

पद्य—नीटद् सेनेयनत्ति जणके नि । ड्डोटदि मीरि सल्वाग ॥
नोड करेवे याट तदवादुदद्र का । लाट दोळ्तड वादुदिल्ल ॥ ४० ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी जिस समय घोड़े को यह संकेत करते थे कि अमुक योजन तक जाना उस समय वह वहीं तक जाकर तुरन्त वापिस हो जाता था ॥ ४० ॥

Whenever emperor Bharat wanted the horse to cover a definit number of Yojanas, he came back after covering the distance as desired by the royal personage (40)

पद्य—बलिदु चक्रेश्वर तडेद् कारण हेळि । द्ळने योळ्तिरुगिता तोजि ॥
बलियदिद्दरे हयणिसि काणवनारद । रळविगी धारिणि साके ॥ ४१ ॥
गति धारे जवविवु कूडिंतु पंच प । द्धात यद्धृचि.स चक्रधरनु ॥
द्वितीय लंघनव तोरुवेनेंदु मत्तश्व । पतिश्र सरितव माडिदनु ॥ ४२ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत जी घोड़े को गति, धा.ा यव इत्यादि पद्धतियों को बतला चुकने के बाद एक अन्य पद्धति के द्वित.य गति को बतलाना प्रारम्भ किया ॥ ४१-४२ ॥

Chakravarti Bharatji, having trained the horse in 'Gati,' 'Dhar' and Yava etc, began to train him other traditional skill (41-42)

पद्य—उरद् तावणिय किंकरनोब्ब सडलिसे । सरिवेब्ब नौंकि दायेंदा ॥
धरेगे कालिड दोंदु लाग लागिसि तळ्लि । गेर डारु योजन वायूतु ॥ ४३ ॥

अर्थ—एक सेवक ने सेवा करने की इच्छा से घोड़े के पीठ पर हाथ रक्खा तो वह उसे संकेत समझकर जमीन से दो तीन योजन ऊपर उड़ गया। भरत जी पुनः वहाँ से घुमाकर उसे चारों दिशाओं में दौड़ाना आरंभ किये तो वह ४८ योजन तक गया। इतना दूर जाना भरत जी के घोड़े के लिये थोड़ा ही है ॥ ४३ ॥

A servant put his hand, upon the horse, who, considering it direction flew up two or three Yojanas Bharatji again made him run all round He went only to fortyfive Yojanas. It was a very little distance for the horse of emperor Bharat (43)

पद्य—ओरेंदु दिक्किगोरोम्मे दायने नाल्कु । वारि लंघिसिद् भूमियनु ॥
आरैय्य लायूतु नाल्वत्तेंटु गावुद । वा राज हयकदु स्वल्प ॥ ४४ ॥

अर्थ—जिस समय भरत जी घोड़े पर बैठकर "हाँ" शब्द उच्चारण किये उस समय वह १०० योजन तक आकाश में गया ॥ ४. ॥

When Bharatji, sitting on the horseback said, 'yes he went ten Yojanas in the sky. (44)

पद्य—पेंचक दत्त भारव नौंकि बावेय । नुँच दोळेत्ति दायेनळु ॥
अंचे वानके हारुवंते हारितु मुगि । लंचि गीराक योजनवा ॥ ४५ ॥
बुर बुरनाकाशकेड मगुळि तेजि । गर गर निळेगिळिवाग ॥
गरुडनेंगि वैहाळि माळ्पनो चक्र* । धरनेंव पडे वेरगायुतु ॥ ४६ ॥

अर्थ—वहाँ से जब वह वापिस आ रहा था तो मुख व नाक से निकलती हुई श्वाँश की ध्वनि ऐसी मालूम पड़ती थी कि मानों गरुड़ पर बैठकर कोई प्राणी सन सनाहट के साथ आ रहा हो ॥ ४५-४६ ॥

When he was coming back, the breath coming out of their nostrils and mouth produced sounds which indicated as if some one seated on a Garuda was going *(45-46)*

पद्य—सुरप तुच्छैः श्रववेरि दंतिद् नें । दोरे दुपमानद माता ॥
परमार्थ वेनिसिदनाग देवेंद्रने ।धरेगिळिदंद् नेनिसिदा ॥ ४७ ॥

अर्थ—आकाश से पृथ्वी पर उतरते हुये श्री भरत जी की शोभा ऐसी मालूम पड़ती थी कि मानों स्वर्गीय देवेंद्र ही उच्चैश्रव अश्व पर बैठकर स्वर्ग से भूतल पर उतर रहे हों ॥ ४७ ॥

Emperor Bharat while coming down from the sky looked so beautiful, that if seemed Lord Indra himself riding on a special horse was coming down to this world from t at world *(47)*

पद्य—धरणि लघनमेघ लंघनयुगदोळा । धरणीश निनिसु जारिदने ॥
तुरगद वेन्न मेलेरकद देवरे । यतरु तिढेयेने सोगसिदतु ॥ ४८ ॥

श्री भरतेश जी परमात्मा पद प्राप्त करके निर्वाण पद (मोक्षपद) का लंघन करते हुये की भांति अश्वारुढ़ होकर पृथ्वी तथा मेघ लंघन कर रहे हैं ॥ ४८ ॥

Bharateshji riding on a horse back was crossing the earth as well as the clouds It seemed as if he, having crossed the 'Parmatmapada' was attempting to cross the 'Nirvanpada' *(48)*

पद्य—एळु वैहाळिय सूचिमि विसिळरि । एळद मुन्न गजेंद्रा ॥
तोळ मन्नेयोळु पाळेयव निलिमि कूडे । शैलके दारिदेगेदनु ॥ ४९ ॥

चक्रवर्ती भरत जी घोड़ों को पूर्वोक्त सात प्रकार की पद्धतियों को बतलाकर कड़ी धूप होने के पूर्व ही सेना को मध्य में रोक दिये और विजयार्थ गिरि की ओर जाने वाला मार्ग निकाल दिये ॥ ४९ ॥

Chakravarti Bharat trained his horse in seven skills as described before and brought him in the middle of the army before sun was very hot He found out the way to 'Vijyardh Giri' (49)

पद्य—पडेवळ्ळ नोडने निंदितु सेने गणबद्ध। रोडगूडि नृपति होगुतिरे ॥
कडुगि बंदरु मागधादि व्यंतिरगरा । ळ्दोडेयन बिट्टु निल्लवरे ॥ ५० ॥

अर्थ—सेना उसी स्थान पर रुक गई । भरत जी के साथ नियम गणबद्ध देव, मागध, वरतनु तथा प्रभासामर भी चल दिये, क्योंकि ये सब भरत जी के बिना कहीं अन्यत्र नहीं ठहर सकते थे ॥ ५० ॥

The army halted at the very spot All the chieftains like Magadh, Varatnu and Prabhasagar accompanied the emperor without whom, they could stay nowhere (50)

पद्य—जयराज निंद कदव कुट्टिसिद नेंदु । नयगेट्टु केलवराडुवरु ॥
हयगज रत्न पेंडिरिगे समान रु । त्रियराळ कैयोळेरिपरे ॥ ५१ ॥

अर्थ—कुछ लोग ऐसी कल्पना कर रहे थे कि भरत जी जयकुमार सेनापति को भेजकर उसी के हाथ से वज्रकपाट स्फोटन कराया था परन्तु उन लोगों की यह कल्पना असंगत ही है, क्योंकि चक्रवर्ती को अश्व, गज रत्न इत्यादि स्त्री रत्न के समान है उस रत्न का उपभोग स्वयं ही कर सकते हैं। वे रत्न चक्रवर्ती को छोड़कर अन्य व्यक्ति को अपनी पीठ तक नहीं दिखा सकते ॥ ५१ ॥

Some of the people were of the opinion that Bharatji got the 'Vajrakapat' broken by Jaikumar the commander of the army. But their fancy was baseless, because 'Chakravarti' considered horses, elephants and jewels as 'Stri Ratna.' They can never leave the emperor and go to others (51)

पद्य—साणिगळुळ्दि तेजिय तिद्दुवरु मां । त्राणि रत्नय तिद्दितिल्ल ॥
चोणीश रययों कोडुवरो कोडरो सु । जाणरे तिळिव रंतिरलि ॥ ५२ ॥

अर्थ —जिस प्रकार स्त्री रत्न दूसरों के हाथों में नहीं दिया जाता है उसी प्रकार राजा लोग अश्व, गज इत्यादि रत्नों को अन्य के हाथों में नहीं दे सकते इस बात को विवेकी लोग ही जान सकते हैं ॥ ५२ ॥

Just as ladies can not be given to others, similarly horses, elephants etc. can not be parted with the emperors Only wise men understand it *(52)*

पद्य—करिह रत्न चक्रिय तोडेगल्लदे । पररिगे कोडुवदे वेन्ना ॥
अरसिन हासुगे गद्दु गे वंटगे । वरवल्ल कासरेनु साड्ड ॥ ५३ ॥

अर्थ—गज, हय और स्त्री रत्न ये सब चक्रवर्ती के बिना अन्य किसी को पीठ नहीं दिखाते हैं, इनके अतिरिक्त राजा की गद्दी, खड़ाऊं तथा सिंहासनादि भी सेवक के भोग करने योग्य नहीं है। इससे मैं क्या कह सकता हूं ॥ ५३ ॥

Horses, elephants and wives can not part with the emperor. Besides that the throne Kharaun etc are not enjoyable by the servants What can I say more than this *(53)*

पद्य—चंडवेगाख्यद दंडरत्नायुध । खंडय कट्टिद हयद ॥
मंडेगे कुँचय वीमि दायेने पक्षि । कोंडोडि दंतोयदुदच ॥ ५४ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी के पीठ पर 'चंडवेगाख्य' नामक दंडायुध रत्न बंधा हुआ था। वह पवनंजय नामक अश्व पक्षी की भांति दोनों परों को फैलाकर उड़ता हुआ क्षणमात्र में ही विजयार्थ गिरि के निकट जाकर खड़ा हो गया ॥ ५४ ॥

'Chane Begarakhya,' a 'dandayudh' jewel was tied up with the back of the emperor The horse named 'Parmanjai' in a moments time flew to the 'Vijayardh Giri' like a bird. *(54)*

पद्य—तद्दे तुग्गु तेवर दैकिल्ल बुँटादरु । पडेवळ्ळ सवरि बंदिर्दा ॥
नडुवेग दोल्ड वंदु नेजियगळदांटि । तुडुकिता गिरिय ह्यूगेया ॥ ५५ ॥

अर्थ—वहां पर अनेक प्रकार की ऊंची नीची भूमि सैनिकों द्वारा पहले ही बराबर की गई थी विजयार्ध गिरि के निकट घोड़ा खड़ा होने पर भरत जी ने उस भूमि की भली भांति निरीक्षण किया ॥ ५५ ॥

There the soldiers had already made the rough ground even. Bharatji inspected the ground for a while (55)

पद्य—सोपान विडिदल्प दूरव पत्तिम । चा पर्वतद गर्भदल्लि ॥
आपत्ति नंतिर्द वज्र कवाटव । भूपति तोड्गे कंडा ॥ ५६ ॥

अर्थ—बाद में राजा सोपान मार्ग से उस पर्वत पर चढ़ गये और उसके गर्भ में स्थित होकर दुखदाई वज्रकपाट को देख लिये ॥ ५६ ॥

After that the emperor climbed to the top of the hill and saw there 'Vajrakapat' the centre of all the troubles. (56)

पद्य—नगव दिप्पत्तेदु गावुद दुद्दवा । नगद किव्व सिरिन कदद ॥
नेग हेंडु गावुद पेन्नेरळ् गावुद । दगल वागिरे निट्टिसिदनु ॥ ५७ ॥

अर्थ—वह पर्वत २५ कोस लम्बा है । उसमें १२ कोश लम्बा व ८ कोश चौड़ा वज्रकपाट व्यवस्थित है ॥ ५७ ॥

That hill extend over a length of fifty miles 'Vajrakapat' in it was twenty four miles long and sixteen miles broad. (57)

पद्य—भेरि यिक्क डेय मुच्चिद चर्मदंते गं । भीर गुहेय तेंक वडगा ॥
सेरि हुवेरडु कवाटगळवरोळा । धीर कंडनु तेंकणदनु ॥ ५८ ॥

अर्थ—जिस प्रकार नगारा वाद्य चमड़े से मढ़ा रहता है उसी प्रकार विजयार्ध पर्वत की गंभीर गुफा से दक्षिण व उत्तर दोनों तरफ वज्रकपाट का द्वार बन्द किया गया है । राजा ने बड़ी युक्ति के साथ वज्रकपाट के दक्षिण भाग को देखा । ५८ ॥

Both the Southern as well as the northern gates of the cave in the 'Vajyardh' hill were blocked The emperor saw the southern pert of the Vajrakapat very cautiously. (58)

पद्य—रौद्रव नोळगिट्टु बिम्मने बिगिदिर्दा । चुद्रर होट्टेयंददोळ् ॥
रुद्राग्नि योळगिद्दु बिगिदिर्द पडियना । चिद्रू परसिक नोडिदनु ॥ ५६ ॥

अर्थ—वह भयंकर वज्रकपाट अन्दर से रौद्र तथा क्रोधाग्नि से परिपूर्ण मालूम होकर बाहर से परम प्रशांत मालूम पड़ता था ऐसे वज्रकपाट को राजा ने अच्छी तरह से देखा ॥ ५९ ॥

विजियार्द्ध पर्वत का वज्र कपाट (द्वार) हजारों वर्ष से बन्द है उसके अन्दर की अग्नि एक दम तोड़ने से उछल कर बारह कोस तक आवेगी इसलिये किसी को बाधा न पहुँचे उस अग्नि से, इसलिये खाई का निर्माण करो लोक में सामान लोहे को एक दूसरे लोहे पर पटकने से अग्नि

निकलती है फिर दंड रत्न से वज्र कपाट को तोड़ने से क्या अग्नि नहीं निकलेगी इसलिये आप लोग सब खाई का निर्माण करो ऐसा राजा भरत अपने मन्त्रियों और सेनापतियों को समझा रहे हैं ।

यह चित्र सौ० भाग्यवती धर्मपत्नी ला० भगवानदास जी जैन तिलोकपुर जि० बाराबंकी की ओर से छपा

That fearful 'Vajrakapat' looked very quiet from with out, but was full of fire of anger burning with in it The emperor examined it well (59)

पद्य—मदरिद नोडि मत्तोले दृति मिसुना । मद गुहेयिदु वज्रवंधा ॥
इदे कारा मागधांकिन वरतनु नाम । मृदु प्रभासांक केळेंदा ॥ ६० ॥

अर्थ—इसे देखकर भरत जी मागध, वरतनु तथा प्रभासामर को बुला कर कहने लगे कि देखो यही "तमिस्र" नामक गुफा है। यही वज्रकपाट द्वार है॥ यह कैसा अनुपम मालूम हो रहा है॥ ६० ॥

Having seen that Bharatji sent for Magadh, Varatanu and Babhasagar and said to them, ' This is the cave named 'Tamistra' which is the gate way of 'Vajrakapat' How strange looking it is ?" (60)

पद्य—अवलि वडिगळोंदु गूडिद्‌ वोळगे ता । ळ्वगतवागिद्‌ दिल्लि ॥
तिविदरे ताळ्डेवुदु पाडि तेरेवुदें । दवनीश कुट्टि तोरिदनु ॥ ६१ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी वज्रकपाट का निरीक्षण करते हुये सेनापति से कह रहे हैं कि दोनों कपाटों का जोड़ इस स्थान पर है। यदि युक्ति पूर्वक इस स्थान (जोड) पर प्रहार किया जाय तो बड़ी सरलता से यह टूट सकता है। ऐसा कहते हुये उसे बजाकर उन्हें दिखलाया ॥ ६१ ॥

Shree Bharateshji while in spectiug the army, said to the commander-in-chief " This is joint of both the boards of the gate If it is striken here, it will break easily " Thus he showed it to him (61)

पद्य—हल्ल कीलिसिदंते कीलद तुदिगळं । तिल्लि मुच्चिचवे कोद्वारगळु ॥
हल्ल मुरिदु बाय विडिसुवे गुहेय नें । दुल्लास दोळु नक्कु नुडिदा ॥ ६२ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत जी हंसते हुये कह रहे हैं जैसे कोई क्रोधी मनुष्य क्रोध में आकर दांतों को पीसता हुआ बैठा लेता है उसी प्रकार यह भी दृढ़ता पूर्वक बैठा हुआ मालूम पड़ रहा है। मैं इसके दांतों को तोड़कर इसके बन्द मुख (द्वार) को खोलूंगा ॥ ६२ ॥

Chakravarti Bharatji said to the commander, "These have stuck together in the same way just as angry man stick his teeth grinding with excessive anger I breaking its teeth, shall open its mouth (gate)" (62)

पद्य—मंजिन मोत्त मक्कळिगोंदु गिरियागि । अंजिसुवंते लोकदोळु ॥
जंजडरिगे वज्रवागिद्दुदिद् हुसि । हुँजियै कंडे नानंदा ॥ ६३ ॥

अर्थ—पुनः अपने सेवकों से कह रहे हैं कि ओस के समूह बालकों को पर्वत के समान प्रतीत होते हैं, परन्तु हमारे लिये यह वज्रकपाट कुछ भी नहीं है। अर्थात् अभी देखते देखते पल मात्र में ही इसे तोड़ डालूंगा ॥ ६३ ॥

He again said, "the boys fancy the dew drops to be huge like mountain But this 'Vajrakapat' is nothing for me That is to say I will break it in the winking of an eye." (63)

पद्य—इडुकत्तलेय मोत्त रविगल्प वहुदिदु । सोडर्ग ळेल्ल के स्वल्प वहुदे ॥
पोडवि गेल्ल के वल्पुनिनगल्प वहुदेदुं । नुडिद्रा व्यंतरोत्तमरु ॥६४॥

अर्थ—व्यन्तरों ने कहा कि स्वामिन् ! लोक में अमावस्या के अंधकार को दूर करने में सूर्य ही समर्थ हैं। मामूली दीपकों में यह सामर्थ्य नहीं हो सकता। इसी तरह इस वज्रकपाट का स्फोटन अन्य शूर वीरों के लिये असाध्य होकर आप के लिये ही साध्य है ॥ ६४ ॥

The Vyantras said, "My Lord ! only sun is able to remove the dark nose of 'Amavasya' night and not ordinary types of lamps In the same way the breaking of this Vajrakapat is with in the reach of a man like you and not that of other warriors" (64)

पद्य—कडे सारि नीविन्नु वे गदोळगळम् । गडे गेय्दिदरेंदुं कैवीसि ॥
कडुपिन दंड रत्नायुध करस कै । दुडुकिदनधिक वीर दोळु ॥६५॥

अर्थ—श्री भरतेश जी सेवकों के उपरोक्त वचनों को सुनकर उन लोगों को खाई के निकट भेज दिये और अपना हाथ दंडरत्न की ओर बढ़ाकर वीरता के साथ उसे उठा लिये ॥ ६५ ॥

Shree Bharatesh ji hearing their words sent them near the trench and himself lifted, the 'dandratna' in his hand (65)

पद्य—हारे याकारद चंड वे गेय राय । वीर भुजदि तूगि नोडि ॥
वारु वाणिय तेकुं मुखमाडि तें कुप्पु । खार विदायतनाद ॥६६॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत जी लम्बे दंडरत्न को अपने कंधे पर रखकर दक्षिण तरफ से वज्रकपाट तोड़ने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ॥ ६६ ॥

Chakravarti Bharatji, putting the 'danpratma' upon his shoulders, is waiting to break the "Vajrakapat" (66)

पद्य—पट्पद्म चरगळ नोडि पुरुजिनरा । टूपाद युगलव नेनेदु ॥
मुट्परि हृतचित्तदोळ् हंसनाथ । त्तिट्परम्परेय भाविसिदा ॥ ६७ ॥

अर्थ—वज्रकपाट स्फोटन के पूर्व ही श्री भरतेश जी अपने हृदय में षट् पद्माक्षर का ध्यान करके भगवान आदिनाथ के चरणकमलों का स्मरण किया। पुनः निर्मल चित्त से परब्रह्म परमात्मा का भी चिन्तन किया ॥ ६७ ॥

Before the 'Vajrakapat' was broken, shree Bharateshji having attended to 'Shatpadmakshar,' remembered Lord 'Adinath' Then he in his pure heart meditated about 'Parabrahma Paramatma' alsa (67)

पद्य—वाम हस्तदि वाघेविडिदु दक्षिण हस्त । धामदि दंडव धरिसि ॥
आ मुद्रिसिद कवाटव तिविियलु तुगि । नेम दाणव नेप्पुगंडा ॥ ६८ ॥

अर्थ—इसके बाद बायें हाथ में घोड़े की लगाम को लेकर दाहिने हाथ में वज्रदंड को धारण करके उसे तोड़ना चाहते हैं ॥ ६८ ॥

Then taking the girdle in his left hand and 'Vajradand' in his right hand, he wanted to back it (68)

पद्य—हिंचारियोळ् तूगि तिविदना पडि कूडे । हंचिदंतेडु होळायतु ॥
कंचिन वेट्ट होळादंते दनियायतु । मिंचिनंतश्च लंघि सितु ॥ ६९ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती भरत जी दंडायुध को हाथ में लिये हुये कुछ पीछे हट गये और पुनः सामने विद्यमान वज्रकपाट पर दंडरत्न के द्वारा इतने जोर से प्रहार किये कि वह पतली ईंट के समान दो खड हो गया। जिस प्रकार कांस्य का पर्वत टूटने समय बड़े जोर की अवाज करता है उसी प्रकार वज्रकपाट के टूटने से बहुत भयंकर शब्द हुआ उसके बाद घोड़ा आकाश में उड़ गया ॥ ६९ ॥

Chakravarti Bharatji struck upon the 'Vajrakapat' so vigorously that it broke into several pieces like a thin earthern brick This breaking up of 'Vajrakapat' produced great thundring sound like 'kasya' After that the horse flew into the sky (69)

पद्य—सिडिलेंदु वज्र वेंदरु भेदविल्लागि । पडिवज्र दंडवु वज्रा ॥
सिडिलु सिडिल तागिदंतायतु भरतेश । पोडेये महार्भटे ससगि ॥ ७० ॥

अर्थ—मेघ और वज्रदंड में कोई अन्तर नहीं है। मेघों के परस्पर में टकराने से विजली उत्पन्न होकर जिस प्रकार भयंकर शब्द करती है उसी प्रकार बज्रदंड व वज्रकपाट के संघर्ष से भयंकर शब्द हुआ ॥ ७० ॥

There is no difference between cloud and 'Vajradand' Just as the lightning produced by the clash of two pieces of clouds, produces fearful sound, similary clash between 'Vajrakapat' and 'Vijradand' produced fierce sound (70)

पद्य—जडिद भरके राय पोडेद भरके कद । वोडेद भरके विजियार्द्धा ॥
नडुगितु नेल बदरितु.कडलु गळकि । बडदोशियंते तुळकिदवु ॥ ७१ ॥

अर्थ—विशेष क्या ? भरत जी के वज्रदंड प्रहार से वज्रकपाट के टुकड़े होते समय भूकम्प उत्पन्न होकर विजयार्ध गिरि हिलने लगा और समुद्र उमड़ने लगा ॥ ७१ ॥

• What to say more! Vijyardhgri shook and ocean flooded, onle at the breaking up of Vajrakapat due to the stroke of emperor Bharatji (71)

पद्य—ओट्टि दळिगेय चिन्नाति गोल तुदियिंद । कुट्टुवंते मान्य दोळु ॥
वेट्टिय वज्र कवाटव नृप होळु । गुट्टि विट्टनु निमिषदोळु ॥७२॥

अर्थ—श्री भरतेश जी क्षण मात्र में ही वज्रदंड के गोले नोक से प्रहार करके वज्रकपाट को टुकड़े टुकड़े कर दिये ॥ ७ ॥

Shree Bharateshji in a moment broke the Vajrakapat into pieces with the stroke of round end of 'Vajra dand' (72)

पद्य—कोडुव कोंच ळते गोप्पदुदोंद त्रिदिरिन । पडिय बाशिज नोडेवंते ॥
पडेनडेवुदकट्टुलागिद वज्रद । पडिय हायदोडेदना चक्रि ॥ ७३ ॥

अर्थ—वज्रकपाट अर्थात् टट्टर बनाने के लिये जिस प्रकार बांस किसी हथियार से जल्दी विदर्ण किया जाता है उसी प्रकार बड़ी आसानीसे श्री भरतेशजी वज्रकपाट को तोड़ डाले ॥ ७३ ॥

Just bamboos are operated with some tool to prepare a 'Tattor, similarly Bharatji broke the Vajrakapat very easily. (73)

पद्य—चेड्डिन मुगुकिद् वज्रवँश्वदोर्दु । पेट्टिनोळिव्वागघायतु ॥
मुट्टि इत्तेट नीडुवेने नल वन कै । पेट्टिगिन्नोड्डुव राठ ॥७४॥

अर्थ—पर्वत को आच्छादित किये हुये वज्रकपाट एक ही प्रहार में टूट गया। यदि दो चार प्रहार किया गया होता तो उसका नाम निशान नहीं रह जाता। ऐसे प्रहार के सामने शत्रु गण कैसे ठहर सकते हैं ॥ ७४ ॥

The Vajrakapat covering the hill broke only in one stroke If two or three strokes would have been made even its remains were not to be found. How can enemies face such strokes (74)

पद्य—बरसिडिलेरगे पामरे बिरिग्वँते गे । बरिसि सीळ्ळायूतु मत्तोडने ॥
दोरे पिडुवँते बिरँदु बीळ्ळिदु ताग । नेरेदुदा वज्र कवाटा ॥७५॥

अर्थ—जिस प्रकार वज्र गिरने से पर्वत फटकर दो टुकड़ा हो जाता है उसी प्रकार वज्रदंड के प्रहार से वज्रकपाट फटकर दो टुकड़ा हो गया ॥ ७५ ॥

Just as mountain breaks into pieces if Vajra be falls upon it, similarly Vajrakapat broke into two pieces due to the furious stroke of 'Vajradand.' (75)

पद्य—मज्ज निम्मयव नानेनेंवेना यँगि । जज्ञारना कवाटवतु ॥
उजरि माडलागळे किच्चु जिव्हेय । निज्ञाडि मुत हव्वितोडने ॥७६॥

अर्थ—मकान के अन्दर रहने वाला प्राणी, आक्रमण किये हुये अपने शत्रु से सामना करने के लिये जिस प्रकार क्रुध होकर बाहर निकलता है उसी प्रकार उस वज्रकपाट के टूटने से उसके अंदर रहने वाली भीषण अग्नि बाहर व्याप्त हो गई ॥ ७६ ॥

The furious fire burning with in spread out side after the Vajrakapat was broken in the same way just as the enemies are attacked by the residents of a broken house (76)

पद्य—तुँब किसरे नीरु ने गेवँते गुहेयल्लि । तुँविह वँकि भूपतिय ॥
वेवँळियोळगे नालगे नीडिदस्र क । दुंबि हारितु मूरु हारा ॥७७॥

अर्थ—पानी से भरी हुई टंकी को तोड़ने से जिस प्रकार पानी वेग पूर्वक बाहर आ जाता है उसी प्रकार अग्नि बड़े जोर से बाहर आगई ॥ ७७ ॥

Just as the water of a tank comes out with great force, when it is broken, similarly the fire spread out furiously. *(77)*

पद्य—दुरेंदु पडि हिग्गि तेरेय लोडदे बुसुु । बुरेंदु ज्वाले हब्बिदुदु ॥
सुरेंदु मोरेदु वाहन बेच्चि सागितु । विरेंगे विरुगाळियंते ॥७८॥

अर्थ—वज्रकपाट के टूटने से अग्नि घरघराहट, सुरसुराहट तथा भुस भुसाहट शब्द करती हुई प्रज्वलित हो गई । उसकी ध्वनि सुनकर घोड़ा पलायमान हो गया ॥ ७८ ॥

When the Vajrakapat was broken the fire burnt up by producing a number of sounds The horse moved to hear that sound. *(78)*

पद्य—तेंक मुखदिं निंद तेजि लंघिसुवाग । भोंकनग्निय दिक्किगोलेदु ॥
डोंकि हारितु तेंक नेगेदरे सिंधुम । ध्याक के वील्दुदा देशिके ॥७९॥

अर्थ—जिस समय भीष्म अग्नि प्राज्वलित हुई उस समय घोड़ा घबड़ा कर बहुत दूर उड़ गया ॥ ७९ ॥

When the fire grew furious the horse being greatly unconfortable flew away *(79)*

पद्य—एदे सिंधुनदि गिदिरागि निंदश्वद । वदन वने डगैयोळरसा ॥
चदुरिंद डोंकिसि तिवियलोडने हारि । तदु तिरिमुरि येंब लागु ॥८०॥

अर्थ—इसके बाद श्री भरत जी बड़ा चतुराई के साथ धीरे धीरे घोड़े को सिंधु नदी की खाई की ओर ले चले ॥ ८० ॥

After that shri Bharatesh ji very cleverly moved the horse towards the trenches of Indus by and by. *(80)*

पद्य—लागोंदरोळु दांटितगळ मुंदेरडु ला । गागे भूवरनोत्ति तड़ेदा ॥
वेगे नीरगळिंद मुंदोत्ति तिल्लसुं । भागेयोळ् निंदनाराया ॥८१॥

अर्थ—जब राजा घोड़े को आगे बढ़ाये तो वह वेग पूर्वक उड़कर खाई के निकट जा कर खड़ा हो गया ॥ ८१ ॥

When the emperor directed the horse to advance, he flew to the trench very rapidly. *(81)*

पद्य—छिळिछिळिछिटिछिटिदिमिदिमिदिमिदिमि । घुळुघुळु वुरुवुरु पलेय ॥
दळदळ दगि भुगिलेंदुरि ने गेदुदु । प्रळय कालद किच्चिनंते ॥८२॥

अर्थ—प्रलय काल की भांति वह अग्नि प्रचण्ड रूप धारण करके जिस समय आगे बढ़ने लगी उस समय सर्वत्र हाहाकार मच कर पर्वत अग्नि मय हो गया ॥ ८२ ॥

When that fire began to spread all round, everywhere troubled condition prevaited. *(82)*

पद्य—इट्टणिसिद मर गिडु बळ्ळि पुल्पोद । रोट्टिल हत्ति मेल्मुगिला ॥
मुट्टि महाज्वाले ने गेदुदग्निय दोदुं । बेट्टवोयेंब विंकदोळु ॥८३॥

अर्थ—जिस समय इधर उधर वृक्ष, बेल तथा घास इत्यादि को जलाती हुई अग्नि आगे बढ़ रही थी उस समय उसका तेज ज्वालामुखो पर्वत के समान ही मालूम पड़ता था ॥ ८३ ॥

When the fire burning trees vines and grass, was advancing, it looked like a valcano mountain. *(83)*

इंडयाडिदवोल्ड कोंगेडदरि चिट्ट । खंड्रेयपेने ज्वाले येद्दु ॥
हिंडु कार्मु गिलंते होगे निमिर्दाकाश । मंडल केद्दु दार्भ टिसि ॥८४॥

अर्थ—उस समय बड़ी बड़ी अग्नि की चिंगारियां इतने वेग से आकाश में उड़ रही थीं कि मानों कोई ईंटा व पत्थर ही फेंक रहा हो ॥ ८४ ॥

Big sparks of fire were flying in tde sky so furiously that it appeared as if stones and bricks are being thrown in the sky. *(84)*

पद्य—दळ्ळुरि ये दुदुदा कंडुविद्याधर । रळ्ळे वोयदरु म्लेच्छ नृपरु ॥
तळ्ळक गोंडरु विजयार्थ देवनु । डिळ्ळैसि मंडेदूगिदनु ॥ ८५ ॥

अर्थ -उस समय सर्वत्र हाहाकार मच गया । विद्याधर व मलेच्छ राजा इस प्रलयाग्नि को देखकर घबड़ाये । भरत जी की वीरता को देखकर विजयार्ध देव मुग्ध हो गया और आकाश में आकर उनकी स्तुति करने लगा ॥ ८५ ॥

Every thing was disturbed at that moment. Vidyadhar and Mlechh Raj lost their courage to see this fire 'Vijyasdh deva' was greatly pleased to see the heroic deed of Bharatji and began to pray him in the sky. (85)

पद्य—पडिवडे दार्भ टे गेळ्वाग ळेदे दुम्मु । दुडुकेंदु दवरिगे मोदले ॥
मिडिल सेतुविर्नने ज्वाले येद्दुनाड । सिडिमिडि गोंडरत्तिरा ॥ ८६ ॥

अर्थ—जिस समय दंडायुध के द्वारा वज्रकपाट प्रहार किया गया था उस समय भूकम्प आ गया था। मेघ की गर्जना से जिस प्रकार सभी लोग घबड़ा जाते हैं उसी प्रकार वज्रदंड के प्रहार से सभी लोग घबड़ा गये। साथ ही साथ मागधादि व्यन्तर भी घबड़ा गये और सेना में एकाएक कोलाहल मच गया। सभी घोड़े व्यग्रता से घबड़ाकर इधर उधर भागने लगे ॥ ८६ ॥

There was earthquake, when Vajrakapat was stricken with 'Dandayudh Just as people are very much disappointed to hear the thunder of clouds, similarly they were troubled to hear the stroke of 'Vajradand' Vyantars like Magadh etc also lost their heart. The whole army grew uncontrolable. All the horses began to flee hither and thither. (86)

पद्य—मागधेंद्रादिगळ्चरिवट्टरु । कुगि बोब्बरिदुदु कटका ॥
तुगि वहानरत्न कुणिये कर्दव तट्टु । ताग भूपति नोडुतिर्दा ॥ ८७ ॥
चड वेगेय नेलदोळु नेट्टु व्यंतर । मडळिन्हर बळसि नोळु ॥
केंड देळगेय नोळ्प चक्रिगे मत्तोंदु । मंडितोत्सव नेनेंवे ॥ ८८ ॥

अर्थ—समस्त सेना के घबड़ाने पर भी श्री भरत जी का धैर्य नहीं छूटा; क्योंकि वे बड़े पराक्रमी हैं। वे खाई के किनारे खड़े होकर व्यन्तरोंके साथ हर्ष पूर्वक इस दृश्य को देख रहे हैं ।८७ ८८।

Shree Bharatesh ji did not lose his heart even when the whole army was disappointed standing beside the trench along with the Vyantras, Bharatji is witnessing the scene very happy. (87-88)

पद्य—विजियार्धं देवनागळे तन्न देवता । वज्रगूडि बंद बानदोळु ॥
विजिय लक्ष्मिय नब्र जय जय येंदभू । भुजगे हूमळेय सूसिदनु ॥ ८९ ॥

अर्थः—इतने में वहाँ पर एक अपूर्व घटना यह हुई कि विजयार्ध देव राजा की वीरता से अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने कुटुम्बियों के सहित आकाश प्रदेश में जाकर जय जयकार करते हुये

कहा कि हे ! वीर लक्ष्मी के अधिपति, पट्खंड नामक तथा सर्व राजशिरोमणि ! आप की जय हो। इस प्रकार प्रशंसा करते हुये पुष्पवृष्टि किया ॥ ८९ ॥

Meanwhile a surprising incident took place 'Vijyardh Deva' being excessively pleased at the bravery of the emperor, went into the sky and began saying "O Lord of the goddess of victory leader of all the sit parts of the earth, best of all ! Victory may crown thee" Praising thus he showered flowers from the sky. (89)

पद्य—मत्ते गर्म सुखिगिंद सेकै तागितेंदु हू । मळेय करेद् निल्लदोडने ॥
मलय जग्मद कप्पुरद् पन्नीर मुं । मळेय करेद् नलिंयिद ॥ ९० ॥

अर्थ—इतना ही नहीं भरत जी को अग्नि की ज्वाला लग गई होगी इस आशंका से उसने गुलाब जल, कर्पूर तथा चंदनादि सुगंधित वस्तुओं की भी उसने वृष्टि किया ॥ ९० ॥

Not only this, Fearing that Bharatji might be suffering due to the burning fire he showered things like rosewater, camphar and other fragrant things (90)

पद्य—किंनर किंपुरुषरु हाडिदरु राय । रन्नन तोळ बलमेयतु ॥
नन्निधियोळु निंदु गंधर्व गणिकेय । रुन्नत नृत्यवाडिदरु ॥ ९१ ॥

अर्थ—किंनरादिक देव भरत जी की वीरता पर मुग्ध होकर गायनादि करने लगे। अप्सरायें निकट मे जाकर हर्षपूर्वक नृत्य करने लगीं ॥ ९१ ॥

'Kinnars' being greatly pleased at the bravery of Bharatji, began to sing in his praise The divine dancers also danced happily near him (91)

पद्य—चक्किकला विजियार्धदेव तन्न देव । बलगूडि नृपन सम्मुख कै ॥
अळवडु तोडगेय होळ हिंद मिंचिन । बळग बहंतोत्ति बंदा ९२ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् तारा के समान चमकता हुआ विजयार्ध देव उत्तमोत्तर वस्त्राभूषण रत्नादिक उपहारो को साथ में लेकर कुटुम्बियो के सहित भरत जी के दर्शनार्थ आया ॥ ९२ ॥

After that 'Vijayardh' shining like star along with his family approached the emperor with all kinds of ornaments and jewels as presents for Bharatji (92)

पद्य—इट्टु निवाळिय कोट्टु माणिक्यद वाँ । वड्डे योळ्मणिदेद्दु निंदु ॥
दिट्टर देव चेल्वर देव नम्मय । दिट्टि सफल वादुदेंदा ॥ ९३ ॥

अर्थ—वह उत्तमोत्तम पदार्थों को भरत जी के चरणों में समर्पित करके बड़ी भक्ति के साथ साष्टांग नमस्कार किया और प्रार्थना करने लगा कि स्वामिन् ! हम लोगों के नेत्र आज सफल हो गये। ऐसे कहते हुये सभी परिवारों से उनके चरणों में नमस्कार करवाया ॥ ९३ ॥

Having affered best things ih the royal feet, he prostrated himself before the emperor, and began to pray, 'My Lord! our eyes to-day bear fruits' saying thus he made every members of his family to salute in the royal feet (93)

पद्य—मणि पीठ भृंगार छत्र चामरगळ । मणि दोडिगेगळोळ्नमवा ॥
गणबद्दरानळु पागुड वित्ताग । गणबनेल्लवनेरगिसिदा ॥ ९४ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् मणिपीठ, भृंगार इत्यादि वस्तुओं से सुशोभित अनेक गणबद्ध देव तथा नर्तकियाँ राजा के चरणों में भक्ति पूर्वक नमस्कार कीं ॥ ९४ ॥

After many chieftains wearing Manipith, 'Bhringar' etc and a number of dancing girls saluted the emperor. (94)

पद्य—दोरे मागधांकन नोडिदवनु दे । वर सेवेगोत तकवनु ॥
सुरपनु विजियार्ध देवनु वेग वं । दिर व लालिसु स्वामियेंदा ॥ ९५ ॥

अर्थ—श्री भरतेश जी मागधामर की ओर दृष्टि पात किये तो वह राजा के अभिप्राय को समझकर कहने लगा कि स्वामिन् ! यही विजयार्ध देव है। यह इस पर्वत का अधिपति है। यह बहुत सज्जन हैं तथा आपकी सेवा के लिये सर्वथा योग्य है अब इसके प्रति श्रीमान् का अनुग्रह होना चाहिये ॥ ९५ ॥

When the emperor looked towards Magdhamar, who understood his meaning and began saying, "O Master! he is 'Vijayardh Deva' the lord of this hill. He is very gentle and is always 'ready' to render his services to you Now your lord ship should take pity upon him (95)

पद्य—आगागि वंदेबु मागधामर मोच । मागिय नालैप भाग्या ॥
आगें सिक्कुवदु नीवाळु कृतार्थरें । दोर्गिन मात नाडिदनु ॥ ९६ ॥

अर्थः—मागधामर के वचनों को सुनकर विजयार्ध देव बोला कि मागधामर ! लोक में मोक्ष गामी पुरुषों के दर्शन करने का सौभाग्य सबको नहीं मिल सकता। ऐसे स्वामी को आप लोग प्रसन्न करते हैं, इसलिये आप लोग कृतार्थ हो गये॥ ९६॥

Hearing the words of Magadhamar Vijayardh Deva spoke, "O Magadh ! every body can not get the opportunity of having 'darshan' of such an attainer of satvation You people are successful in your life because you please such a master" *(96)*

पद्य—निळयके होगलिन्नुत्तर खंडके। दळ नडेवागीत वरलि॥
कळुहु चित्तैसेंदु मागधामरनु भू। तिलकगे विन्नविसिदनु॥ ९७॥

अर्थ.—मागधामर ने भरत जी से कहा कि स्वामिन् ! इस समय विजयार्ध देव को अपने राज्य में जाने की आज्ञा दीजिये जिस समय आप उत्तराखंड की ओर प्रयाण करेंगे उस समय आप की सेवा में पुन उपस्थित हो जायगा॥ ९७॥

Magdhamar said to Bharat ji, "O Lord ! allow Vijayardh Deva to return to his territory When lord ship shall march for 'Uttrapath, he will present himself in your service." *(97)*

पद्य—सोंकिगे करेदु तानिक्किदनर्घ्यद। कंकणगळ कोट्टनवगे॥
अंकिताळापदि वीळ्कोंडे वळगूडि। भोंकने होदना देवा॥ ९८॥

अर्थ.—इस वचन को सुनकर राजा भरतने अपने पास विजयार्ध देव को बुलवाया और अनेक प्रकार के रत्नाभूषणों को भेंट में देकर आदर पूर्वक जाने की आज्ञा दिया। मागधामर ने भी प्रेम पूर्वक विजयार्ध देव को नमस्कार किया॥ ९८॥

Hearing this Bharat ji called 'Vijayardh Deva' to him and offered him a number precious things Then he allowed him to return with great honour Magadhamar also saluted him affectionately *(98)*

पद्य—अतिशय मत्तो तमिश्रगुहेय मेले। सततनिवासि यागिर्प॥
कृत माळव देवसाष्टांगदोळे रगिभू। पतिय कंडनु काणकेयित्तिक्क॥ ९९॥

अर्थ.—विजयार्ध देव के जाने के पश्चात् तमिस्र गुफा के अधिपति कृतमाल नामक व्यन्तर आकर अनेक रत्ननिर्मित उपहारों को भरत जी के चरणों में समर्पित करके नमस्कार किया॥ ९९॥

After 'Vijayardh Deva' was gone, a Vyantar named 'Kritmal,' the master of 'Tamistra' cave approched the emperor and presented to him many precious presents. Thus he saluted the emperor (99)

पद्य—तिलक मुंताद चतुर्दशभूषण । गळ नोल्दु पागुडविट्टु ॥
　　इलवु परियलि कोंडाडि तन्नयदेव । वलव भूवर गेरगि सिदा ॥ १०० ॥

अर्थः—वह कृतमाल तिलक इत्यादि आभूषणों से आभूषित होकर अपने परिवारों के साथ बारम्बार नमस्कार करने लगा ॥ १०० ॥

That 'Kritmal' Vyantar well decorated with ornaments, began to prostrate before the emperor respectedly with his family members (100)

पद्य—ईत नेम्मय बन्धु कृतमाळसुरनु वि । नीतनु निन्न सेवेयोळु ॥
　　प्रीत नेंदोडेयगे मागधामरनु सं । प्रीतार्थ बिन्नविसिदनु ॥ १०१ ॥

अर्थः—तत्पश्चात् भरत जी ने मागधामर को संकेत किया तो वह इनके अभिप्राय को समझ कर कहने लगा कि स्वामिन्! कृतमाल हमारा बंधु है और आपकी सेवा करने के लिये बहुत उत्सुक है। ऐसा कहकर कृतमाल का यथोचित स्वागत किया ॥ १०१ ॥

After that Bharatji pointed to wards Magadhamar who understanding his purpose degan to say, "O Lord! 'Kritmal' is our brother and is anxious to serve your honour" saying thus welcomed 'Kritmal' with proper respects (101)

पद्य—पाळेय तेरळ्वाग बरलीत कळुहिंदि । गालयकेंदु सूचिसिदा ॥
　　तोळ तावुजव विट्टरस नातके कोट्टु । बीळुगोट्टनु सेने सहित ॥ १०२ ॥

अर्थः—मागध ने राजा से कहा कि स्वामिन्! इस समय इसे अपने मकान को जाने की आज्ञा दीजिये। इसके बाद सेना लौटते समय यह पुनः आपकी सेवा में उपस्थित हो जायगा। इस वचन को सुनकर भरत जी कृतमाल के कुटुम्बियों का यथोचित सत्कार करते हुये उन्हें विविध रत्नाभूषणों को भेंट में देकर बिदा किया ॥ १०२ ॥

Magadhamar said to the emperor, "sir, kindly allow him to return. He will join us at the return of the army." Bharatji respected Kritmal and his family with proper offerings and allowed him to go back. (102)

पद्य—ओडेयनंगव गणबद्धरु दुगलादि । तोडेदु वस्त्राभ रणगळा ॥
उडिसि तोडिसि मत्ते नोडिद्रोसेदुक । न्नडिय वेळगि नोळ्पयंते ॥ १०३ ॥

अर्थः—भरत जी का शरीर अनेक प्रकार के आभूषणों से आभूषित होकर दर्पण के समान चमक रहा था, उसे गणबद्ध देव हर्ष पूर्वक देख रहे थे ॥ १०३ ॥

The body of Bharatji, being decorated with ornaments, was shinning like mirror The chieftains were joyfully seeing that (103)

पद्य—बेट्ट तोरितु विसिलिन्नेंदु कटक सं । घट्टि केंदवरु विन्नैसे ॥
नेट्ट दंडव कित्तु संजोंगदोळ्ु सिक्कि । तोट्ट नश्वव तिरुहिदनु ॥ १०४ ॥

अर्थः—भरत जी ने कहा कि कड़ी धूप होने से पूर्व ही सेना की ओर प्रयाण करना चाहिये। ऐसा कहते हुये अपने घोड़े को सेना की तरफ घुमाया ॥ १०४ ॥

Bharatji said that they should march towards the army, before it was too hot, saying thus he turned his horse towards the army (104)

पद्य—अमर वाघद गळमेयोळु नूतनछत्र । चमर मुंताद शोभेयोळु ॥
अमर सेनेयोळेयुदु तिद्दना नरलोक । दमरेंद्र तन्न कटकके ॥ १०५ ॥

अर्थः—देवेन्द्र की वाद्य गर्जना के मध्यस्थ छत्र व चामर धारण किये हुये स्वर्ग से आते हुये जिस प्रकार अमरेन्द्र सुशोभित होते हैं उसी प्रकार अनेक वाद्यों के मध्य में आते हुये श्री भरतेश जी सुशोभित हो रहे थे ॥ १०५ ॥

Just as Lord Indra appears very gracious while moving in the middle of a number of musical instruments umbrela and 'chamar,' similarly emperor Bharat was advancing surrounded by all sorts of musical instruments (105)

पद्य—निमिषदि कटकके तंदुदा तेजि सं । भ्रमदोळिदिरुगों डरेल्ल ॥
ममतेयोळेल्लर नोडुत मनुजेंद्र । गमिसुतिर्दनु पाळयदोळु ॥ १०६ ॥

अर्थः—उस पवनंजय घोड़े की गति इतनी तीव्र थी कि वह एक मिनट में ही आकर सेना में पहुँच गया। राजा को देखते ही समस्त सैनिक चरणों में हर्ष पूर्वक नमस्कार किये ॥ १०६ ॥

The speed of the horse named 'Pavananjan' was so fast that he reached the army in a minute All the soldiers saluted the king (106)

पद्य—राजगे सुखवागे राज्य के सुखवेंब । राज नीतिय मातिनंते ॥
राजेंद्र नलविनोळेय्तरे नोडि ना । नाजन गेलवेरिताग ॥ १०७ ॥

अर्थः—जिस समय राजा सेना में प्रवेश किये उस समय सेना के आनन्द का पारावार नहीं था। राजाके सुखी होनेपर प्रजाभी सुखी होती है यह कहावत उससमय चरितार्थ हुई ॥ १०७ ॥

The army's joy knew no bounds when the emperor entered into it. The Praverb that the happiness of the subjects depend upon the happines of the emperor' proved true. (107)

पद्य—हरुपदि मुंदु मूवरु सुतरेय्तंदु । तरदि निवाळियनिट्टु ॥
शिरद मेलेत्ति कैमुगिये चक्रेश्वर । पिरिदर्तियिंद नोडिदनु ॥ १०८ ॥

अर्थः—श्री भरतेश जी प्रजाओं के आनन्द को देखते हुये बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। इतने में सामने से अर्ककीर्ति, आदिराज तथा वृषभ राज ये तीनों राज कुमार अनेक प्रकार की भेंट लेकर पिता के दर्शनार्थ आये तथा चरणों में भेंट वस्तुओं को समर्पित करके राजा के सामने खड़े हो गये राजा ने बड़े प्रेम से उन पुत्रों को देखा ॥ १०८ ॥

Shri Bharatesh ji was very much pleased to see his people happy Meanwhile princes Arkakirti, Adiraj and Brishabhraj with marry kinds of presents to have 'darshan' of their father They presented the things intn the royal feet and stood before the emperor (108)

पद्य—नगमोगदिंद निट्टिसि नीवु निम्म ते । जिगळेरिरेंदु सूचिसिदा ॥
सुगुणार्क कीर्त्यादिराज वृषभराज । रोगेदेरि बंदरोत्तिनोळु ॥ १०९ ॥

अर्थः—तत्पश्चात् भरत जी हंसते हुये तीनों राजकुमारों को आज्ञा दिये कि तुम सब एक एक घोड़े पर चढ़कर हमारे साथ चलो। पिता जी की आज्ञा पाते ही सभी राज कुमार घोड़े पर चढ़ गये ॥ १०९ ॥

Then the kind smiling ordered the princes to ride on horse and accompany him All the princes rode the horses in obedierce of their father's order (109)

पद्य—दंडेश मंत्रिश सहायरु दोरेगळु । कंडक्षत्रियरु लेक्किगरु ॥
तंड तंडागि निवाळियिट्टेरगेसा । लगोंडु नोडुत बरुतिर्दा ॥ ११० ॥

पद्य—करवेत्ति मुगिद् खूळेयर भृत्यर हस्ति । तुरुग वाहनर स्यंदनरा ॥
परदर नोडुत मेल्ल मेल्लने राय । वरुतिर्द नरमनेगागि ॥ १११ ॥

अर्थः—सेनापति, मंत्री, सहायक राजे तथा अन्य वड़े वड़े क्षत्रियों ने आकर श्री भरतेश जी के चरणों में वहुत सी भेंट समर्पित करके नमस्कार किया ॥ ११० ॥

अर्थः—वेश्या यें भृत्य, हाथी घोड़े के सवार तथा रथिक गण ये सभी भरत जी केसामने आकर चरणों में प्रेम पूर्वक नमस्कार किये और अपने मस्तक पर हाथ रखकर उनके शुभ्र यश का गान करने लगे ॥ १११ ॥

The prosses, servants, elephantry cavaliers and charrioteers all saluted in to the royal feet very affectionately and began to sing the glory of emperor Bharat with their hands put on their forhead (110-111)

पद्य—भट्टरु होगळे पंडितरु लेसने कृति । गट्टि गब्बिगरु सेखरिगे ॥
कट्टिगे काररारेके पराकेने । निट्टिसुतैयुतरुतिर्दा ॥ ११२ ॥

अर्थः—यश गायक (भॅाट) पडित ये सभी गान व स्तुति करते हुये वार वार जय जयकार कर रहे हैं । दंडधारी द्वारपाल इत्यादि भीड़ को हटाते हुये आगे वढ़ने लगे ॥ ११२ ॥

The lord, Pandits reciting their songs and prayers shouted the cries of 'jai' 'jai' The door keeper advanced while removing the people from the way (112)

पद्य—तगरंते तागुत फणियंते सेनेसुत । जगुळुत मत्स्यगळंते ॥
मिगदंते नेगेदु साधने दोरि नडेवज । ट्टिगळ नोडुत वरुतिर्दा ॥ ११३ ॥

अर्थः—श्री भरतेश जी उपरोक्त प्राणियों को देखते हुये आनन्द पूर्वक धीरे धीरे आगे वढ़ रहे हैं ॥ ११३ ॥

Shri Bharatesh ji advancing pleasantly looking upon his people (113)

पद्य—अरमनेयिदिरलि तेजिय निलसि व्यं । तरुळिदेल्लरकळुहि ॥
सुररित्त हारदोंळोंदोंद निक्कि मू । वरुतनुजरनु वोळ्कोट्टा ॥ ११४ ॥

अर्थः—अनेक पहलवान मत्स्य के सामने परस्पर में गलावाहीं (गले में हाथ डालने की

क्रिया) करते हुये झूम-झूमकर श्री भरत जी को अपनी अपनी कलाओं को दिखा रहे हैं। उसे देखते हुये राजा हर्ष पूर्वक आगे बढ़ रहे हैं ॥ ११४ ॥

Many wrespers showed their skill moving like fishes before emperor Bharat. The emperor was advancing and enjoying that. (114)

पद्य—कदंब तट्टि बोळैसि तेजिय भक्ति । यिंदादिनाथन नेनेदु ॥
कुँदन सेळेयेत्ति चांगु भलायेने । मुंदे भूतळ्के लंधिसिदा ॥ ११५ ॥

अर्थः—भरत जी अपने महल के निकट पहुँचकर घोड़े से उत्तर पड़े और साथ में लाये हुये व्यन्तरों को यथोचित भेंट देकर लौटा दिये तत्पश्चात् राजा व्यन्तरों द्वारा पहले प्राप्त किये हुये रत्नाभूषणों का उन तीनों राजपुत्रों को देकर अपने अपने स्थान को भेज दिये ॥ ११५ ॥

Reaching near his palace, Bharatji got down his horse and dismissed the vyantars with precious, awards Then the king giving all the offerings from the Vyantaras to his princes, sent them to their respective places. (115)

पद्य—तेजिय मन्निसवेळ्त गणबद्ध । राजि मुँताद व्यंतररा ॥
पौजि गोल्दु इगोरेयित्तु वीळ्कोट्टना । राज होक्क राजगृहवा ॥ ११६ ॥

अर्थः—भरत जी सेनापति से कह रहे हैं कि तुम हाथी, घोड़े तथा सारी सेना के खाने पीने तथा रहने की समुचित व्यवस्था करके सबको स्वतंत्रता पूर्वक विश्रान्ति देने का प्रबन्ध करो। ऐसी आज्ञा सेनापति को देकर स्वयं राजमहल में प्रवेश किये ॥ ११६ ॥

Bharatji said to the commander of the army, "Manage litieraly for the rest food, and lodging of the cavalory, elephantrry and the whole army." Directing him thus, the emperor euteked the royal palace (116)

पद्य—अरसिय रानदं वंतितुँ टेंदाड । लरिदु संतोष सागरद ॥
तेरेयोत्ति वपंते वदुं निवाळिय । ट्टरस गारतियनेतिदरु ॥ ११७ ॥

अर्थः—चक्रवर्ती भरत जी जिस समय राजमहल में प्रवेश किये उससमय रानियों को इतना हर्ष हुआ कि मानों वे आनन्द सिंधु में डुबकियाँ लगा रही हों। आज पति देव एक बड़े भारी लोक प्रख्यात कार्य में सफलता प्राप्त किये हैं, इसलिये हर्षित होना सहज ही है ॥ ११७ ॥

When chakravarti Bharatji entered into the palace, the queens were

highly pleased. their happiness was natural, because Their husband had returned after winning success in the task of world wide fame (117)

पद्य—हसं राजनु मोदलादैवरणुगरु । हंसेय मरिगळंते यूदि ॥
अंकुश विडिदय्ययेनलप्पि कोंडन । दें सिरिवंतनोचक्रि ॥ ११८ ॥

अर्थः—वे रानियाँ अनेक प्रकार की सजावट करके मंगल कारिणी आरती को हाथ में लिये हुये अपने पति देव (भरत) के स्वागनार्थ गज गामिनी चाल से आ रही है ॥ ११८ ॥

The queens taking auspicious 'Arti' in their hands, are coming to welcome their royal husband (118)

पद्य—मत्तिन मक्कळ मुद्दाडि पेंडिर । मोत्तका दिन तानु नेगळ्द ॥
वृत्तांतवनिष्टु सूचिसि सौख्यसं । पत्तिनोळिर्दना सुकृति ॥ ११९ ॥

अर्थ.—देखने में हंस के बच्चे के समान परम सुन्दर अर्ककीर्ति आदिराज इत्यादि पाँच पुत्र आकर राजा के चरणों में नमस्कार किये । इस दृश्य को देखकर राजा तथा प्रत्येक प्राणी आनन्द में मग्न हो गये ॥ ११९ ॥

Meanwhile five princes Arkakirti, Adiraj etc approached and bower the emperor The emperor as well as all the people were overjoyed before to see that site (119)

पद्य—ऊट मीयगळादियाद कालोचित । दाटदोळा चक्रवर्ति ॥
मीट्टु जव्वनेय रोळिर्द नेंबेडेगे क । वाट विस्फोट न संधि ॥ १२० ॥

अर्थ —श्री भरतेश जी आये हुये राजपुत्रों का आलिंगन किये । तत्पश्चात् रनिवास में जाकर उन लोगों के साथ भी प्रेमालाप करके संपूर्ण वृत्तान्त रानियों से कहा ॥ १२० ॥

Emperor Bharat embraced the princes After that went to the inner-appartment with the queens and told everything in the course of their affectionate talk (120)

पद्य—ई जन कथेयनु केळिदवर पाप । बीज निर्नाशन वहुदु ॥
तेज वहुदु पुण्य वहुदु मुंदोलिदप । राजितेश्वरण काणुवरु ॥ १२१ ॥

अर्थः—इस कथा को श्रद्धा के साथ भाव पूर्वक जो लोग सुनेंगे उनका पाप रूपी बीज नष्ट होगा और पुण्य वृद्धि होगी। भविष्य में शीघ्र ही अपराजित पद को पावेंगे ॥ १२१ ॥

Those persons who will heai this glory of Raja Bharat with rapt atten-tion will destroy the seeds of their sins, will get all the happiness and in the end attain un-conquerable position (liberation) (121)

पद्य—प्रेमदिंदिद नोदिद्रे पाडिद्रे केळ्द । रामोद वैदुव स्वरु ॥
नेमदि सुररागि नाळे श्रीमंदर । स्वामिय काण्वरर्तियोळु ॥ १२२ ॥

अर्थ—इस कथा को जो प्रेम से पढ़ेगा और सुनेगा वह आनन्द को प्राप्त होगा एवम् विनय से स्वर्ग को प्राप्तकर कल या परसों श्रीमन्दर स्वामी का दर्शन करेगा ॥ १२२ ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the 'darshan' of Shrimandhara Swami. (122)

पद्य—कैत्ति मिथ्यत्वद कदवनोडेदु मुक्ति । गुत्तुंग धैर्यदि नडेव ॥
चित्त संधानि नन्नेदे योळगिरेन्नसं । पत्ते चिदम्बर पुरुषा ॥ १२३ ॥

अर्थः—श्री भरतेश जी को पूर्वोपार्जित पुण्य के प्रताप से ही जहाँ प्रयाण करते हैं वहीं सफ-लता मिलती है। विजयार्ध गिरि पर स्थित जिस वज्रकपाट का तोड़ना अन्य प्राणियों के लिये असाध्य था उसे भरत जी ने क्षण मात्र में ही तोड़ डाला। ये सभी फल आत्म भावना के ही हैं। भरत जी भावना करते हुये कह रहे हैं कि हे चिदंम्बर पुरुष सिद्ध परमात्मन्! आप मिथ्या रूपी कपाट को तोड़कर धैर्य के साथ मोक्ष की ओर जाने वाले हैं। इसलिये आप मेरे हृदय में निरन्तर बसे रहिये ॥ १२३ ॥

भव्य जीवों को संबोधित करके देशभूषण मुनि महाराज जी कह रहे हैं कि हे प्राणियों! तुम लोग श्री भरत जी के समान आत्मा व शरीर को पृथक्-पृथक् जानकर इहलोक व परलोक के सुख के लिये प्रयत्न करो ॥

Shri Bharatji is always victorious due to his virtuous deeds in the pre-vious life. To break the 'Vajrakapat' was rather impossible for other beings, but Bharatji broke it in a moments time All these are results of sqiritual ideas

॥ इति द्वितीय भाग का दशमोऽध्यायः कपाट विस्फोटन संधिः सम्पूर्ण ॥

ग्यारहवां अध्याय

कुमार विनोद संधि

पद्य—निच्च समाधि भावनेयिंद सुख दुःख । हेच्चु कुंदें विव गेल्द ॥
सच्चरितात्म मन्मति दोरु भव्यर । मेच्चे निरन्जन सिद्धा ॥ १ ॥

अर्थ -हे सिद्धात्मन् ! आप अनन्त सुखी हैं, क्योंकि आप नित्य समाधि भावना के बलसे सच्चिदानन्द अवस्था को प्राप्त हुये हैं। जहॉ पर सुख दुःखादि के न्यूनाधिक्य की कल्पना भी नहीं है वहॉ अनन्त सुख विद्यमान हैं। इसलिये हे निरञ्जन सिद्ध भगवान् ! उस परम सुख की प्राप्ति के लिये मुझे भी सद् बुद्धि प्रदान कीजिये ॥ १ ॥

O Siddhatman ! thou hast attained the status of 'Sachidanand' by virtue of thy self meditation So thou art the possessor of the eternal blisses Hence O Lord Niranjan Siddha ! kindly bestow upon me the righteousness of thought to enable me to enjoy the infinite blisses (1)

पद्य—जयन करेयो जयननुजन करेयो आ । लयके कुंदु मरुदिन करेसि ॥
जयसिरि योडेपना चक्रेश नवरिगे । नियमवनित्तनेनेंदें ॥ २ ॥
वेगे यारु वोडारुतिंगळु तडवुंडु । होगवहुदु मुंदे मत्ते ॥
ईग निवेरडु खंडद म्लेच्छ दवयुक्क । नीगाडि तहुदिल्लिगेंदा ॥ ३ ॥

अर्थ—दूसरे दिन श्री भरतेश जी अपने सेनापति जयकुमार तथा उसके भाई विजयांक को बुलाकर कुछ कार्य समर्पित कर दिये ॥ २ ॥

अर्थ—पुनः जयकुमार को संबोधित करते हुये कहा कि हे सेनापते ! अग्नि की ज्वाला प्रशान्त करने के लिये छः मास की अवधि लगेगी। इसके पहिले आप लोग आगे नहीं जा सकते। इसलिये तब तक सेना को यहीं रोक कर इधर के दो म्लेच्छ खंडाधिपतियों को वश में कीजिये ॥ ३ ॥

The next day Bharatji, sent his commander of the army named Jaikumar and his brother Vijayanka, and put some work under their charge He furthur addressing Jaikumar, asked him to conquer the two Mlekch

chieftains by halting the army there, as it would take six month to put off the raging fire and to start from there (2-3)

पद्य—मूडन खंडके नीनेय्दु पडुवण । नाडिगे विजयांक साकु ॥
बीडनारैकेय किरिय जयांतांक । नोडिकोंडिरलेंदु नुडिदा ॥ ४ ॥

अर्थ—भरत जी जयकुमार से कह रहे हैं कि पूर्व खंड के लिये तुम जाओ, पश्चिम खंड के लिये अपने भाई विजयान्तक को भेजो तथा इधर की देख रेख के लिये जयान्तक को नियुक्त करो ॥ ४ ॥

Bharatji asked Jaikumar to march himself to the eastern territory, send his brother named Vijayantak to the west and appoint Jayantak to look after this, (4)

पद्य—वेगळ्वागि सेनेय कोंडु होहुदु । बोग्गागि बडेदु गेल्लुवदु ॥
नेगिहुद्वीर गागळे किच्चकंडेदे । भोग्गनिन्नेय्दि नीवेंदा ॥ ५ ॥
सोपान विडिदु गंगेय दांटुवुदु सिंधु । सोपानकुरि विरिसीग ॥
स्थापिसि चर्मरत्नादि पायुवुदेंदु नि । रूपिसिदनु नरनाथा ॥ ६ ॥

अर्थ—श्री भरतजी कह रहे हैं कि इस कार्य के लिये आप लोगों को जितनी सेना की आवश्यकता हो उसे ले जाइये। यात्रा काल में गंगा नदी को सोपान मार्ग से पार करके जाना, परन्तु सिंधु नदी को "चर्मरत्न" द्वारा पार करके जाना क्योंकि अभी उसमें अग्नि परिपूर्ण है। इस प्रकार उन लोगों को सिखलाकर वहाँ से विदा करके भरत जी स्वयं आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करने लगे ॥ ५-६ ॥

Bharatji allowed them to take as much army as they needed and advised them to cross by the stairs of Ganga He further advised them to cross river Indus by 'Charmaratna', as it was still full of fire. Thus ordering them to depart, Bharat began to pass his time happily (5-6)

पद्य—अवर बीळ्कोट्टवनोशना कटकदो । ळविरळलीलेयोळिर्द ॥
धवळ गिरियोळित्त नमिराज घितेयो । ळवगत नादनेनेंबे ॥ ७ ॥

अर्थ—इधर भरत जी इन दोनों को भेजकर आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करने लगे उधर

विजयार्ध गिरि मे "गगन वल्लभ पुर" के अधिपति ,'विनमिराज" श्री भरत चक्रवर्ती की वीरता सुनकर चिन्ताक्रान्त हुआ ॥ ७ ॥

On the one hand Bharatji began to pass his time happily and on the *other hand the master of Gagan Ballabhpur fell* into extreme anxiety to hear the heroism of Bharat ji *(7)*

पद्य—मिगे रथनू पुर चक्रवाळा रूयद । नगरिय विनमि राजेन्द्रा ॥
नेगेदुगिगंड् मंतमदलि होदनु । गगन व ल्लभ येय पुरके ॥ ८ ॥
वळियद्दि मंत्रिय बरव हारुत तन्न । निळयदोळगे मोनदलि ॥
वळितिर्द नमिराज नेडेगेयदि विनमिकै । गळ मुगिदुवि नोळ्नुडिदा ॥ ९ ॥
केळिदरे वज्रकवाटव भावाजि । पोळ्दु विट्टनु निमिषदोळ् ॥
नीळ्दु दाकाश के दव्ळुरियेंदति । दाळ्दु नुडिदन नोडने ॥ १० ॥

अर्थ—रत्नपुर व चक्रवाल पुर के अधिपति "विनमिराज" को चक्रवर्ती "भरत जी" की वीरता व अग्नि की प्रचंडता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई । ये हर्ष पूर्वक गगनवल्लभ पुर में अपने भाई "नमिराज" के पास चले गये ॥ ८ ॥

अर्थ—' नमिराज किसी गुप्त मंत्रणा करने के लिये एक नौकर को मंत्री जी को बुलवाने के लिये भेजकर उन्हीं की प्रतीक्षा में बैठा था कि इतने ही में 'विनमिराज" हर्ष पूर्वक अपने भाई के पास जाकर उन्हें नमस्कार किया और कहने लगा कि भाई जिस वज्र कपाट के विषय में हम लोगों ने बड़ी ख्याति सुनी थी तथा जिसका तोड़ना हम लोगों के लिये सर्वथा अशक्य था, उसी वज्रकपाट का क्षण मात्र में ही भरत जी ने टुकड़ा टुकड़ा कर दिया । उसके टूटने से आकाश में प्रलयाग्नि व्याप्त हो गई इस प्रकार अपने भाई से विनमिराज ने कहा ॥ -१० ॥

Binimiraja, the chieftain of Ratnapur and Chakravalpur was excessively happy to listen the bravery of 'Chakravarti' Bharatji and the furious fire raging there He set out for his brother named 'Nawiraja' the owner of Gagan Ballabhpur, who having sent for his minister, was waiting for him Meanwhile Binimiraja approaching his brother very happily saluted him He informed him that the invincible and well known Bajrakapat had very easily been broken into pieces by Bharatji in no time After it was broken the sky .was full of fire intending towards the final destruction of the world *(8-9-10)*

पद्य—कुट्टिद रगसके बेट्टव दिरलेम्म । पट्टणदरसुगळेल्ल ॥
तोट्टिल मक्कळतिळ्गे बिद्दरु हम्से । वट्टिर्द गद्‌गे यिंद ॥ ११ ॥

अर्थ—भरत जी ने दंड रत्न के द्वारा इतने जोर से वज्र कपाट पर प्रहार किया कि उसके भयंकर गर्जना से पर्वत कंपायमान हो गया और उसके साथ ही साथ अनेक राजा भयभीत होकर इस प्रकार इधर उधर गिर पड़े कि मानों झूला टूटने से बच्चे इधर उधर गिर गये हों ॥ ११ ॥

Binimiraja said that emperor Bharat struck the 'Vajrakapat so furiously that the that the earth shrank and even the powerful emperor fell down helter and shelter due to the panick caused be the roaring sound (11)

पद्य—परिव वेळ्मुगिलु किच्चिन नालगेगे सिक्कि । दरळेयंतु रिदु होगुतदे ॥
तिरुग लभ्मरु मेले सुररु भावाजिगे । सरियुंटे अरणाजियेंदा ॥ १२ ॥

अर्थ—आकाश में व्याप्त अग्नि मेघ पँक्तियों को जला रही है। देवगण आकाश मार्ग में भ्रमण करने में असमर्थ हो गये हैं। विजयर्ध देव भरत जी की वीरता से प्रसन्न होकर भक्ति पूर्वक उनकी पूजा किया। भला भरत जी की बराबरी कौन कर सकता है? ॥ १२ ॥

He further said that the fire, raging the sky, was burning the rows of clouds The Gods felt impossibility in moving in the sky Vijayardh Deve, being excessively pleased worshiped Bharatji very devoutedly by his pleasure who else can rival Bharat ji ?" (12)

पद्य—हुसि नगेनक्क नदके नमिराज सं । तसमाडितिल्ल वष्टरोळु ॥
ओसेदुबंदनु मत्रि कुळ्ळिरेदंनुजन । ससिनिन्नु कुळ्ळिरेयेंदा ॥ १३ ॥

अर्थ—विनमिराज के उपरोक्त वचन को सुनकर "नमिराज" को हँसी आई। वह विनमिराज की तिरस्कृत हँसी करता हुआ उन्हें बैठने के लिये कहा ॥ १३ ॥

Hearing the above announcements of Nivinraja, with an insulting laughter to him, Nimiraja laughed at the top of his voice and asked him to take his seat (13)

पद्य—संतोष दोळेके संवक्तेग्र भावाजि । गंताद्वि मिरि नम्मदल्ले ॥
चिंतेयेकिग निम्मास्यकें दोडनएगु । नंतरंगव मुद्दि केळ्दा ॥ १४ ॥

अर्थ - नमिराज की मुखाकृति से संतोष का चिन्ह नहीं व्यक्त हो रहा था । इतने में उनका मंत्री भी आ गया । तब विनमिराज को संदेह उत्पन्न हो गया । वह नमिराज से कहने लगा कि भाई ! संतोष के समय इस प्रकार दुखी क्यों हो ? भरत जी की विजय अपनी ही है, उनकी संपत्ति अपनी ही है, तो इस शुभ अवसर पर चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है ? ॥ १४ ॥

Nawiraja had no sign of satisfaction on his face In the mean time, his minister also arrived there Binimaraja became suspecious and spoke to Nawiraja, "Brother ! why are you dissatisfied at such a cheerful occasion. Consider the glory and prosperity of Bharatji your precious possession." (14)

पद्य—मक्कळाटिकेयला निनगेगजागद् । दिक्किन्नु तोगितिल्लनुजा ॥
मिक्कु नुडियदिरी नुडिगळ्ळ दोरगंद् । चिक्क य गोजे वेळ्दिनु ॥ १५ ॥

अर्थ—विनमिराज के इस वचन को सुनकर "नमिराज" कहने लगा कि विनमि ! अभी तुम्हें राज्यांग का ज्ञान नहीं है । इसलिये इस विषय में अब अधिक मत बोलो । भावाजी के पौरुष पर तुम प्रसन्न हुये हो, परन्तु अपने लिये वह भावाजी नहीं है ॥ १५ ॥

Hearing these words of Binimiraja, Namiraja respected 'Binami' ! you have no political knowledge. You are highly pleased at the glory of Bharat, whereas for me it is nothing" (15)

पद्य—भावाजि योंदु पोरप के नीगिदे निन्न । भावाजि पट्खंडदोरेया ॥
भूवरावळि तन्न नोलैम बेकेंब । नावु सेवकरादेविन्नु ॥ १६ ॥

अर्थ—वह पट् खंडाधिपति होने जा रहा है । पट् खंड के सभी राजाओं को वश में करने की उसकी तीव्र अभिलाषा है । इस हालत में हम लोगों को भी उसका सेवक बनना पड़ेगा ॥ १६ ॥

"Bharat is desirious of becoming the master of all the six parts of the earth and conquering all the kings on this earth. We also shall have to be his slaves" (16)

पद्य—ओंदागि कुळितोन्मे सरसदि नीनुता । नेर्देवनुडि होदुदेमगे ॥
निहुँ कारके निक्कि कंडय्य जीव लें । सेंदेंग नुडि वंदितेंदा ॥ १७ ॥

अर्थ—भाई ! अभीतक हम लोग उसके साथ बैठकर सरस विनोद कर सकते थे । तू मैं की बात हो सकती थी, परन्तु अब उसके साथ बोलने के लिये, उसका दर्शन करने के लिये भेंट लेकर जाना पड़ेगा । उनके साथ आप, जी तथा श्रीमान् आदि का शब्दों प्रयोग करके वार्तालाप करना पड़ेगा ॥ १७ ॥

"We could sit and chat with him frecly till to day. We could use you and I but now we will have to use 'sir while taking to him" (17)

पद्य—सरसिर यादाग वीय गरेंवरु । सिरि हेच्चिदरवरु बीयगरा ॥
करेवरु तोंडर करेवंते चत्रिय । रिर विन्नु निनगे काणिसदु ॥ १८ ॥

अर्थ—संपत्ति व वैभव में असमानता होने पर भी बंधुत्व का ध्यान रखना पड़ता है, पर उसकी संपत्ति बढ़ गई है वह अपने साथ बंधुत्व का स्मरण नहीं रख सकता । अब वह हम लोगों को बुलाने के लिये रे, तू इत्यादि तिरस्कृत शब्दों का प्रयोग करेगा ॥ १८ ।

"Brotherhood is observed even at an emmense growth of the wealth and prosperity, but he will no move do so and will use you to address us. (18)

पद्य—बालत्व मोदलागि भरतेश नोळगना । बालिसिदरलने अरिय ॥
भूलोक दोळगिल्ल वनन विडाय ना । नालोचिसुवे नदकेंदा ॥ १९ ॥

अर्थ—बाल्यावस्था से लेकर हम लोग उसके साथ विनोद पूर्वक क्रीड़ा कर चुके हैं । उसका स्वभाव, गुण तथा रहन सहन इत्यादि हम लोगों को विदित ही है । उनकी वृत्ति त्रैलोक में किसी पुरुष के पास नहीं पाई जा सकती है ॥ १९ ॥

"We have played together from childhood and know of his nature quite well No human being in all the three lokas can be founding possessing nature like that of Bharat" (19)

पद्य—कंडाट दोळगोंदु गरुडियोळ्गेलव ता । कोंड्ड हगुब नेस्म मेले ॥
इंडेय होरासे होगुवनदु कडेमुट्ट । कंडसाधन वादुदवगे ॥ २० ॥

अर्थ—याद करो ! जिस समय हम लोग उसके साथ गेंद खेलते थे उस समय उनकी ही विजय होती थी। क्या तुम्हें याद नहीं है ? कि वह हम लोगों के ऊपर दांव रखकर हमें पराजित करके भाग जाता था ॥ २० ॥

"Remember the occassion when we were playing balls with him, he used to win us Don't you remember his tacties to defeat us" *(2o)*

पद्य—गेलव पडेदु तानु जारुव नावोम्मे । गेलव पडेदु पोपवेनलु ॥
तोलगलीमनु मत्तिहिडिदाडिसोलिसि । गेल्लगेले तुत होगुतिह्नु ॥ २१ ॥

अर्थ—हम लोग पराजय की आशंका से जब उसके साथ खेलना नहीं चाहते थे तब वह हम लोगों को हठ पूर्वक खेल में प्रवृत्त करके पराजित कर देता था ॥ २१ ॥

When being afraid of our defeat, we did not want to play, he forced us *to play and get ourselves defeated (21)*

पद्य—अवनोम्मे गेद्दरे मेळद मक्कळु । तवतवगुब्बि कूगुवुवु ॥
नवगोम्मे गेलवागे सुम्मनिहुवुतम्म । तिविर्दने सेरेतु नोड्डुवु ॥ २२ ॥

अर्थ—जब उनकी विजय होती थी तब सभी लोग उछल कूद मचाते हुये ताली बजाना प्रारम्भ कर देते थे, पर यदि हम लोगों की विजय होती थी तब सभी लोग चुप चाप खड़े रह जाते थे। पठन पाठन में भी वह सर्वथा अग्रेश्वर रहता था इन सभी बातों को विचार करो। आज भी यह षट् खंड विजय के लिये निकला है इस विजय को वह बिना हस्तगत किये नहीं रह सकता हमें उसकी आदतों का स्मरण बारंबार हो जाता है ॥ २२ ॥

"His victory was cheered by claping where as ours kept them mam He left us for behind in studies also Today also he is out to conquer all the six parts of the earth He can not rest without embracing the goddess of victory. the remembrace of his habits haunt my mind repeatedly." *(22)*

पद्य—भुजबलि वृषभसेनादिगळोडनाडि । विजयव पडेदु नावोम्मे ॥
गजदंते बप्पेवा भरतेश नोडनाडि । अजदंते बप्पेवेनरिय ॥ २३ ॥
वेळेवाग गेलवु विडायगळवगोड । वेळेदु बंदुवु साजवागि ॥
वेळेद मेली सिरि * वर्दु मेलवनार । चुळुकु गाणदु योचिर्सदा ॥ २४ ॥

* वंदवनागनु । चुळुकु गाणदे सुम्यनिहने ।

अर्थ—विचार करो ! जिस समय हम लोग खेलने के बाद बाहुबली के साथ जाते थे उस समय उनके पीछे हम लोग हाथी के समान जाते थे, पर भरत के साथ हमें बकरी की भाँति ही चलना पड़ेगा। इस समय संपत्ति, वैभव तथा अधिकार आदि सभी वस्तुयें उनकी बढ़ गई हैं। इसलिये अब वह किसी की परवाह नहीं कर सकता ॥ २३-२४ ॥

"Think for a while ! Be followed Bahubali to the play ground like elephant whereas company of Bharat will have us like goat. His glory property authority etc have increased beyond any measure. Hence he can not heed to us any more." (23-24)

पद्य—धारे कोरेय नोडे राजदुंजव नोडे । यारेणे भावाजिगंदा ॥
हूरिगे येंद्रे गबकेंद्र गादेयं । तारिंतु नुडिबरेयेंदा ॥ २५ ॥

अर्थ—विनमिराज, नमिराज के सभी बातों को विचार करता हुआ ध्यान से सुन रहा था। वह कहने लगा कि हाँ ठीक है। लोक में विद्या, बल तथा तेज इत्यादि बातें पुण्य के उदय से ही प्राप्त होती हैं। सचमुच में इस समय हम लोग उसके सामने इस प्रकार क्षीण काय हुये हैं कि मानों सूर्य के सामने दीपक क्षीण काय हुआ हो ॥ २५ ।

Binimiraja listened very attentively to what Nawiraja said. He began saying, "learning power, and glory are attained as a result of the pious deeds. Indeed, we have become insignificant before him in the same way, as a lamp is in face of the sun " (25)

पद्य—आगलिम्न दकेन माडवहुदु पुण्य । भागियनागेल बहुदु ॥
लोग नललेमगातनेम्म भावाजियें । बी गुणदोळु पोपयेंदा ॥ २६ ॥

अर्थ—लोक में शुभाशुभ वस्तुयें सुकृत व दुष्कृत कर्मों के अनुकूल ही प्राप्त होती हैं। इसलिये आज भरत जी को पूर्व पुण्य के प्रभाव से संपूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त हुये हैं। उनके ऐश्वर्य को कौन रोक सकता है ? ॥ २६ ॥

"In this world, one reaps what he sows So Bharatji has obtained every thing by virtue of his pious conduct. Who can check his glory ?" (26)

पद्य—आतनेम्मप्पाजि योडहुट्टि दवळ तनु । जात नावघन सोदरद ॥
मातुळ रात्मजरि दरोळगेडे गट्ट । देतर दणाजियंदा ॥ २७ ॥

अर्थ—विनमिराज ने कहा कि भरत जी हम लोगों के परम पूज्य हैं। इसलिये उनके सभी वैभव अपने ही हैं। यह सोचकर उनके साथ सहन शीलता का व्यवहार करना चाहिये। इस समय उनके साथ ईर्ष्या करने की क्या आवश्यकता है? ॥ २७ ॥

Binimiraja said, "Bharatji is our most respectable one All his glory is ours We should behave in a very tolerant manner Jealousy is in apportune at present" *(27)*

पद्य—अँतल्ल वैरिगि विनयगेट्टेंगि । रेताडु चत्रियात्मजरै ॥
　　मुँतिद्रिरेल्लु कमुगियलु चक्रि । कूँतल्ले अदु नमगेंदा ॥ २८ ॥

अर्थ—विनमिराज के वचन को सुनकर नमिराज ने कहा कि भाई! ऐसी बात नहीं है। स्वमार्ग को छोड़कर उसकी सेवा वृत्ति को ग्रहण करना क्या उचित है? क्या हम लोग क्षत्री पुत्र नहीं हैं ॥ २८ ॥

Namiraja to hear the words of Binamiraja said, "Brother ! it is not so. Is it proper to accept his servitude deviating from our own path Are we not the sons of true kshattriyas?" *(28)*

पद्य—राजरिगेम गिन्तु राजनेंब्रडडु । तेजदि नीवु तावेन्ना ॥
　　योजिसि व्यंतरर्कळु सुररेम्मनु । नेजिप्ट रेंतु खाखरु ॥ २९ ॥

अर्थ—अब हम लोग यदि उसके पास जायेंगे तो वह पूर्व की भाँति आसन से उठकर हाथ जोड़ते हुये सत्कार नहीं करेगा। ये सभी बातें हम लोगों के लिये क्या तिरस्कृत नहीं हैं? हम दोनों राजा हैं, पर वह हम लोगों को राजा नहीं समझेगा। वह गर्वपूर्ण शब्दों से तू,तुम इत्यादि कुवाच्य शब्दों का प्रयोग करके बुलायेगा। ऐसी अवस्था में व्यन्तर व देवगण हम लोगों को भरत का सेवक ही समझेंगे ॥ २९ ॥

"If we go to him now, he will not welcome us leaving his throne aside Is this atlitude not an insult to us? We are kings which will not be acceptable to him He will address us with insulting words like you. 'Vyantra's' and host of gods will take us only as slaves" *(29)*

पद्य—हेरगु कोट्टवरु कैमुगिये मुगियलु । वरगके नीवुतावेना ॥
　　हेरगु गळोडहुट्टि दवर्गदुविल्ल हु । चरग रोप्पुवर दनेंदा ॥ ३० ॥

अद्कातनिल्ड्डु योचिस तोडगिदनुत । निदिर मत्रिय मत्ते नोडि ॥
ईदकेनु तंत्रे वै मंत्रि नावातन । चदुरिंद जयिसबेकंदा ॥ ३१ ॥
अनुजे सुभद्रा देविय भरतरा । जनिगित्तरोंळिल्ळतेंदंदु ॥
ननगे नीनाडिद् यल्ते मात्ता मात । नेनेप दिर्मरेमरेयेंदा ॥ ३२ ॥

अर्थ—जिन राजाओ ने अपनी अपनी कन्यायें लाकर उसे समर्पित किये हैं, यदि वे लोग स्वयं आकर हाथ जोड़ें तो वह उन्हें भी नमस्कार नहीं करेगा, अन्य लोगों को तो कहना ही क्या है ? वह केवल दिखाने के लिये आप शब्द का प्रयोग करेगा। उपरोक्त वचन को कहकर नमिराज मन ही मन चिन्तित होकर मंत्री से कहने लगा कि मंत्री ! तुमने पहले कहा था कि वहिन सुभद्रा का विवाह भरत जी के साथ करना अच्छा है, पर अब तुम उस बात को भूल जाओ । हमारी वहिन अब उसके साथ नहीं व्याही जायगी। इसके लिये अब कौन सा प्रयत्न करना चाहिये ? इस प्रश्न को सुनकर मंत्री ने युक्ति युक्त वचन से कहा कि राजन्! उनके साथ बड़ी चतुराई से व्यवहार करना अच्छा होगा ॥ ३० ३१-३२ ॥

"He will not salute even the kings who have offered the hands of their princesses to him in marriage. What to say of others ? He will use words of respect only for show" saying like that Njmiraja began to take to his minister with great anxiety Minister ! you have already suggested the suitability of warrying sister Subhadra with Bharat Now you should give up that idea My sister will not be married to him. How should be act for this." Having heard this, the minister said, "It will be proper to behave with him most wisely." (30-31-32)

पद्य—हेएणोंळिळतेंदु केळिद्वर वेळ्वनु । वएणनलिन्नु कोडुवदु ॥
कएण केच्चगे माळ्पनवनावु कोडदाग । हेएिणन हेसर हारदिरि ॥ ३३ ॥

अर्थ—नमिराज व्यग्र होकर वारम्बार मंत्री से पूछने लगा कि इसके लिये क्या प्रयत्न करना चाहिये ? उसे बतलाओ। यदि उसे यह बात मालूम हो जाय कि सुभद्रा देवी बहुत सुन्दरी है तो वह उसे अवश्य माँगेगा, परन्तु उसे वहिन देना उचित नहीं है ॥ ३३ ॥

Nawiraja being perpleved asked his minister repeatedly to tell him what to do about it He further told him that Bharat would demand Subhadra, the moment he would leare about her beauty (33)

पद्य—तानु वंदवन कएवुदु मतवल्लोंदु । पीनविद्यार्थं तंत्र दोळु ॥
जानिगुतिहेनु नीवदनातगरुहिकं । डानंदवट्टे युदिरेंदा ॥ ३४ ॥

अर्थ—नमिराज कह रहा है कि भाई ! मैं उन्हें देखना नहीं चाहता । आप लोग जाकर उनसे कह दें कि नमिराज किसी विद्या को सिद्ध कर रहा है। इसलिये वह नहीं आ सकता ॥ ३४ ॥

Binamiraja said, "Brother ! I do not want to see him Go and say that I can not go to him " (34)

पद्य—दक्षिण भागेय खचर पुत्रियरोळु । लक्षणरुप वतियरा ॥
दाक्षिण्य विनय दोळोयुदु नीवातन । पेक्के तणिये धारेयेरेसि ॥ ३५ ॥

अर्थ—साथ ही साथ दक्षिण भाग के विद्याधर राजाओं की सुन्दरी कन्याओं के साथ उसका विवाह कर दीजिये, परन्तु बहिन सुभद्रा देवी का विवाह करना ठीक नहीं है ॥ ३५ ॥

"Arrange his marriage with the beautiful daughters of 'Vidyadharas' of Duccan But it is not proper to marry Subhadra with him " (35)

पद्य—अवन मेय्योंदिप्पु कैंपहुददर मे । लवनिगग्गळ नादनीग ॥
तव तव गोदगि पेंगळ तंदु कोडुवरु । नेवके नीविरि होगिरेंदा ॥ ३६ ॥
नम्म मन्दिर दोळग्गळ वाद तोडेगेय । निम्म मनसिगे वंदवनु ॥
धम्म नोयदात गे कोडुवुदेंदोरेंदनु । तम्मगू मंत्रिगू नृपति ॥ ३७ ॥

अर्थ—नमिराज अपने भाई व मंत्री से कह रहा है कि भरत के शरीर सौंदर्य तथा अधिक गुणों से मुग्ध होकर बहुत से राजा अपनी अपनी कन्यायें दे देंगे । इसके अतिरिक्त हमारे कोष में से उत्तमोत्तम वस्तुओं को भी समर्पित कर दो ॥ ३६-३७ ॥

"Many of the kings will offer their daughters to Bharatji due to his extreme beauty and qualities Besides thus, offer most precious things from my treasure as presents to him " (36-37)

पद्य—उत्तरकात वंदाग योचिसि कोंब । मेत्तगिदिगे होगिरेंदा ॥
उत्तर गोडदेदु विनमि मंत्रियु राय । नोत्तिद वीळ्कोंड रोडने ॥ ३८ ॥

अर्थ—भरत जी जब उत्तर दिशा की ओर आयेंगे तब हम पुनः इस बात पर विचार करेंगे। इन सभी बातों को समझाकर नमिराज, अपने भाई विनमि व मंत्री को भेज दिया ॥ ३८ ॥

"when Bharat approaches the northern territories, I will think over it" Saying so Nawiraja sent his brother and minister away. (38)

पद्य—चेल्लिन पेंगळ नेरपुत गिरियतें । कलित्र चारि सुतिर्द्‌रवरु ॥
चेलव रायन कटकदोळित्त लॊंदु प । गलिनोदार्थ वेंनवे ॥ ३९ ॥
नीलन निमिर्देरि वृषभराजनु तन्न । मेळद सेवक वेंरसि ॥
हेळद्‌एणंदिरि गुदय कालदोळु वै । हाळिगे तानेय्‌दुतिर्दा ॥ ४० ॥

अर्थ—इधर भरत जी अपनी सुन्दरी रमणियों के साथ रमण करते हुये विजयार्ध गिरि की विविधि शोभा को देखते हुये तथा अनेक प्रकार की लीला विनोद करते हुये सुख पूर्वक दिन व्यतीत कर रहे थे कि ॥ ३९ ॥

अर्थ—इतने में एक अपूर्व घटना यह हुई की चक्रवर्ती के पुत्र वृषभराज अपने कुछ साथियों को लेकर अश्वारूढ़ होकर बाहर चले गये ॥ ४० ॥

On the other hand, Bharatji was passing his time quite comfertably with his beautiful maidens Meanwhile a surprising incident took place. Prince Brishabharaja rode out along with some of his companions (39 40)

पद्य—चन्द्र गाविय दट्टि पट्टेय कुल्लाि । सांद्रित कुँकुमतिलक ॥
मन्द्र दंवर लघुभूषणदोळु चंद । निंद्र कुमारन नगुत ॥ ४१ ॥

अर्थ—राजकुमार अनेक प्रकार के रत्नादि आभूषणों से आभूषित होकर शीघ्रगामी घोड़े पर आरूढ़ होकर इस प्रकार सुशोभित हो रहे थे कि मानों बाल सूर्य के समान देदीप्यमान इन्द्र कुमार ही हँसते हुये देवलोक से आ रहे हों ॥ ४१ ॥

Prince Brishbharaja wearing precious ornaments and dress and riding on horseback appeared extremely beautiful It seemed as if Lord Indra himself was coming from the world of gods shining like the sun himself (41)

पद्य—दिगि दिगिनश्वच नडेसुतलल्लि कै । सुगिवर नोडुते यदुवन ॥
मोगदिद्‌रागि चीनद महाचीनद । सुगुण भूपरु कंडराग ॥ ४२ ॥

पद्य—दंडिगे यिळिदु कैमुगिदेड्वल दोत्तु । गोंड्ड तन्नोड नेयूद लवरा ॥
कंडय्यर नोलग केयूदि नीवेंदोळ्पु । गोंड्ड बीळ्कोट्टना कुवरा ॥ ४३ ॥

अर्थ—अनेक प्रकार की सजावट के साथ जिस समय राजकुमार धीरे धीरे जा रहे थे उस समय उनके सामने चीन व महाचीन देश के बहुत से राजा आकर उनको प्रणाम किये और उनके साथ चलने के लिये तैयार हो गये परन्तु उन लोगों को समझाकर राजकुमार ने वापिस कर दिया ॥ ४२-४३ ॥

While the prince with all kinds of decorations was proceeding on kings of China and Mahachina saluted him very respectfully and were eager to accompany him But the prince persuaded them to return (42-43)

पद्य—लनिसे मत्ते किरिदु दूर होहाग । दक्षिण नागररवना ॥
ईक्षि माकेंगे बंदु कैमुगिदुसु । लक्षण वरिदु नुडिदरु ॥ ४४ ॥
ओडहुट्टिदवरिव्वरिल्ल विल्लदरु म । चोडनोब्ब क्षत्रियनिल्ल ॥
कड्ड्प रावुतरिल्ल नोंटियोळितु । नडेवरे नृपरेंद्रवरु ॥ ४५ ॥
धामके सुम्मने तिरुगल्लदिरे होगि । स्वामिगरिके माळ्पेवेंदु ॥
स्वामि हितव राग कुवरन झंकिस । लामतिगळ् किद नवनु ॥ ४६ ॥

अर्थ—राजकुमार थोड़ी दूर और आगे गये तो उन्हें दक्षिण व नागर मिले। इन दोनों ने हाथ जोड़कर राजकुमार को प्रणाम किया और कहने लगे कि राजकुमार ! आज आप अपने भाइयों को छोड़कर अकेले कहाँ जा रहे हैं ? इस समय आपके साथ न कोई क्षत्री है और न नौकर । इस लिये हम लोगों के साथ आप लौट चलें, नहीं तो हम लोग जाकर तुम्हारे सभी वृत्तान्त को स्वामी से कह देंगे ॥ ४४-४५, ४६ ॥

The prince had only gave a little further that he met Dakshina and Nagar both of them saluted the prince, with folded hands They said, "Prince !-where are you going leaving your brothers behind Neither you are accompanied by any kshattriya nor by army servant So kindly return with us, otherwise we shall inform the emperor all about you " (44-46)

दक्षिण नागर ननगिन्तु वेह्नाळि । गक्षण प्रीति दोरुतिदे ॥
स्कळिसि दूर होगेनु लेग वहेनेन्न । मुन्नेम कोप्पिरेयेंदा ॥ ४७ ॥
ओडेयरिगरुह वेडेंदु देन्यद मात । नुडिदु मत्तवर्गे लंचवनु ॥
कोड्वे नेंदोडने कंकनके तनय कैय । निड्डतिर्दनद कडरवरु ॥ ४८ ॥
मुट्ट दिर कंकण निनगिरलन्न नावु । कोट्ट गेलनेनु स्वामियाणे ॥
मट्ट गेय्दिदु निन्नर्तिय के डिसेवे । दट्ट हासदि क‌ळुहिदरु ॥ ४९ ॥

अर्थ—यह सुनकर वृषभराज संकुचित होकर कहने लगा कि राजन् ! क्षमा करिये । आज भ्रमण करने की मेरी उत्कट इच्छा हुई है । इसलिये कुछ दूर मैं जाऊँगा तुम लोग पिता जी को हमारा समाचार मत देना । यदि तुम लोग कुछ चाहते हो तो उसे ले लो । ऐसा कहकर स्वर्ण कंगन देने के लिये राजकुमार ने अपना हाथ आगे बढ़ाया । इतने में दक्षिण व नागर वृषभराज के अभिप्राय को समझकर कहने लगे कि अच्छा जाओ हम पिताजी से नहीं कहेंगे आप के कंगन की आवश्यकता हमें नहीं है । उसे हाथ मत लगाओ । यह कहकर दोनों आगे बढ़े ॥ ४७-४८-४९ ॥

Hearing this Vrishbharaja said awefully, "Lords ! excuse me Today I am excessively anxious to go out for a walk So I will go ahed, kindly do not inform my father of my whereabout, you may have your desired things." saying so the prince offered his golden bangles Understanding the objective fully Dakshina and Nagar allowed him to go and promised not to inform the emperor They did not accept the bangles and procceeded ahead (47-49)

पद्य—कुवर मुँदय्दिद दक्षिण नागर । खनीश गरिकेय माडि ॥
इवन रक्षणेगे आप्तर कळुहिसुववें । दवरेणिसुत बंदरित्त ॥ ५० ॥
गरुडि गेंदादि राजनु वरुतनुजनु । नेरळिद सुळ्ळिय केळि ॥
तर हेळ्ळो कुदुरेय नेंदळ्ळि निंदाग । वरेदना क्षणदोळ्ळोलेयनु ॥ ५१ ॥
ओदिद नोडने श्रीमन्यहाराजरा । जादित्यराज रोडेयन ॥
आदि चक्रेशन सुनरर्क कीर्तिरा । जादंय मूर्ति गन्नणिगे ॥ ५२ ॥
देवरूळिगदादि साष्टांगवेरगि स । द्भावदि माळ्प विग्रहवु ॥

सेवकरोडगूडि वृषभराण पैहाळि । गी वेळेयोळु नेरळिद्दनु ॥ ५३ ॥
नानेय्दि जोकेयोळवन तहेनु देव । रेननु चिंतिस दिहृदु ॥
श्रीनिरंजन सिद्ध जय जय येंदु सं । धानिसि मुत्ति कळु हिदा ॥ ५४ ॥

अर्थ—राजकुमारके आगे बढ़ जानेपर ये लोग आपसमें सोचने लगे कि हमें चक्रवर्ती के पास चलकर इस समाचारको कहदेना चाहिये और राजकुमारकेरक्षणार्थ कुछ सेनाभेज देनाचाहिये । ५० ।

अर्थ—इधर आदिराज को मालूम हुआ कि वृषभराज टहलने के लिये आज अकेला गया है । तो वह उसी समय सेवक को घोड़ा लानेकी आज्ञा देकर अर्ककीर्ति के पास निम्नाङ्कित पत्र भेजा:—

श्रीमान् महाराजाधिराज आदि चक्रवर्ती के आदि पुत्र आदरणीय मूर्ति अर्ककीर्ति के चरण कमलों में, चरण सेवक आदिराज का विनय पूर्वक साष्टांग नमस्कार स्वामिन् ! आज भाई वृषभराज अपने थोड़े ही सेवकों को साथ लेकर बाहर टहलने के लिये गया है । इसलिये उसे लाने के लिये मैं जारहा हूँ आप निर्विघ्न होकर आनन्द पूर्वक महलमें रहें । अंतमें निरञ्जन सिद्ध भगवान की जय लिखकर पत्र लिखनो समाप्त किया । आपका चरण सेवक—आदिराज ॥ ५१-५२-५३-५४ ॥

In the end he hailed Lord Niranjan Siddha and brought the letter to its close. *(51-54)*

After the prince was gave, they thought it proper to inform the emperor and to send some army for his safety. *(50)*

Adiraja learnt that Vrishabharaja had gone all alone for a walk. He at once, asked his servant to bring a horse andh imself wrote this letter to Arkakirti.

"May the salute of Adiraja kindly be accepted in the lotus like feet of Arkakirti the eldest son of king."

"Sir ! brother Vrishbharaja has to day gone out only with few servants for a walk I am going to bring him back, kindly remain in the palace happily."

पद्य—तुरगव नडरि तन्नूळिगदवरोड । बरलवनत्त सागिदनु ॥
हरि योले कंडर्क कीर्ति कुमार चे । बरदोदि कोंडिरिसिदनु ॥ ५५॥
माधने यिदिगे मार्केदु गर्गडियिं । दा दोरे पोर मोड नोडने ॥
माधिताश्वनेरि तळ्दनु तन्न से । बाधार दवरोडगूडि ॥ ५६ ॥

अर्थ—उपर्युक्त पत्र को अर्ककीर्ति के पास भेजकर आदिराज अश्वारोही होकर वृषभराज के पास चला गया पत्रको पढ़ने ही अर्ककीर्ति से भी नहीं रहा गया । वह भी अश्वारोही होकर वहाँ से चल दिया ॥ ५५-५६ ॥

Adiraja, despatching the above letter to prince Arkakirti, rode away. Reading the letter, Arkakirti could not check himself. He too rode in the same direction *(55-56)*

पद्य—वळि सल्व कुवर रिन्वर नोडुतरसन । वळिगे नागररु दक्षिणनु ॥
तळवदेयुतंदु सूचिसे केळदु चक्रि सं । चल नादनेदे योळेनेवे ॥ ५७ ॥
करे करे राहुतर्कळ साणिगळ करे । वर हेळो वेग क्षत्रियरा ॥
तरळ रारैके गश्ववनोरि होग हे । ळिर देंदु नेमिसि विट्टा ॥ ५८ ॥

अर्थ—इधर दक्षिण व नागर ने जाकर संपूर्ण वृत्तान्त भरत जी से कह सुनाया। भरत जी इस दुःखदाई समाचार को सुनते ही आश्चर्यान्वित होकर बहुत दुःखी हो गये ॥ ५७ ॥

अर्थ—सम्राट् ने पुत्र की रक्षा के लिये अनेक सेना व विश्वस्त राजाओं को तत्काल ही भेज दिया ॥ ५८ ॥

Dakshina and Nagar also informed Bharatji all about him. Bharatji was pained to listen this painful message. He at once sent some kings along with strong army to protect his prince. (57-58)

पद्य—उत्तर गोंडु तेजिगळेरि कूर्वाळ । किच्च राहुतरु साणिगळु ॥
उत्तम राजरु नृपन कुवरर वें । वत्ति हारिदरु लग्गेयोळु ॥ ५९ ॥

अर्थ—राजा की आज्ञा पाते ही अनेक राजन्य कुमार भाँति भाँति के अस्त्र शस्त्रों से सजी हुई सेना को साथ मे लेकर उत्तमोत्तम घोड़ों पर चढ़कर राजकुमार की रक्षा के लिये प्रस्थान कर दिये ॥ ५९ ॥

Being ordered so many kings at the head of strong armies armed with wonderful weapons rode away to gaurd the royal son. (59)

पद्य—वेंवळि विडिदेल्लरित्त लेयुतरुतिप्प । हंवल नरिय दुव्विनोळु ॥
तुंबिद सेने यिंदगलि वृषभराज । सो विन्नदत्त सागिदनु ॥ ६० ॥

अर्थ—इधर वृषभराज सेना स्थान को छोड़कर आगे बढ़ा। वहाँ जाकर एक विस्तृत मैदान में अश्वारोहण कला का अनुभव करने के लिये उद्युक्त हुआ ॥ ६० ॥

On the other hand, Vrishbharaja, leaving the army encampment behind, went ahead Reaching a Vast field, he began to practise the riding on horse back (60)

पद्य—स्थूल गोमंडल देडेयिंद सिडिदोंदु । गूळि होइंते सोक्कि नोळु ॥
लीलेयिं वृषभराजनु कटकव विट्टु । बाल वृषभनंते तळेंदो ॥ ६१ ॥

अर्थ—जिस प्रकार गायोंके समूहमें मदोन्मत्त सॉड़ विहार करता है उसी प्रकार तरुणावस्था के मद से मतवाले वृषभराज अश्वारोहण कला प्रारम्भ कर दिया ॥ ६१ ॥

Prince Vrishabharaja began to display his feats of riding on horseback extremely excited like a bull moving in the cows (61)

पद्य—निडुमाळ देडेयल्लि नाल्कु दिक्किगे तन्न । कडुमान दश्ववनवनु ॥
सडिल विट्टेरि विनोद माडिदनु त । ओड निछवरु पुरेयेनलु ॥ ६२ ॥

अर्थ—वृषभराज अत्यन्त सुन्दर घोड़े पर आरूढ़ होकर उसके लगाम को खींचते हुये चारों दिशाओं में भ्रमण करते हुये अश्वारोहण कला दिखलाने लगे। उनके साथी उन्हें बारम्बार धन्यवाद देने लगे ॥ ६२ ॥

Vrishabharaja, riding and drawing the bridle of the horse, began to display his art of riding His friends thanked him repeatedly. (62)

पद्य—भग विल्लद नेत्तकार नोय्दत्त हा । संगि योळ्सरिव कायंते ॥
ॲग वरिदु तेगेदंते सालेसेगे नु । रंग मैगोड्डु हारिदुदु ॥ ६३ ॥

अर्थ – जिस प्रकार परधारी गरुड़ पक्षी सुगमता से आकाश में उड़ जाता है उसी प्रकार लगाम ढीला करते ही वह अश्व गगन मार्ग से चारों ओर भ्रमण करता हुआ अपनी कला को दिखलाने लगा ॥ ६३ ॥

The horse, even at the slightest loosening of the girdle, galloped fast in the sky like the Garud bird flying in the sky (63)

पद्य—अड्ड तरदोळु वेदंयदोळु किरिदिनो । कड्डा के यिल्ल दोटदोळु ॥
अड्डैसि चौक नडेयो ळैदु पद्धति । याड्डु गाणिसिदना कुवरा ॥ ६४ ॥

अर्थ—वह अश्व कभी टेढ़ा होकर, कभी सीधा होकर और कभी इधर उधर घूम घूमकर अपनी कला का परिचय दे रहा है ॥ ६४ ॥

The horse sometimes followed zigzag way and sometimes direct path and occasionally showed his art by making frequent rounds (64)

पद्य—आयुध विडिदिन्तु केलत्तु वैहाळियं । आयेय नोडवेकदके ॥
ईयेडेयिंद मुंदोत्ति होगुवे नेदुं । रायगुवरनतुवादा ॥ ६५ ॥

अर्थ—इसके बाद वृषभराज आयुधकला प्रदर्शन करने की इच्छा से अनेक अस्त्र शस्त्र धारण करके तैयार हो गये ॥ ६५ ॥

After that the prince prepared himself with all the weapons to show the warfare (65)

पद्य—आदि राजन वरवष्ट रोळगे काण । लादुदु तेरळदे निंदा ॥
वेदिताश्वव निळिदण्ण निगिदिरागि । पाद मार्गदि नडेतंदा ॥ ६६ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् वृषभराज घोड़े पर बैठकर धारण किये हुये शस्त्रास्त्रों को चलाने वाले ही थे कि इतने में सामने से आते हुये इनके बड़े भाई आदिराज दिखाई पड़े । उन्हें देखते ही घोड़े पर से उतर कर पैदल ही उनके पास आये ॥ ६६ ॥

After that Vrishabhraj was about to throw his weapons, that his elder brother Adiraj was seen yonder. He at once got down of his horse and walked to him on foot (66)

पद्य—मंद हासदोळु कैमुगिवुत देवरे । यतंद कारण विदेनेंदा ॥
इंदेनगश्वदारोहण दोळगति । संदिसि बंदे नेंदा ॥ ६७ ॥

अर्थ—वृषभराज मन्द मुसुकान के साथ सामने जाकर हाथ जोड़कर पूछने लगे कि देव ! आपका शुभागमन कैसे हुआ ? इस प्रश्न को सुनकर बड़े भाई आदिराज ने उत्तर दिया कि आज घोड़े पर चढ़ने की मेरी इच्छा हुई थी । इसलिये मैं आ गया ॥ ६७ ॥

Vrishbharaja, going to him entreated with folded hands, "Brother! what for have your reference come" Adiraja told him that he had come only with the desire to ride the horse (67)

पद्य—मत्तष्टरोळगर्क कीर्ति भूवरनोंदु । कत्तळ नेरि वर्पुददु ॥
हत्तिरिदवरु सूचिस लादि राजना । यत्तदिंदिळि दनश्ववनु ॥ ६८ ॥

अर्थ—इन दोनों राजकुमारों के वार्तालाप के मध्य में ही एक अश्व पर बैठकर अर्ककीर्ति कुमार भी आ गये । उन्हें देखकर आदिराज भी घोड़े पर से उतर पड़े ॥ ६८ ॥

During their conversation, prince Arkakirti also arrived there Adiraja also got down to see him. *(68)*

पद्य—इदि रागि नडेदिर्व रएणगे कैमुगि । दोदवि काल्लडे योळंयुदुतिरे ॥
कुदुरेयनेरिरें वैहाळियोळगिन्दु । मृदुलीले माडुव वेंदा ॥ ६९ ॥

अर्थ—दोनों राजकुमारों ने पैदल जाकर अपने बड़े भाई अर्ककीर्ति को प्रणाम किया । अर्ककीर्ति कुमार इन्हें आशीर्वाद देकर पुनः अश्व पर चढ़ने की आज्ञा दे दिया ॥ ६९ ॥

Both the princes saluted their elder brother named Arkakirti, who directed them to ride th ·ir respective horses. *(69)*

पद्य—अनुजरश्वव नेरला चणदोळ् राय । ननुमत विडिद वाहकरु ॥
अनिलवेगदि वन्दु कंड कुमारगें । विनमित राद रोग्गिनोळु ॥ ७० ॥

अर्थ—इतने में श्री भरतेश द्वारा भेजी हुई सेना आकाश व स्थल मार्ग आकर उपस्थित हो गई । इसके बाद अर्ककीर्ति ने वृषभराज से कहा कि भाई ! आज मैं अश्वारोहण कला देखना चाहता हूँ ॥ ७० ॥

Meanwhile the army sent by shri Bharatesh ji reached there. After that Arkakirti said to Vrishabhraja that he wanted to see their feats of riding. *(70)*

पद्य—एराटदोरिसै वृषभरण येंदिपु । दोरिद नोडनर्क कीर्ति ॥
तोरलंजुवेनु देवर मुंद ननगेत । रेराट वेदना कुवरा ॥ ७१ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति ने वृषभराज से कहा कि अपनी कला मुझे दिखलाओ । तब वृषभराज अपनी लघुता दिखलाते हुये कहने लगा कि स्वामिन् ! मैं आप के सामने क्या कला प्रदर्शन कर सकता हूँ ? इसके अतिरिक्त आप से मैं डरता हूँ ॥ ७१ ॥

Arkakirti asked Vrishabhraja to show his art first. Vrishabhraja showed his humility before him and said, "My Lord ! what can I do before you ? Besides thir I am afraid of you." *(71)*

पद्य—अंजवेडप्पाजियाणे ना नोळ्पेनें । दंजिके विडिसिद नोडने ॥
संजोगदश्व तेगेदना कुवर नि । रंजन सिद्धन नेनेदु ॥ ७२ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति ने कहा कि डरने की क्या जरूरत है? हमें देखने की इच्छा हुई है। यदि तुम नहीं दिखाओगे तो तुम्हें पिता जी की सौगन्ध है। इस वचन को सुनकर वृषभराज भगवान का ध्यान करके आरूढ़ हो गया ॥ ७२ ॥

Arkakirti said, "There is no need of being afraid of me I desire to see your art of riding By father I ask you to display it to me." Remembring God, Vrishabhraj rode upon the horse. (72)

पद्य—दिक्कु दिक्किगे कदलिमुवनश्रवद हासु । होक्कागि तुँडुतुँडागि ॥
　　सक्कने सरिन दोळेरि तोरिद नेवे । यिक्कु चन्स्टरोळेर् ळवारि ॥ ७३ ॥

अर्थ—वृषभराज पूर्वोपार्जित पुण्य से प्राप्त किये हुये सभी कलाओं को दिखलाते हुये गरुड़ पक्षी के समान घोड़े को आकाश में उड़ाने लगा ॥ ७३ ॥

Vrishabhraj, by virtue of his pious deeds earned in his previous life, made the horse to run like Garuda (73)

पद्य—निटटोट दोळु मक्के साणि खंडयवमुं । गट्टि होहतुह किटटु ॥
　　तोट्टने वाम हस्त दोळांत नेडरैयौ । ळिट्टु मत्ती कैयोळांना ॥ ७४ ॥

अर्थ—वह घोड़े की विविध गति व लगाम के अनेक परिवर्तन को अपनी विद्या के कौशल से दिखलाते हुये प्रत्येक दिशाओं में वायु के समान घोड़े को उड़ाने लगा ॥ ७४ ॥

He made the horse to fly like air from various angles dy turning his girdle variously (74)

पद्य—अदु विटटु वलगंय लौडिय नुद कि । ट्टोदगि तानेडगैयोळना ॥
　　मोदलंते मत्ति टुडु वळ्ळैयोळांतना । कुदुरेयोटवु तप्पलिल्ला ॥ ७५ ॥
　　चक्र गळारेळ मुंगट्टि नभकिट्टु । वक्रिस दश्वरोडुतिरे ॥
　　विक्रांत खंडेयदोळु पोणिमिदनिळा । चक्रको दिळि वीळदंते ॥ ७६ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् वृषभराज अपने दोनों हाथों से मुगदर भाँजते हुये बड़ी सावधानी के साथ घोड़े को दौड़ाने लगा। कभी कभी चक्र घुमाकर आगे फेंक देता था और बाद में घोड़े को तेजी से दौड़ाकर उसे पकड़ लेता था इसी तरह भाँति भाँति की लीला विनोद करने लगा ॥ ७५-७६ ॥

After that Vrishabhraja, moving the clubs in his both the hands began to ride the horse very carefully sometimes he threw the club by moving it in a circular way Then he used to catch it by running the horse Thus he displayed his art variously (75-76)

पद्य—इंबि निंदो डुबस्वदोळ् बांगडे गोंदु । निंनेय हणण तानिडु ॥
अंबि निंदा हणण नेच्चु तुंडिसिदने । नेवेनचन चमत्कृतिया ॥ ७७ ॥

अर्थ—पुन वृष राज ने आकाश में एक नींबू फेंककर घोड़े पर बैठे हुये ही बाण द्वारा उसे टुकड़ा टुकड़ा कर दिया ॥ ७७ ॥

After that riding on horseback and throwing a melon in the sky, Vrishabhraja cut it in to pieces with his arrows (77)

पद्य—ओडिमुत श्ववनोंदंब नमके सिं । गाडि यिंदेच्चु मत्तदनु ॥
कूडोंदु वाणदिदेंच्चु तुंडिसिदना । नोडुव रेल्ल खोयेनलु ॥ ७८ ॥

अर्थ—वृषभराज ने जिस समय घोड़े को आकाश में उड़ाकर फेंके हुये नीबू को बॉण द्वारा टुकड़ा टुकड़ा कर दिया उस समय दर्शकगण आश्चर्यान्वित हो गये। साथ ही साथ इस कला से अर्ककीर्ति व आदिराज भी बहुत प्रसन्न हुये ॥ ७८ ॥

The people were taken away by surprise to see lemon cut into pieces Arkakirti and adiraja were highly pleased with him (78)

पद्य—चल्लहदल्लि खडेय दोळु तन्न । गेल्ल तोरुवे नेंदु ॥
वुल्लिसि कैयिक्कुतिद् नण्ट रोळगण । निल्लहेळेन्नाणे येंदा ॥ ७९ ॥

अर्थ—तत्पश्चात् वृषभराज पुन दूसरा कला दिखलाने के लिये ज्यों ही तैयार हुआ। त्योंही अर्ककीर्ति कुमार ने अश्वारोहण कला को बन्द करने की आज्ञा दे दिया ॥ ७९ ॥

When Vrishabhraja tried to display his art for the second tune, prince Arkakirti directed him to stop 79)

पद्य—परितंदु सेवकरु सुरला वण तन्न । तुरगव मगुचिता नडेसि ॥
पोरगे सदिरणं दिरिगे कैय मुगिदना । दर दिंद वृषभराजेंद्रा ॥ ८० ॥

अर्थ—आज्ञा पाते ही वृषभराज घोड़े से उतर पड़ा और उस सेवक को देकर पैदल ही दोनों भाइयों के निकट जाकर हाथ जोड़कर नमस्कार करके सामने खड़ा हो गया ॥ ८० ॥

Vrishabhraja got down from his horse only being ordered so by his elder brother He walked to his brothers on foot and stood before them with clapsed hands *(80)*

पद्य—नेलद मेलिंतु साधिस लरि दिवनेंतु । कलितेयै मत्त भापेंदु ॥
तले दूगुतदणंदिरिञ्चरु तम्मन । बलुप्रेमानंद माडिदरु ॥ ८१ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति कुमार प्रसन्न होकर कहने लगा कि भाई वृषभराज ! तुम्हारी कला देखकर हम दोनों को अपार हर्ष हुआ है । मुझे आज मालूम हुआ कि तुम अश्वारोहण कला में इतने प्रवीण हो ॥ ८१ ॥

Prince Arkakirti being excessively pleased began to say, "Brother Vrishabharaja ! we are extremely pleased to see your art It's is to-day that we have come to know that you are perfect in the art of riding on horse *(81)*

पद्य—हयगळ साचिं तक्कैसि कोंडु तम्मन । इयकुमाररु तम्म कोरळा ॥
इयकंडमालेय तेगेरि चिक्कदरु भक्ति । भय दिंद नमिसिदनवनु ॥ ८२ ॥

अर्थ—इतना कहकर दोनों भाइयों ने प्रेम पूर्वक वृषभराज को गले से लगा लिया और अपने अपने कंठ से एक एक माला निकाल कर उसके गले में पहिना दिया । वृषभराज भक्ति पूर्वक प्रणाम किया ॥ ८२ ॥

Having said so Both of them Embraced vrishabharaja and put on their necklace round his neck Vrishabharaja Saluted them in great devotion *(82)*

पद्य—सर्व रोदगि मत्ते मेचि कोंडाडेद । रुर्वि निवाळिय निड्डु ॥
दोर्बलाग्रणि गेरगिदरे रगदररु । सार्व भौमन तनुजरिगे ॥ ८३ ॥

अर्थ—इन दोनों राजकुमारों के साथ आये हुये अन्य राजाओं ने भी विविध प्रकार की भेंट वृषभराज को देकर नमस्कार करके उनके यश का गान किया ॥ ८३ ॥

Other accompanying rulers also sang the glary of Vrishabh, having offered him precious presents *(83)*

पद्य—इंदिगेराट सार्कॆदर्क कीर्तित । म्मंदि गोरेदु तेजियनु ॥
नुॅदे नडॆसि हिंदे तम्मंदिरे यॆदला । नंदर्दिंदेयॆदरु तिर्दा ॥ ८४ ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति ने सबको आशीर्वाद देते हुये कहा कि अब खेल बंद करके महल की ओर चलो। तब तीनों भाई अपनी सेना सहित क्रमशः अर्थात् अर्ककीर्ति, आदिराज तथा वृषभराज अपने महल की ओर प्रयाण कर दिये ॥ ८४ ॥

Prince Arkakirti blessing all ordered them to stop playing and proceed to the royal palace The Arkakirti, Adiraja and Vrishabaraja along with their army set out for their palace (84)

पद्य—आगेगणेय होत्तायॆतेने कुवररु । वारदुनक होगर्नेदु ॥
दारिय नोडुत भरतेश कडॆय ह । जारदोळिर्दु नेनॆवे ॥ ८५ ॥

अर्थ—राज महल में श्री भरतेश जी भोजन वेला आने पर भी भोजन न करके अन्तिम दरवाजे पर खड़े होकर चिंता करते हुये पुत्रों की प्रतीक्षा कर रहे थे ॥ ८५ ॥

While Bharat ji did not take his food even at the dinner time in th palace . He had been waiting for his sons very anxiously. (85)

पद्य—मोरेव वाद्यद रभसदोळु पाळॆयके सा । र्तरु तिप्प राज पुत्ररनु ॥
अरस नाजॆयोळ्ळेरिदिरु गोंडरु देश । दरसु गळुळिद पायॆदळंवु ॥ ८६ ॥

अर्थ—इसी समय सेना में अनेक प्रकार के वाद्य, तथा गायनादि की ध्वनि सुनाई दी। भरत जी समझ गये कि राजकुमार आ रहे हैं इसलिये उनके स्वागतार्थ कुछ सेना उन्होंने और भेज दिया ॥ ८६ ॥

Meanwhile various kinds of musical instruments and music were heard Bharat ji understood the arrival of the princes Hence he despatched some army for their welcome (86)

पद्य—आरति कलश कन्नडि यिंद पात्रद । वार नारियरोडगूडि ॥
सारलेयॆतंदु निवाळि पिड्डिडरु । वीररिगेरगि नडेदरु ॥ ८७ ॥

अर्थ—स्वागत सेना के साथ साथ अनेक नारियाँ आरती, कलश तथा दर्पण आदि

मांगलिक वस्तुओं को लेकर राजकुमारों की आरती उतारीं तथा उन्हें भेंट चढ़ाकर नमस्कार किया ॥ ८७ ॥

A number of ladies with their pitchers, sacred lamps, mirrors and other sacrificial things welcomed the princes and saluted them. *(87)*

पद्य—सूलेयरेडबलदल्लि सिंगरिसि निं । दोलग वेंदु कैमुगिये ॥
तेडु नोटदि कंडरल्लदे कुवररु । सोलदिट्टियोळु नोडिदरे ॥ ८८ ॥

अर्थ—राजकुमारों के दायें बायें अनेक आभूषणों से आभूषित बहुत सी वेश्यायें नृत्य करती हुई राज पुत्रों को निर्निमेष दृष्टि से बारम्बार देखकर नमस्कार कर रही थीं ॥ ८८ ॥

Many dancing girls, looking upon the faces of the princes with unmoving eyes saluted them repeatedly *(88)*

पद्य—परदार सोदर गणिका पगत चेष्टि । विरत नेंबुत्तम विरुदा ॥
पोरेबुतिहरु बाल काल दोळवरेनु । भरत राजन पुत्ररल्ते ॥ ८९ ॥

अर्थ—तीनों राजकुमारों ने वेश्याओं की तरफ उपेक्षित दृष्टि से दृष्टिपात किया, क्योंकि ये बाल्यकाल से ही परदार सहोदर होकर गणिका इत्यादि दुश्चरित्रिणी स्त्रियों से सर्वदा दूर रहा करते थे। इनके सदाचार से मुग्ध होकर जनता परस्पर में गोष्ठी करती थी कि ये आत्मज्ञानी भरत जी के राज पुत्र हैं। इसलिये इनके अंदर सदाचार होना सहज ही है ॥ ८९ ॥

All the three princes saw the dancing girls with neglectful eyes, as they always kept themselves away apart from them since their childhoodo Being extremly pleased with the character and behaviour of the princes, people were enthusiastic about their glory and fame. They thought them worthy son of worthy father *(89)*

पद्य—सालागि बरुतिर्दरेंबुद केळ्दु भु । पाल नोब्बन किवियोळगे ॥
हेळि करुहिद नोंदेकांतवनु बंदु । लालितात्मर कंडनवनु ॥ ९० ॥

अर्थ—किसी व्यक्ति ने आकर भरत जी से कहा कि आपके राजकुमार क्रमशः आ रहे हैं ॥ ९० ॥

Some one informed Bharat ji of the arrival of the three princes. *(90)*

पद्य—एडबल दोळ गनुजरु मध्यदोळगएण । वेडगिनोळेयूद् बेकेंदु ॥
नुडियदे रायनद्दिद मनुजनु तोरि । नडेसि दनोजेयोळवरा ॥ ६१ ॥

अर्थ—भरत जी ने एक सेवक को बुलाकर उसके कान में कुछ कहा। वह सेवक तत्काल ही राजकुमारों की सेना मे जाकर आदिराज व वृषभराज के घोड़े को दायें बायें करके अर्ककीर्ति के घोड़े को मध्य में कर दिया ॥ ९१ ॥

Having sent for a servant, Bharatji whispered something in his ear He reaching the army and bolding the bridles of the horses kept prince Arkakirti in the middle (91)

पद्य—चवरव ढाळिसुतल्लल्लि गोम्मे पा । अव नाडुतारति गोडुव ॥
अवनी श पुत्रर कटकदोळा राज । भवन केयूदि सुतिर्द रोसेदु ॥ ६२ ॥

अर्थ—कुछ लोग राजकुमारों की आरती उतार रहे हैं व कुछ लोग चामर डुला रहे हैं। इस प्रकार सत्कार पूर्वक तीनों राजकुमार बहुत समारम्भ के साथ राज भवन की ओर आ रहे हैं ॥ ९२ ॥

Some of the people moved sacred lamps round the princes and others formed them. Thus all the three princes were advancing very gloriously. (92)

पद्य—चप्परिसुव कटकद गलभेय केळ्दु । नेप्पु गोंडरासियरेल्ल ॥
उप्परिगेयनेरि मक्कळयूतघदों । दोप्पव कंडु बीगिदिरु ॥ ६३ ॥

अर्थ—उस समय सेना के हर्ष मय शब्दों को सुनकर रानियाँ महल के ऊपर चढ़कर आते हुये अपने पुत्रों को देखकर प्रसन्नता से आनन्द मग्न हो गईं ॥ ९३ ॥

Hearing the cheer and clappings at the army, the queens going on the upper portion of the palace were puffed up with joy to see their advancing sons (93)

पद्य—अलघु संभ्रम दल्लि चंदर मनेय मुं । दिळदु तावेरि दश्वगळा ॥
ओळ होक्कु तंदेय पज्जगळोळु तम्म । तलेमुद्दि सुत रेरगिदरु ॥ ६४ ॥

अर्थ—इस प्रकार अतुल समारम्भ के साथ तीनों राज पुत्र राजमहल के सामने आकर घोड़े पर से उतर पड़े और अन्दर जाकर पिता जी के चरणों मे नमस्कार किये ॥ ९४ ॥

Thus the three princes got down from their horses before the royal palace and saluted their royal fathr touching his feet. (94)

पद्य—बेरे बेरोब्ब रोब्बर नाण्पि कोंडरव । देराट दधिकरै येंदु ॥
आरु खंडद् कर्त तन्न मक्कळिगर्ति । दोरि मुद्दाडि मन्नि सिदा ॥ ९५ ॥

अर्थ—षट्खंडाधिपति भरत जी अपने पुत्रों को हर्ष पूर्वक गले से लगाकर आलिंगन करके आशीर्वाद दिया ॥ ९५ ॥

Bharatji blessed his sons embracing them affectionately.

Bharatji asked, Arkakirti "dear son ! were you gone with them to see the sporting ?" (95)

पद्य—एनु दोड्डन्न निन्नु जर लीलेगे । नीनु वेंवेत्ति दै वेंदा ॥
एनेंबे स्वामि वृशभ राज नोंदु व । ल्मानव नेंदना कुवरा ॥ ९६ ॥

अथ—भरत जी ने अर्ककीर्ति से पूछा कि बेटा ! क्या तुम भी इनके साथ लीला विनोद के लिये गये थे ? अर्ककीर्ति ने विनय पूर्वक कहा कि स्वामिन् ! आप से मैं क्या कहूँ ? वृषभराज अश्वरोहण कला में आश्चर्य कर दिया ॥ ९६ ॥

Arkakirti replied very humbly, "father ! what should I say to you ? Vrishbharaj played wonders in his riding performance" (96)

पद्य—सोदर नेंदानु हुसिदरु देवर । पाद पद्मगळ मेलाने ॥
मेदिनियोळु तोर्पते वाजियोळु वि । नोद दोरिदनेंदु नुडिदा ॥ ९७ ॥

अर्थ—वृषभराज ने अश्वारोहण कला के इतने कौशल दिखलाये कि जिसे देखकर हमलोग आश्चर्य चकित हो गये । स्वामिन् ! उसकी लीला देखने के लिये श्री चरण ही समर्थ हैं । इसलिये मैंने खेल बंद कराके उन्हें यहाँ लाया हूं ।" इस प्रकार अर्ककीर्ति ने भाई की विविध प्रशंसा की ॥ ९७ ॥

"Vrishabharaja displayed the skill of horse riding so cleverly that we were wonder struck You are the only proper person to see his skill So I have brought him here, after bringing his race to an and". Thus Arkakirti appreciated his brother very much (97)

पद्य—बिल्लु खंडय लौडि चक्र मुँतादव । रल्लि विचित्र साधनेया ॥
मल्लाश्व देराट दोळगे काणिसिदर्नं । देल्लव पितगरुहिदनु ॥ ९८ ॥

अर्थ—स्वामिन् ! वृषभराज अश्वारोहण होकर हाथों में धनुष बाण, गदा तथा चक्र आदि शस्त्रास्त्रों को लिये हुये कला का प्रदर्शन किया ॥ ९८ ॥

"Lord ! Vrishabhraja rode on the horseback with bow, arrow and wheel in his hands " (98)

पद्य—देवरु काणवेकल्लदवन दांडु । रावुतिकेय विळासवन ॥
नावेन नोळ्पेदंदरिंद निलगिना । नी वेळेयोळु तंदेनेंदा ॥ ९९ ॥

अर्थ- इतना महत्व उसके लिये न्यून ही है, क्योंकि वह बहुत सी कलाओं के कौशल को दिखलाने वाला था, पर मैंने ही उसे रोक दिया इस प्रकार अर्ककीर्ति ने भाई की भूरि भूरि प्रशंसा की ॥ ९९ ॥

"This praise is less for him because he was going to display some more feats of riding It was I who stopqed him to do so " (99)

पद्य—ओडने बंदव रेल्लर वनंने पोगळिद । रोडलुब्बिदनु रायनदके ॥
मिडुकदे मोनदळिद्द वृषभराज । नाडने मर्तिनु नुडिदनु ॥ १०० ॥

अर्थ—अर्ककीर्ति के साथ में आये हुये अन्य राजाओं ने भी इनके वचन का समर्थन किया। भरत जी मन ही मन प्रसन्न होकर मौन धारण किये हुये पुत्र की प्रशंसा सुनकर वृषभराज से कहने लगे कि ॥ १०० ॥

Other rulers accompanying Arkakirti praised him very much and approved his words Bharatji was extremly pleased and said to Vrishabhraja (100)

पद्य—इनितश्व देराट दोळु शक्तियिद्दु सु । म्मने मोवे नीनंदेकिर्दे ॥
ननगे मुंदुयिद कदव कुट्टेद नी । नेने नगुतव सुम्मनिर्दा ॥ १०१ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! अश्वारोहण कला में निपुणता प्राप्त करने पर भी उस दिन वज्रकपाट स्फोटन करते समय तुम चुप क्यों बैठे थे ? मुझसे पहिले ही तुम्हें उसे फोड़ना चाहिये था । इस बात को सुनकर वृषभराज हँसते हुये चुपचाप खड़ा हो गया ॥ १०१ ॥

"Dear son ! why did yyu sit mine while the Vajrakapat was being broken. You should have broken it first" Having heard so Vrishabhraja stood there quietly. (101)

पद्य—विनय दिंदोड निर्देरेल्लर बीळ्कोट्टु । तनुजर बीळ्कोडलिल्ल ॥
जिनयेनुतेद्दु मत्तवर कैविडिदर । मंय द्दोक्कनु चक्र धरनु ॥ १०२ ॥

अर्थ—उपरोक्त विनय वार्ता होने के अनन्तर भरत जी ने अन्य लोगों को यथोचित सन्मान पूर्वक भेजकर पुत्रों के साथ महल में प्रवेश किया ॥ ०२ ॥

Bharatji, after this humble conversation and dismissing others gathered there, entered the royal palace with his sons (102)

पद्य—मंगलारतियनेत्तिसि सेसे यिक्किसि । तुँगशोभिनव पाडिसिदा ॥
कंगळु तुँब कुमारर नोडि वी । रांगनेयरस लालिसिदा ॥ १०३ ॥

अर्थ—वहां पर पहुँचकर भरत जी ने अपनी रानियों से उन पुत्रों की आरती उतरवाकर मोती के अक्षतों से उनका विविध प्रकार से स्वागत कराया । इसके बाद पुत्रों को निर्निमेष (इकटकी) दृष्टि देखने लगे ॥ १०३ ॥

Reaching there Bharatji got his sons welcomed by the queens moving lamps all round their necks After that they began to see them with unmoved eyes. (103)

पद्य—कुँतलावति चंद्रिका देवि कुसुमाजि । इंतिवर्मोदलाद तन्न ॥
कांतेय रेल्लर करेसिदनवरिगो । रंते कुवर रेरगिदरु ॥ १०४ ॥

अर्थ—इसके बाद भरत जी ने कुंतलावती, चन्द्रिका तथा कुसुमा आदि रानियों को बुलाकर राजकुमार के कौशल का वर्णन किया ॥ १०४ ॥

After that Bharatji sent for the queens named Kuntalavati, Chandrika and Kusuma etc and toled them about the art of the prince (104)

पद्य—कुसुमाजि कुँतलावति कंद्रकादेवि । देसेगेळ्व निम्म मक्कळिगे ॥
उसुर बेडवे नीवु बुद्धियनेंदिष्टु । नसुनगुत रस नुडिदनु ॥ १०५ ॥

अर्थ—पुनः भरत जी विनोद पूर्वक रानियों को संबोधित करके कहने लगे कि क्या तुम लोग अपने पुत्रों को योग्य शिक्षा नहीं देती हो ? ये तो स्वेच्छाचारी हो रहे हैं ॥ १०५ ॥

Bharatji then humorously asked the queens whather they do not train their sons properly They had grown wilful (105)

पद्य—देव रेगत्यम्म बुद्धिवेळ्वंदिगे । नाववरिगे पेळ्वेवहुदु ॥
देवर मक्कळु देवरंतल्लतेयें । दा वनितेयरु नुडिदरु ॥ १०६ ॥

ओंदु पंतियोळमृतान्नव तन्नय । कंदगळोड गूडि सविदु ॥
पोंदडवित्त बुद्धिय पेळ्दु बीडार । केंदिनंतोडने बीळ्कोट्टा ॥ १०७ ॥

अर्थ—रानियों ने भी विनोद पूर्वक उत्तर दिया कि स्वामिन् ! आप को जब हमारी पूज्य सास जी शिक्षा देंगी तब हम लोग भी अपने अपने पुत्रों को शिक्षा दे देंगी । आप के पुत्र तो आप के समान ही हैं ॥ १०६-१०७ ॥

The queens also replied haqpily, "My Lord ! when your mother-in-law shall instruct you, we shall also instruct our sons. Your son are just like you (106-107)

पद्य—नारिय गोडने कुमारर विनय गं । भीर भीर चातुर्य मुँताद ॥
वारतेयोळु गयनिद् नेंबेडेगे कु । मार वैहाळिय संधि ॥ १०८ ॥

अर्थ—भरत जी ने पुत्रों के साथ बैठकर आनन्द पूर्वक भोजन किया । उसके बाद पुत्रों को अपने अपने महल में भेजकर स्वयं अन्तःपुर में रानियों के पास जाकर पुत्रों की प्रशंसा करने लगे भरत जी सर्वदा आनन्द में मग्न रहते हैं, उन्हें हर समय सुख का ही अनुभव होता है । इसका कारण क्या है ? इस प्रश्न का एक मात्र उत्तर यह है कि उन्होंने पूर्व भव में अनवरत परिश्रम से पुण्य संचय किया था, उसी का यह फल है ॥ १०८ ॥

Bharatji took his food with his sons After that having sent his sons to their respective palaces, B aratji himself went to the inner palace and began to praise his sons He was always best in happiness and feels pleasure all the moments The reason being that he collected virtues by performing good deeds in his previousif le It is its result (108)

पद्य—ई जिन कथेयनु केळ्दिद्वर पाप । बीज निनीशिनवहुदु ॥
तेज वहुदु पुण्य वहुदु मुँदोलिदप । राजिनेश्वरनं काणुवरु ॥ १०९ ॥

अर्थ—इस श्री जिनेश की कथा को जो भव्य जीव पढ़ेंगे या सुनेंगे उनका पाप रूपी बीज नष्ट होगा । तथा तेज कान्ति, पुण्य वृद्धि होकर अन्त में मोक्ष पद को प्राप्त होगा ॥ १०९ ॥

Those who will read or hear this 'katha' of Jinesh, the seed of their sins will be destroyed They will achieue glory, splendour, pleasant acpuisition and in the end attain "moksha" (109)

प्रेमदिंदिद नोदिद्रे पाडिद्रे केळ्द । रामोद वेद्दुवररु ॥
प्रेमदि सुररागि नळे श्रीमन्दर । स्वामिय काण्वर्तियोळु ॥ ११० ॥

अर्थ—इस कथा को प्रेम से पढ़ेंगे तथा सुनेंगे व आमोद को प्राप्त होंगे और नियम से देवपद को प्राप्त कर अन्त में विदेह क्षेत्र में जाकर प्रेम से श्रीमन्धरस्वामी का दर्शन करेंगे ॥ ११० ॥

Those who will read this with attention and recite it with devotion will have the " darshan" of Simandhara Swami (110)

अनिति नितेदु सोल्लिस वारद नुपम । घनमहिमेये देहवाद ॥
मुनिजनवंद्य नवदेयोळगिरु निरं । जनने चिदंबर पुरुषा ॥ १११ ॥

अर्थ—भरत जी सर्वदा भक्ति पूर्वक इस प्रकार की भावना करते थे कि हे परमात्मन् ! आप अवर्णनीय तथा अनुपमेय हैं, आप की महिमा अपार है । आप मुनियों के वन्दनीय हैं, शरीरातीत हैं तथा अनन्त सुख के पिंड हैं । इसलिये हे चिदम्बर पुरुष सिद्ध भगवान् ! मेरे हृदय में सर्वदा आप बने रहिये ॥ १११ ॥

भव्य जीवों के आत्म कल्याणार्थ देशभूषण मुनि महाराज संबोधित करके कहते हैं कि हे भव्य जीवो ! यदि आप लोग शरीर व आत्मा को पृथक् जानकर परमात्म स्वरूप का चिंतन करेंगे तो आप लोग भी भरत जी के समान इस लोक व पर लोक का सुख भोगकर अंत में मोक्ष पद प्राप्त कर सकेंगे ।

Bharatji entertained such thoughts very bevoutedly us, "O Parmatman ! thou art beyond the powers of words to descrive, and unque one They glory

is for and wide Thou art worthy of being prayed by the ascetics, beyond limits of this body and the root of infinite pleasure So O Lord Chidami Siddh ! kindly reside in my heart far ever." (111)

Deshbhusan Muni Maharaj in the interest of gracious beings, addressed them in these words "O gracious beings ! if you will consider your body and soul separate and meditate up on the Paramatma self of the Lord, you also like Bharat ji shall enjoy the blisses of this world and the world here after and attain solvation in the end.

॥ इति द्वितीय भाग का ग्यारहवां अध्याय कुमार विनोद संधि सम्पूर्ण ॥

॥ द्वितीय भाग का प्रथम खन्ड समाप्त ॥